प्रभु साथे

एकांतमां करवानी वातो

एटले

स्तवन, सज्झाय, पद, चैत्यवन्दन अने स्तुतिओनो संग्रह

साथे

साधु-साध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो

अने

जीवविचारादि प्रकरणो

नो पण समावेश करवामां आव्यो छे.

मूल्य रुपिया २॥

प्रकाशक
शा मूळचंद भगवानजी,
दावनगेरी

पुस्तक मिळण्याचे ठिकाण
शा मोटमल मलाजी
C/o शा मलाजी पुनराज
दावनगेरी, (मैसूर स्टेट)

मुद्रक
भाऊ लक्ष्मणराव कोकाटे,
हनुमान छापखाना,
३०१ सदाशिव पेठ, पुणें २.

प्रस्तावना

सारमेतन्मया लब्धं श्रुताब्धेरवगाहनात् ।
भक्तिर्भागवती बीजं परमानन्दसम्पदाम् ॥ १ ॥ द्वा द्वा

"आगमोरूपी महासागरना आलोडन (मथन) नो सार मने मोक्षसुखनु बीज कइ होय तो जिनेश्वरनी भक्तिज ए मळ्यो छे" आ म श्रीमद् न्यायाचार्य श्री यशोविजयजी महाराजना टंकशाळी वचनो छे

आजकाल घणा लोकोने धर्म, मोक्ष आदि शब्द अरुचिकर लागे छे, माटे आ पुस्तकमा छपायेला धर्मधुरधर प्राचीन महा पुरुषो रचित स्तवनो प्रभु आगळ भक्तिथी एकातमा कहेवानी वातो होवाथी पुस्तकनु नाम पण एवुज खास राख्यु छे, के जेथी विरतनाचार्योनी कृतिनो लोको लाभ ले

प्राचीन आचार्योना स्तवनो प्रत्ये तो बहुज अणगमो पेदा करायो छे, अने वैराग्य उपजावनारा खास रागोने पडतो मारी नाटक सिनेमाना रागोमा नवा रचाता स्तवनादिनो आदर अने प्रचार खूब करवामा आवे छे एक अपेक्षाए एम कही शकाय के शातरस अने वैराग्यरसना स्थाने पोतानी जोडकळाना प्रचार माटे शृंगाररसने स्थान अपायु छे, अर्थगाभीर्यनु स्थान उपलकिया ज्ञानने अपायु छे हृदयमा भक्तिनी उर्मिओ प्रगटे त्यारे पदोनी रचना करवी जूदी वात छे, अने स्तवनो के पोताना प्रशसानी गहुळीओ रोज नवी नवी रची खास व्यक्तियो द्वारा पोताना व्याख्यानोमा के प्रतिक्रमणमा बोलावरावी मलकावु ए जूदी वात छे एमा शासनप्रभावना ने गुरुभक्ति गणाती होत तो वाचक श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणे आगमोने वल्भीपुरमा ग्रथारूढ कर्या

तेमा नथी क्याय सोरठनी छाया के नथी पोतानु तेमज पोताना गुरुनु नाम के चित्र एटले एमनामा गुरुभक्तिनो छाटोय न्होतो एम कहेवु पडशे, आ वात मानभूख्या ने गुरुभक्तिनी घेल्छावालाए खास विचारवा जेवी छे, नहि तो एनो आकरो फटको आज नहि तो भविष्यमाय लाग्या विना नहि रहे, परिणाम जूना स्तवनो विगेरेनी उपेक्षाज नहि, किंतु अणगमो आव्या विना नहिज रहे

अजैनोए पण ज्ञानयोग अने कर्मयोगनी साथे भक्तियोगने मान्यो छे, के जेने आपणे सम्यग्दर्शन (भक्तियोग) ज्ञान (ज्ञानयोग) अने चारित्र (कर्मयोग) अथवा ज्ञानक्रियाना नामथी ओळखीए छीए जैनाचार्योए तो भक्तिनो महिमा घणोघणो गायो छे, "चमक पाषाण जेम खेंचशे छोहने०, जिनभक्ते जे होये राता०, तदपि मम हुज्ज सेवा" आम ठेरठेर भक्तिना अप्रतिम फळो वर्णवता भक्तिने उच्च स्थान अपायु छे जो के बहारना उपचारने पण भक्ति कही छे, छता साची भक्ति तो जिनेश्वरनी आज्ञाना पाळनमाज छे के जेने "धार तरवारनी०" इत्यादि वचनोथी योगीराज श्रीआनदघनजी महाराजे दुष्कर जणावी छे, तेथी तेने महापुण्यशाळिओज करे आवी भक्ति जन्मावदा प्रथम तेनी धून जगाडवी पडे छे, ते माटे वीतरागना गुणगान करवाना होय हाथ, पग, आख, कान, जीभ विनाना, के अभण पण भणेला अने देखता विगेरेनी जेम भक्ति करी शके छे, लोकोमा निंदापात्र गणाता रावणे पण अनन्य भक्तिथी तीर्थंकर गोत्र बाध्यु अने श्रेणिक राजा पण दररोज १०८ सोनाना जवोथी भगवाननी भक्ति करता, कुमारपाळ पाच कोडीना फूलोथी प्रभुपूजा करी अढार देशनी राज्यलक्ष्मीने पाम्या छे, छता गणधर थशे ते भक्ति पुष्पादि पूजा, गुणगान, नाटक आदि प्रभुमूर्ति आगळ करवाथी थाय छे अरिहत उपर जेवो भरसो तेवो भक्तिमां उल्लास

अने जेवो उल्लास तेवो भक्तिना साधनोनो ठाठ आमाने भक्तिरसमा झीलतो बनाववा आपणी जेम अनेकोमाय गीतो भजनो आदिना निर्माण थया छे आपणे मोक्षनाज आदर्शवाळा माटे मोक्षार्थे कराती भक्तिने ऊंचा प्रकारनी गणी छे, माटेज सेवाभक्तिना फळ रूपे भव-निर्वेद अर्थात् संसारनो कटाळो, भवनी भयङ्करता मने सचोट भासो एम " जय वीयराय " मा मागीए छीए, अने आपणा स्तवन सज्झा-योमा मात्र पण एज तरी आवे छे भक्ति करनारे पोतानी लघुता अने वीतराग'देवनी परम उच्चता मानवी ए भक्तिनु प्रथम पगथीयु छे सामान्य माणसनी सेवाथीय लाभ थाय तो पछी तीन लोकना बाद-शाहनी भक्तिथी शु न मळे ? एनाथी जे मळे ते तो बीजा कोईथीय न मळे, माटे एनी एटली महत्ता वर्णवी छे, अने तेथीज आपणा प्राचीन पूर्वजोए आगमो अने प्रकरण ग्रथो रचवा उपरात स्तवनो, गीतो, पदो, विनतिओनी पण चालु भाषामा रचना करी छे जेमा परमात्माना गुणो, ऋद्धि पृ ९,११, उपकार ने पोतानी करुणाजनक दीन स्थिति पृ ८३, ७६, क्षामणु पृ ८२, परमपदनी नम्रभावे याचना पृ ४, १ उपरात केटलाक शास्त्रीय विषयो पृ १७८, १८८, १३६ पण गूथी दीधा छे, जेथी सुदर रागरागणीवाळा ते गीत, गायनो, पदो कर्णमधुर लागवाथी गावानी के वारवार साभळवानी लोकोने सहेजे अभिरुचि थाय, भक्तिप्रिय आत्माओ ते तरफ झुके, साथे साथे महत्त्वना विषयोनु पण तेमने स्थूलरूपे ज्ञान थाय

श्री आनदघनजी के श्री यशोविजयजी महाराज आदिना केटलाक स्तवन-सज्झायोनो अर्थ बहु गभीर होवाथी आपणा जेवा बाळजीवो माटे ते समजवो बहु मुश्केल थई पडे छे, अर्थ समजेलु थोडाय तेमा अनेरो आनद अने अपूर्व भक्ति जागे छे, माटे केटलाक न समजाय

तेना शब्दोनो आणी शकायो ते ते अर्थ संक्षेपथी टिप्पणमा आप्यो छे ए शिवाय अंतिम आराधनाने उपयोगी पुण्यप्रकाशनु स्तवन, पद्मावती, चार शरणा अने श्रीसीमंधरस्वामीने विनति आदि आत्महितकर वस्तुओ पण आ पुस्तकमा आपी छे परलोक सुधारवा मरण सुधारवु जोइए, माटेज जन्म करताय मरणनु महत्त्व आम अनेकगणु वधी जवाथी शास्त्रोमा जन्मनो नही पण मरणनो विधि कर्यो छे अंत वखते बधा साथे (शत्रु साथे के अबोला होय तेओना साथे तो खास) खमत-खामणा, पच्चक्खाण, करेला पापोनु स्मरण, पापोनो पश्चात्ताप, पुण्यकार्योनी अनुमोदना, पंचपरमेष्ठीनु छेल्ला श्वासोच्छ्वास सुधी स्मरण, घरबार, मालमिल्कत अने छेवट शरीरने पण वोसिराववु विगेरे अवश्य करवानो विधि होय छे पुण्य प्रकाशनु स्तवन चार शरणा अने संथारा पोरिसी आदि तो दररोज बोलवामा आवे तोज अवनेळाए ते समळावनारनो जोग न मळे तोय मरनार आपमेळे तेनो अर्थ विचारी आराधना करी शके, आ वस्तुओ मरती वखतेज बोलवानी के सांभळवानी होय एवी वहेमभरी मान्यता केटलाक लोको मक्कम पकडी बेठा छे ते स्वपरनी घातक छे

आ पुस्तकमा प्रभुसाथे एकांतमा करवानी वातो अर्थात् स्तवन विनति सज्झाय चैत्यवंदनादि उपरांत घणाओने सदा उपयोगी जीव-विचार नवतत्त्वादि प्रकरणो अने साधुसाध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो पण आपवामा आव्या छे ते एटलाज माटे के नित्य उपयोगी वस्तुओनालु आ एकज पुस्तक पासे होय तो स्वाध्याय माटे बीजा पुस्तकोनी प्राय जरूर नही रहे

केटलाक कठिण शब्दोनो अर्थ लखवा पं श्री प्रभुदासभाई बे पारेखनी अर्थसहित श्री आनंदघन चोवीसी अने श्री सोमचंद डी

शाहे प्रकाशित श्री सीमंधरस्वामीनुं १२५ गाथानु स्तवन आ ये पुस्तकोनो उपयोग करवामा आव्यो छे माटे तेमनो आभार मानुं छुं

आ अने बीजा पण बधा पुस्तकोनी उपज ज्ञानकार्यमा खर्चावानी छे, तेनो हिसाब अने वहिवट शेठ मोटाजी रुगनाथजी अने शेठ जेताजी साकळानी समाळे छे

आ अने "ढंढेरो अथवा गुरुमंत्र" पुस्तक छपाववा माटे रु २००० पूना भवानी पेठ वाळा आकडाना वेपारी शेठ मोटाजी रुगनाथजीए आपेला छे ते माटे तेओने धन्यवाद।

आ पुस्तकमा केटलाक ठेकाणे प्रेमदोषथी अशुद्धि तेमज कोइ कोइ ठेकाणे प्रूफ तपासनार मुनि केवलविजयजीना स्मृतिदोषथी गाथाओ रही गइ छे, तेमज केटलीक फुटनोटमाय अशुद्धिओ रही गइ छे ते माटे पृष्ठ अने पंक्तिवार शुद्धिपत्र अने पृ १५, १६ मा खुलासो छाप्यो छे, ते प्रमाणे सुधारीने अभ्यास करवा दरेक जिज्ञासुने सादर विनंति करी सुधारवा छता रहेली भूलो माटे त्रिकरण योगे क्षमा याचु छुं

द्वि वै व १२।२००९ } शा मूळचंद भगवाननी.

ग्रन्थानुक्रमणिका

रचनाराओना नामो

(मोटा टाइपना आकडाओ सज्झायना पानांना छे)

अनुक्रमणिका

शुद्धिपत्रक

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
८	४	अविनाशा	अविनाशी
१८	७	सहसारे	सहस्मारे
२०	२५	साहस	सारस
२१	२	फल्नी	फूल्नी
२२	१५	तेरा	तोरा
२७	७	ते न जावे	ते नीवे
३०	६	रामय	रमे
३१	७	सद्भाव / निकाशेरे	सदसद्भाव / प्रकाशेरे
३४	२	वीर	वीरे
३४	१०	घोर	घोर
३४	१२	स्वता	स्तवन
३४	२१	नेह भवि	तेह भगी
३५	३	तणी	तणु
३५	१२	भाषया / वीर	भासियो / वीरे
३५	१७	वधमान	वर्धमान
३६	१७	भाग रे	मारो रे
३९	२०	टदीर तद	उदीरे तेह
३९	२३	ए फला	ए फल
४१	१७	तीनही	त्रिणही
,,	२१	नाह कर्म	कृतिकर्म
,,	२३	दहि काले	आहि काले
,,	,,	टाळे	टाळो
४३	२	समति	सुमति
५१	४	कथ	कत
५४	१०	अदु	अहु

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
५६	१२	मान्य	मान्या
६३	१०	प्रकार	अधिकार
६६	१३	ससार	समार
६९	२	कोरन	श्रेहान
८२	८	चिटाणो	वाँचाणो
,,	१३	जोवता	जोवतां
८३	११	प्रसुना	प्रभुता
८८	११	जाहोनिशे	अहोनिशे
८५	१६	चित्त म	चित्तमा
८७	६	भोळोरे मृग दशो	भूलो रे मृग दिशि'
८८	१५	त्रिमासो	त्रिमासे
९२	६	जिन	निज
,,	१०	महापापी	पापनी गांठि होय
१०२	२	भारव्या	भाग
१०५	५	छास रे	पास रे
,,	१३	वळे विष देती भर वार रे	वळे विषय ग मार रे, जुओ हरिकता नार रे, त्रिय देती भरतार रे, धूप जिनधर्म आधार रे,
१०६	४	पुनीय बीजो	पुनी बीज
१०७	१६	अवध	अव
,,	१८	त्रिसल्ला	त्रिसला
,,	१९	देराणी	रा

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१०७	१८	छटकाय	छटकाया
११०	१	विछियावतरे	वोछिरावे रे
११०	२१	नर	नय
११४	१७	काति	कान्ति
११५	१	नान क्षेप	नानाक्षेप
		क्यत	क्वन
,,	३	प्राणी	पाणी
११६	८	प्रवृत्त चक्र	प्रवृत्तचक्र
११७	२	इस	इम
,,	१५	सरसही	सरस सो
,,	२२	बहुरोना	वहुरोना
११८	११	सूक्ष्मा	सूक्ष्मा
,,	२१	निवेक	विवेक
१२०	७	सुखा	सुखी
१२१	६	प्रतिबुद्धरे	प्रतिबुद्ध रे॥१॥
,,	१७	गणधारेरे	गणधारो रे ॥ १ ॥
,,	१८	॥ १ ॥	०
१२२	१९	अथ	अर्थ
१२३	३	पण	क्षण
१२३	१८	वराग्य	वैराग्य
१२५	१७	रहनेमनी	श्री रहनेमिनी
१३५	२५	तु	तु
१३७	४	नमतां	वमतां
१३९	६	परि	परि
१४१	१७	केरोनी	केराजी
१४१	२१	शत्रुने परम शात्र	शत्रु ने परम शास्त्र
१४२	४	धूमाडानी	धूमाडाना
१४२	११	निद्दुरने	निद्दुर ने
१४३	१८	कोडाकोडी	कोडाकोडे
१४५	२	क्षीतु	नीतु
१४७	९	चेल	चले
१४८	१५	रसते इमांथी	रस तेइमांथी
१४९	१	छा	छंद
१५०	८	क्रम पर	कमपय
,,	९	क्षत्र	क्षेत्र
१५१	२१	महामते	महारथे
१५३	११	अचारजी	आचारजी
१५६	१०	सहतो	सहता
१५८	५	नगरीना	नगरीनी
१६०	१७	रेह्यो	रह्या
१६९	१८	मन	मन
१७०	६	सांभाल्तु	साभल्तु
,,	११	परमन	पर मन
१७९	१२	चिहु	भिहु
१९३	१५	गहे	ग्रहे
१९३	१९	पुजारी	देवद्रव्यभक्षक
१९६	२५	आचारां गमां	आचारांग अ ५ उ ५ मां
१९७	२२	भक्ति	भगतें
१९९	९	मारली	मारली
,,	१०	वियोल	नि-े

पृ	प	अशुद्ध	
८	४	अनिाशा	
१८	७	सहसारे	
२०	२९	साहय	
२१	२	फग्नी	
२२	१५	तेग	
२७	७	ते न चाये	
३०	६	रामन	
३१	७	सद्राव निकासेरे	सदं प्र
३४	३	वीर	
३४	१०	भोर	
३४	१२	स्तत्न	स्तवं
३४	२१	तेई मनि	तेह मणी
३५	३	तणी	तणु
३५	१२	मालसो वीर	मासियो वीरे
३५	१७	वधमान	वर्धमान
३६	१७	भागन रे	भागे रे
३९	२०	उदीर तह	उदीरे तेह
३९	२३	ए फला	ए फल
४१	१७	तीनदी	त्रिणही
,,	२१	कीह कर्म	कृतिकर्म
,,	२३	पहि काने	[illegible]ाल
,,	,,	टाळे	
४३	२	समति	
५१	८	कथ	
५८	१०	अडु	

अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] रे
[illegible]	का
[illegible]	कर्मेन्द्र
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	पणी
[illegible]	प्रभुनाथ
[illegible]	इम
[illegible]	परस हो
[illegible]	बहुरेला
[illegible]	सुसमा
[illegible]	विधेर
[illegible]	सुना
श्रीसुदर प्रतिबुद्ध गे॥२॥	
[illegible]धारे	गणधारे रे
	॥१॥
॥१॥	•
१ अद	अर्थे
१ रा	भग
१८ व्यम्र	वैराग्य
१७ रहनेमजी	श्री रहनेमिजी
११ नु	नु
४ नमनी	वमतो
६ परि	परी
१७ केशजी	केशजी

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
१४१	२१	शत्रुने परम	शत्रु ने परम
		शात्र	शात्र
१४२	४	धूमाडाी	धूमाडाा
१४२	११	निद्रुषने	निद्रय ने
१४३	१८	कोडाकोडी	कोडाकोड
१४५	२	श्रीत्रु	श्रीत्रु
१४७	९	चेर	चरे
१४८	१५	रहते हमांथी	रह नेहमांथी
१४९	१	छद	छ
१५०	८	क्रम पद	क्रमापद
,,	९	धन	धेन
१५१	२१	महाग्रो	महारथे
१५३	११	अवारजी	आचारजी
१५५	१०	सहालो	सूहालो
१५८	८	नगरीना	नगरीनि
१६०	१७	रेशे	रथी
१६१	१८	मा	मन
१७०	६	शोभाल्तु	शोभन्तु
,,	११	परमन	पर मन
१७१	१२	चिंदु	निं
१७३	१५	गढे	गढे
१९३	१९	पुजारी	देवद्रव्यभक्षक
१९६	२५	आगारो	आचारांग
		गमो	अ ५ उ ५ मां
१९७	२२	भक्ति	भगते
१९९	९	मारवी	मारी
,,	१०	चिदोल	निदोल

पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१९९	२१	तिवे	निवेदे	२१४	१०	भवसामला	भव सामल
२०१	९	मागे	मागे	२१८	१७	तिहा	तिहां
२०४	६	एम	नेम	,,	१९	जए	जुए
२०४	११	थाण	ठाण	२१९	६	सचरगुणनी	उत्तरगुणनी
२०६	१	धारतोर	धारता रे	२२०	८	तुहे	तुम्हे
,,	२२	अर्घविरोधी	अर्थविरोधी	२२२	२०	पडे	पडे मत
२०७	१३	वली ६	वली ७	२३६	१	दगत्	जगत्
२११	७	अवि द	अविवाद	२३८	२२	नां	ना-

साधु साध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो

अने

जीवविचारादि प्रकरणो

पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध	पृ	प	अशुद्ध	शुद्ध
१४	८	जावजीवाए	जावज्जीवाए	५९	१७	नवगे,गरस	नवगे, गारस
१८	२	नेरे	नेर	६२	१८	सामाणो	समाणो
२०	५	अहिरस	वहिरण	७०	८	व	व्व
२७	१४	सव्व	सव्व	,,	१३	जिणपण	जिणपणता
२८	११	त	ते			महीग	हीण
३४	११	सनम	सजम	,,	१५	साय	साय
४१	२२	तिविहेण	तिविह तिविहेण	७४	१९	मणवयण	मणवयण
४३	१	दतस्स	दतस्स			कायजोगा	कायजोगी
,,	६	नाहीं य	नाहीई	७८	१०	दण्ह	दुण्ह य
		सनमे	सनम	,,	१४	न त होद	न त होइ
,,	२०	नाण दसण	नाण दसण	८०	२४	छसट्ठग	छसगाढ-
५६	५	केवरि	केवल			अतिवधा	अठतिवध

पृ ५४-१८ "नवतत्व" मां ६० मी गाथा आम वांचवी जोइए छे—

"जइआइ होइ पुच्छा, जिणाण मग्गंमि उत्तर तइया। इक्कस्स निगोयस्स अणंतभागो य सिद्धिगओ ॥ ६० ॥"

पृ ५६ प १२ "दण्डक प्रकरण" नी २१ मी अने २२ मी गाथा आ प्रमाणे मळे छे—

"संखेज्जाउ पज्जत्त-पणिंदि तिरिय नरेसु तहेव ॥ [illegible] एसु, इय जेसा देविंदा समवे ॥ २१ ॥ [illegible] जिअअणंतगुणयोग ॥ [illegible] ॥ २२ ॥"

पृ ६१ प. १ श्रीजा कर्मग्रंथनी पहेली गाथा आ छे—

"गइ इंदिए य काये, जोए वेए कसाय नाणे य। संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ १ ॥"

पृ ७१-१३ चोथा कर्मग्रंथमां पहेली बीजी अने त्रीजी गाथा आ प्रमाणे छे—

"नमिय जिणं वत्तव्वा, चउदसजिअठाणएसु गुणठाणा। जोगुवओगो लेसा, अप्पबहुं च छठाणा ॥ १ ॥ इह सुहुम बायरेगिंदि बिति चउ असन्नि सन्नि पंचिंदी। अपज्जत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जियठाणा ॥ २ ॥ [illegible] जिअअणंतगुणेया य, [illegible] ॥ ३ ॥"

पृ १२८ थी १४१ ना बदले १२७ थी १४२ वांचवा

पृ ३५ अने १७२ आम [illegible] छे

पृ ८७ थी [illegible] छठा कर्मग्रंथनी [illegible] आचार्य [illegible] श्री [illegible] राज साहेबनी छठा कर्मग्रंथनी प्रस्तावना पृ १२ वांचो.

" ढंढेरो अथवा गुरुमंत्र " छापता वधेला
रू ८०० आ पुस्तक माटे आपनार



शेठ मोराजी रगनाथजी लाकडाना वेपारी, भवानी पेठ, पूना २

ॐ अर्हम्

प्रभु साथे

एकांतमां करवानी वातो

श्री ऋषभदेवजीनु स्तवन

तारक ऋषभ जिनेश्वर तु मीळ्यो, प्रत्यक्ष पोत समान हो, तारक तुजने जे अवलंबीया, तेणे लह्यु उत्तम स्थान हो ता० ऋ० १ तारक तुज वन्दन पूजन करी, पवित्र करु निज देह हो, तारक तुज गुण स्तवनाए स्तवी, जिह्वा करु अमृत लेह हो ता० २ तारक गुण अनंता तादरा, कुण कही लहशे पार हो, ता० केवळी कोडी मिळे करी, जाणे न कहे निरधार हो ता० ३ तारक गणधर मुनिवरे स्तव्यो, स्तवियो देवनी कोड हो, ता० तो पण हु तुजने स्तवु, भक्ति करु तस होड हो ता० ४ मरुदेवी माताने नमु, रत्नकुक्षी धरनार हो, ता० नाभि राया कुलचंदलो, सकळ जंतु आधार हो ता० ५ ता० सुमंगला सुनन्दा तणो, प्रीतम प्रभु विख्यात हो, ता० श्रीपुण्डरीक गणधर तणो, पितामह गुरु जगतात हो ता० ६ ता० तुज नामे ऋद्धि संपजे, वाधे कीर्ति अपार हो, ता० शिवलक्ष्मी सहेजे मिळे सफल थाय अवतार हो ता० ७

श्री ऋषभदेवजीनु स्तवन

बालपणे आपणे ससनेही रमता नवनव वेषे, आज तुमे पाम्या प्रभुताई अमे तो ससारनी वेषे हो प्रभुजी! ओलभडे मत खीजो १ जो तुम ध्याता शिवसुख लहिये तो तुमने केइ ध्यावे, पण भवस्थिति परिपाक थया विण कोइ न मुक्ति जावे प्र० २ सिद्धनिवास लहे भवि सिद्धि तेहमा शो पाड तुमारो, तो उपगार तुमारो वहिये अभव्य सिद्धने तारो हो प्र० ३ नाणरयण पामी एकाते थइ बेठा मेवाशी, ते माहेलो एक अश जो आपो तो वाते शाबाशी हो प्र० ४ अक्षय पद देता भविजनने सकीर्णता नवि थाये, शिवपद देवा जो समरथ छो तो जश लेता शु जाय हो प्र० ५ सेवागुण रज्यो भविजनने जो तुमे करो वडभागी, तो तुमे स्वामी केम कहावो निर्मम ने नीरागी हो प्र० ६ नाभिनन्दन जगवन्दन प्यारो जगगुरु जगजयकारी, रूपविबुधनो मोहन पभणे वृषभ लछन बलिहारी हो प्र० ७

श्रीऋषभजिनस्तवन

जी रे सफळ दिवस आज महारो, दीठो प्रभुनो देदार, लय लागी जिनजी थकी, प्रगट्यो प्रेम अपार, घडिय न विसरे हो साहेबा, साहेबा घणोरे सनेह, अतरजामी छो माहरा, मरुदेवाना नन्द, सुखदाना हो रत्त घडिय० १ साहेबा लघु थई मन मारु त्या रह्यु, तमारी सेवाने काज, ते दिन क्यारे आवशे, होशे सुखनो आवास घडीय० २ साहेबा प्राणेश्वर प्रभुजी तुम्हे, आतमना रे आधार, माहरे तो प्रभुजी तुमे एक छो, जाणजो निरधार घडीय० ३ साहेबा एक घडी पण तुम विना, जाय वरस समान, प्रेम विरह हवे केम खमु, जाणो वचन प्रमाण घडिय० ४ साहेबा अतर्गतनी वातडी कहो कोने कहेवाय, घालेमर विश्वासीया कहेता दु ख जाय, सुणता सुख थाय घडिय० ५ साहेबा देव अनेक जगमा वसे तेहनी ऋद्धि

अनक, तुम विना अवरने नहि मनुं [illegible]
साहेवा पंडित विवेकविजय तणो [illegible]
श्री ऋषभना गुणते गुण गाय [illegible]

श्री ऋषभदेवजीनुं [illegible]

प्रथम जिनेश्वर वंदिए, मारुदवी [illegible]
पूर्व विदेहे मानुन, नीधा घृतना [illegible]
युगल सुधर्मे सुर थया, महाबल [illegible]
ललितांग सुर ईशानमा, स्वयंप्रभा [illegible]
वज्रजंघराय विदेहमा, युगलि [illegible]
केशव वैद्य विदेहमा, चार मित्र [illegible]
अच्युत अमर विदेहमा, वज्रनाभ [illegible]
छ जण साथे संयमी, थाये जिन [illegible]
सर्वार्थमा उपना, सिद्धार्थ [illegible]
इक्ष्वाग भूमि मोहामणी, आवि [illegible]
कुलकर नाभि नरिंदने, मरुदेवा [illegible]
वृषभ लंछन कंचन वने, मेरु सुग [illegible] ॥
गृहवासे पण जेहने, कल्पद्रुम [illegible]
पाणी क्षीर समुद्रनुं, पूरे सुरवर [illegible] ॥
युगला धर्म निवारणो, वारक [illegible]
ज्ञानविमलसूरींदनी पूरो वंछित [illegible] ॥

१ चक्रवर्ती

श्री ऋषभजिन स्तवन

ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भलो,
गुणनीलो जेणे तुज नयण दीठो,
दुख टळ्या सुख मळ्या स्वामी तुज निरखता,
सुकृत संचय हुओ पाप नीठो ॥ ऋषभ ॥ १ ॥
कल्पशाखी फळ्यो, कामघट मुज मळ्यो,
आंगणे अमीयनो मेह वूठो,
मोज महिराण महिमाण तुज दर्शने,
क्षय गया कुमति अंधार जूठो ॥ ऋषभ ॥ २ ॥
कवण नर कनक मणि तजी तृण संग्रहे,
कवण कुंजर तजी करह लेवे,
कवण बेसे तजी कल्पतरु बाउले,
तुज तजी अवर सुर कोण सेवे ॥ ऋषभ ॥ ३ ॥
एक मुज टेक सुविवेक साहिब सदा,
तुज विना देव दुजो न ईहुं,
तुज वचन राग सुखसागरे झीलता,
कर्म भर भ्रमथी हु न बीहु ॥ ऋषभ ॥ ४ ॥
कोडी छे दास विभु ताहरे भलभला,
माहरे देव तु एक प्यारो,
पतितपावन समो जगतनोद्धार कर,
मेहर करी मोहे भवजलधि तारो ॥ ऋषभ ॥ ५ ॥
मुक्तिथी अधिक तुज भक्ति मुज मन वसी,
जेहशु सबल प्रतिबंध लाग्यो,
चमक पाषाण जिम लोहने खेंचशे,
मुक्तिने सहज तुज भक्तिरागो ॥ ऋषभ ॥ ६ ॥

---

१ हाथी तजी ऊंट कोण ले ? २ इच्छु

धन्य जे काय जेणे पाय तुज प्रणमीए,
तुज थुणे जेह धन्य धन्य जीहा,
धन्य ते हृदय तुज मदा समरता,
धन्य ते रातने धन्य दीहा ॥ ऋषभ ॥ ७ ॥
गुण अनंता मदा तुज खजाने भर्या,
एक गुण देत मुज शु विमासो,
रयण एक देत शी हाण रयणायरे,
लोकनी आपदा जेणे नासो ॥ ऋषभ ॥ ८ ॥
गगसम रग तुज कीर्तिकल्लोलनो,
रवियकी अधिक तप तेज ताजा,
नयविजय बुध सेवक हु आपरो,
जश कहे अब मोहे भवथी निवाजो ॥ ऋषभ ॥ ९ ॥

श्री आदिनाथ प्रभुने विनति

सुण जिनवर शत्रुंजा धणीजी रे, दास तणी अरदास,
तुज आगळ बालक परेजी रे, हु तो करु वेसास रे जिनजी,
मुज पापीने रे तार
तु तो करुणारसभर्योजी रे, तु सहुनो हितकार रे जिनजी मुज० ॥१॥
हु अवगुणनो ओरडोजी रे, गुण तो नहीं लवलेश,
परगुण पेखी नवी शकुजी रे, कम समार तरीश रे जिनजी०॥२॥
जीवतणा वध मे कर्याजी, बोल्या मृषावाद,
कपट करी परधन हर्याजी रे सेव्या विषयसवाद रे जिनजी० ३॥
हु लपट हु लालचुजी, कर्म किधा केइ क्रोड,
त्रण भुवनमा को नहींजी रे जे आवे मुज जोड रे जिन० ॥४॥

---

२ एक गुणरूपी रत्नने आपवा. ३ रत्ना समुद्ररूपी आपना गुणोमां.

छिद्र पराया अहोनिशीजी रे, जोतो रहु जगनाथ,
कुगति तणी करणी करीजी रे, जोडयो तहनु साथ रे जिन० ॥ ५ ॥
कुमति कुटिल कदाग्रहीजी, वांकी गति मति मुज,
वांकी करणी माहरीजी, शु सभळावु तुज रे जिनजी० ॥ ६ ॥
पुण्य विना मुज प्राणियोजी जाणे मलु रे आथ,
ऊंचा तरुवर मोरियाजी, त्यांहा पसारे हाथ रे जिनजी ॥ ७ ॥
विण खाधा विण भोगव्याजी फोगट कर्म बधाय,
आर्तध्यान मिटे नहींजी, कीजे कवण उपाय रे जिनजी० ॥ ८ ॥
काजळथी पण शामळाजी रे, माहरा मन परिणाम,
सोहणामाही ताहरुजी, संभारु नहीं नाम रे जिनजी० ॥ ९ ॥
मुग्धलोक ठगवा भणीजी रे, करु अनेक प्रपंच,
कूड कपट बहु केळवीजी पाप तणा करु संच रे जिनजी० ॥ १० ॥
मन चंचळ न रहे किमेजी रे, राचे रमणी रे रूप,
कामविडवणा शी कहुजी, पडीश हु दुर्गति कूप रे जिनजी० ॥ ११ ॥
किशा कहु गुण माहराजी, किशा कहु अपवाद,
जेम जेम सभारु हैयेजी, तेम वाधे विखवाद रे जिनजी० ॥ १२ ॥
गिरुआ ते नवि लेखवेजी, निगुण सेवकनी रे वात,
नीच तणे पण मंदिरेजी, चंद्र न टाळे ज्योत रे जिनजी० ॥ १३ ॥
निगुणो तो पण ताहरोजी, नाम धराव्यु रे दास,
कृपा करी संभाळजोजी, पूरजो मुज मन आश रे जिनजी० ॥ १४ ॥
पापी जाणी मुज भणीजी, मत मूको विसार,
विष हळाहळ आदर्योजी, ईश्वर न तजे तास रे जिनजी० ॥ १५ ॥
उत्तम गुणकारी हुवेजी, स्वार्थ विना सुजाण,
करमण सींचे सर भरेजी मेह न मागे दाण रे जिनजी० ॥ १६ ॥
तु उपगारी गुणनिलोजी, तु सेवकप्रतिपाळ,
तु समरथ सुख पूरवाजी, कर माहरी संभाळ रे जिनजी० ॥ १७ ॥

तुजने शु रहीजे घणुनी, तु सहु वाते रे जाण,
मुजने थानो साहिबाची, भवभव ताहरी आण रे जिनजी० ॥ १८ ॥
नाभि राया कुलचदलोजी मरुदेवीनो नद,
कहे जिनहर्ष निवाजनोजी, देजो परमानद रे जिनजी० ॥ १९ ॥

श्री समवनाथजिन स्तवन

समकित दाता समकित आपो मन मागे थई मीठु, छती वस्तु देता शु सोचो मीठु ते सहुए दीठु, प्यारा प्राणथकी छो राज समव जिनवर मुजने ॥ १ ॥ एम मत जाणो जे आपे लहिये तो लाध्यु शु लेवु, पण परमारथ प्रीछी आपे तेहज कहिये देवु प्यारा० ॥ २ ॥ अह अर्थी हु अर्थसमर्पक एम मत करजो हासु, प्रगट न हतु तमने पण पहेला कोई हासातु स्वासु प्यारा० ॥ ३ ॥ परमपुरुष तुमे प्रथम भजीने पाम्या छो प्रभुताई, तेणे रूप तुमने अमे भजिये तेणे तुमे हाते वडाइ प्यारा० ॥ ४ ॥ तुमे स्वामी हु सेवाकामी मुजरो स्वामी निवाजो, नहि तो हठ माडी मागता सेवक किणविध लाजो प्यारा० ॥ ५ ॥ ज्योतिसे ज्योत मिले मत प्रीछो पोण लेशे कोण वरशे, साचा भक्तिने हस तणी परे खीरनार परे करशे प्यारा० ॥ ६ ॥

श्री समवजिन स्तवन

समव जिनवर साचो साहिब जेह छ परम दयाळ, करुणानिधि जगमाही मोटो मोहन गुणमणिमाळ, भविया भाव धरीने लाल, श्रीजिनसेवा कीजे, दुर्मति दूर करीने लाल नरभव सफलो कीजे ॥ १ ॥ एह जगतगुरु जुगते सेवो खट्कायप्रति पाळ, द्रव्य-भाव परिणति करो निर्मल पूजो थई उजमाळ भवि० २ केसर चदन मृगमद भेळी अर्चे जिनवर अग, द्रव्यपूजा ते भावतु कारण कीजे अनुभव रग भवि० ३ नाटक करता रावण पाम्यो

तीर्थंकर प॰ सार, देवपाल प्रभु
श्रीसार भवि० ४ वीतराग पूजा
अज अक्षय सुख जिहा शाश्वता
अजर अमर अविनाशी कहिये पूर्ण
स्वभावविभासक चउ गतिना दु
जिननुं ध्यान करता लहिये सुख
अवलखी रतन कहे गुण खाण ५

श्री अभिनंदन स्वामि

अभिनदन जिन ! दरिसण तरसीअे,
मत भेदे रे जो जई पूछीअे, सौ थापे "
करी दरिसण दोहिलुं, निर्णय सकल
केम करे, रवि-शशि रूप विलेख अ
धरी जोईअे, अति दुर्गम नयवाद, आग
अे सघळो विखवाद अभि० ३ घाती
दरिसण जगनाथ ! धीठाई करी मारग स
अभि० ४ दरिशण दरिशण रटतो जो फि
पिपासा हो अमृतपाननी, किम भाजे
न आवे हो मरण जीवन तणो, सीजे जो
दुर्लभ सुलभ कृपा रसी, आनन्दघन महाराज

१ 'हुजु' एम बोले २ तो साचा बने
३ जोई न शके ता ते सूर्य के चन्द्रमा एम जुदा जुदा
शके ? ४ अनुमान प्रमाणथी ५ मुश्केलीथी
छे ६ गुरु पासेथी शास्त्रज्ञान पामेला आवे कोई
आदि चार घाति कर्मोरूपी डगराओ मुक्तिए जतां
थाये नथी ९ आपनु दर्शन थाय तो जीवनमरणनी
१० समकितनी दुर्लभता ११ माट हे आनन्दघन प्र
अर्थात् समकित प्राप्त कराय !

श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन

में कीनो नहीं तुम विन ओरशु राग

दिन दिन वान चढे गुण तोरे, ज्यु कचन पर भाग, ओरनमें है कषायकी कालुष, सो क्यु सेवा लाग मे० १ राजहंस तु मान सरोवर ओर अशुचिरुचिकाग, विषयभुजग गरुड तें कहिये, ओर विषय विषनाग मे० २ और देव छिल्लर जल कहिये, तु समुद्र अथाग, तु सुरतरु मनवांछित पूरण, ओर तो सूके साग मे० ३ तु पुरुषोत्तम अतरजामी तु शरर बडभाग, तु ही ब्रह्मा बुद्धिमहोदय, तु ही देव वीतराग मे० ४ सुविधिनाथ गुण फूलन केरो मेरो दिल है बाग, जस कहे भ्रमर रसिक होई तामें, लीजिये भक्ति पराग मे० ५

श्री सुविधानाथजीनु स्तवन

सुविधि जिनेश्वर साहिब साभळो, तुमे छो चतुर सुजाणोजी, साहिब सन्मुख जोवता, वाधे सेवक वानोजी सु० १ भवमडप-मा रे भमता जगगुरु, काळ अनादि अनंतोजी, जनममरणना रे दुःख ते आकरा, हजुए न आव्यो अंतोजी, सु० २ छेदन भेदन वेदन आकरी, सुणानिधि नरक मोझारोजी, क्षेत्र-कुभी-वैतरणी वेदना, कहेता नावे पारोजी सु० ३ विवेक रहित विकलपणे करी, न ल्ह्यो तत्त्वविचारोजी, गति तिर्यचमा रे परवशपणे करी में सह्या दुःख अपारोजी सु० ४ विषयामगरे रग राचीयो बधाणो मोहपाशोजी, अमरी सगे रे सुरभव हारीयो, कीधा दुर्गति वासोजी सु० ५ पुण्यमहोदय जगगुरु पामीयो, उत्तम नर अवतारोजी, आरज क्षेत्रे सामग्री धर्मनी, सद्गुरु सगति सारोजी

१ खराबीयु २ आपना गुणरूपी फूलनो माह मा रसीया छ, ते गुणाना रसिक बनी भक्तिरूपी पराग ग्रहण करवो ३ दरी

अनुभव रसके आगे आवत नही कोई मानमे हम० ४ जिन ही पाया तिन ही छिपाया, न कहे कोई के कानमें, ताली लागी जब अनुभवकी, तब समजे कोई सानमें, हम० ५ प्रभुगुण अनुभव चद्रहास ज्यु सा तो न रहे म्यानम, वाचक जस कहे मोह महा अरि जीत लियाँ है मेदानमे हम० ५

श्री शातिनाथजिन स्तवन

म्हारो मुजरो ल्यो ने राज साहेब शाति सलूणा, अचिराजीना नन्दन तारे दर्शन हेते आव्यो, समकित रीझ करीने स्वामी भक्ति भेटणु लाव्यो म्हारो० १ दुःखभजक छे विरुद तुमारो अमने आश तुमारी, तुमे निरागी थईने छूटो शी गति थाशे अमारी म्हारो० २ कहेशे लोक न ताणी कहेवु एवडु स्वामी आगे, पण बालक जो बोली न जाणे तो केम व्हालो लागे म्हारो० ३ म्हारे तो तु समरथ साहिब तो केम ओछु मानु, चिन्तामणी जेणे गाठे बाध्यो तेहने काम किशानु म्हारो० ४ अध्यातम रवि ऊग्यो मुज घट मोह-तिमिर हर्यु जुगते, विमलविजय वाचकनो सेवक राम कहे शुभ भगते म्हारो० ५

श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन

कुथू जिनेश्वर जाणजो हो लाल, मुज मनना अभिप्राय रे, जिनेश्वर मोरा तु आतम अलवेसरु रे लाल, रखे तुज विरहो थाय रे जिने० ॥ तुज विरहो किम वेठिये रे लाल, तुज विरहो दुःखदाय रे, जिनेश्वर मोरा, क्षण वरसासो जाय रे, जिने० विरहो मोटी बलाय

१ अक म्यान २ मारो शत्रु ३ एक एक क्षण वरस जेवा जाय

रे जिने० १ तुम पासें ज आवनु रे लाल, पहेला न आवनु भाव रे जिने० आवीने पाछा नावनु रे लाल, गुड गुण विषय न सुहाय रे जिने० २ नहि भिडियानो भागो नही रे लाल, जस गुणनु नहि नाम रे जिने० भिलिया रे गुण फलिया पछी रे लाल, विघटन ज्ञान रे प्राण हो जिनेश्वर० ३ आ [illegible] तुम नहि रे लाल, न [illegible] नयणनो प्यार रे जिने०, नयणनो प्यार हुई पछी रे लाल, [illegible] विषयन्द रे जिनेश्वर० ४ [illegible] पण विद्या नवि [illegible] रे लाल, जिण गुण विरलो वचाय रे जिनेश्वर०, मालती कुसुम में हेवा रे लाल, मधुप [illegible] न जाय रे जिनेश्वर० ५ [illegible] [illegible] [illegible] रे लाल, [illegible] पछी परमाद रे जिनेश्वर० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रे लाल, [illegible] अनन्त गुणता रे जिने० ६ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रे लाल, आ [illegible] मिट [illegible] रे जिनेश्वर०, तुम [illegible], मुनिया [illegible] रे लाल, मानविजय उवझाय रे जिनेश्वर० ७

श्री अनन्तजिन स्तवन

मारा साहिब श्री अनन्त, [illegible] [illegible] [illegible], प्रभुजी [illegible] दयाल [illegible] [illegible] नहि पावनी [illegible] [illegible] [illegible] तुम [illegible] पाईं. मा० १ जिन मगने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] पुनामा आत्मनु [illegible] ने दुर्गीया [illegible] [illegible] मा० २ प्रभु महापद्मी पातव [illegible], मारी तुम [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] प्रतिबुझे यही कर्मरोग मवि [illegible] मा० ३ [illegible] [illegible] करना सो पण प्राप्ति थाय, तो त्रिभुवन [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] थाय मा० ४ मार्घा मेघा [illegible] [illegible] जिनवर [illegible] श्री विमलविजयपद पामी पुण्ये जस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मा० ५

---

१ भमरो करवा माटे [illegible] २ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हील थाय [illegible] ३ तमारा [illegible] [illegible] [illegible] माहे [illegible]

श्री नमिनाथजिन स्तवन

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश, पूरण दृष्टि निहाळीये, चित्त धरीये हो अमची अरदास, प० १ सर्वदेश-घाती सहु, अघाती हो करी घात दयाल, वास कीयो शिवमंदिरे, मोहे विसरी हो भमतो जगजाल प० २ जगतारक पदवी लही, तार्या सही हो अपराधी अपार, तात कहो मोहे तारता, किम कीनी हो इण अवसर वार प० ३ मोह महा मद छाकथी, हुं छकियो हो नहि शुद्ध लगार, उचित सही इणे अवसरे, सेवकनी हो करवी संभाळ प० ४ मोह गया जो तारशो, तिण वेला हो किहां तुम उपगार, सुख वेळा सज्जन घणा, दुःख वेळा हो विरला संसार प० ५ पण तुम दरिशन योगथी, थयो हो हृदये अनुभव प्रकाश, अनुभव अभ्यासी करे, दुखदायी हो सहु कर्मविनाश प० ५ कर्मकलंक निवारीने, निज रूपे हो रमे रमता राम, लहत अपूरव भावथी, इण रीते हो तुम पद विश्राम प० ७ त्रिकरण जोगे हुं विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीना नंद, चिदानंद मनमें सदा, तुमे आवो हो प्रभु नाणदिणंद प० ८

श्री नेमिनाथ प्रभुनु स्तवन

(जा हरि नहि मळे रे, जो रे मारा पापी प्राण ए देशी)

निरुपम नेमजी रे, वालम[1] मूकी कयां जाओ, तोरण आवीने रे, एम कांई विरह जगाओ नि० १ करुणा पशु तणी रे, करता अबला उवेखो, दुर्जन वयणथी रे, ए नहि साजन लेखो नि० २ शशिलंछन कीओ रे, सीता राम वियोगी, विबुधजने कह्यो रे न्याये नाम कुरंगी नि० ३ गुन्हो वो कीओ रे, जो रहती एकलडी छंडी, गणिका

---

[1] चंद्रमाने कलंकित करनार ने रामसीतानो वियोग करावनार-तमामां मृग करनार हरण छे

सिद्धि वधू रे, वेहनुं प्रीतडी मही नि० ४ अड भव नेहलो रे नवमे छेह म दाखो, न्हासी रोउली रे, साहेब गोदमा राखो, नि० ५. पुण्ये परजहा रे मुजथी याचक लोगा, दाने मयरूमरे रे, पाम्या वछित भोगा नि० ६ विवाह अवसरे रे जमणो हाथ न पामी, दिक्षा अवसरे रे देजो अतरजामी नि० ७ माता शिवा तणा रे, नंदन गुणमणिखाणी, संयम आपीने रे, तारी राजुल नारी, मुक्ति महेले मल्या रे दपति आविचळ भावे, क्षमाविजय तणो रे, सेवक जिन गुण गावे नि० ९.

श्री नेमिनाथजिननु स्तवन

इण भरते अचलपुरी, नृप विक्रमधन नामे मेरे लाल, संयम लेई सुर थया सौधर्मे शुभ ठामे मेरे लाल, जिनवरने करु वन्ना १ वैताढ्ये सौरीपुरे चित्रगति विद्याधर मेरे लाल, दीक्षा ग्रही माहेंद्रमा, सुर सुख पाम्या सार मेरे लाल जिनवर० २ सिंहपुरे अपराजिते भूपति यमला नाम मेरे लाल अग्यारमा सुरलोकमा सुरवर थया उदार मेरे लाल जिन० ३ हस्तिणाउर शख भूपति, संयम जिनपद वाधी मेरे लाल, अपराजित सुखथी च्यवी, शौरीपुरे निराबाध मेरे लाल जिन० ४ समुद्रविजय शिवादेवीनो सुत, शख लछन जिणद मेरे लाल, अजन वान बावीशमो, अरिष्ट नेमि जिनवर 'ज्ञान' दिणंद मेरे लाल, जिन० ५

भावपूजारहस्यमय श्री पार्श्वनाथजिन स्तवन

पूजाविधिमाहि भावियेजी, अतरग जे भाव, ते सवि तुज आगळ कहुजी, साहेब सरल स्वभाव सुहकर, अवधारो प्रभु पास १

१ राजुल २ सवत्सरी दान लई इच्छित पामनारा याचको पण माग करता बहु पुण्यवान्. ३ श्याम वर्णनु शरीर

दातण करता भावियेजी, प्रभु गुण जल मुख शुद्ध, जीभ उतारो जीभनीजी, हो मुज निर्मल बुद्ध सुहंकर० २ जयणाओ स्नान कीजियेजी, काढो मेल मिथ्यात, अगूंछो अंग शोषवीजी, जाणु हु अवदात सुह० ३ क्षीरोत्कना धोतीयांजी, चिंतवे चित्त संतोष, अष्ट कर्म सवर भलोजी, आठ पडो मुखकोष सु० ४ ओरसीयो, ओकाग्रताजी, केसर भक्ति कचोल, शुद्धि चंदन चितवोजी, ध्यान घोळ रंग रोल सुह० ५ माल वहु आणा भलीनी तिलक तणो तेह भाव, जे आभरण उतारिअजी ते उतारो भवपार सुह० ६ जे निर्माल्य उतारीओजी, ते तो चित्त उपाधि, पखाळ करता चिंतवोनी निर्मल चित्त समाधि सुह० ७ अगलूहणा बे धर्मनाजी आतम स्वभाव जे अग, जे आभरण पहेरावियेजी, ते स्वभाव निज चग सुह० ८ जे नव वाड विशुद्धताजी ते पूजा नव अग, पचाचार विशुद्धताजी, तेह फूल पच रग सुह० ९ दीवो करता चिंतवोजी ज्ञान दीपक सुप्रकाश, नयचिंता घृत पूरियूजी, तत्त्वपात्र सुविलास सुह० १० धूपरूप अति कार्यताजी, कृष्णागरुनो योग, शुद्ध वासना महमहेजी, ते तो अनुभव योग सुह० ११ मद स्थानक अड छाडवाजी तेह अष्ट मगलिक, जे नैवेद्य निवेदियेजी ते मुज निश्चल टेक सुह० १२ लवण उतारी मुकिअजी, कृत्रिम धर्मनो रे त्याग, मगलदीवो अति भलोजी रे शुद्ध धर्म पर राग सुह० १३ गीत नृत्य वाजित्रनोजी रे नाद अनाहत सार, राम रती रमणी करिजी ते साचो थैकार सुह० १४ भावपूजा अेम साचवीजी सत्य बजावो रे घट, त्रिभुवन माहे ते विस्तरेजी टाळे कर्मनो कट सुह० १५ अेणी परे भावना भावताजी साहेब जस सुप्रसन्न, जन्म सफल जग तेहनोजी, तेह पुरुष धन्न धन्न सुह० १६ परम पुरुष प्रभु शामळानी मानो अे मुज सेव, दूर करो भव आमळानी, वाचक जश कहे देव सुह० १७

१ परा

(१७)

श्री पार्श्वनाथ स्वामीनु स्तवन

[गोडीजी आई वारा देशमा मारूजी—ए देशी]

परम पुरुष परमातमा साहिबजी, पुरिसादाणी पास हो, शिव-सुखना समर थासे विनती साहिबजी, अवसर पामी ओळगु, सा० सफल करो अरदास हो शिव० १ द्वेष गजेन्द्र मोह भूपना सा० तेणे कर्यो जग धंधोल हो शि० द्वेष वेरी राग केसरी सा० तेह ना राणा मोठ हो शिव० २ मिथ्या मोह तो आकरो सा० काम कटक शिरदार हो, शिव० त्रण रूप धरी ते रमे सा०; हास्यादिक परिवार हो शिव० ३ मोह महिपति जोरथी सा०, जग सघळो थयो जेर हो, शिव० हरिहर सुर नर सहु नम्या सा० जकडी कर्म-ने घेर हो शिव० ४ मरस्थिति चौगति चोकमा सा०, लोक करे पोकार हो शि०, आप उदासी थई रह्या सा० केम किम रहेशो सार हो, शिव० ५ क्षपक श्रेणी ने गजघटा सा० हलकारो अरिहन्त हो, शिव० नाण खड्ग मुज करे दीजे सा० क्षणमा करुं अरि अंत हो शिव० ६ करुणानयण कटाक्षथी सा० रिपुदल होय विसराल हो, शिव० समकितनय निज संपदा सा० प्रगटे ज्ञान झमाल हो शिव० ७

---

१ द्वेषरूपी हाथी रागरूपी सिंह २ मोठ कषायो ३ कामरूपी सेनापति ४ मिथ्यात्वमोहनीय, समकितमोहनीय मिश्रमोहनीय ए मोहनीयना त्रण भेद छे ५ हास्य आदि नव नोकषाय ६ मोहराजा ७ मोहना पुत्र रागद्वेषे जगतने बेजार कर्यु छे ८ मर्यादा ९ क्षपकश्रेणीरूपी हाथीओनो समूह ते अरिहंत-पणाना हलकारा छे १० ज्ञानरूपी तरवार मारा हाथमां आपो तो क्षणमा शत्रुनो नाश करुं ११ आपनी करुणा नजर होय तो, शत्रुनी सेना भागी जाय

श्री पार्श्वनाथजीनु स्तवन

जबूद्वीपे पोतनपुरमा, अरविंद नामे राजा रे, तास पुरोहित विश्वभूति द्विजसुत मरुभूति गुण ताजा रे, पास जिनेश्वर पुरिमाणी १ श्रावक धर्म आराधी अते कमठे शिलातले चाप्यो रे, कुञ्जर होय स्त्री तस वरणा, करणी मोहे व्याप्यो रे, पास० २ अरविंद राजऋषि देखीने, जातिस्मरण पाम्यो रे, कमठ कुक्कड अहि डस्यो सहसारे सुर थाम्यो रे पास० ३ महाविदेहे विद्युवगति नृप, तिलकावती तस राणी रे, किरणवेग सुत सयम लेई, लहे अच्युत सुर प्राणी रे पास० ४. पूर्व विदेहे, विद्याधरवर, सयम मारग साधे रे, कमठ जीवे सिंह ते हणियो मध्य ग्रैवयके सुर लाधे रे पास० ५ सुवर्णबाहु चक्री सुविदेहे, प्रथम जिन पद बाधे रे, कमठ जीवे व्याघे ते हणियो, प्राणते सुर सुसमाधे रे पास० ६ अश्वसेन नृप वामानदन, नयरी वाराणसी जेहनी रे, नील वरण अहि लछन दीपे, आण वहु हु तेहनी रे पास ० ७ पास जिनेश्वर त्रेवीशमो जिन ज्ञानविमळ गुण भरिया रे, बाह्य ग्रही सेवकने तारे, अपरपार भव तरियो रे पास ०८.

श्री महावीर स्तवन

वीर जिनेश्वर चरणे लागु, वीरपणु ते मागु रे, मिथ्या मोह तिमिर भय भाग्यु जित नगारु वाग्यु रे वीर० १ छउमत्थ वीर्य लेश्या सगे अभिसंधिज मति अगे रे, सूक्ष्म स्थूल क्रियाने रगे योगी थयो उमगे रे वी० २ असख्य प्रदेशे वीर्य असंख्यो योगे अस-

---

१ हाथी २ हाथणी ३ साप ४ छद्मस्थना इरादा पूर्वकना प्रयत्नथी जे उत्पन्न थायें ते अभिसधिज वीर्य लेश्याना उदयथी रागी आवी आत्मा मोहजन्य उल्लासथी मन आदि मारफत बल्यान् बन्यो होय छे ५ आत्मिक वीर्यना असख्य प्रदेशु योगस्थानक होय छे, ते असख्याता कह्या छे

रिन करो रे, पुद्गल गण तेणे लेशु विशेषे यथाशक्ति मति लेखे रे. वी० ३ उत्कृष्टे वीर्य निवेशे योगक्रिया नवि पेसे रे, योग तणी ध्रुवताने लेशे आतमशक्ति न खोसे रे वी० ४ कामवीर्य वशे जेम भोगी तेम आतम थयो भोगी रे, शूरपणे आतम उपयोगी थाय तेह अयोगी रे वी० ५ वीरपणुं ते आतम ठाणे जाण्युं तुमची वाणे रे ध्याने विज्ञाणे शक्ति प्रमाणे निज ध्रुव पद पहिचाणे रे. वी० ६ आलंबन साधन जे त्यागे पर परिणतिने भागे रे, अक्षय दर्शन ज्ञान वैराग्य आनन्दघन प्रभु जागे रे. वी० ७

श्री महावीरस्वामीनु स्तवन (हालरियुं)

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे, गावे हालो हालो हालरवाना गीत, सोना रुपा ने वळी रत्ने जडियु पारणुं, रेशम दोरी घुघरी वागे छुम छुम रीत, हालो हालो हालो हालो माराा नन्दने, १ जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसे अतरे, होशे चोवीसमो तीर्थंकर जिन परिमाण, केशी स्वामी मुखथी एवी वाणी साभळी, साची साची हुई ते मारे अमृत वाण हालो० २ चौद स्वप्न होवे चक्री के जिनराज, वीत्या बार चक्री नहि हव चक्रीराज,

---

¹, २ वीर्य उत्कृष्ट हद पहोंचा जाय छे त्यारे मनोयोगादिनी प्रवृत्ति सहन मन पडी जाय छे, अने सदा स्थिर थई जाय छे त्यारे आत्मा योगने पकडी शकतो नथी ३ वीर्यथी मधुनमथनमन्न भोगी भासवाय, तम आत्मबळथी मनोयोगादि द्वारा जगत स्वरूपमां भले आ मुग्धताथ भागे छे, पण दूषणन लागी आत्मामां तन्मय थाय तो परमात्मा बने छे ४ आत्मामां छ ते ५ तमारा वचनामृतथी ६ शास्त्रमां आधारथी यथाशक्ति आरूढ थई ते पोतानु आत्मबळ ओळखे ७ जीवात्मा वैराग्य मनना मन वचन कायानी [illegible] क्षायिक दर्शन ज्ञान चारित्रथी जे करे छे ते आनन्दमय आत्मा सदा जागता होय छे

जिननी पाम प्रमुना श्री केशी गणघार, तहने वचने जाण्या चोवी-
शमा जिनराज, मारी कूखे आव्या त्रण भुवन शिरताज, मारी
कूखे आव्या सघ तीर्थनी लाज, हु तो पुण्य पनोती इन्द्राणी थई
आज हा० ३ सुपनने मेहलो उपन्यो बेसु गज अंबाडीजे, सिंहासन
पर बेसु चामर छत्र धराय, ओ सहु लक्षण मुजने नदन ताहरा
तेजना, ते दिन संभारु ने आनन्द अग न माय हा० ४ करतल पग-
तल लक्षण ओक हजारने आठ छ, तहथी निश्चय जाण्या जिनवर
श्री जगदीश, नन्दन जमणी जंघे लछन सिंह विराजतो, मे तो पहेले
सुपने दीठो विसवा वीस हा० ५ नदन नवला वधव नदीव-
र्धनना तमे, नदन भोजाईओना दीयर छो सुकुमाल, हसशे भोजाईओ
कही दीयर माहरा लाडका, हसशे रमशे ने वली चूटी खणशे
गाल, हसशे रमशे ने वली ठूसा दशे गाल हा० ६ नन्दन नवला
चेडा राणाना भाणेज छो, नदन नवला पाचसे मामीना भाणेज
छो, नदन मामलीयाना भाणेजा सुकुमाल, हसशे हाथे उछाळी
कहीने न्हाना भाणेजा, आख्या आजी ने वळी टपकु करशे गाल,
हा० ७ नन्दन मामा मामी लावशे टोपी आगला, रत्ने जडीया
झालर मोती कसबी कोर, नीला पीला ने वळी राता सर्वे जातिना,
पहेरावशे मामी महारा नदकिशोर हा० ८ नदन मामा मामी
सुखडली सहु लावशे, नदन गूजुं भरशे लाडु मोतीचूर नदन
मुखडा जोईने लेशे मामी भामणा, नदन मामी कहेश जीवो सुख
भरपूर हा० ९ नदन नवली चेडा मामानी सातें सती, मारी
भत्रीजी ने बेन तमारी नन्द, ते पण गूजे भरवा लासणसाई लावशे,
तुमने जोई जोई होशे अधिको परमानद, हा० १० रमवा काजे
लावशे लाख टकानो घूघरो, वली सूडा मेना पोपट ने गजराज,
साहस हस कोयल तीतर ने वळी मोर ज्यु, मामी लावशे रमवा नद
तमारे काज, हा० ११ छप्पन कुमरीअमरी जल कळशे नवरावीया,

नन्दन तमने अमने केरी घरनी माहि, फल्नी वृष्टि कीधी योनार अेस्ने माडले, बहु चिरजीवो आशीष दीधी तुमने त्यादि हा० १२ तमने मेरु गिरिपर सुरपतिअे नवराविया, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय; सुखडा उपर वारु कोटि कोटि चन्द्रमा, वळी तनपर वारु ग्रहगणनो समुदाय, हा० १३ नंदन नवला भणवा निशाळे पण मूकशु, गजपर अंबाडी बेसाडी मोटे साज, पसली भरशु श्रीफळ फोफळ नागरवेलशु सुखडली लेशु निशाळीयाने काज, हा० १४ नंदन नवला मोटा थाशो ने परणावशु, वहुवर सरखी जोडी लावशु राजकुमार, सरखा वेवाई वेवाणोने पधरावशु वरवहू पोंखी लेशु जोई जोईने देदार, हा० १५ पीयर सासर माहरे बेहु पख नंदन उजला, मारी कूखे आव्या तात पनोता नंद, माहरे आंगण वूठा अमृत दूधे मेहुला, माहरे आंगणे फळीया सुरतरु सुखना कंद, हा० १६ इणीपरे गायु माता त्रिशलासुतनु पारणु, जे कोई गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज, बीलीमोरा नगरे वर्णव्यु वीरनु हालरु, जयजय मंगल होजो दीपविजय कविराज, हा० १७

श्री महावीरजिन स्तवन

आज जिनराज मुज काज सीध्या सवे तु कृपाकुंभ जो मुज तूठो कल्पतरु कामघट कामधेनु मिल्यो आंगणे अमियरस मेह वूठो ॥आज० १॥ वीर तु कुंडपुर नयर भूषण हुओ राय सिद्धार्थ त्रिशला तनुजो, सिंह लंछन कनकवर्ण कर सात तनु तुज समो जगतमा को न दुजो आज० २ सिंह परे अेकलो धीर संयम ग्रहे आयु बहोंतेर वर्ष पूर्ण पाळी, पुरी अपापाए निष्पाप शिववधू वर्यो तिहा थकी सर्व प्रगटी दिवाळी आ० ३ सहस तुज चौद मुनिवर महा संयमी साहुणी सहस छत्रीस राजे, यक्ष मातंग सिद्धायिका वर सुरी सकल तुज भविकनी भीति भांजे, आ० ४ तुज वचन राग सुख सागरे

झीलतो पीलतो मोह मिथ्यात्व वेली, आविओ भावियो धरम पथ हु हवे दीजिओ परम पद होई वेली आ० ५ सिंह निशि दीह जो हृदयगिरि मुज रमे तु सुगुणलीह अविचल निरीहो, तो कुमतरंग-मातगना यूथथी मुज नहीं कोई लवलेश बीहो आ० ५ शरण तुज चरण में चरणगुणनिधि ग्रह्या, भव तरण करण दम शरम राखो, हाथ जोडी कहे जसविजय बुध इस्यु देव निज भवनमां दास राखो आ० ७

श्री महावीरजिन स्तवन

वीरजी सुणो मोरी विनती, कर जोडी कहु मननी वात, बालकनी परे वीनवु, मारा स्वामी हो तमे त्रिभुवन तात वी० १ तुम दरिसण विण हु भम्यो, भवमाहिं हो स्वामी समुद्र मोझार, दुख अनंता में सह्या, ते कहेता हो किम आवे पार वी० २ पर उपकारी तु प्रभु, दुखभंजन हो, जगदीनदयाल, तेणे तोरे चरणे हु आवीयो, स्वामी मुजने हो निज नयणे निहाळ वी ३ अपराधी[1] पण उद्धर्यां, कहु केता हो तेरा अवदात, सार करो हवे माहरी, मन आणी हो स्वामी मोरी वात वीर० ४ शूलपाणी प्रतिबूझव्यो, जेणे कीधो हो तुजने उपसर्ग, डंस दीधो चडकोशीओ, जेने दीधो हो तुमे आठमो स्वर्ग वीर० ५ गोशालो गुनेही घणो, जेणे बोल्या हो तोरा अवर्णवाद, ते बळतो तें राखीयो, शीत लेश्या हो मूकी सुप्रसाद, वीर० ५ अे कुण छे इद्रजाळीयो, इम कहेतो हो आव्यो तुम तीर, ते गोतमने तुमे कीयो, पोतानो हो प्रभु मुख्य वजीर वी० ७ वचन उत्थाप्या ताहरा, जे झगड्या हो तुम साथे जमालि, तेहने पण पन्नर भवे, तें दीधो हो कृपाळ शिवगामी वीर० ८ अइमत्ता ऋषि जे रम्या, जळमांहि हो बांधी माटीनी पाळ, तरती मूकी काचली, तें तार्यो हो तेहने तत्काळ वीर० ९ मेघ कुमार ऋषि दूझव्यो, चित्त

---

१ अपराधी

चूक्या हो चारित्रथी अपार, अेषाढभूति तेहने, न दीधो हो चरणा अहार. वीं० १० राय श्रेणिक राणी चेलणा, रूप देखी हो चित्त चूक्या तेह, समवसरणे साधु साधवी, ते कीधा हो आराधक तेह, वीर० ११ चार वरस वेश्या घेर रह्या मूकी हो संजमनो भार, नंदिषेण पण उद्धर्यो, सुर पदवी हो दीधी अति सार, वीर० १२ पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो रह्या वर्ष चोवीस, ते पण आर्द्र कुमारने तें तार्यो हो, तोरी अेह जगीस वीर० १३ व्रत नहीं नहीं आखडी, नही पोसह हो आदर भाव, ते पण श्रेणिक रायने तुमे कीधो हो स्वामी आप समान वीर० १४ अेम अनेक उद्धर्या, कहुं केता हो करुणाकर साम। हुं प्रभु भजन हुं तारसो, तेने मारो हो नही ढीलनु काम वीर० १५ सुद्ध संजम तो नवि पले, नही तेहवो हो सुद्ध परिणाम ढाल, पण आधार अेक छे अेहवो, तारे हो धरु निशदिन ध्यान वी० १६ सद सर्दहत धरमनां, नहीं नांवे हो समविषम ठाम, गिरुआ गहेंजे गुण करे, स्वामी सारो हो मोरा वछित काम वी० १७ तुम नामे सुख संपदा, तुम नामे हो दुःख जाय दूर, तुम नामे वांछित फले, तुम नाम हो सुख आनंद पूर वीर० १८

कलश

इम नगर जेसलमेर मंडण, तीर्थंकर चोवीसमो, शासनधीर श्री सिद्धारथनंदन, संघता सुरतरु समो, जिन चंद त्रिशला मात नंदन सकलचंद कृपा निलो, वाचनाचारज समयसुन्दर संथुण्यो त्रिभुवन निलो १९

---

१ समोसरणमांना साधुजाती श्रेणिक अने चेलणानु रूप जोइ

श्रीमहावीर जिन स्तवन अथवा मुक्ति जवानी डिग्री

तीर्थंकर महावीरने कौशल गणधर माज, कानून प्ररूप्या है दया सब जीवन हितराज १ दान सियल तप भावना अमल खुलासा सार, जिण पुरुषे धारण किया पहोंच्या मुक्ति मझार २ चउद सहस साधु हुवा साध्वी छत्तीस हजार, लाखा श्रावक श्राविका पाम्या भव-जल पार ३

टाल

मेरी अपालन प्रभुजी कीजिये जिनशासननायक !
मुक्ति जाणेकी डिगरी दीजिये ॥

खुद चेतन मुदइ (वादी) बना है आठो कर्म मुदायला, दावा रस्ता मुक्ति मारगका धोखा देकर टालाजी जिन० १ तप कागद इस्टाम लियो तत्वाणा गिमा विचारी, मझाय ध्यान मजमुन बनाकर अरजी आन गुजारीजी जि० २ मैं जाता था मुक्तिमार्गको कर्मों ने आ घेरा, धोखा देकर राह भुलाया लूंट लिया सब डेराजी जि० ३ बहुत खराब किया कर्मोंने चोराशीक माहि, दुःख अनंता पाया भने अन्त पार कछु नाहीजी जि० ४ सच मिले वकिल कानुनी पच महाव्रतधारी, सूत्र देख मसुदा कीया तब मैं अरजी डारीजी जि० ५ पाचों समिति तीनों गुप्ति आठों गवाह बुलावो, शील अमसर बडा चोधरी उसको पूछ मगावोजी जि० ६ अरजी गुजरी चेतन तेरी हुवा सफाना जारी, हाजर आओ जवाब लिखावो लावो सबूती सारीजी जि० ७ आठो मुदायले हाजर आये मोह मुख्त्यार बुलाये, चार कपाय और आठो मदको साथ गवाहिमे लायेजी जि० ८

जवाब प्रतिवादिनो

` जिनशासननायक ! झूटा दावा है चेतन जीवको नि० ॥

हमने नही वहकाया इमको यह मेरे घर आया, करजा लेकर हममें ख्याया ऐसा फेरन मचायाजी नि ० विषयभोगमें राच्या चेतन घाटा नफा नही जाना, करजदार जब हारे गाया तव लाग्या पिछतानाजी जि १० हाजर खडे गवाह हमारे पूछिये हाल्न मारा, विना लिया करजा चेतनमें कैसा करे निनाराजी जि ११

जवाव वादीनो

चेतन कहे सतावी माहे सुणो शासनशिरदार ! इमानदार है गवाह हमारे जाणे सव ससारजी जि० मुक्ति० १२ मै चेतन अनाथ प्रभुजी कर्म फरेवी भार्या, जीव अनता राह चलतको लूट चोराशीम डारीजी जि १३ वडे वडे पडित इण लूटे ऐसा दम वतलाया, धर्म कहा और पाप कराया ऐसा करज वढायाजी जि १४ हिंसामाहे धर्म वताया तपस्या सेती डिगाया, इन्द्रियसुखमें मग्न वना कर झूटा जाल फेलायाजी जि १५ ऐसा करो इन्साफ प्रभुजी अपील हाने न पावे, हकरसी चेतनकी होय जन्ममरण मिट जाव जी जि १६

कोर्टनो इन्साफ

ज्ञान दर्शन करी मुन्सफी दोनों को समझाया, चेतनकी डिग्री कर दीनी कर्मोंका करजा वतायाजी नि १७ असल करज जो था कर्मोका चेतनमें दिलवाया, शुद्ध सजम जव करी जमानत आगेका दुख मिटायाजी नि १८ आस्रव छोड सवरको धारो तपस्यामे चित्त लावो, नक्की करज अदा कर चेतन सिधा मुक्तिको जावोजी जि १९ शुद्ध सयम जव करी जमानत चेतन डिग्री पाई, फागण सुद दशमी दिन मगळ सन ओगणीसे अठाईजी नि २०

श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन

कोडि गमे गुन्हा कर्याची विषय थयो लयलीन, ते बगसीस हवे करोजी अरिहंत वीर अधीन, जिनेश्वर! शासनना शणगार १ ओळगिया ओळभडेजी मत आगे मन रीस, जे पूंठे मरउया सदाजी जपे इम जगदीश जि० २ लळी लळी लटके पाये पडुंजी, वळी वळी विनवुं अेह, समकित चित्त तुमशुं मिल्योजी मत मूकावो तेह जि० ३ कहो केणी पेरे कीजिजेनी व्हालो तुं वीतराग, भगते काइ रिझियेजी लालचनो शो लाग जि० ४ ध्याता दाता धन तणोजी त्राता तुं जिनराय, केवळलक्ष्मी वर करोजी मेघविजय उवज्झाय जि० ५

श्री वीर प्रभुनुं स्तवन

वीर वडधीर महावीर मोटो प्रभु पेखता पाप संताप नाशे, जेहना नाम गुणधाम बहुमानथी अविचल लील हैये उल्लासे वीर० १ कर्म अरि जीपतो दीपतो वीर तुं धीर परिसह सहे मेरुतोले, सुगे वऋ परसियो रमत करी निरसियो हरसियो नाम महावीर बोले वीर० २ साप चंडकोशियो जे महारोषियो तोषियो तें सुधा-नयणपूरे, अेवडा अवगुण शा प्रभु मे कर्या ताहरा चरणथी राखे दूरे वीर० ३ शूलपाणी सुरने प्रतिबोधिओ चंदना चित्त चिन्ता निवारी, महेर धरी घेर पहोता जेहने तेह पाम्या भवदु:खपारी वीर० ४ गोतमादिकने जई प्रभु तारवा वारवा यज्ञ मिथ्यात्व मोटो, तेह अगियारने परिवारशुं बूझवी कापी रोग अज्ञान मोटो वीर० ५ हवे प्रभु मुज भणी तुं त्रिभुवन धणी दास अरदास सुणी सामुं जुव, आप पद आपता आपदा कापता ताहरे अछ ओछुं न होवे वीर० ६ गुरु गुणे राजता अधिक दीवाजता छाजता जेह कलिकालमांहे, श्री नीमविजय पयसेव नित्यमेव लही पामिजे समरस सुजस त्यांहे वीर० ७

श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन

वीर जिनेश्वर साहिब मेरा पार न लहुं तेरा, महेर करी टालो महाराजजी जनम मरणना फेरा हो जिनजी ! अब हुं शरणे आयो १ गर्भावास तणा दुःख मोटा ऊंधे मस्तके रहियो, मलमूत्रमांहे लपटाणो एहवो दुःख में सहियो हो जि० २ नरक निगोदमा उपनो ने चवियो सूक्ष्म बादर थइयो, वेधाणो सुईने अग्रभागे मान तिहा तिहा रहियो हो जि० ३ नरक तणी वेदना अति उह्मी सही ते न जावे नहु, परमाधार्मीने वश पडियो ते जाणो तुमे सहु हो जि० ४ तिर्यंच तणा भव कीधा घणेरा विवेक नहिय लगार, निशिदिननो व्यवहार न जाण्यो केम उतराये पार हो जि० ५ देवतणी गति पुण्ये हुं पाम्यो विषयारसमा भीना, व्रत पचख्खाण उदय नवि आव्या तानमानमांहे लीनो हो जि० ६ मनुष्य जन्म ने धर्मनामग्री पाम्यो छु बहु पुण्ये, रागद्वेषमांहे बहु भटियो न टली ममता बुद्धि हो जि० ७ एक कंचन ने बीजी कामिनी तेहशुं मनडुं बाधु, तेहना भोग लेवाने हुं शूरो केम करी जिनधर्म साधुं हो जि० ८ मननी दोड किधी अति झाझी हुं छु कोक जड जेहवो, कलिकाल कल्पमे जन्म गमायो पुनरपि पुनरपि तेहवो हो जि० ९ गुरु उपदेशमा हुं नथी भीनो नावि सद्दहणा स्वामी, हवे वडाई जोइये तमारी जिनमतमांहि अंतरगामी हो जि० १० चार गतिमांहे रडवडियो तोये न सीधा काज, ऋषभ कहे तारो सेवकने बाह्य ग्रह्यानी लाज हो जि० ११

श्रीषडावश्यक (प्रतिक्रमण) स्तवन

चोवीसे जिनवर नमुं चतुर चेतनके काज, आवश्यक जणे उपदिशिया ते गुणशुं जिनराय १ आवश्यकआराधिये दिवस प्रत्ये दो वार, दुरित दोष दूरे टले एह आतम उपकार २

उत्तीमत्थो चन्दन पटिक्रमण, काउस्सग पच्चक्खाण कर आतम निर्मळ एण ३ क्षेर जाय जिम जागुली मन्त्रतणे महिमाय, तेम आवश्यक आदये पातक दर पळाय ४ भार तजी जिम भारवही रहेजे हळवो थाय अतिचार आलोवता जन्मदोष तिम जाय ५

ढाळ पहेली

पहेलु सामायिक करो रे प्राणी ममता भाव, राग द्वेष दूरे करो रे आतम एह स्वभाव रे प्राणी समता छे गुण गेह, ए तो अभिनव अमृत मेह रे प्रा० आपोआप विचारिये रे रमिये आप स्वरूप, ममता जे परभावनी रे विषयो ते विषरूप रे प्रा० २ भवभय मेहली मृकीया रे धन कुटुंब सजोग, वार अनती अनुभव्या रे सधि सजोग वियोग रे प्रा० ३ शत्रुमित्र जगको नही रे सुखदुःख मायाजाळ, जो जागे चित्त चेतना रे तो सवि दुःख विसराल रे प्रा० ४ सावद्य योग सवि परिहरी रे एह सामायिक रूप, हुवा एह परिणाम थीरे सिद्ध अनत अरूप रे प्रा० ५

ढाळ बीजी

आदीश्वर आराधीये माहेलडी रे, अजित नाथ भगवत तो, सभवनाथ सोहामणा माहेल्डी रे, अभिनंदन अरिहत तो, सुमति पद्मप्रभ पूजीये सा०, समर स्वामी सुपास तो, चन्द्रप्रभ चित्त धारीये सा० सुविधि हृदिवास तो २ शीतळ भवळ दिनमणि सा०, श्रीपूरण श्रेयास तो, वासुपुज्य सुर पूजीया सा०, विमळ विमळ प्रशस तो, करु अनत उपासना सा० धर्मशर्म धुर धीर तो, शाति कुथु अर मल्ली नमु मुनिसुव्रत वड्डवीर तो ४ चरण नमु नमीनाथना सा० नेमीश्वर करु ध्यान तो, पार्श्वनाथ प्रभु पूजीये सा० वन्दू श्रीवर्धमान तो ५ ए चोवीसमे जिनवरा सा०, त्रिभुवन करण उद्योत तो, मुक्तिपथ जेणे

दाखव्यो सा० निर्मळ केवळ ज्योत तो ६ समकित शुद्ध एहथी होये भा० लीजे भवनो पार तो बीजु आवश्यक इश्यु सा० चउवीसत्थो सार तो ७

ढाळ त्रीजी

वे कर जोडी वे कर जोडी गुरु चरणे दिओ वांदणा रे आवश्यक पचवीस धारो रे धारो रे दोष बत्रीस निवारिये रे १ चार वार चार वार गुरु चरणे मस्तक नामिये रे, बार क्रियावर्त राखो रे रा० टाळी तेत्रीस आशातनारे २ गीतार्थ गीतार्थ गुण गिरुआ गुरुने वांदता रे, नीच गोत्र क्षय थाय थाये रे था० उच्च गोत्रनी अर्जना रे ३ आण उल्लघे आण० कोई न जगमा तेहनी रे परभव लहे सौभाग्य भाग्य रे भा० दीपे जगमा तेहनु रे ४ कृष्ण राये कृ० मुनिवरने दीधा वांदणा रे, क्षायिक समकित सार पाम्या रे पा० तीर्थंकर पद पामशे रे ५ शीतलाचारज शी० जिम माले मह जगे र द्रव्य वांदणा दीध भाने रे भा० देता वळी केवळ लह्यु रे ६ एह आवश्यक त्रीजु जाणजो रे गुरुवन्दन अविकार करजो रे करजो रे विनय भक्ति गुणवतनी रे ७

ढाळ चोथी

ज्ञानादिक जिनवरे कह्या ए जे पाचे आचार तो दोय वार ते दिन प्रत्ये ए पडिक्कमिये अतिचार, जयो जिन वीरजीए १ आलोईने पडिक्कमिये मिच्छा दुक्कड दय तो, मन वच काय शुद्ध करी ए चारित्र चोख्खु करेय ज० २ अतिचार शल्य गोपवे ए न करे दोष प्रकाश तो, मच्छीमार तणी परे ए ते पामे परिहास ज० ३ शल्य प्रकारो गुरु मुखे ए होय तस भाव विशुद्ध तो, ते हुशियार हारे नही ए करे कर्मशु जुद्ध ज० ४ अतिचार एम पडिक्कमिये करो धर्म निःशल्य तो जितपताका तेम वरी ए जेम जग फल्ही मल्ल ज० ५ "वदित्तु" विधिशु कह्यो ए तेम पडिक्कमणा सूत्र तो, चोथु आवश्यक इश्यु ए पडिक्कमणा सूत्र पवित्र ज० ६

ढाळ पाचमी

वैध विचक्षण जिम हरे ए पेहला साल (शल्य) विकार तो, दोष शेष पछी रुझवा ए करे ओसड उपचार ज० १ अतिचार व्रण रुझवा ए काउसग्ग तीम होय तो, नव पल्लव संजम हुवे ए दूषण न रहे कोय तो ज० २ कायानी थिरता करी ए चपल चित्त करे त्याग तो वचनजोग सवि परिहरी ए रामय आतमराम ज० ३ सास उ-सासादिक कह्या ए जे सोळह आगार तो, तेह विना सवि परिहरो ए देह तणो व्यापार तो ज० ४ आवश्यक ए पांचमुं ए पांचमी गति दातार तो, मन शुद्धि आराधीये ए लहिये भवनो पार तो ज० ५.

ढाळ छठ्ठी

सुगुण पच्चक्खाण आराधजो, एह छे मुक्तिनु हेत रे, आहारनी लालच परिहरो चतुर तु चित्तमां चेत रे सुगुण० १ साल काढयु व्रण रुझव्युं गई वेदना दूर रे, पछी भला पथ्य भोजन थकी वधे देह जेम नूर रे सुगुण० २ नेम पडिकमण काउसग्गथी गयो दोष सवि दुष्ट रे, पछी पच्चक्खाण गुण धारणे होय धर्मतनु पुष्ट रे सुगुण० ३ एहथी कर्मनादव टळे एह छे संवर रूप रे, आविरति रूपथी उद्धरे तप अकल्क स्वरूप रे सुगुण० ४ पूर्व जन्मे तप आचर्यो विशल्या थई नार रे, जेहना न्हवणना नीरथी गमे सकल विकार रे सुगुण० ५ रावणे शक्तिशस्त्रे हण्यो पड्यो लक्ष्मण सेज रे, हाथ अडता सचेतन थयो विशल्या तप तेज रे सुगुण० ६ छठ्ठु आव श्यक जे कह्यु एहवु ते पच्चक्खाण रे, छए आवश्यक जेणे कह्या नमु तेह जगभाण रे सुगुण० ७

तपगच्छ नायक मुक्तिदायक श्रीविजयदेव सूरीश्वरो, तस पट्टदीपक मोहजीपक विजयप्रभसूरि गणधरो १ श्रीकीर्तिविजय उवज्झाय सेवक विनयविजय वाचक कहे, षड् आवश्यक जेह आराधे तेह शिवसंपद लहे २

ज्ञानपदपूजा स्तवन

ज्ञानपद भजिये रे जगत सुहकरु पांच एकावन भेदे रे, सम्यग् ज्ञान ने जिनवरे भाखीयु जडता जननी उच्छेदे रे- ज्ञान० १ भक्ष्याभक्ष्य विवेचन परगडो खीरनीर जेम हंसो रे, भाग अनंतमो अक्षरनो सदा अप्रतिपाति प्रकाश्यो रे - ज्ञान० २ मनथी न जाणे रे शुभकरण विधि तेहथी शुभ केम थाशे रे, ज्ञान भण्यो रे प्रथम छे जीवमा सद्भाव विकाशे रे - ज्ञान० ३ वचन नाणु रे लोकनयन रहे अन्योअन्य पुलाय रे, एकान्तवादी रे तत्त्व पामे नहीं स्याद्वाद रस समुदाय रे - ज्ञान० ४ ज्ञानभर्यो भरतादिक सब थयाँ ज्ञान सकल गुण भूप रे, ज्ञानी ज्ञान तणी परिणति थकी पामे मनइच्छ फूल रे - ज्ञान० ५ अल्पागम जड उग्र विहार करे विचरे उपमदेश रे उपदेश माळामा किरिया तेहनी कायक्लेश तम हुंते रे - ज्ञान० ६ जयत भूपो रे ज्ञान आराधतो तीर्थंकर पद पामे रे, रवि शशि मेह परे ज्ञान अनंत गुणो विजय लक्ष्मी हित नामे रे - ज्ञान० ७

ब्रह्मचर्य पदपूजा (स्तवन).

ब्रह्मचर्य पद पूजीये व्रतमा मुकुट समान हो विनीत, शीयल सुरतरु रागरा कही छे नव वाड हो विनीत नमो नमो यमवयधारीण १ कृत कारित अनुमति तजे दिव्य औदारिक काम हो विनीत, त्रिकरण योगे ए परिहरो भद अटार गुणधाम हो विनीत नमो० २ दश अवस्था कामनी तेवीस विषय हरत हो विनीत, अढार सहस्र शीलांग रथे बेठा मुनि विचरंत हो विनीत नमो० ३ द्रव्यथी भाव त्याग तजे भावे पर परिणति त्याग हो वि० एम समाहिअन सेवता त्रीस अब्रह्मन त्याग हो विनीत नमो० ४ मने मन वचन चैत्य स्वाय हो वि० तेहथी ब्रह्मन धारता

समुदाय हो विनीत नमो० ५ चोरासी सहस मुनि दाननु गृहस्थ भक्तिफळ जोय हो वि० त्रिया गुणठाणे मुनि वडा भावतुल्य नहीं कोय हो वि० नमो० ६ दशमे अगे वखाणीयो चन्द्रवर्मा नरींद हो वि० तेम आराधी प्रभुता वर्यो सौभाग्यलक्ष्मी सूरींद हो वि० नमो० ७

सामायिक पूजा (स्तवन)

हे सुखकारी आ संसार थकी जो मुजने उद्धरे, हे उपकारी ए उपकार तुमारो वंदिय न विसरे, नवमे सामायिक उच्चरिये अमे दर्पणनी पूजा करिये निज आतम रूप अनुसरिये समता सामायिक संवरिये हे सुख० १ सामान्ये ज्या मुनिवर माळे अतिचार पाच एहना टाळे साधु परे जीवदया पाळे निज घर चैत्ये पोषधशाळे हे सुख० २ राजा मंत्री ने व्यवहारी घोडा रथ हाथी शणगारी वाजित्र गीत ने आगळ पाळा परशसे खट दर्शन वाळा – हे सुख० ३ एणी रीते गुरु पासे आवी करे सामायिक समता लावी घडी बे सामायिक उच्चरिये वळी बत्तीस दोषने परिहरिये – हे सुख० ४ लाख ओगणसाठ बाणुं कोडी पचविश सहस नवसे जोडी पचवीश पल्योपम झाझेरु ते बाधे आयु सुर केरु – हे सुख ०५ सामायिक व्रत पाळी जुगते ते भव धनमित्र गयो मुगते आगम रीते व्रत हु पालु पचम गुणठाणु अजवाळुं – हे सुख० ६ तुमे ध्येयरूपे ध्याने आवो शुभवीर प्रभु करुणा लावो नहीं पार अचळ सुख साधते घडी दोय मळो जो एकान्ते – हे सुख० ७

तपपद पूजा (स्तवन)

तपपदने पूजीजे हो प्राणी तप० सर्व मंगळमा पहेलु मंगळ कर्म निकाचित टाळे क्षमा सहित जे आहार निरीहता आतम ऋद्धि निहाळे हो प्रा० त० १ ते भव मुक्ति जाणे जिनवर त्रण चउ ज्ञाने नियमा तोय तप आचरणा न मूके अनत गुणो तप महिमा हो प्रा०

त० २ पीठ अने महापीठ मुनीसर पूर्व भव मद्दि जिमनो मान्यो लक्ष्मणा तप नावि फळियो मेल गयो नावि मननो हो प्रा त० ३ अग्यार लाख ने ऐंशी हजार पाचशे पाच दिन ऊणा नन्दन ऋषिये माम समण करी निधा काम सपुन्ना हो प्रा० त० ४ तप वरिया गुनरत्न सवत्सर साधक क्षमाना दरिया चौद हजार साधुमां अधिक धन्नो तप गुण भरिया—हो प्रा० त० ५ पद् भेद बाहिर तपना प्रकाशना अभ्यतर पद् भेद बार भेदे तप तपता निर्मळ सकल अनेक उमेद हो प्रा० त० ६ कनककेतु एह पदने आराधी साधी श्रातम काज तीर्थंकर पद अनुभव उत्तम सौभाग्य लक्ष्मी महाराज—हो प्रा० त० ७

तपपद पूजा (स्तवन)

दृढप्रहारी हत्या करी बांधा कर्म अघोर,
पण तपना प्रभावथी कापया कर्म कठोर ॥ १॥

ढाळ पहेली

तप करिये समता राखी घटमा, तप बाह्य अन्तर ले करमा अहिये कर्म अरि भटमा तप० १ साधव पवित्र मंत्र जे माने ते मरदार बहु जटमा — तप० २ एक अधरीय सनिधाने तरता आये भवसायर तटमा — तप० ३ कार उर्ध्वमें कर्म सगाविए जीव पड्यो बहु खटपटमा — तप० ४ मन विरोग करण ए करण जेणे नवि भमिए भवतटमा — तप० ५ दीप पुराण ते कर्म निर्जरे एह सम नहीं साधन घटमा — त० ६ ध्यान तपे सवि कर्म जलाई शिवबधु वरिये झटपटमा — त० ७

ढाळ चीजी

विघ्न टळे तप गुण थकी, तपथी जाय विकार;
प्रशंस्यो तप गुण थकी, वीर धन्नो अणगार ॥ १ ॥

तपस्या करता हो डंका जोर वजाया हो, उजमणो तप केरो करता शासन सोह चढाया हो, वीर्य उल्लास वधे तेणे कारण कर्म निर्जरा पाया तप० १ अड सिद्धि अणिमा लघिमादिक तिम लब्धि अठ्ठावीसा हो, विष्णुकुमारादिक परे जगमा पामत जयत जगीशा - तप० २ गोतम अष्टापद गिरि चढिया तापस आहार कराया हो, जे तप कर्म निकाचित तपवे क्षमा सहित मुनिराया - तप० ३ साडा बार वर्ष जिन उत्तम वीरजी भूमि नवि ठाया हो, घोर तपे केवळ लह्या तेहना पद्मविजय नमे पाया - तप० ४

आठमनु स्तवन

वीर जिनेश्वर इम उपदिशे साभळो चतुर सुजाण रे। मोहनी नींदमा का पडो, ओळखो धर्मना ठाण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, परिहरो विषय कषाय रे। बापडा पच परमादथी का पडो कुमतिमा धाय रे ॥ वी० २ ॥ करी शको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे। सर्व काळे करी नवि शको तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वी० ३ ॥ जुजुआ पर्व षट्ना कह्या फळ घणा आगमे जोय रे। वचन अनुसार आराधता, सर्वथा सिद्धि फळ होय रे ॥ वी० ४ ॥ जीवने आयु परभव तणु, तिथि दिन बध होय प्राय रे। तेह भवि एह आराधता, प्राणियो सद्‌गति जाय रे ॥ वी० ५ ॥ तेहने अष्टमी फल तिहा, पूछे गौतम स्वाम रे। भविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रभु ताम रे ॥ वी० ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, सपजे आठनी वृद्धि रे। बुद्धिना आठ गुण सपजे एहथी आठ

गुण सिद्धि रे ॥ वी० ७ ॥ लाभ होय आठ पडिहारनो[1] आठ पवयण फल होय रे । नाश आठ करमनो मूळथी, अष्टमीनु फल जोय रे ॥ वी० ८ ॥ आदिजिन जन्म दीक्षा तणी, अजितनु जन्म कल्याण रे । च्यवन संभवतणु एह तिथे, अभिनन्दन निरवाण रे ॥ वी० ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमिया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे । पास जिन एह तिथे सीधला, सातमा जिन च्यवन जाण रे ॥ वी० १० ॥ एह तिथि साधतां राजियो, दडवीरज लही मुक्ति रे । कर्म हणवा भणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ ११ ॥ अतीत अनागत काळना, जिनतणा केइ कल्याण रे । एह तिथे वळी घणा संयमी, पामशे पद निर्वाण रे ॥ वी० १२ ॥ धर्मवासित पशु पंखिया, एह तिथि करे उपवास रे । व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अभ्यास रे ॥ वी० १३ ॥ भाखियो वीर आठम तणो, भविक हित एह अधिकार रे । जिन मुखे उचरे प्राणिया पामशे भव तणो पार रे ॥ वी० १४ ॥ एहवी सप्तमी सवि लहे, टळे कष्टनी कोड रे । सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कान्ति कर जोड रे ॥ वी० १५ ॥

कळश

इम त्रिजग भासन अचल शासन वर्धमान जिनेश्वरु ।
बुध प्रेम गुरु पसाय जेथी संथुण्यो अलवेसरु ।
जिन गुण प्रसंगे भण्यो रंगे स्तवन ए आठम तणो ।
जे भविक भावे सुणे गावे कांति सुख पावे घणो ॥

श्री सिद्धाचलजीनु स्तवन

मघपति भरत नरेसर, शत्रुंजयगिरि आवे रे लोल, अहो शत्रुंजय गिरि आवे रे लोल, सोवन देरासर वळी, आगळ पधरावे रे लोल । अहो० ॥ वासव प्रमुख सुरा बहु साथे तिहां सोहे रे लोल अहो० ॥

---

१ अशोक वृक्षादि आठ प्रातिहार्यो   २ प्रवचन माता

वश इक्ष्वाकु सोहावीओ त्रिभुवन मन मोहे रे लोल । अहो० सघपति० ॥ १ ॥ बाहुबळ आदे करी, क्रोडी मुनिवर मळिया रे लोल, अहो० । ज्ञानी गणधर जाणीये, नमि विनमि बळीया रे लोल। अहो० । सोमयशा आदि दई, महीधर रथवाळा रे लोल । अहो० । सामत मत्री अधिपति मानी मछराळा रे लोल अहो० सघपति० ॥२॥ श्रावक ने वळी श्राविका, वर अणुव्रतधारी रे लोल । अहो० । कनकसेनादिक साधवी, व्रतिनी व्रतधारी रे लोल अहो० । चतुरग सेनाए परिवर्या, छत्र चामर धारी रे लोल । अहो० ॥ अढळ्ख दानने वरसता जेम सजल जलधारा रे लोल अहो० सघ० ॥ ३ ॥ साथे सुभद्रादिक बहु, प्रवर पट्टराणी रे लोल । अहो० । इद्रमाळ पहेरे तिहा, धन्य धन्य अवतारा रे लोल । अहो० । ओछवशु गिरिराजनी, करे भक्ति अपारा रे लोल । अहो० । शिखर शिखर विहु काळना, करे जिनविहारा रे लोल ॥ अहो०॥ सघपति० ॥ ४ ॥ गणधर नाभी साथेय छे, बहु मुनि आधारा रे लोल । अहो० । बिंब प्रतिष्ठा ते करे, विधिशु जयकार रे लोल । अहो० । सघपति तिलक सोहावियु, इद्रादिक सारे रे लोल । अहो० । थापी थापे यश धणो, ज्ञान विमल गम भाग रे लोल । अहो० । सघपति० ॥ ५ ॥

श्री सिद्धाचळजानुं स्तवन

सिद्धाचळ शुद्ध सुहावे, अनन्त अनन्त कहावे । पन्नर भेदे सिद्ध जावे, गुण अगुरुलघु नीपजावे रे । विमलाचल वेगे वधावो, जो होवे शिवपुर जावो रे । विम० । [1] गिरिराजना गुण गावो रे, विम०॥ १॥ राजा जितारि अभिग्रह लीधो, दिन सातमे अहारज कीधो, शुक राजाए राज्य ते लीधु, शत्रुजय नाम ते दीधु रे ॥ विम० ॥ २॥ देवदानव इण गिरि आवे, जिनराजनी पूजा रचावे । शुजयमा नाच नचावे, योगावञ्चक फल पावे रे ॥ विम० ॥ ३ ॥ विधा-

---

१ खाली न जाय एवो सुवाधु महात्माओनो सजोग

चारण मुनिवरिया, फल जल लई सचरिया। [illegible] भवभ्रात,
देखी हेमगिरी हेठा उतरिया रे॥ विम० ४॥ [illegible] गुरु० ४॥
जिनराजने शीश नमावे। दश मांये मावन [illegible] ानी परे ते
स्थानके आवे रे॥ विम० ५॥ ध्यान [illegible] ग्ये दश
गुण तेहथी लहिए। ससारन तीरे रहिए, [illegible] यो घणो रे,
रे॥ विम०॥ ६॥ सहु तीर्थनो ए राजा, [illegible] ठ मार्या रे,
न्हाता आनद माना फूकडो हुआ चन्द्र राजारे [illegible] निकट नहीं
भेटण धावे, गुजरातना संघममावे। [illegible]
प्रेमी वधाव्यो वानेरे॥ विम० ८॥ [illegible]
मागसर वदि तेरस दिवसे भेट्या [illegible]
पार उतरशे रे॥ विम० ९॥ गिरि [illegible]
वीर केसरिया। जाय केसरी [illegible] ॥ दोष अमारडो,
या रे॥ विम० १०॥ गाय भवतना [illegible] घणा, बहु भव
भव त्रीजे शिवपुर जावे, श्री गुरु वीर [illegible] ाऱ्या॥ पर० २॥
काम कीधा घणा,
नारकीना दुःख
धा घणा, बहु जीव
[illegible] पाप॥ पर० ४॥
न माया लोभ मन

वर्धमान जिनने जिनजी [illegible]
विण हु भम्यो, चिहु गतिमा [illegible]
दुःख दोहिला, में सह्या [illegible]
एकविध भगवतजी॥ [illegible]
मोसारजी, कठिन कुभायामा [illegible] ाला
शीतल योनी ऊपने, गहेहुया [illegible]
पीच वर्षा बहु तामो [illegible] ॥॥२॥
केणी दिशि नाशीजी, परवश [illegible] कल्प निरि
॥५॥ चद्र नहीं सूर० [illegible] ऊनो अति

अतिही निहामणा, फरस जिस्यो सुर धारोजी ॥ ६ ॥ नवीन नर वमा उपज्या, जाणे असुर तिवारोजी, कोप करी आवे तिहां, हाथ धरी हथियारोजी ॥ ७ ॥ करे कातरणी देहना, करता गडोगडजी, रीव अतीव करे बहु, पामे दुःख प्रचंडजी ॥ ८ ॥

ढाळ २ जी (वैरागनी).

भाजे काया भाजतो रे मारे फासा माय, ऊंधे माथे अगन दैई ऊंचा बाधे पाय रे जिनजी साभळो ॥ कडवा कर्म विपाक रे जिनजी० ॥ १ ॥ वैतरणी तटिनी तणा रे, जळमा नाखे रे पाम, करी कुहाडो तरु परे रे, छेदे अधिक उल्लास रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ ऊचा जोयण पाचसे रे, उछाळे आकाश, श्वान रूप करडे तिहां रे, मृग जिम पाडे पाश रे ॥ जिन० ३ ॥ पदर भेदे सुर मळी रे, करवत दीए रे कपाल, आरोपी शूळी शिरे र, भाजे जिम तरु डाळ रे ॥ जिन० ४ ॥ बोळे ताता तेलमा रे, तळी करी काढे रे ताम, वळी भोभरमा सेपवे रे, किस्या तास विराम रे ॥ जिन० ५ ॥ खाल उतारे देहनी रे, आमिष १ीण रे आहार, बहु अरडाटा पाडता रे तनु वन्हे घाले घोर रे ॥ जिन० ६ ॥

ढाळ ३ जी राग मारु

तापकरी ते भूमिका रे, वनशु शीतल जाण, आवी बेसे तरुवर छायडे रे, पडता भाजे प्राण, चतुर मत राचजो रे ॥ १ ॥ विरुआ विषय विलास, सुख थोडा दुःख बहुला जेहथी रे लहिये नरक निवास ॥ चतुर० २ ॥ कुभी माहे पाक करे देहनो रे, तल जिम घाणीमायि, पीली पीलीने रस काढे तेहनो रे, महेर न आवे ताय

१ खार — मीठु

॥चतुर० ३ ॥ नारकी जाय श्रीनी नरकनी रे मन धरता भयभ्रात, पडे परमाधामी सुर मारे रे, वेदा करे पूतात ॥ चतुर० ४ ॥ खल उतारे वेहनी ग्यातनुं रे, ग्यार भरे तस ग्यास, पुरानी परे ते खडखडे रे मेहर न आवे नाम ॥ चतुर० ५ ॥ दान वधे दिये दस आगनी र भरी फरी लागे पाय, वेदना महता काल गयो घणो रे, हवे सही न जाय ॥ चतुर० ६ ॥ जिहां जाय तिहां उठे मारवा र, कोई न पूरे मार, दु ग्गसर रोवे शोर करे घणा रे, निवट नहीं आधार ॥ चतुर० ७ ॥

ढाळ ४ थी

(रे जीव जिन धर्म कीजिये-ए देशी)

परमाधामी सुर कहे, साभर तु भाई कीया दोप अमारडो, निज वैर कमाई ॥ पर० १ ॥ पाप कर्म कीधा घणा, बहु भव विराण्या, पीडा न जाणी परतणी, झूठा मुखे भाख्या ॥ पर० २ ॥ चोरी कीधा धन पारका, सेवी पर नार, आरंभ काम कीधा घणा, परिग्रह नहीं पार ॥ पर० ३ ॥ निशिभोजन कीधा घणा, बहु जीव संहार, अभक्ष्य अथाणा आचर्या, पातक नहीं पार ॥ पर० ४ ॥ मातपिता गुरु ओळख्या, कीधो कष्ट अपार, मान माया लोभ मन मर्या मति हीण गमार ॥ पर० ५ ॥

ढाळ ५ मी

इम कहेता सुर वेदना ए, घटीय उदीर तेह तो, शीला कन्याला वज्र तणा ए, तिहां पछाडे जेह तो ॥१॥ सुधा घणी लागी सह ए, सुख-मा घाले नाम तो, अग्निवर्णी करी पूतळी ए, आलिंगन दे जाम तो ॥२॥ मयल वचन कीधा मरे ए, जीभ करे शतखंड तो, ए फळा निशि भोजन तणा ए, जाणे पाप अखंड तो ॥ ३ ॥ अति उनो अति

आकरो ए, आणी ताती तीर तो, ते घाले तस आसमा ए, धाने भरे मथीर तो ॥ ४ ॥ काल अधिक वीहामणा ए ते झुडक मठाण तो, दीसे दीन दयामणा ए, थली निराधार प्राण तो ॥ ५ ॥

ढाळ ६ वी

एणी परे बहु वेदन सही, चित्त चेतो रे, वसतो नरक मोझार चतुर चित्त चेतो रे। ज्ञानी विण जाणे नहीं, चित्त चेतो रे, कहेता नावे पार चतुर चित्त चेतो रे ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो चि०, लाध्यो नरभव सार ॥ चतुर० ॥ पाम्यो एळे म हारजो चि०, करजो एह विचार ॥ चतुर० २ ॥ सूधो सजम आदरो चि०, टाळो विषय विकार चतुर० ॥ पाचे इंद्रिय वश करो चि०, जिम होय छूटक वार ॥ चतुर० ३ ॥ निंदा विकथा परिहरो चि० आराधो जिन धर्म ॥, चतुर० ४ ॥ समकित रत्न हैये धरो चि० भाजे मिथ्या भ्रम ॥ चतुर० ५ ॥ वीर जिणद पसाउले चि० अहिपुर नगर मोझार। चतुर० । स्तवन रच्यो रळियामणो चि० परम कृपाळ उदार ॥ चतुर० ६ ॥

अथ श्री समकित सित्तरीनुं स्तवन

ढाळ १ ली

(ते मुज मिच्छामि दुकड ए देशी)

साभळ रे तु प्राणिया, सद्गुरु उपदेशो, मानव देह दोहिलो लह्यो, उत्तम कुल एसो ॥ सा० १ ॥ देवतत्त्व नवि ओळख्यो, गुरुतत्त्व न जाण्यो, धर्मतत्त्व न सद्दह्यो, हियडे ज्ञान न आण्यो ॥ सा० २ ॥ मिथ्यात्वी सुर जिन प्रत्ये, सरखा करि जाण्या, गुण अवगुण नावि ओळख्या, वयणेथी वखाण्या ॥ सा० ३ ॥ देव थया

माहे महा, पामे रहे नारी, काम तणे वश जे पशु, अवगुण अधिकारी ॥ सा० ४ ॥ केइ क्रोधी देवता, वळी कोमना वाह्या, केई मोहथी मोह्या, हथियार सवाया ॥ सा० ५ ॥ क्रूर नजर जेहनी घणी देखता डरीए, मुद्रा जेहनी एहवी देखी गु तरीये ॥ सा० ६ ॥ आठ कर्म सावळ जहवा, मने मनाये भोळावे, जन्म मरण भव देखीये, पाम्या नहीं पारो ॥ सा० ७ ॥ देव थई नाटक करे, नाचे जणजण आगे, वेश करी रामकृष्णने वळी भिक्षा मागे ॥ सा० ८ ॥ मुखे करी वाये वांसळी, ... पापा, मावता भोजन करे, एहवा भ्रम लागा ॥ सा० ९ ॥ ... दैत्य महारवा, थयो उन्मयतो, हरि हिरण्यकशिपु मारीने, ... सिंह थरवनो ॥ सा० १० ॥ मत्स्य कच्छ पाच अवतार ... असुर विदार्या, दश अवतारे जूजूआ, दश दैत्य महादा ... मान मूढ मिथ्यामति, एहवा पण देवो, करी करी अवतार ... कमनी टेवो ॥ सा० १२ ॥ स्वामी सोहे जेहवो, ... एम जाणीने परिहरो, जिनहर्ष विचारो ॥ सा ११ ॥

ढाळ २ जी

(ओधव माधवने कहेनो–ए देश)

जगनायक जिनराजने, नागविये सही ... सुरपति सेव ॥ जग० १ ॥ क्रोध मान माया ... रति अरति वेद नहीं, छोड्या मस्थान ॥ जग० ... नहीं, नहीं वयण अलीक, मत्सर मद भय ... ॥ जग० ३ ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, नहीं ... अढार ए, नहीं जेहने अग ॥ जग० ४ ॥ ... श्री अरिहंत, निश्चल लोयण जेहना, ... जिन मुद्रा जिनराजनी, दीठे परम ...

तपे ज्ञान उजास ॥ जग०६ ॥ गति आगति सवि जी
लोकालोक, मन पर्याय सवि तणा, केवल ज्ञान आलोक।
मूर्ति श्री जिनराजनी, समताने भडार, शीतल नयण
नहीं वाक लगार ॥ जग०८ ॥ हसत वदन हरखे हेयु
जिनराय, सुदर छबी प्रभु देहनी, शोभा वरणी न जाय ॥
अवरतणी एहवी छबी, किहा एम दिसत, देव तत्त्व
जिन हर्ष कहत ॥ जग १० ॥

ढाळ ३ जी (जतणीनी देशी)

श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, कुगुरु केरा दोषो दाख्या,
त्यादिक पाचेई, पाप श्रमण कह्या साचेई ॥ १ ॥ गृहीना म
आणी, आहार करे भात पाणी, सूवे ऊघे निशदीश, प्र
विशवा वीश ॥ २ ॥ निरिया न करे किणी वार, पडिक्कमणा
सवार, न करे पच्चक्खाण सज्झाय, विकथा करता दिन
॥ ३ ॥ घृत दूध दही अप्रमाण, खाये न करे पच्चक्खाण,
दर्शन ने चारित्र, मूर्ख दीधा सुपवित्र ॥ ४ ॥ सुविहित मुनि सा
चारी, पाळे नहीं ते अणगारी, आहारना दोष बेताल, टाळे न
तीनही काल ॥ ५ ॥ धनधन घसममतो चाले, काचे जळे दे
पखाले, अर्चा[1] रचना वदावे, वस्त्रादिक शोभा बनावे ॥ ६॥ परिम
वळी झाझो राखे, वळी वळी अधिकाने धाखे, माठी करणी
कहिये, ते सघळी डणमे लहिये ॥ ७ ॥ एहवा जे कुगुरु आरभ
मुनि साधु कहेवाय दभी, कोई कर्म प्रशसा करिये, भवभवमह
क्षवतरीये ॥ ९ ॥ लोढानी नावा तोले, भवसागरमा जे बोले, जि
हर्ष भलो एह बोले, पण कुगुरुनी सगति टाळे ॥ १० ॥

---

१ अर्चा रचना – शरीरनी शोभा करे

ढाळ ४ थी

गुण गिरुआ गुरु ओळखो, हियडे सुमति विचारी रे, गुरु कुप-रीक्षा दोहिली, भूला पडे नरनारी रे ॥ गुण० १ ॥ पांच इंद्रिय जे वश करे, पांच महाव्रत पाळे रे, चार कषाय तजी जेणे पांचे किरिया टाळे रे ॥ गुण० २ ॥ पांच समितिए समिता रहे, तीन गुप्ति जे धारे रे, दोष बेतालीस टाळीने, पाणी भात आहारे रे ॥ गुण० ३ ॥ ममता छांडी देहनी, निर्लोभी निर्मोही रे, नव विध परिग्रह परिहरे, चित्तमां चिंते न कांई रे ॥ गुण० ॥ धर्म तणा उपकरण धरे, संयम पाळवा काजे रे, भूमि जोई पगला भरे लोक विरोधथी लाजे रे ॥ गुण० ५ ॥ पडिलेहण नित्य विधिविध, करे प्रमाद निवारी रे, काळे शुद्ध क्रिया करे, इच्छा जोग निवारी रे ॥ गुण० ६ ॥ यथारिक शुद्ध गवेषी, जे देखो मुनि तेवे रे, शास्त्र प्रमाणे वश करे, रूपग करता देखे रे ॥ गुण० ७ ॥ कुशीलसंग जे वर्जे, गोचरि किमही न रागे र, दे उपदेश यथार्थने, सत्य वचन मुख भाखे रे ॥ गुण० ८ ॥ वन सेवे मन ऊजळा, तपे करी शोषी देही रे, वचन थे छेदी करी, विचरे जन निःस्नेही र ॥ गुण० ९ ॥ एहवा गुरु जोई करी, आदरिये शुभ भावे रे, वीर्नु सत्य सुगुरुतणुं, जिनराज कहार रे ॥ गुण० १० ॥

ढाळ ५ मी

(धर्म न छूटे रे प्राणिया-ए देशी)

भवमांवर तरवा भणी, धर्म करे हो भारंभ, पन्यर नावे रे धर्मीने तरवो समुद्र दुर्लभ ॥ भव० १ ॥ आवे गोकुळ गायना, आपे कन्या र दान आपे क्षेत्र पुण्यारथे, ब्राह्मणने केई मान ॥ भव० २ ॥ रूपाने सोना वर्णा, पृथ्वी दान शुभ प्रेम, गोना कन्याने सोंपिया, आपे छत्र तिम

हेम ॥ भव० ४ ॥ वळी घसाणे रे गातशु, कूवा सुदर वाव, पुष्क-रणी करणी भली, सरोवर मसर तलाव ॥ भव०५ ॥ कन्द मूल मूके नहीं, अग्यारसने हो दिन, आरंभ ते दिन अति घणा, धर्म किहा जगदीश ॥ भव० ५ ॥ याग करे होमे तिहा, घोडा नरने रे छाग, होमे जलचर मीडका, धर्म किहा वीतराग ॥ भव०६॥ करे सदाय रे नोरता, जीव तणा आरंभ, हणे महिष ने योन्हा, जेहथी नरक सुलभ ॥ भव० ७ ॥ सारे सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वजना रे शराध, तेही पोवे रे कागडा, देखो एह उपाध ॥ भव० ८ ॥ तीर्थ जाय गोदावरी, गगा गया प्रयाग, न्हाये अणगल नीरसें, धर्म तणो नहीं लाग ॥ भव० ९ ॥ इत्यादिक करणी करे, भव सुखने रे काज, कहे जिनहर्ष मजे नहीं, एथी शिवपुर राज ॥ भव० १० ॥

ढाळ ६ ट्ठी

(रे जाया, तुन विण घडी रे छ मास – ए देशी)

धर्म खरो जिनवर तणोजी, शिवसुखनो दातार, श्री जिनराजे प्रकाशियोजी, जेहना चार प्रकार ॥ भविक जन, ज्ञाने विचारी रे जोय । दुर्गति पडता जीवनेजी, धारे ते धर्म होय ॥ भविक० १ ॥ पच महाव्रत साधुनाजी, दश विध धर्म विचार, हित करीने जिनवरे कह्याजी, श्रावकना व्रत बार ॥ भविक० ॥ २ ॥ पचूबर चारे महा विगयजी, विष सहु माटी ने हीम, रात्रीभोजन निषेधियाजी बहु बीजानो नीम ॥ भविक० ३ ॥ घोलवडा वळी रींगणाजी, अनत काय बत्रीश, अणजाण्या फळ फूलडाजी, सधाणा निश दीश ॥भविक० ४॥ चलित अन्न वासी थयुजी, तुच्छ सहु फल दक्ष, धर्मी नर खाये नहीजी, ए बावीस अभक्ष्य ॥ भविक० ५ ॥ न करे निर्ध्वंसपणेजी धरना आरभ धीर, जीवतणी जयणा घणीजी, न

पीन अणगल नीर ॥ भविक • ६ ॥ घृत परे पाणी वापरेजी, बींदे करता पाप, सामायिक व्रत पोषधेनी, टाळे भवना ताप ॥ भविक० ७ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनेजी, सेवा भक्ति सदैव, धर्मशास्त्र सुणता थकाजी, समजे थेमल जीव ॥ भविक • ९ ॥ माम मामने आवेरेजी कुल अवे ले आहार, कला न पहोंचे सोळमीजी, श्री जिन धर्म विचार ॥ भविक० ॥ १० ॥ जिन धर्म सुखिपुगी दिवेजी, चहुं गति भ्रमण मिथ्यात, एम जिनहर्ष प्रकाशिए जी, श्रीजु तत्त्व विख्यात ॥ भविक• १ ॥

ढाळ ७ मी

(मधुकर आज रह्यो रे मन वहो—ए देशी)

श्री जिन धर्म आराधियेजी, करी निज समकित शुद्ध ॥ भवियण ॥ तप जप किरिया फोकटीनी, टेरे पडे विशुद्ध भवियज श्री० १ ॥ कचन करी करी छीनियेजी, नाणु लीजे परीख म० ॥ देव गुरु धर्म जोईनजी, आदरिये गुणी शीख ॥ भ० श्री २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनेजी, परिहरिये विष जेम, भ० । सुगुरु सुदेव सुधर्मनेजी, भवीण अमृत जेम ॥ भ० श्री० ३ ॥ मूल धर्म तो जिन कहोजी, समकित सुरतरु एह, भ० । भवभय सुख संपत्ति धरीजी, समकितनु धरी नेह । भ• श्री० ४ ॥ सत्तरने छतीस समेनी, नभ सुदी दसमी दीस, भ० । समकित सित्तरी ए रचीजी, पुर पाटण सुजगीस ॥ भ० श्री ५ ॥ भणजो गुणजो भावशु जी, टेवा अधिक श्रेय, भ० । शांति हर्ष वाचक तणोनी, कहे जिनहर्ष विनेय ॥ भ० श्री ६ ॥

इति श्री समकित सित्तरी स्तवन संपूर्ण ॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन.

साहिबा श्री सीमधर साहिबा, साहेब तुम प्रभु देवाधिदेव, सन्मुख जुओने मारा साहिबा, साहेब मन शुद्धे करु सेव। एक वार मळोने मारा साहिबा ॥ १ ॥ साहेब मुज दु ख वातो महारे अतिघणी, साहेब कोण आगळ कहु नाथ, साहेब केवलज्ञानी प्रभु जो मळे, साहिबा तो थाऊ रे हु सनाथ ॥ एकवार० २ ॥ साहेब भरत क्षेत्रमा हु अवतर्यो, साहेब ओछु एटलु पुण्य, साहेब ज्ञानी विरह पड्यो आकरो, साहेब ज्ञान रह्यु अति न्यून ॥ एकवार० ३ ॥ साहेब दश दृष्टांत दोहिलो, साहेब उत्तम कुळ सोभाग, साहेब पाम्यो पण हारी गयो, साहेब जेम रत्ने उडाड्यो काग ॥ एकवार० ४ ॥ साहेब परम भोजन बहु कर्यां, साहेब तृप्ति न पाम्यो लगार, साहेब हु रे अनादि भूलमा, साहेब रझड्यो घणो ससार ॥ एकवार० ५ ॥ साहेब स्वजन कुटुब मळ्या घणा, साहेब तेणे दु:खे दु खी थाय, साहेब जीव एक ने कर्म जूजूआ, साहेब तेहथी दुर्गति थाय ॥ एकवार० ६ ॥ साहेब धन मेळववा हु घणो ममत्यो, साहेब तृष्णानो न आव्यो पार, साहेब लोभे लटपट बहु करी, साहेब न जोयो पाप व्यापार ॥ एकवार० ७ ॥ साहेब जेम शुद्धाशुद्ध वस्तु छे, साहेब रवि करे तेज प्रकाश, साहेब तेम रे ज्ञानी मळे थके, ते तो आपे समकित वास ॥ एकवार० ८ ॥ साहेब मेघ वरसे छे वाटमां, साहेब वरसे छे गामोगाम, साहेब ठामकुठाम जुवे नहीं साहेब एवा मोटाना काम ॥ एकवार० ९ ॥ साहेब हु वस्यो भरतने छेडले, साहेब तुमे रह्या विदेह मोझार, साहेब इहा रही करु वन्दना, साहेब भव उतारो पार ॥ एकवार० १० ॥ साहेब तुम पासे देव घणा वसे, एक मोकलजो महाराज, साहेब मुखनो सदेशो साभळो साहेब तो सहेजे सरे मुज काज ॥ एकवार० ११ ॥ साहेब हु तुज पगनी मोजडी, साहेब हु तुम दासनो दास, साहेब ज्ञान विमल सूरि एम भणे, साहेब मने राखो तमारी पास ॥ एकवार० १२ ॥

श्री सीमंधर जिनने पत्र रूपे विनंति

(ढाळ-पेहेली सुमतिनाथ गुण शुं मिलीजी-ए देशी)

स्वस्ति श्री पुस्कलवईजी, विजये विजय करत, प्रगट पुरी पुंडरिगिणीजी, जिहां विचरे भगवत, सोभागी जिनवर सामळजो संदेश, हुं तो लेख लखु लवलेश, मुज तुज आधार जिनेश, साहिबनी सामळजो मुज संदेश ॥ १ ॥ सीमंधर जिन राजीयाजी, विहरमान चरणान, भरत भूमथी विनवियेजी, भविक लोक भगवान ॥ सोभागी० २ ॥ अत्र कुशळ कल्याण छे जी, तुम प्रसादे निरधन, पण जे तुज विजोगहोजी, ते पीडे मुज आज ॥ सोभागी० ३ ॥ तु जगजीवन जाणीयेजी, सोभागी सिरदार, तु वैरागी वालहोजी, मुज चित्त चोरणहार ॥ सोभागी० ४ ॥ तु त्रिभुवन भूषण भलोजी, भजे भय भय भीड, तुजविण कुण आगळ कहु जी, मुज मन केरी पीड ॥ सोभागी० ५ ॥ तुम गुण केडी गमे घणाजी, जेम जेम समरुं मन्हि, तिमतिम [1]विरहानल जळेजी, घृत धींच्यो वन्हि ॥ सोभागी० ६॥ विरह व्यथा व्याकुळपणेजी, जीव पडे जजाळ, अति चिंता अरति करीजी, दिवस गमाया आळ ॥ सोभागी० ७ ॥ धन्य वेळा धन्य ते घडीजी, जिहां देखु तुम मुख नूर, दुःख दोहग दूरे करुं जी, प्रह ऊगमते सूर ॥ सोभागी० ८ ॥ विरह ताप उपशामवाजी, अमृत सम अगमोल, वल्लभ ! पळते कागळेजी लखजो टाढो बोल ॥ सोभागी० ९ ॥

— दुहा —

तुम गुणगण गंगाजळे, झीले मुज मनहंस, पण तुज विरहे पीडीयो, जिम मधुसूदन कंस ॥ १ ॥ गुण पीटी थंगार हुए, दिपडु

१ मनमां २ विरह रूपी अग्नि बळेगे छे ३ व्यर्थ ४ कृष्णे

डख्शे तेण, अवगुण नीर न साभरे, ओलावीजे जेण ॥ २ ॥ सदेशो सज्जन तणो, जीवे मास छमास, दूर देशांतरयासीया, सदेशो सुखवास ॥ ३ ॥

ढाळ बीजी

(सुण जिनवर शत्रुंजय धणीजी-ए देशी)

धन्य ते दिन जिन ! जाणीए जी, जिहां तुमशु सजोग, संपजशे सोभागीयाजी टळशे वेद विजोग, करो जिन ! सेवक जन समाळ, तुम हो दीन दयाळ करो जिन ! सेवक जन समाळ, तुमविण कवण कृपाळ करो० १ ॥ अणदीठे अलजो घणोनी, दीठे नयन ठरत, मुज मन केरी प्रीतडीजी, तु जागे जयवत ॥ करो० २ ॥ तिण कारण जिन ! दीजीयेजी, निज दरीसण एकत, तुजविण मुज मन टळवळेजी, नयणा नीर भरत ॥ करो० ३ ॥ नयणे मुज दरिसण रुचेजी, श्रवणे वयण सुहाय, मन मिलवाने टळवळेजी, कीजे कोडि उपाय ॥ करो० ४ ॥ जिम मन चमरे माहरुजी, तिम जो कर पसरंत, तो हु हरखी दुरथीजी, तुम चरणे विलगत ॥ करो० ५ ॥ पुण्यवत ते पखीयाजी, पग पग जेह पेखत, फरी फरी देता प्रदक्षिणा जी, पूरे मननी खत ॥ करो० ६ ॥ तुज दरिसण विण जीवयुजी, ते जीवन मरण समान, अहवा मरण थकी घणुजी, जाणु अधिक सुजाण ॥ करो० ७ ॥ पूज्यो प्रणम्यो सथुण्योजी ! तु गायो गुणवत, जेणे तु नयणे निरखीयोजी, तस जीवित फलवत ॥ करो० ८ ॥ ते दिन कयही आवशेजी, मुज मन ठारणहार, तुज मुखचद निहाळताजी, सफल करीश अवतार ॥ करो० ९ ॥

---

१ बळे छे

— दुहा —

अतरीया बहु डुंगर, तह रुकनेहिं घणेहिं, ते सज्जन किम विसरे, जे अगला गुणेहिं ॥ १ ॥ प्रीति भली पखेरुआ, ऊडी जेह मिलत, माणस परवश बापडा दूर रह्या झूरत ॥ २ ॥ दीठा मीठा तिहा लगे, छीहर अवर अनेक, जिहा लगे तुम गुण नवि सुण्या, हियडे धरीय विवेक ॥ ३ ॥

ढाळ त्रीजी

(सहज सपेगी सुंदर आतमाजी - ए देशी)

जिनजी सुणजो हो मुजमन वातडीजी, रातडी रोता जाय, दिवस गमीने हो प्रभुजी झूरताजी, तुम विरहो न समाय ॥ जिनजी० १ ॥ पूर्व विदेहे हो धन्य जे जनाजी, नित सेवे तुम पाय, अम पुनेः स्वामी हो जे विछोहडोजी, ते अम पाप पसाय ॥ जिनजी० २ ॥ परभव परिगल पातिक जे कर्याजी, ते प्रगटया सवि आज, जेणे तुम हुं पामु नहिजी, तुमशु छे मुज काम, तुम हो गरीब निवाज ॥ जिनजी० ३ ॥ प्रवचन वचन विराधन में कर्युंजी, न धरी सद्गुरु शीख, के में रमता ऋषि सतापीयाजी, के भाजी ऋषि भीख ॥ जिनजी० ४ ॥ चारित्र लेई हो वेष विराधीयाजी, के में छांडी त्रिशूल, के में बाळक मायथी विछोहीयाजी, के में फोडी लीख ॥ जिनजी० ५ ॥ के में वनमें दव घर्में दीयाजी, के में गाळ्या गाम, के में कूडा कामण केळव्याजी, जिणे त्रटत्रट त्रूटे आम ॥ जिनजी० ६ ॥ के में गंहिरा द्रह शोषावीयाजी, फोडी सरोवर पाळ, ब्रंभण बाळक स्त्री गोवध कीयाजी, पाड्या माछा में जाळ ॥ जिनजी० ७ ॥ इणि परे परे

---

१ वळी अमारे आपनो वियोग ते पापनो प्रसाद छे

२ ऊंडा पाणीवाळा द्रह-कह

पातक जे कर्याजी, तस फळ पाम्यो आज, जेणे तुम हमथी दूर देशांतरेजी, थई वस्या जिनराज ॥ जिनजी० ८ ॥ वचन सुधारस सींची ठारीयेजी, विरह दावानळ दाह, अब यें हमकु दरिसण दीजीयेजी, हम तुम दरिसण चाह ॥ जिनजी० ९ ॥

दुहा

मनह मनोरथ जे करे, ते पूरण असमत्थ, स्वर्गे सुरद्रुम मजरी, त्याहि पसारे हत्थ ॥ १ ॥ फिट् हियडा फूटे नहि, हजी नहि तुज लाज, जीव जीवन विछोहडे, जीव्यातु कुण काज ? ॥ २ ॥ माणसथी माछा भला, साचा नेह सुजाण, ज्यु जलथी होय जूजूआ, त्यु ते छडे प्राण ॥ ३ ॥ सहस वहे सदेशडो, छेरा लहे लखमूल, अगो अग मेलावडो, सुरतरु फूल अमूल ॥ ४ ॥

ढाळ चोथी

(सुत सिद्धारथ भूपनो रे — ए देशी)

अमृत समरे अमर ज्यु रे, जिम रति समरे काम, माधव मन जिम राधिकारे, जिम लखमण श्री रामरे, जिन गुण साभरे, सीमधर जिन राय रे सुगुण न विसरे ॥ १ ॥ सामज समरे सल्लकीरे सारंगी सारंग, तारापति जिम तारिकारे, जिम मृग राग तरगरे ॥ जिन० २ ॥ जिम गग गगाधरो रे, विधि सावित्री[1] रे सग, जिम गगाजल हसलो रे, ईसर गौरी[2] सुरग रे ॥ जिन० ३ ॥ पृथ्वी पाणी पीतडी रे, जिम

---

१ ब्रह्मा अने सावित्रीनो सग

२ महादेव-पार्वती

चदन ने नाग, जिम रजनीकर रोहिणी रे, जिम दिन दिनकर राग रे ॥ जिन० ४॥ जिम मधुकर मालती रे, जिम मोरा मन मेह, जिम कोकिल कुलसामिनी रे, मरम रसाल सनेह रे ॥ जिन०५ ॥ विरही समरे घाटडा रे, शांतवती निज कंथ, फागण वाय विगोहिया रे, जिम वनराजी वसंत रे ॥ जिन०६॥ जिम यदुपति राजीमती रे जिम गौतम श्रीवीर, नल दमयंति नेहलो रे, सासोसास शरीर रे ॥ जिन०७॥ तिम मुज मन तुजमें रमे रे, प्रीतम प्रेम प्रमाण, स्वामी नाम तुमारडु रे, अहनिश समरीय प्राण रे ॥ जिन०८ ॥ एहवी मुज भोळा तणी रे, भक्ति भलेरी रे भाव, करुणावत कृपा करी रे मुज मनमंदिर आव रे ॥ जिन० ९॥ आवी अति उतावळा रे, आतमना रे आधार, करजु भक्ति भलेरडी रे, लेसु भवजल पार रे ॥ जिन० १०॥ सेवक मत विसारजो रे, स्वामी सुख दातार, सेवक सेवा मन धरी रे, करजो सेवक सार रे ॥ जिन० ११ ॥

दुहा

मोर मेह, रवि कमल जिम, चद्र चकोर हसत, तिम दूरेथी अम मनह, तुम समरण विकसत ॥ १ ॥ अणमेभार्या साभरे, समय समय सो वार, ते सज्जन किम वीसरे, बहु गुण मणि भडार ॥ २॥ चमणी तिगणी सोगुणी, सहस गुणी ए प्रीत, तुम साथे त्रिभुवनधणी, रासु रुडी रीत ॥ ३ ॥ आस तडे आणु नहि, अवर अनेरा देव, साहिब जग में में सुण्यो, तुहि देवाधिदेव ॥ ४ ॥ भूतले भला भलेरडा, जे जाणीजे जाण, ते सघळा तुम पछी, सीमधर जगभाण ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी

(जिहा लगे आतम द्रव्यनु-ए देशी)

नि·सनेही तुमही भये, न्यायी नाथ निरीह, नेह करी कुण निरवहे, जावज्जीव निराबीह ॥ नि ०१ ॥ सज्जन भाजन भोजने, सुगति प्रीत जगाय, नेह करता सोहिलो पण निरवाहो न थाय ॥ नि ०२॥ जगमा विरला जाणीये, सयण अखंड सनेह, सपदि आपदि मारिखा, छाही न दीये छेह ॥ नि ०३ ॥ तुम मोटे हु नानडो, यु दिलमें मत आण, सूरज पंकज प्रीतडी, उत्तम ने अहिनाण ॥ नि०४ ॥ वड तरुवर छाया करे, रायरंक समान, तिम तुम हम उपर धरो, परि गल प्रेम समान, ज्यु वाधे हम वान ॥ नि ०५ ॥

दुहा

नि:सनेही सुखीया रहे, वेलुकण ज्यु होय, ससनेहा तिल पीलीये, दहीं मथे सब कोय ॥ १ ॥ नेह न कीजे जिहा लगी, तिहा जीवने सुख होय, नेह विरह जब ऊपजे, तब दु ख साले सोय ॥ २ ॥ निर्गुण नेह न कीजीये, कीजे सद्गुण सग, सीमधर जिन सारीसो, राखुं अधिको रग ॥ ३ ॥

ढाल छट्ठी

(मेरे साहिब तुमही हो-ए देशी)

सीमधर जिन विनति, अवधारो मोरी, किंकर कर जोडी कहे, हुं सेवा तोरी ॥ सी०१ ॥ अस मन प्रेम अखड ए, तमशु जिनराज, अवर भलेरा निज घरे, नहि काइ काज ॥ सी०२ ॥ मेरु महीधर

मूळथी, कपे कोई फाळे, अवर महगण पूरीयो, पेसे पाताळे ॥ सी० ३ ॥ सकल कुलाचल हलहले, मही मंडळ डोले, श्री हरिश्चंद्र नरींद ज्युं, जगे जुठु बोले ॥ सी० ४ ॥ अमृत विषधारा वमे, सागर मू रेले, सूरज पश्चिम उगमे, गंगा हर मेले ॥ सी० ५ ॥ तोहे हु छोडु नहि, तुमशु घण नेह, मुज मन एक तुमही हव्यु, गिरुआ गुणगेह ॥ सी० ६ ॥ अम सरीखा सेवक घणा, ताहेरे भगवंत, पण अम साहिब एक तु तुहीज अरिहंत ॥ सी० ७ ॥

दुहा

किं बहु कागरमें लिखु, लख लालच बहु लोभ, मिल्या पछी मालुम हशे, थिर थापण थिर थोभ ॥ १ ॥ किं बहु मीठे बोलडे, जो मन नहि सनेह, जो मन नेह अछेह तो, एक जीव दो देह ॥ २ ॥ किं बहु कागरमें लिखु, घणु घणेरु गुज्य, सेवा निज पद कमलनी, देजो साहिब मुज्झ ॥ ३ ॥

ढाळ सातमी

(आ छे आ ले रिसालनो कुंवर – ए देशी)

जगनीवन जिनराजीया ए, सीमंधर सुखकंद, हरखे हियडु उल्लसे ए, दीठे दीठे तुम मुखचंद, सीमंधर साहिब समरीए ए, समय समय सो वार ॥ सी० १ ॥ करशुं कोडी वधामणा ए, जपशुं जय जयकार, मगल तूर वजायशु ए, सफल करु अवतार ॥ सी० २ ॥ रत्नेणा थाळ छुणा ए, भरी मुक्ताफळ थाळ, जब सो नयणे निरखशु ए, साहिब देव दयाळ ॥ सी० ३ ॥ एह जो मुज ए, सफल होशे जिणी वार, तव हु जाणिश मुज

न इण ससार ॥ ४ ॥ अम प्रणाम अवधारजो ए, केवलकमला कत, संघ सकलनी वदना ए, जिहा विचरे तु जयवत ॥ सी० ५ ॥ इम जिनवर गुण गावता ए, जिव्हा पावन कीध, मनह मनोरथ सवि फळ्या ए, नरभव लाह्यो लीध ॥ ६ ॥ शिरनामे जिनवर तणे ए, सति सुर श्रीकार, इम सीमधर समरणे ए, घर घर जयजयकार ॥ सी० ७ ॥ सवत सोळसे ब्यासीए ए, सुरगुरुवार प्रसग, दीवाळी दिवसे स्तव्यो ए, कागळ मनने रंग ॥ सी० ८ ॥

तवगच्छ गयण दिणयर सिरि विजयसेण सूरिण ॥ सीसेण सगुणीओ, महरिसे कवि कमल विजयेण ॥ १ ॥ चउतीसाइसय निहि अदु महा पाडिहेर पडिपुन्नो ॥ सुरइअ समवसरणो, तिहुअण जणलोयणानदो ॥ २ ॥ पुक्खलवइ विजये सामी, पुडरिगिणीए नयरी ए ॥ सीमधर जिणचदो, विहरतो देहि मे भद्द ॥ ३ ॥

आत्मनिंदा गर्भित

श्री सीमधर जिन विनति (स्तवन)

ढाळ पहेली

(जिन जन्माजी, जीण वेळा जननी घरे – ए देशी)

सुखदायक रे, सुदर गुणमणि आगरा, धुर प्रणमी रे, श्री जिनवर शिवसागरा, वर पूरवरे, क्षेत्र विदेह सोहामणुं, तिहा विहरतरे, श्री सीमधर गुण भणुं ॥ १ ॥ गुण भणुं जिनवर श्री सीमधर, सोमगुणे शीतलकरा, अति सरल सुदर तपे तेजे, जेम शारद दिनकरा । जसु सरल धनुसय पच[1] काया, कनक छाया जीपती, सवि अग सुदर राति पुरदर, देह सोवन दीपती ॥ २ ॥ जिन

१ सोवन वर्णवाळी ५०० धनुष्यनी काया

आनन रे, पुनम हिमकर सोहए मित निरखत रे, सुरनरना मन मोहए, जिन साभळी रे, मुज हैडु अति उल्से, मुज मानस रे, अहनिश तुम पासे वसे ॥ ३ ॥ तुम पास अहनिश वसे मानस, दूरथी गुण साभळु, नेहु पथ दुर्गम विषम डुगर, पक्ष विण किणी परे मळु, जिननाम निशदिन मुखे समरी, सीस तुम जिम नामिये, पण मिलन कारण जीव तलसे, पुण्यविण किम पामिए ॥ ४ ॥ गुण सायर रे, श्री सीमधर जाणिये, गरिमा गुणे रे, सेवक उपरे आणिये, जिम जलधर रे, सवि सरवर नीरे भरे, तिम जिनवर रे, गिरुआ सहेजे गुणकरे ॥ ५ ॥ गुणकरे जिनवर सहेजे गिरुआ, अमित गुण किणी परे भणु, निशी निरभर मुख सुपन माहि, ध्यान एक जिनवर तणु, जिनराज आज दयाल पामी, अगे आनद अति घर, निय सीस नामी मुज सीमधर, स्वामि हु विनति करु॥ ६ ॥

ढाळ बीजी

(प्रभु पामनु मुखडु जोवा — ए देशी)

सुण श्री सीमधर स्वामि, करु विनतडी शिरनामी, भवसायर एह अपार, जिहा जन्ममरण दुखकार ॥ १ ॥ पूर्वकृत कर्म विशेषे, भमीयो तिहा नवनवे वेशे, पहेला जिहा सुक्ष्म निगोद, कीधा तिहा मरण निगोद ॥ २ ॥ फरता बादरे आयो, तिहा काल घणो दुःख पायो, पृथ्वी जल तेउ वाय, वणस्सइ त्रस ए षट्काय ॥ ३ ॥ ते माहि घणी गति जोडी, इम कीधा भव लख कोडी, भमतो वळी नरभव जायो, तिहा कुकर्म उपर धायो ॥ ४ ॥ अटीयो मदमत्त ओहेडे, फिरतो वनचर पशु केडे, वध कारणे चिसर पाळ्या, घणा

१ चद्रमा २ महाविदेहनो पथ ३ बादर निगोदमा —
४ शिकार

पाश धरी मृग झाल्या ॥ ५ ॥ हणीय जलचर कुले माछा, तिहा चीधी शुभमाति पाछा, रसना रसें जीव विदारी, मदिरा मधु मास आहारी ॥ ६ ॥ वळी कीधा कर्म कैसाई, मूक्या सवि जीव फसाई। बलवत घणा पशु झाली, गळे दिधाँ छेदन पाली ॥ ७ ॥ चमरी गजराज हणाव्या, गिरिकदर कद खणाव्या, पर्वत वनदव पर-जाळ्या, पोपट पशु पजर घाल्या ॥ ८ ॥ अतेउर माहि निवासी, रखवाळ कर्या नर खोसी, पोपी तनु जीव विणासी, दीधी धन कारणे फासी ॥ ९ ॥ रम रंगे रमी परदारा, मूकी पर शिर असि-धारा, कीधी पर थापण चोरी, जपीया पर मत्र अघोरी ॥ १० ॥ घण तेल भणी तिल पील्या, वींछी विषधर विष रैलिया, जूठी परसाख भरावी, रिपुनी घणी घात करावी ॥ ११ ॥ मिलिया वळी कुगुरु सन्यासी, मान्य कपटी मठवासी, तपसी ऋषिराय विगोया, ढाकी गुण अवगुण जोया ॥ १२ ॥ परदोष अजाणता कीधा, अकलक कलकी कीधा, वचन ठठ कपट विचारी, इम कीधो आतम भारी ॥ १३ ॥ आणी मन कुमति सगाइ, कीधी जन साथ ठगाई, रूलीयो भवजल निधि देव! नवि कीधी में जिन सेव ॥ १४ ॥ इम कुकर्म कोडी वखाणु, कहेता हवे पार न जाणु, हवे साहिब जिनवर मलियो, भवभूरि महाभय टळीयो ॥ १५ ॥ अपराधी तें घणा तार्या, भवसायर पार उतार्या, प्रणमु हवे हु जिन चरणे राखो मुजने तुम शरणे ॥ १६ ॥

ढाळ त्रीजी

(जिनजी मुज पापीने तार ए देशी)

इम जिनवर! हु विनवु जी, सुण सीमधर राय, इणिपेरे कुकर्म में कर्याजी, हवे सेवु तुम पाय रे, जिनजी देजो शिवसुख सार ॥ १ ॥

---

१ कसाई जेवा   २ नपुसक   ३ सर्प   ४ विगना दांत आदि साधनो नष्ट कर्या

तु मुज परम आधार रे – जि० उतारो भवपार रे – जि० देजो० ॥ २ ॥ सवि सायरजल मशी करीजी, सुरतरु लेखिनी सार, सुमि वले सुरगुरु लखेजी, न लहे तुम गुण पार रे – जि० देजो० ॥ ३ ॥ जिम सायरजल चदंडुंजी तिम थकी चातक मे ह, मधुकर जिम मालती रमेजी, तिम तुजसु मुज नेह रे – जि० देजो० ॥ ४ ॥ इम गुण निधि जगजन तिलोजी, करुणा रस भंडार, जगआधार मया धरीजी, करजो सेवक सार रे – जि० देजो० ॥ ५ ॥

कळश

इम सयल गुणधर श्री सीमधर दुरित दारिद गजणो, जसु नामे सपद सुजस सोहग, भविय जन मन रजणो, निनराय केवल नाण दिणयर विपत दु ख दोहग हरो, मुनि उदयसागर विनवे इम, सयल सुख मगल करो ॥ १ ॥

श्री पुण्य प्रकाशनुं स्तवन

दुहा

सकळ सिद्धि दायक सदा, चोवीसे जिनराय, सद्गुरु स्वामिनी सरस्वती, प्रेमे प्रणमु पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवन पति त्रिशला तणो, नदन गुणगभीर, शासननायक जगजयो, वर्धमान वडवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणदने, चरणे करी प्रणाम, भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्ति मार्ग आराधीए, कहो किण परे अरिहंत, सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्री भगवत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइए, व्रत धरीए गुरु साख, जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशु[1] वळी वोसिरावीए पाप-

[1] सूर्य

स्थान अढार, चार शरण नित्य अनुसरो, [1]निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदीए, भाव भलो मन आण, अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार, चित्त आणीने आदरो, जेम पामो भवपार ॥ ८ ॥

ढाळ पहेली

(भविका, सिद्धचक्र पद वंदो - ए देशी)

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार, एह तणा इह भव पर भवना, आलोइए अतिचार रे **प्राणी, ज्ञान भणो गुणखाणी,** वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्रा० १ ॥ गुरु ओळवीए नहि गुरु विनये, काळे धरी बहुमान, सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधा, भणीए वही उपधान रे ॥ प्रा० २ ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकारवाळी, तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाळी रे ॥ प्रा० ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्यु जेह, आभव परभव वळी रे भवोभव, मिच्छामि दुक्कड तेह रे **प्राणी, समकित ल्यो शुद्ध जाणी** ॥ प्रा० ४ ॥ जिन वचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अभिलाष, साधु तणी निंदा परिहरजो, फळ संदेह म राख रे ॥ प्रा० ५ ॥ मूढपणु छंडो [2]प्रशंसा, गुणवंतने आदरीए, साहम्मीने धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीए रे ॥ प्रा० ६ ॥ संघ चैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो, द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसतो उवेख्यो रे ॥ प्रा० ७ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंड्यु जेह, आ भव परभव वळी रे भवोभव,

---

१ अजैनोना मन्त्रादि चमत्कारो जोईने मूढ न बनवु ने तेमनी प्रशंसा न करवी

२ निंदा करी

छेद्या छूद्या आथीयाए ॥ ५ ॥ अळशी ने एरंड, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीयाए, घाली कोलुमांय, पीली शेलडी, कंदमूळ फळ वेचीयाए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणावीया, हणता जे अनुमोदियाए, आ भव परभव जेह, वळीरे भवोभवे, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥ ७ ॥ कृमी, सरमीया, कीडा, गाडर, गडोला, इयळ, पोरा, अळसीयाए, वाळा, जळो, चूडेल, विचलित रसतणा, वळी अथाणा प्रमुखनाए ॥ ८ ॥ एम बेइंद्रिय जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए; उदेही, जू, लीख, माकड, मकोडा, चाचड कीडी कुंथूआए ॥ ९ ॥ गद्दहिया घीमेल, कान खजुरडा, गींगोडा धनेरीयाए, एम तेइंद्रिय जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥ १० ॥ मांखी, मच्छर, डांस, मसा पतंगीया, कसारी कोलियावडाए, ढींकण वींछु, तीड, भमरा भमरीओ, कोता, बग खडमाकडीए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए, जळमा नाखी जाळ, जळचर दूहव्या, वनमा मृग संतापीयाए ॥ १२ ॥ पीडया पंखी-जीव, पाडी पाशमा, पोपट घाल्या पांजरेए, एम पचेंद्रिय जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥ १३ ॥

ढाळ त्रीजी

(सुण जिनवर शेत्रुंजा धणीजी-ए देशी)

क्रोध लोभ भय हास्यथीजी बोल्या वचन असत्य, कूड करी धन पारकाजी, लीधा जेह अदत्त रे. जिनजी, मिच्छा दुक्कड आज, तुम साखे महाराज रे, जिनजी, देइ सारु काज रे ॥ जिनजी ॥१॥ देव मनुष्य तिर्यंचनाजी, मैथुन सेव्या, जेह, विषयारस लंपट

१ स्पर्शरसगंधादि बदलायेल होय एवी चीजो

तणेनी, घणु विडम्यो देह रे ॥ जिनजी० २ ॥ परिग्रहनी ममता करीजी, भवभव मेली आप, जे जिहांनी तिहां रहीनी, कोई न आवी साथरे ॥ जिनजी० ३ ॥ रयणीभोजन जे कर्यांनी, कीधा भक्ष अभक्ष्य, रसना रसनी लालचेजी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जिनजी० ४ ॥ व्रत लेइ विसारीयांजी, वळी भाग्या पच्चक्खाण, कपट हेतु क्रिया करीनी, कीधा आप वखाण रे ॥ जिनजी० ५ ॥ त्रण ढाळ आठे दुहेजी, आलोया अतिचार, शिवगति आराधन तणोजी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जिनजी ० ६ ॥

ढाळ चोथी

(साहेलडीनी देशी)

पच महाव्रत आदरो, साहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बार तो, यथाशक्ति व्रत आदरी, सा० पाळो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधा संभारीए, सा० हैडे धरीय विचार तो, शिवगति आराधन तणो, सा० ए बीजो अधिकार तो, ॥ २ ॥ जीव सर्वे खमावीए, सा० योनि चोराशी लाख तो, मन शुद्धे करी खामणा, सा० कोईशु रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्वे मित्र करी चिंतवो, सा० कोई न जाणो शत्रु तो, राग द्वेष एम परिहरी, सा० कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी सघ खमावीए, सा० जे उपनी अप्रीत तो, सज्जन कुटुंब करी खामणा सा०, ए जिन शासननी रीत तो ॥ ५ ॥ खमीए ने खमावीए सा० एहज धर्मनो सार तो, शिवगति आराधन तणो, सा० ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० धन मूर्च्छा मैथुन तो, क्रोध मान माया तृष्णा, सा० प्रेम द्वेष पैशुन्य

---

१ पूजी २ रात्रिभोजन ३ साथी ४ पोताना

तो ॥ ७॥ निंदा कलह न कीजीए सा० कूडा न दजि आळ तो, रति अरति मिथ्या तजो मा० मायामोस जजाळ तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिराविए सा० पापस्थानक अढार तो, शिवगति अराधन तणो सा० ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

ढाळ पाचमी

(श्रावण शुद दिन पचमीए – ए देशी)

जन्म जरा मरणे करीए, ए ससार असार तो, कर्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोई न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण सिद्ध भगवत तो, शरण धर्म श्री जैननु ए, साधु शरण गुणवत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सावि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो, शिवगति आराधन तणो ए, ए पाचमो अधिकार, तो ॥ ३ ॥ आ भव परभव जे कर्या ए, पाप कर्म केई लाख तो, आतम साखे निंदीए ए, पडिक्कमिए गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त विया ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो, कुमति कदाग्रहने वशे ए, जे उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्या घडाव्या जे घणा ए, घरटी हळ हथीयार तो, भव भव मेळी मूकीया ए, करता जीव सहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जन्मजन्म परिवार तो, जन्मातर पहोत्या पछी ए, कोईए न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ भव परभव जे कर्या ए, एम आधिकरण अनेक तो, त्रिविधे त्रिविधे वोसिराविए ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्कृत निंदा एम करीए, पाप कर्या परिहार तो; शिवगति आराघन तणो ए, ए छट्ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥

---

१ शास्त्रविरुद्ध २ चूले आदि पापनां साधनो

ढाळ छठ्ठी

(ते दिन क्यारे आवशे – ए देशी)

धन धन ते दिन माहरो, जीहां कीधो धर्म, दान शीयळ तप भावना, टाळ्या दुष्कर्म ॥ धन० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी, जे जे कीधी जात्र, जुगते जिनवर पूजीया, वळी पोष्या पात्र ॥ धन० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीया, निपजाव्यां जिन चैत्य, संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ धन०३ ॥ पडिक्कमणां सुपरे कर्यां, अनुकंपा दान, साधु सूरि उवझ्झायने, दीधां बहु मान ॥ धन० ४ ॥ धर्म कारज अनुमोदिये, एम वारोवार, शिवगति आराधन तणो, ए सातमो प्रकार. ॥ धन० ५ ॥ भाव भलो मन आणीए, चित्त आणी ठाम, समता भावे भाविए, ए आतमराम ॥ धन० ६॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोई अवर न होय, कर्म आप जे आचर्यां, भोगविये सोय, ॥ धन० ७ ॥ ममता विण ने अनुसरे, प्राणी पुण्यनुं काम, छार उपर ते लींपणुं, झाखर चित्राम ॥ धन० ८ ॥ भाव भली परे भावीए, ए धर्मनो सार, शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार. ॥ धन० ९ ॥

ढाळ सातमी

(ग्रह उठी वदु ऋषभ देव गुणवंत – ए देशी)

हवे अवसर जाणी, करी संलेखन सार, अणसण आदरीए, पचखी चारे आहार, लळुता सवि मूकी, छांडी ममता अंग, ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनंत नि शंक, पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीयो रंक, दुलहो ए वळी

१ धोत

वळी, अणमणनो परिणाम, एहथी पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन्य धन्ना शालिभद्र, खंधो मेघकुमार, अणसण आराधी, पाम्या भवनो पार, शिवमंदिर जाशे, करी एक अवतार, आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नव कार, मनथी नवी मूको, शिवसुख फल सहकार, ए जपता जाये, दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो, चौद पूर्वनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतर जाता, जो पामे नवकार, तो पातक गाळी, पामे सुर अवतार, ए नवपद सरीखो, मंत्र न को संसार, इह भव ने पर भवे सुख संपति दातार. ॥ ५ ॥ जुओ भील भीलडी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय, राणी रत्नवती बेहु, पाम्या छे सुरभोग, एक भव पछी लेशे, सिद्धिवधु संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वळी, मंत्र फळ्यो तत्काळ, फणीधर फीटीने, प्रगट थई फुलमाळ, शिवकुमरे जोगी, सोवन पुरिसो कीध, एम एणे मंत्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर भाख्यो आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमांही राख्यो, तेणे पाप पखाळी, भव भय दूरे नाख्यो, जिन विनय करता, सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ८ ॥

ढाळ आठमी

(नमो भविभावशुं–ए देशी)

सिद्धारथ राजा कुळतिलो ए, त्रिशलामात मल्हार तो, अवनितळे तमे अवतर्या ए, करवा अम उपगार जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में अपराध कर्या घणाए, कहेता न लहु पार तो, तुम चरणे आव्या

---

१ स्वर्ग २ नित्य विधिपूर्वक ३ शिद्धिरूपी वहुने मळश ४ सार मटी ५ सोनानो पूतळो

भणीए, जो तारे तो तार. ॥ जयो० २ ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज तो, आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ जयो० ३[१] ॥ कर्म अलूजण आकरा ए, जनम मरण जजाळ तो, हु छु एहथी उभग्यो ए, छोडव देव दयाल ॥ जयो० ४ ॥ आज मनोरथ मुज फळ्या ए, नाठा दु खददोळ तो, तूठचो जिन चोवीसमो ए, प्रकट्या पुण्य कल्लोल ॥ जयो० ५ ॥ भव भव विनय तुमारडो ए, भाव भक्ति तुम पाय तो, देव दया करी दीजीए ए, बोधि बीज सुपसाय ॥ जयो ० ६ ॥

कळश

इह तरण तारण सुगतिकारण दु ख निवारण जग जयो, श्री वीर जिनवर, चरण थुणता, अधिक मन उलट भयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव सूरींद पटधर, तीर्थ जगम एणी जगे, तपगच्छपति श्री विजयप्रभसूरि, सूरितेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्री हीरविजयसूरि शिष्य वाचक, कीर्तिविजय सुरगुरु समो, तस शिष्य वाचक विनयविजये थुण्यो जिन चोवीसमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर सवत् ओगणत्रीशे (१७२९) रही रानेर चोमास ए, विजयदशमी विजयकारण, कियो गुण अभ्यास ए. ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलास ए, निर्जरा हेते स्तवन रचीयु, नामे पुण्य प्रकाश ए. ॥ ५ ॥

श्रीमहावीर जिन स्तवन

जबूद्वीपे अपर विदेहे, ग्रामाधिप नयसार, श्रावकधर्म आराधी सोहमे, एक पल्य सुरसार रे, हमचडी ॥ १ ॥ नाम मरीचि भरत

---

१ जन्ममरणनी जजाळथी कटाळ्यो   २ समूह   ३ सूर्य समान तेजथी   ४ देवताना गुरु   ५ कर्मने जीतवा

तणो सुत, मुनि थयो त्रिदंडी, लाख चोराशी पूर्व आयुरे, ब्रह्मलोके सुर मार्डारे, हम० ॥ २ ॥ एशी लाख पूर्वनु जीवित, कौशिक द्विज सुत थयो देवी, सौधर्मे सुर पुष्यमित्र द्विज, बहोत्तर पूर्व लाख जीवरे, हम० ॥३॥ सौधर्मे सुर अग्निद्योत द्विज, चोसठ लाख पूर्व आयु, ईशाने अग्निभूति द्विज लिंगी, छप्पन पूर्व लाख आयुरे. हम० ॥४॥ सनत्कुमारे भारद्वाजे, चुमालीस लाख पूर्व आयु, माहेंद्रे सुर तिहां थी बहु भव, अंते त्रिदंडी थायरे, हम० ॥५॥ राजगृहे विश्वभूति नृपति थया, वर्ष कोटिनु आयु, वर्ष सहस्र चारित्र नियाणु करी महाशुक्रे जाय रे, हम० ॥६॥ त्रिपृष्ट नाम हरि पोतनपुरमा, चुमालीश वर्ष लाख आय, सातमी नरके सिंह चतु नरके भवभ्रमण बहु थायरे, हम० ॥ ७ ॥ महाविदेहे प्रियमित्र चक्री, कोटि वर्ष तप करतो, शुक्रे सुरवर तिहांथी भरते, छत्रापुरीमा अवतरतो, हम० ॥८॥ नंदन नामे लाख वरसनो, पाळी संयमनो भार, लाख अग्यार ऐंसी सहस ने छ सय पणयाल ससार रे, हम० ॥ ९ ॥ मासखमणथी स्थानक साधी, बांधी जिनपद कर्म, प्राणत सुर तिहांथी कुंडनपुर, गर्भे बहु सत्कर्मे रे, हम० ॥ १० ॥ क्षत्रियकुंड पुरी सिद्धारथ, नृप त्रिशलादे माय, हरिलंछन कंचन वनि काय, इम सत्तावीस भव थायरे ॥ हम० ॥ ११ ॥ वर्धमान महावीर श्रमण ए, नाम त्रणे सुखदाई, ज्ञानविमलथी जस शासन महिमा, अविचळ उदय सवाई रे, हम० ॥ १२ ॥

श्री प्रभु महावीर स्वामीनु स्तवन

चौमासी पारणु आवे, करी विनती निज घर जावे, प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकुल जरी पथरावे रे महावीर प्रभु घरे

---

१ नंदन भवमां ११८०६४५ मासखमणोथी तीर्थंकर गोत्र बांध्यु.

धावे, जीरण शेठ भावना भावे रे. ॥ महावीर० १ ॥ ऊभी शेरी ए जल छटकावे, जाइ केतकी फूल बिछावे, निज घर तोरण बधावे, मेवा मिठाई थाळ भरावे रे ॥ महावीर० २ ॥ अरिहाने दान दीजे, देता जे देखीने रीझे, षट्मासी रोग हरीजे, सीझे दायक भव त्रीजेरे महावीर० ॥ ३ ॥ जिनवरनी सन्मुख जाऊं, मुज मंदिरे ए पधरावु, पारणु भली भाति करावु जुगते जिनपूजा रचावु रे ॥ महावीर ० ४ ॥ पछी प्रभुने वोळावा जईशु, कर जोडीने सन्मुख रहीशु, नमी वंदीने पावन थईशु, विरति अतिरंगे वरीशु रे ॥ महावीर० ५ ॥ दया दान क्षमा शील धरशु, उपदेश सज्जनने करशु, सत्य ज्ञानदशा अनुसरशु, अनुकम्पा लक्षण वरशु रे ॥ महावीर० ६ ॥ एम जीरण शेठ वदता, परिणामनी धारे चढता, श्रावकनी सीमे ठरता, देव दुंदुभि नाद सुणता रे ॥ महावीर० ७ ॥ करी आयु पूरण शुभ भावे, सुरलोके अच्युते जावे, शाता वेदनी सुख पावे, शुभवीरवचन रस गावेरे ॥ महावीर० ८ ॥

पद्मावती – आराधना

हवे राणी पद्मावती, जीवराशी खमाव, जाणपणु जुगते भलुं, इण वेळा आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कड, अरिहंतनी साख, जे में जीव विराधीया, चोराशी लाख ॥ ते मुज० २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय, सात लाख तेउकायना, साते वली वाय ॥ ते मुज०३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधार, बिति चउरिंद्री जीवना बे बे लाख विचार. ॥ ते मुज०४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी, चौदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ते मुज०५॥ इह भव पर भवे सेवियां, जे पाप अढार, त्रिविध

१ अरिहंतने २ दुःख पामे ३ दनार त्रीजे भवे मुक्ति

विविध करी परिहर, दुर्गतिना दातार ॥ ते मुज० ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद, दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते मुज० ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष, मान माया लोभ में कीया, वळी राग ने द्वेष ॥ ते मुज० ८ ॥ कलह करी जीव दुहव्या, दीधा कूडा कलंक, निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते मुज० ९ ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो, कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते मुज० १० ॥ खाटकीने भवे मे कीधा, जीव नाना विध घात, चडीमारे भवे चरकला, मार्या दिन रात ॥ ते मुज० ११ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर, जीव अनेक झब्बे कीया, कीधा पाप अघोर ॥ ते मुज० १२ ॥ माछीने भवे माछला, झाल्या जळवास, धीवर भील कोळी भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते मुज० १३ ॥ कोटवाळने भवे में कीया, आकरा कर दंड, बंदीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते मुज० १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुःख, छेदन भेदन वेदना, ताडना अति तिक्ख ॥ ते मुज० १५ ॥ कुंभारने भवे मे किया, नीभाड पचाव्या, तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते मुज० १६ ॥ हाळी भवे हळ खेडिया, फाड्या पृथ्वी पेट, सूड निदान घणा किया, दीधा बळद चपेट ॥ ते मुज० १७ ॥ माळीने भवे रोपीया, नानाविध वृक्ष, मूळ पत्र फळ फूलना, लाग्या पाप ते लक्ष ॥ ते मुज० १८ ॥ अधोवायाने भवे, भर्या अधिका भार, पोठी पूठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते मुज० १९ ॥ छीपाने भवे छेतर्या, कीधा रंगण पास, अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते मुज० २० ॥ शूरपणे रण झुझता, मार्या माणस वृंद, मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूळ ने कंद ॥ ते मुज० २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्या, आरंभ कीधा अति घणा, पोते

१ पारधी २ कत्तल ३ गाडां भाडे फेरवनार ४ रंगवानुं

पापन सच्या ॥ ते मुज० २२॥ कर्म अंगार कीया वली, धर्मे देव दीधा, सम खाधा वीतरागना, कूडा खोपज कीया ॥ ते मुज० २३॥ निर्धि भवे उदर लीया, गीरोगी हत्यारी, मूढ गमार तणे भवे, मं जू लीख मारी ॥ ते मुज० २४॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव, ज्वारी चणा गहु शेकीया, पाडता रीव ॥ ते मुज० २५॥ खाडण पीसण गारना, आरंभ अनेक, राधण इंधण अग्निना, कीधा पाप उद्रेकं ॥ ते मुज० २६॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्या पाच प्रमाद, इष्ट वियोग पाड्या घणा, कीया रुदन विखवाद ॥ ते मुज० २७॥ साधु अने श्रावक तणा, व्रत लेइने भाग्या, मूळ अने उत्तर तेणा, मुज दूषण लाग्या ॥ ते मुज० २८॥ साप वींछी सिंह चीतरा शकरा ने समळी, हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबळी ॥ ते मुज० २९॥ सूवावडी दूषण घणा, वळी गर्भ गळाव्या, जीवाणी ढोळ्या घणा, शील व्रत भजाव्या ॥ ते मुज० ३०॥ भव अनंत ममता थका कीया देह संबंध, त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु, तीणशु प्रतिबंध ॥ ते मुज० ३१॥ भव अनंत ममता थका, कीधा परिग्रह संबंध, त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु, तीणशु प्रतिबंध ॥ ते मुज० ३२॥ भव अनंत ममता थका, कीधा कुटुंब संबंध, त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु, तीणशु प्रतिबंध ॥ ते मुज० ३३॥ इण परे इहभव, परभवे कीया पाप अखत्र, त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु करु जन्म पवित्र ॥ ते मुज ० ३४॥ एणि विधि ए आराधना, भविक करशे जेह, समयसुन्दर कहे पापथी, वळी छूटशे तेह ॥ ते मुज० ३५॥ राग वैराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाळ, समयसुंदर कहे पापथी, छूटे तत्काळ ॥ ते मुज० ॥ ३६॥

---

१ कोळया मनावश्या २ वनमां आग लगाडी ३ घणा ४ मूळ गुण-उत्तर गुण ५ मूर्च्छा ६ अरवत्र

श्री अमृतवेलीनी सज्झाय

(स्वामी सीमधर विनति – ए देशी)

चेतन ! ज्ञान अजुवाळीए, टाळीए मोह संताप रे, चित्त डमडोळतु वाळीए, पाळीए सहज गुण आपरे, ॥ चे० १ ॥ उपशम अमृतरस पीजीए, कीजीये साधु गुणगान रे, अधम वयणे नवि खीजीए, दीजीए सज्जनने मान रे, ॥ चे० २ ॥ क्रोध अनुबंध नवि राखीए, भाखीए वयण मुख साच रे, समकित – रत्न – रुचि जोडीए, छोडीए कुमति मति काच रे ॥ चे० ३ ॥ शुद्ध परिणामने कारणे, चारना शरण धरे चित्तरे, प्रथम तिहा शरण अरिहततु, जेह जगदीश जगमित्त रे ॥ चे० ४ ॥ जे समोसरणमा राजता, भाजता भविक सदेह रे, धर्मना वचन वरसे सदा, पुष्करावर्त जिम मेह रे, ॥ चे० ५ ॥ शरण बीजु भजे सिद्धनु, जे करे कर्म चकचूर रे, भोगवे राज्य शिवनगरनु, ज्ञान – आनद भरपूर रे ॥ चे० ६ ॥ साधुनु शरण त्रीजु धरे, जेह साधे शिवपथ रे, मूळ उत्तर गुणे जे वर्या, भव तर्या भाव निर्ग्रंथ रे ॥ चे० ७ ॥ शरण चोथु धरे धर्मनु, जेहमा वैर दया भाव रे, जेह सुखहेतु जिनवर कह्यो, पाप जळ तारवा नाव रे, ॥ चे० ८ ॥ चारना शरण ए पडिवजे, वळी भजे भावना शुद्ध रे, दुरित सवि आपणा निंदिये, जेम होय सवर वृद्धि रे ॥ चे० ९॥ इहभव परभव आचर्या, पाप अधिकरण मिथ्यातरे, जे जिन आशातनादिक घणा, निंदिये तेह गुणघात रे ॥ चे० १० ॥ गुरुतणा वचन ते अवगणी, गृथीया आपमतजाल रे, बहुपरे लोकने भोळव्या, निंदिये, तेह जजाळ रे ॥ चे० ११ ॥

---

१ क्रोध आवे त्यारे क्षमाने आत्मधर्म मानी धारण करवी २ शोभता ३ मूळ गुण–पांच महाव्रतो, उत्तर गुणो–गोचरी आदिना दोषोनो त्याग ४ दयामूलक श्रेष्ठ धर्म ५ स्वीकारे ६ पाप ७ पापनु रोकाण ८ पोताने लाग्यु ते धर्म कह्यो

जेह हिंसा करी आकरी, जेह बोल्या मृषावाद रे, जेह परधन हरी हरखिया, कीधलो काम उन्माद रे ॥ चे० १२ ॥ जेह धन धान्य मूर्छा धरी, सेविया चार कषाय रे, राग ने द्वेषने वश हुवा, जेह कियो कलह उपाय रे ॥ चे० १३ ॥ जूठ जे आळ परने दिया, जेह कर्यो पिशुनता पाप रे रति अरति निंद मायामृषा, वळिय मिथ्यात्व सताप रे ॥ चे० १४ ॥ पाप जेह अहवा सेविया, तेह निंदिये त्रिहु काल रे, सुकृत अनुमोदना कीजीए, जिम होय कर्म विसराळ रे. ॥ चे० १५ ॥ विश्व उपगार जे जिन करे, सार जिन-नाम सयोग रे, ते गुण तासं अनुमोदीये, पुण्यअनुबध शुभ योग रे ॥ चे० १६ ॥ सिद्धनी सिद्धता कर्मना, क्षय थकी उपनी जेह रे जेह आचार आचार्यनो, चरणवन सींचवा मेह रे ॥ चे० १७ ॥ जेह उवज्झायनो गुण भलो, सूत्र सज्झाय परिणाम रे, साधुनी जे वळी साधुता, मूळ उत्तर गुण धाम रे. ॥ चे० १८ ॥ जेह विरति देश श्रावकतणी, जेह समकित सदाचार रे, समकित दृष्टि सुरनर तणो, तेह अनुमोदिये सार रे ॥ चे० १९ ॥ अन्यमा पण दयादिक गुणो, जेह जिनवचन अनुसार रे, सर्व ते चित्त अनुमोदिये, स-कितबीज निरधार रे ॥ चे० २० ॥ पाप नवि तीव्र भावे क जेहने नवि भवराग रे, उचित स्थिति जेह सेवे सदा, ते अनुमोदवा लाग रे. ॥ चे० २१ ॥ थोडलो पण गुण परतणो, सामळी हर्ष मन आण रे, दोष लव पण निज देखता निर्गुण निजातमा जाण रे ॥ चे० २२ ॥ उचित व्यवहार [illegible] करी स्थिर परिणाम रे, भाविये शुद्ध नय भावना, [illegible] ठाम रे ॥ चे० २३ ॥ देह मन वचन पुद्गल [illegible]

---

१ तीव्र कामवासना करी २ भागा जाय ३ [illegible] परोपकार गुण, तेनी अनुमोदना करवी ४ चारित्ररूपी ५ [illegible] ६ धनादिथी

तुज रूप रे, अक्षय अकलंक छे जीवनु, ज्ञान आनंद स्वरूप रे. ॥ चे० २४ ॥ कर्मथी कल्पना उपजे पवनथी जीम जलधिवेल रे, रूप प्रगटे सहज आपणुं, देखता दृष्टि स्थिर मेल रे ॥ चे० २५ ॥ धारता धर्मनी धारणा, मारता मोह वड चोर रे, ज्ञानरुचि वेल विस्तारता, वारता कर्मनु जोर रे ॥ चे० २६ ॥ रागविष दोष उतारता, जारता द्वेष रस शेष रे, पूर्व मुनि वचन संभारता, सारता कर्म निःशेष रे ॥ चे० २७ ॥ देखीए मार्ग शिवनगरनो, जे उदासीन परिणाम रे, तेह अणछोडता चालिए, पामिए जिम परमधाम रे ॥ चे० २८ ॥ श्री नयविजय गुरु शिष्यनी, शीखडी अमृत वेल रे, एह जे चतुर नर आदरे, ते लहे सुजस रंगरेल रे ॥ चे० २९ ॥

(निगोदादि – संसार – दुःख – वर्णन – गर्भित)

श्री सीमंधर-जिन विनति

दुहा

अनंत चोवीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड, केवलनाणी थविर सवि, वंदु बे कर जोड ॥ १ ॥ बे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीस, सहस युगल कोडी नमुं, साधु सर्व निशदीश ॥ २ ॥

आर्या

सकल समीहित करणी, शशीवयणी रायहंस गयगमणी, कविजननी ब्रह्माणी, वयणरस दीसउ मे देवी[1] ॥ ३ ॥

दुहा

श्री ब्रह्माणी शारदा, सरस्वती[1] द्यो सुपसाय,
सीमंधर जिन विनवु, सानिध्य करजो माय ! ॥ ४ ॥

---

१ बालतो

ढाळ पहेली

(सामळनो मुनि मजम रागे – ए देशी)

श्री सीमधर साहिब मेरा थाटू दर्शन तेरा रे, तेरे दरशन हे घहुतेरा, तु प्रभु माई हमेरा रे ॥ श्री० १ ॥ श्री श्रेयाम नरिंद्र दिराजे जस महिमा जग गाजेरे, तस कुळ कमळ दिणद समोवड, सत्यकी नदन छाजे रे ॥ श्री० २ ॥ पुष्कलवइ विजया यांचे नगरी, [illegible]-वई सम जाण रे, महाविदेह तु प्रभु ! उपनो, पुंडरिगिरी [illegible] रे ॥ श्री० ३ ॥ दूर देशावर तु प्रभु ! वसीयो, रात्री [illegible] मुज सन्देह तणा सदोहा, कुण भाजे भगवत रे ॥ श्री० ४ ॥ [illegible] गई गति आगति भेदा, जीव अजीव विचार रे, [illegible] कोण भाखे घहुला ते अधिकार रे ॥ श्री० ५ ॥ [illegible] प्रगट्यो, तु जगबधव वापरे, भवोभव जे मे पातक [illegible] रे ॥ श्री० ६ ॥ हु मूरख मतिहीन न जाणु, [illegible] गुरुउपदेश लही वहु साचु, तिमुणो राव [illegible] ॥ श्री० ७ ॥

दुहा

राकतणा परे रडवड्यो, निघणीयो निरधार, [illegible] तुम विण इणे ससार ॥ १ ॥ अनादि निगोदमाहे [illegible]-हारी जीव, काल अनत तिहा रह्यो, भव [illegible] ॥

ढाळ बीजी

(वीर जिणद जगत उपगारी – ए देशी)

श्री सीमधर साहिब मेरा, विनतडी अवधारोजी [illegible] निगोद तणा दुख विहआ, गिरुआ ! [illegible] विचारोजी ॥ श्री० १ ॥ दीनदयाळ ! कृपाल ! दयानिधि ! [illegible] उपगारीजी

भवोदधि दुस्तरमांथी मुजने नाथ[1] उगारोजी, ॥ श्री० २ ॥ पोयणी पान सुकोमळ मेले, बत्रीस मल्या सोयजी, बळवंतो नर सोय करीने, मनशु वींधे कोयजी ॥ श्री० ३ ॥ एक पान भेदीने बीजे, जेहवी ते सोय जायजी, वर्धमान जिन गोयमने कहे, असख्य समय तिहां थायजी ॥ श्री० ४ ॥ असख्य समय एक आवली जाणो, क्षुल्लक भव हुवे जेहजी, दो शत छप्पन (२५६) आवलिकानु, जीवित जीवे तेहजी ॥ श्री० ५ ॥ अल्प आयु एहवा अनुभवियो, नाथ निगोद मोझारजी, जन्म मरणना दुःख अनंता में सह्या वारवारजी ॥ श्री० ६ ॥ चुमालीससे आवली साडी छैंतालीस झाझेरीजी, सासोसास एटले एक थाये, आधी वात घणेरीजी ॥ श्री० ७ ॥ सासोसासमा जीव निगोदे, करे सत्तर भव पूराजी, साडी चोराणु आवली उपर, अधिकी जाणो शूराजी ॥ श्री० ८ ॥ मुहूर्त एकनी बे घडी काची, शास्वतणे परिमाणजी, साडत्रीससे तहोंतेर तेहना, श्वासोश्वास वखाणजी ॥ श्री० ९ ॥ ते मांहे हुवे जीव निगोदे, भव करे केती वारजी, पांसठे सहस ने पांच सया वळी, छत्रीस वार विचारजी ॥ श्री० १० ॥ एक लाखने तेर हजार एक्सो नेवु वारजी, एक दिवसना सासोसासा केवलीने अविकार जी ॥ श्री० ११ ॥ छासठ सहस एशी अधिकेरा, ओगणीस लाख भलेराजी। कर्म प्रपंची एक दिवसमां, जई करे भव फेरा जी ॥ श्री० १२ ॥ तेत्रीस लाख पचाणु सहसा, सात शतक अवधारजी; एक मासना एह उसासा, गणित तणे अनुमारजी ॥ श्री० १३ ॥ पांच क्रोड नव्यासी लख्खा, चारसो व्यासी हजारजी, एटली वार एमरे निगोदीयो, एकण मास मोझारजी ॥ श्री० १४ ॥ चार क्रोडने सातज लख्खा वळी सहस अडयालजी, चार शतक अधिक

१ कमठ २ निगोदनो ३ ओ वडक अधिक ४ (६५५३६) ५ ४८ हजार.

सख्याए, श्वासोश्वास विशाळजी ॥ १५ ॥ एक धरममा सित्तेर कोडी, लाख सत्योत्तर वारजा, सहस अठयासी आटसे अके ऐह दीये अवतारजी ॥ श्री० १६ ॥

दुहा

मरणा अवतरणा करी, स्वामी ! काळ अनंत,
परावर्त पुद्गल किया, वेदनो कहुं वृत्तांत ॥ १ ॥
जेमें केकी गिरिवर रहे, मेहा दूरे वाम,
तिम जिनजी ! तुम ओलगु, निसुणो ए अरभाम ॥ २ ॥

ढाळ बीजी

(स्वामी सीमधर विनति–अे देशी)

[१] दश कोडाकोडी सागरे, उत्सर्पिणी एकरे, तिम गणो एह अवसर्पिणी मने धरीय विवेक रे ॥ १ ॥ सुण सुण स्वामी सीमधर धरा भूषण ईसरे, चोत्रीस अतिशय परगडा, वाणीगुण छे पांत्रीसरे सुण० ॥ २ ॥ वीस कोडाकोडी वेहु मळी, कालचक्र एक थायरे, एक पुद्गल परावर्तमा भव अनंत ते जायरे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ एह निगोदमा हु वस्यो, प्रभु ! काळ अनत रे, तेह पुद्गल परावर्तना, कर्या वार अनतरे ॥ सुण० ॥ ४ ॥ खेपधी अकाम निर्जरा, कर्म चीकणा जेहरे, पुढवी जल जलण वायु थयो, पामीयो वेदना देहरे ॥ सुण० ५ ॥ तेह एकेंद्री कायमा, योनि सात लाख सख्यरे, शीततापादिक में सह्या, कालचक्र असख्यरे, ॥ सुण० ६ ॥ अनुक्रमे तिहा थकी नीसरी, थयो काय अनंतरे, थयो नाम छे तेहना, कह्या भय सिद्धातरे ॥ सुण० ७ ॥ सूरणकद पहेलु गणु, वज्रकंद हलद्दरे,

१ निगोदियो २ जन्म ३ मयी

अरद्रक आर्द्र कचूरनो शतावरी तजो भद्ररे ॥ सुण० ८ ॥ नीली विराली कुमारिका, सनुही अमृता जाणरे, लसण ने वस पारे लडा, गाजर लुणी वखाणरे ॥ सुण० ९ ॥ लोढा ते कमळ कदा भिधा, गिरिकर्णिका मालरे, कोमल पत्र नें खरसुआ, लुणा वृक्षनी छालरे, ॥ सुण० १० ॥ थेग ते मोगर जाणजो, नीली मोथ मूइ फोडरे, पल्यक शाक विशेष छे, खाता अति घणी खोडरे ॥ सुण० ११ ॥ पीलुडा अमृत वेलडी मूला मकर अभिलाषरे, उगता विदल अकुरडा, विरुहा इति भाष रे ॥ सुण० १२ ॥ प्रथम समयनो वत्थूलो, गणु तेह सदोषरे, सूरी वालोळी ने आवली, छुमली करजो मतोष रे ॥ सुणी० १३ ॥ आलुय पिंडालु वळी, घणा जीवनो पिंड रे, अनतकाय बत्रीसना, कह्या नाम प्रचड रे ॥ सुण०१४ ॥

दुहा

इत्यादिक अनेक छे, अनत कायना भेद, बादर एह निगो दमा, हु पाम्यो निर्वेद ॥ १ ॥ सुई अग्र अनतमे, भागे हु बहु वार, वेचाणो नि सवलो, किणही न कीधी सार ॥ २ ॥ काल अनत तिहा रह्यो, साधारण स्वरूप, चौद लाख योनि भम्यो, ओ अे कर्म विरूप ॥ ३ ॥

ढाळ चोथी

(छट्ठी भावना मन धरो – ए देशी)

श्री सीमधर स्वामी ए[1] त्रिहुअण अतरजामीए, पामीए, जे गति कहु ते आपणी ए ॥ १ ॥ एक शरीरे एक ए, जीव थयो प्रत्येक ए, छेकण दु:खनो नावे आव्यो प्रमु ए ॥ २ ॥ छेदन भेदन जे सह्या, ते में नवि जाए कह्या, निरवह्या, काळ असख्य तिहा वसीए ॥ ३ ॥

---

१ कहाळी

योनि लाख दश फरसीए, तेह वणस्सई भरसीए, निरसीए, पुष्प पत्र फल वेयणाए ॥ ४ ॥ वळी विकलेंद्री हु थयो, काळ सख्याते तिहा रह्यो, सामह्यो, दुःख उपनतु परवशेए ॥ ५ ॥ विति चउ विकलेंद्री तणी, योनि लाख बने भणी, जगधणी ! ते पणे मे सहु अनुसरीए ॥ ६ ॥ पूगी पर्याप्ति पखे, अतर्मुहूर्ते आउखे, सहु दु खे, बहुवार असन्नीओए ॥ ७ ॥ कुत्सित योनि उपन्यो, चौद ठाणमा नीपनो, सपनो, अनुक्रमे हु दश प्राणनो ए ॥ ८ ॥ तिहु भेदे तिर्यंचए, जळ थळ खेचर प्रपच ए, मचए, माड्यो तिहा बहु पापनोए ॥ ९ ॥ मच्छगलागल कीधाऐ, जेलचारी पद लीधाए, सिध्याए, एने काज न माहरा ए ॥ १० ॥ वृश्चिक सर्प नकुल हवे, वाघ सिंह चित्तर भवे, तिहा सवे, सबळ मेल्या दुरितनाए ॥ ११ ॥ मींचाणादिक हु थयो, नरके जावा अलजयो, नवि लह्यो, पापपुण्यनो थातरोए ॥ १२ ॥ पशुअ पणे इम भमीओए, योनि लाख चउ रमीओए, दमीओए, वधनने करी सुजनेए ॥ १३ ॥ सात भेदे थयो नारकी, निर्विवेक तीर्यंच थकी, पातकी, हु अपराधी तारशेए ॥ १४ ॥ दोहिली दश वेयण सही, काल असख्य तिहा रही, हु सही, चार लाख योनि भम्योए ॥ १५ ॥ जगजीवन जिनजी सामळो, दश दृष्टांते दोहिलो, अति भलो फरि घणे नरभव लह्योए ॥ १६ ॥ ऊंधे शिर टिंगाणोए, कर्मवधे वधाणोए, ठाणोए, गर्भावासनो नहि भलोए ॥ १७ ॥ ऊठे कोडी सूइ तापवी, विंधे ततु को मानवी, अनुभवी, एहथी आठ गुणी व्यथाए ॥ १८ ॥ दुःसह वेयण वेदेहए, धर्म करु सही देहेए, गेहेए, जो जणशे मुज माडलीए ॥ १९ ॥ नीच गोत्र अवतारए, न मुण्यो धर्म लगारए, त्यारेए सद्गुरु सेवा नवि लहीए

१ मोटु माछळु हाथने खाय २ जळचर नाम धराव्यु ३ पापनो थारो ४ दु ख दीधु ५ साडा त्रण क्रोड सोयो तपावी शरीरमां मोंके तेथी आठ गणी वेदना गर्भावासनी अनुभवी

॥ २० ॥ देश अनारज वसियोए; पापतणे रसे रसियोए, धर्मिवार विरुआ कर्म भणी घणुंए ॥ २१ ॥ कर्म वडे पाडा वळीयोए, चोवीस दडके वळी रुळीयोए, नवि मळीओए, स्वामी दोहुग वारवोए. ॥ २२ ॥

दुहा

ऊच नीच कुळ अवतर्यो, धीधा मध्यम धाम, विर्ण पारो हु थयो, न लह्यो भव विश्राम ॥ १ ॥ मानव भव अति दोहिलो, दोहिलो आरज देश, सद्दहणा वळी दोहिली, दोहिलो गुरु उपदेश ॥ २ ॥ मनुष्य तिरि भव अवतरे, सातें नरक मोझार, गणता पार असंख्य हुओ, हु गयो एटली वार. ॥ ३ ॥

ढाळ पांचमी

(राग – केदारो, देशी – अढीआनी)

सीमधर जगदीश, पूरो मन्ह जगीश, शीश नमी रहुं ए, आना नित वहुए ॥ १ ॥ मेरु महीधर धीर, जलनिधी जेम गंभीर, वीर वडो गुण्योए, मयण सुभट हण्योए. ॥ २ ॥ तु सेवक आधार, गुण गण रयण भंडार, तारक अवतर्योए, जयलच्छी वर्योए ॥ ३ ॥ तु मुज मन तरु वीर, तु मुझ हैडानो हीर, प्रीति तुम वधीए, त्रिभुवन अति घणीए ॥ ४ ॥ जिनजी ! जगविख्यात, सांभळ मुज अव दात, भवे भवे जे हुआए, विवरी जूंजूआए. ॥ ५ ॥ पाम्यो आरज देश, उच गोत्र सविशेष, लेश्या नवि रहीए, सामग्री नहीए ॥ ६ ॥ सामग्री वळी हैद्ध, सदहणा मन वद्ध, बुद्धिनो दरियोए, आदर नवि कर्योए ॥ ७ ॥ न करी त्रिकरण शुद्धि, प्रमादे मन बुद्धि, सिद्धि न को रहीए, हार्यो भव सहीए. ॥ ८ ॥ भणी भणी पग ला, करी

---

१ धाम २ पावट ३ जुदाजुदा ४ पामी

प्रमाद प्रसग, व्रतभगे हुओए, नरक निगोदीओए. ॥ ९ ॥ में लाध्धु बहु वार समकित्वरयण उदार, हारवीयु इश्यु ए, दूषण पाचशुए, ॥ १० ॥ कुगुरु एदेव कुधर्म, देहाले शिवशर्म, कर्मे साक्ख्योए, तेहशु जई मख्योए. ॥ ११ ॥ अतिशयवत मह्त, दोष रहित भगवत चित्त न सद्दह्यो ए, एळे भव गयोए. ॥ ११ ॥ पाळे पचाचार, टाळे कुव्यापार, सुगुरु न ओळख्याए, सूत्रे जे लख्याए ॥ १२ ॥ दयामूळ जिनधर्म, नवि जाण्यो तस मर्म, नव तत्त्वादिक ए, हेयादिक लिकाए. ॥ १४ ॥ गाडरीए प्रवाह धर्म कर्यो उच्छाह, वळी वृद्धारकोए, परमाधार्मिकोए. ॥ १५ ॥ नारकीने दु ख देई, पापे पिंड भरेई, जलमाणस थयोए, जाळ अतर रह्योए. ॥ १६ ॥ पीलाणो तेणे ठाम, अडगोलकने काम, घरटी मध्य करीए, नर द्वीपातरी ए ॥ १७ ॥ दु ख पाम्यो तिहा भीम, काळ सवत्सर सीम, परवशमा छळेए, भव एम पाछलेए. ॥ १८ ॥ हवे वैमानिक देव, करतो परस्त्री सेव, टेच विषय तणीए, मवतृष्णा मुज घणीए. ॥ १९॥ तीव्र मोह परिणाम, वळी एकेंद्रिय ठाम, आयुष्य सख्यनोए, ते हु क्ष्पनोए. ॥ २० ॥ हु अपराधी देव, ताहरो हु नितमेव, सेवक चित्त धरोए, पडतो उद्धरोए ॥ २१ ॥

ढाळ छट्ठी

(श्रेणिक राय हु रे अनाथी निर्ग्रथ-ए देशी)

चार लाख योनि भम्यो, लह्यो सूर अवतार, श्री सीमधर ठकुरारे,मे विलख्यारे तिहा सुख अपार,ठाकुरीआरे अम तारो,भवसायररे व्हाला पार उतारो. ॥टा०१॥ चौद लाख मनुष्यना, भोगव्या भेद अशेष, लाख

१ मुनिना मुखने आपणाथी दूर टाळे २ त्रिक–जाणवा जेवा, आदरवा अने त्यागवा जेवा ३ मरीने ४ परमाधामी मरीने ५ ६ छद्मस्थ काळ

चोरासी हु भम्यो, मे काछ्यारे तिहा नवनवा वेश ॥ ढा० २ ॥ दिन जातेरे यौवन गग्यु, न गळयो ते मन्मथ पूर, महिलाने रूपे राचीओ, देखी रात दिवस रह्यो हु झूर ॥ ढा० ३ ॥ अशुभ ध्यान अतर चिंतव्या, युवतीना भोगविलास, अमृत फीटी विष थयु, श्रीफळ जळरे घनमारज तासें ॥ ढा० ४ ॥ क्रोध मान माया वजी, समभावे भावे मन्न, तजी कचन कामिनी, महिमडळे रे मुनि ते धन्न धन्न ॥ ढा० ५ ॥ एणी पेरे अनता भव भम्यो, चर्वीयो वार अनत, सुख दु ख सघळा भोगव्या, भव गणता रे थाक्यो भगवत ॥ ढा० ६ ॥ देव गुरु धर्म ओळख्यो, मे सुण्यो प्रवचनसार, छ कायना जीव ओळख्या वळी दुरितनारे अढिठाण अढार. ॥ ढा० ७ ॥ गुण सत्तावीश साधुना, श्रावकना एक वीश, ते सघळा में ओळख्या, आणवा खप करु निशदिश ॥ ढा० ८॥ सामाचारी सग्रही, सिद्धात तणे अनुसार, तपगच्छनी किरिया करु, हु तो मानु रे पचांगी विचार ॥ ढा० ९ ॥ एणे आरे भरतमा, धर नहि केवळ नाण, पूर्वाचार्य वयणडा, हु तो मानु रे ते अमीय समान॥ ढा० १०॥ एणी परे इणभव परभवे, जिनजी विराधी आण, ते साधि मिच्छामि दुकड, सामहजोरे अपराध सुजाण ॥ ढा० ११ ॥ मिथ्यात्व सघलु परिहरु, हु धरु समकित झाण, तप जप किरिया आदरु, ताहरे लेखेरे माहरे तेह प्रमाण ॥ ढा० १३ ॥ हिव न कर्यो केहनो क्दा, न कर्यो ते दीन उद्धार, दान पुण्य जेणे नवि कर्या वने मालती रे जेम तस अवतार ॥ ढा० १४ ॥ धन कण कचन कामिनी, वळी राजऋद्धि अनेक, हु नवि इच्छु राजीया तृष्णा आपोरे अवि चल पद एक ॥ ढा० १४ ॥

---

१ जुवानी गई छता कामवासना नहि मटी   २ नाळीयेरनुं पाणी अने कपुर मळवाथी झेर थाय, तेम मनुष्यभवमां काम-भाग प झेर छे, घणा भवमा मारनारा छे   ३ मूळ आगमो, तेना उपर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि अने टाका ए पचांगी   ४ सहन करजो   ५ ध्यान   ६ तमारा उपर संपूर्ण विश्वास मूकी

ढाळ सातमी

(शत्रुंजय मंडण – ए देशी)

धन धन ए सप्रति, सीमंधर जिनदेव, सुरनर ने किन्नर, सारे अहनिश सेव, गढ त्रण विचाले, समवसरण सुखगेह, छत्रत्रय-शोभित, चामर अंकित देह ॥ १ ॥ अकलंक महानल, केलिमलतरु जलपूर, जगनायक जगगुरु, जगवच्छल वडसूर, जगलोचन उदयो, जगदीपक जगनाथ, जगतिलक ममोवड, ए शिवपुरनो साथ ॥ २ ॥ धन धन नरनारी, जे सेवे तुम पाय, धन धन ते दीहा, जेणे तुम समरण थाय, धनधन ते जीहा, जे तुम गुण नित्य गाय, जस कुळ अजवाळ्यु, धन्य ते माय ने ताय ॥ ३ ॥ षडदर्शनो धर्मी व्यवहारी शुभ चित्त, गहेलु कुळदीवो, अमीचंद सुपवित्र, संवेगी सूधो कीधो, त्याग सचित्त, ए स्तवन रच्यु में, भणवा तेह निमित्त ॥ ४ ॥ संवत सत्तरसो, वेरोत्तर शुचि नाळ, सुदी सातम शुके, स्वातियोग शुभ वास, श्रीविजयप्रभसूरि राज्ये चित्त उल्लास, तयरवाडामांहे, शुणीयो रही चौमास ॥ ५ ॥

कळश

तप गच्छ अंबर अरुण उदयो विजय हीरसूरीश्वरो, निज हस्त दीक्षित, सुपरीक्षित, श्रीशुभविजय कवीश्वरो, तस चरण पंकज प्रवर मधुकर, भावविजय बुध सुदरो, सिद्धिविजय कहे स्वामी सप्रति, सकल भवि मंगल करो

---

१ कलि (पांचमा आरा) मां कर्मरूपी वृक्षोने उखडी नाखवा जळना पूर समान २ ते दिवसो धन्य के जेमां तमारु स्मरण थाय.

श्री महावीर स्वामीनु स्तवन

वीर कुवरनी वातलडी केने कहीए, हा रे केने कहीएरे वेने कहीए नव मंदिर वेसी रहीए, हा रे सुकुमार शरीर ॥ वीर० १ ॥ बाल पणाथी लाडको नृप भाव्यो, मळी चोसठ इंद्रे मलाव्यो, इंद्राणी मळी हुलराव्यो गयो रमवा काज ॥ वीर०२ ॥ छोरु उछाछला लोकना केम रहीए, एनी मावडीने शु कहीए, कहीए तो अदेखा थईए, नाशी आव्या बाळ ॥ वीर०३ ॥ आमलकी क्रीडा विषे विटाणो, मोटो भोरिंग रोषे भराणो, वीरे हाथे झालीने ताण्यो, काढी नाख्यो दूर ॥ वीर०४ ॥ रूप पिशाचनु देवता करी चलियो, सुन पुत्रने लेई उछळीयो, वीरमुष्टी प्रहारे वळीओ, साभळीए एम ॥ वीर०५ ॥ त्रिशळा माता मोजमा एम कहेती, सखीओने ओलभा देती, क्षणक्षण प्रभु नामज लेती, तेडावे बाळ ॥ वीर०६ ॥ वाट जोवता वीरजी घेरे आव्या, माता त्रिशलाए नवराव्या, खोळे बेसाडी हुलराव्या, आलिंगन देत ॥ वीर० ७ ॥ यौवन वय प्रभु पामता परणावे, पछी संजमशु दील लावे, उपसर्गनी फोज हठावे, लीधु केवळ नाण ॥ वीर०८ ॥ कर्मसूदन तप भाखीयु जिनराजे, त्रण लोकनी ठकुराई छाजे, फल पूजा करी शिवकाजे, भवीने उपगार ॥ वीर०९ ॥ शाता अशाता वेदनी क्षय कीधुं, आपे अक्षय पद लीधु, शुभवीरनु काज सीधु, भागे सादि अनंत ॥ वीर०१०॥

श्री महावीर स्वामीनु स्तवन

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी, जगतमां एटलो सुयश लीजे, दास अवगुण भर्यो, जाणी पोता तणो, दयानिधि दीन परे दया कीजे ॥ तार०१ ॥ रागद्वेषे भर्यो मोह वैरी नड्यो, लोकनी रीतिमा घणु रातो, क्रोधवश धमधम्यो शुद्ध गुण नवि रम्यो, भम्यो भव

माहि हु विषय मातो ॥ तार०२॥ आदर्यु आचरण लोक दरबारथी शास्त्र अभ्यास पण काइ कीधो, शुद्ध श्रद्धान वली आतम अवलंब विनु तेहनो कार्य तिणे को न सीधो ॥ तार०३॥ स्वामीदर्शन समो निमित्त लही निर्मलो जो उपादान ए शुचि न थाशे, दोष को वस्तुनो अहवा उद्यम तणो, स्वामी सेवा सही निकट लाशे ॥ तार०४॥ स्वामी गुण ओळखी स्वामी ने जे भजे दर्शण शुद्धता तेह पामे, ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी, कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ तार०५॥ जगत वत्सल महावीर जिनवर सुणी, चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो, तारजो बापजी बिरुद निज राखवा दासनी सेवना रखे जोस्यो ॥ तार०६॥ विनति मानजो शक्ति आपजो, भाव स्याद्वादता शुद्ध भासे, साधी साधक दशा सिद्धता अनुभवि, देवचंद्र विमल प्रभुता प्रकाश ॥ तार०७॥

श्री सीमंधर जिन विनति

सुणो सीमंधर साहिबाजी शरणागत प्रतिपाल, [illegible] तारवाजी वर माहरी संभार, कृपानिधि सुण मोरी अरदास ॥१॥ हु भवभय तुमचो दास, ताहरो छे विश्राम ॥ कृपा० २॥ हुं छव गुणनो गाहि छनी, तिलतुष नहि गुणलेश, [illegible] सन्नानी पहिज मवल क्लेश ॥ कृपा० ३॥ [illegible] ने [illegible] चेजी करतो विविध वेश, ते पण परिजन [illegible] वेश ॥ कृपा० ४॥ छट्ठा गुणठाणा धणीना [illegible] आगमवयणे जोवताजी न गयो कषाय ने [illegible] ॥ कृपा० ५॥ रसना रामा ने रमानी ए त्रण पातक मूल, [illegible] नाजी करता भव थया थूल ॥ कृपा० ६॥ [illegible] रीजी दिवस माहे बहुवार, तेह तुरत [illegible]

लगार ॥ कृपा० ७ ॥ धूली तणा देउल करीजी जिम पाउसमा रे घाल, लोमूढा मुने एम यदेजी तिम व्रत में कर्यो आल ॥ कृपा० ८ ॥ आप अशुध्द परने कहुजी देई आलोयण शुध्द, मासाहस पक्षी परेजी पाडु फदे मुग्ध ॥ कृपा० ९ ॥ अछता गुण निसुणी मनेनी हरखु अति सुविशेष, दोष छता पण सामलीजी तस उपरे धरु द्वेष ॥ कृपा० १० ॥ परिभव परपरिवादनाजी परे परे भाखू रे आप, निज उकर्ष कर घणाजी व्हज मुज सताप ॥ कृपा० ११ ॥ निश्चयपथ न जाणीयोनी व्यवहारियो व्यवहार, मदनमत्त नि शकथीनी थाप्यो असदाचार ॥ कृपा० १२ ॥ समय सघयणादि दोपथीजी नावे शुक्लध्यान, सुहणे पण नवि आवियोजी निरासस धर्मध्यान ॥ १३ ॥ आर्त रौद्र बेहु आहोनिशेजी मेवाकार खवाम, मिथ्या राजा जिहा होये जी तृष्णा लोभ विलास ॥ कृपा० १४ ॥ जिनमत वितथ प्ररुपणाजी कीधी स्वारथ बुध्द, जाड्यपणाना जोर थीजी न रही कोई शुध्द ॥ कृपा० १५ ॥ हिंसा अलिक अदत्तशुजी सेव्या त्रिविध कुशील, ममता परिग्रह केळवीजी कीधी भवनी लीळ ॥ कृपा० १६ ॥ आक्रिय साधे जे क्रियाजी ते नावे तिल मात्र, मद अज्ञान टळे जेहथीजी ते नहि नाणनी घात ॥ कृपा० १७ ॥ दर्शन पण करस्या घणाजी उदर भरणने रे काज, पण तुम तत्त्व प्रतीतशुजी न धरु दर्शन नाम ॥ कृपा० १८ ॥ सुविहित गुरुबुद्धे लोकनेजी हु वदावु रे आप, आचरणा नहि तेहवाजी ए मोटो सताप ॥ कृपा० १९ ॥ मिथ्या देव प्रशसियाजी कीधी तेहनी रे सेव अहाछदाना वयणनीजी न टळी मुजने टेव ॥ कृपा २० ॥ मोरे चित्त घूना परेजी धर्म कथा में कीध, आप यची परवचियाजी एके काज न सिध्द ॥ कृपा० २१ ॥ रातो रमणी देखनिजी जिम अणनाथ्योरे साढ, भाड भवैयानी परेजी धर्म देखाडु भाड ॥ कृपा० २२ ॥ क्रोध दावानल प्रबळथीजी उगे न समता वेल, मान मही-

घर आगळेजी न चले गुणनदी रेल ॥ कृपा० २३ ॥ माया सापण पापीणी जी मन बिल मूके रे नाहि, कोमल गुणने ते डसेजा लोभ विलास अथाह ॥ कृपा० २४ ॥ वस्त्र, पात्र, जन पुतवेजी तृष्णा बीज अनत, अत न आवे लोभनो जी कटु केतो वृत्तात ॥ कृपा० २५ ॥ धर्म तणा दभ कर्यानी पूर्यां अर्थ ने काम, तेहथी त्रण भव हारियोजी बोध होवे वली याम ॥ कृपा० २६ ॥ कल्याकल्प विचारणानी राखी काइ न शक, अनेषणीय परिभोगथीजी रूलयो चौगति निम रक ॥ कृपा० २७ ॥ हवे तुम ध्यान सनाथवानी आडो आव्यो रे आक, करुणा करीने निरखीएनी मत गणजो मुज वाक ॥ कृपा० २८ ॥ मुनने कहेता नावडेनी नाणे जे तुम दीठ, हु अपराधी ताहरोजी समजो अविनय धीठ ॥ कृपा० २९ ॥ तुम जिम जाणो तिम करोजी हु नावि जाणु रे काम, द्रव्य भाव सवि रोगनाजी जाणो सर्व उपाय ॥ कृपा० ३० ॥ हु एक जाणु ताहरु जी नाम मात्र निर्धार, आलबन में ते कर्युनी तिणथी लहु भवपार ॥ कृपा० ३१ ॥ माता सत्यकी नदनोजी, रुक्मिणी राणीनो कत, तात श्रेयास नरेसरुनी विघटना भगवत ॥ कृपा० ३२ ॥ चित्तम ते अवधारशोजी तो ए केतीक वात, लही महाय तुमारडीनी प्रगटे गुण अवदात ॥ कृपा० ३३ ॥ परम पुरुष परम गुरुनी प्राणाधार पवित्र, पुरुषोत्तम हितकारकोजी त्रिभुवन जनत मित्र ॥ कृपा० ३४ ॥ ज्ञानविमल गुणथी लहीजी सारा मननी रे होंस, पूरी शिशु सुरियो करोनी सुन मानसमरहस ॥ कृपा० ३५ ॥

लगार ॥ कृपा० ७ ॥ धूळी तणा देउल करीजी जिम पाउसमा रे बाल, बोमूला मुखे एम वदेजी तिम व्रत में कर्यां आल ॥ कृपा० ८॥ आप अशुध्द परने कहुजी देई आलोयण शुध्द, मासाइस पखी परेजी पाडु फंदे मुग्ध ॥ कृपा० ९ ॥ अछता गुण निसुणी मनेनी हरखु अति सुविशेष, दोष छता पण साभळीजी तस उपरे धरु द्वेष ॥ कृपा० १० ॥ परिभव परपरिवादनाजी परे परे भाखू रे आप, निज उत्कर्ष करु घणाजी एहज मुज सताप ॥ कृपा० ११ ॥ निश्चयपथ न जाणीयोजी व्यवहारियो व्यवहार, मदनमरठ नि शंकथीनी थाक्यो असदाचार ॥ कृपा० १२ ॥ समय सघयणादि दोषथीजी नावे शुक्लध्यान, सुहणे पण नवि आवियोनी निराशम धर्मध्यान ॥ १३ ॥ आर्त रौद्र बेहु आदोनिशेजी मेघाघार स्वधाम, मिथ्या राजा जिहा होवे जी तृष्णा लोभ विलास ॥ कृपा० १४ ॥ जिनमत वितथ प्ररूपणाजी कीधी स्वारथ बुध्द, जाव्यपणाना जोर थीजी न रही कोई शुध्द ॥ कृपा० १५ ॥ हिंसा अलिक अदत्तशुजी सेव्या त्रिविध कुशील, ममता परिग्रह केळवीजी कीधी भवनी ढील ॥ कृपा० १६ ॥ अनिय साधे जे क्रियाजी ते नावे तिल मात्र, मद अज्ञान टळे जेहथीजी ते नहि नागनी पात्र ॥ कृपा० १७ ॥ दर्शन पण करस्या घणाजी उदर भरणने रे काज, पण तुम तत्त्व प्रतीतशुजी न धरु दर्शन नाम ॥ कृपा० १८ ॥ सुविहित गुरुबुद्धे लोकनेनी हु वदावु रे आप, आचरणा नहि तेहवीजी ए मोटो सताप ॥ कृपा० १९ ॥ मिथ्या देव प्रशसियाजी कीधी तेहनी रे सेव अहाळदाना वयणनीजी न टळी मुजने टेव ॥ कृपा २० ॥ केरे चित्त घूना परेजी धर्म कथा में कीध, आप वची परवचियाजी एके काज न सिध्द ॥ कृपा० २१ ॥ रातो रमणी देखीनेजी जिम अणनाथ्योरे साढ, भाड भवैयानी परेजी धर्म देखाडु माड ॥ कृपा० २२ ॥ मोघ दावानळ प्रबळथीजी उगे न समता वेल, मान मही-

घर आगळेजी न चढे गुणनदी रेल ॥ कृपा० २३ ॥ माया सापण पापीणी जी मन निठ मूके रे नाहि, कोमळ गुणने ते डसेजी लोभ विलास अथाह ॥ कृपा० २४ ॥ वस्त्र, पात्र, जन पुस्तकेजी तृष्णा कीध अनत, अत न आवे लोभनो जी कहु केतो वृत्तात ॥ कृपा० २५ ॥ धर्म तणा दम कर्याजी पूर्यां अर्थ ने काम, तेहथी त्रण भव हारियोजी बोध होवे वळी थाम ॥ कृपा० २६ ॥ कल्प्याकल्प्य विचारणानी राखी कांई न शक, अनेषणीय परिभोगथीजी रूळयो चौगति निम रक ॥ कृपा० २७ ॥ हवे तुम ध्यान सनायतानी आशो वाळ्यो रे आक, करुणा करीने निरखणनी मत गणजो मुज वाक ॥ कृपा० २८ ॥ मुनने कहेता नावडेनी नाणे जे गुन दीठ, हु अपराधी वाहरोजी समजो अविनय धीठ ॥ कृपा० २९ ॥ तुम जिम जाणो तिम करोनी हु नावि जाणुं रे काय, द्रव्य भाव साधि रोगनानी जाणो सर्व उपाय ॥ कृपा० ३० ॥ हु एक जाणु साहब जी नाम मात्र निर्धार, आलबन मे छे करुंजी तिणथी लहु भवपार ॥ कृपा० ३१ ॥ माता मरुधरी नदनोजी, रुक्मिणी राणीनो कत, तात श्रेयास नरेसरनी विचरंता भगवत ॥ कृपा० ३२ ॥ चित्तम ते अवधारशोजी तो ए केतोक वात, लही मदाय तुमारडीजी । प्रगटे गुण अवदात ॥ कृपा० ३३ ॥ परम पुरुष परम गुरुजी प्राणाधार पवित्र, पुरुषोत्तम हितकारकोजी त्रिभुवन जनन मित्र ॥ कृपा० ३४ ॥ ज्ञानविमल गुणथी लहीजी मारा मननी रे होंस, पूरी शिशु हरियो करोजी सुन मानसमरहस ॥ कृपा० ३५ ॥

श्री सीमंधर स्वामीने विनंतिरूप[1]

सवासो गाथानु स्तवन

ढाळ पहेली

स्वामी सीमधरा विनति, साभळो माहरी देवरे, ताहरी आण हु शिर धरु, आदरु ताहरी सेवरे ॥ स्वामी० १॥ कुगुरुना वासना पाशमा, हरिण परे जे पड्या लोकरे, तेहने शरण तुज विण नहीं, टळवळे बापडा फोकरे[2] ॥ स्वामी० २॥ ज्ञान दर्शन चरण गुण विना, जे करावे कूळाचाररे[3], लूंटीया तेणे जन देखता, किहा करे लोक पोकाररे ॥ स्वामी० ३ ॥ जेह नहि भव तर्या निर्गुणी, तारशे केणी परे तेहरे, एम अजाण्या पडे फदमा, पाप बधे रह्या जेहरे ॥ स्वामी० ४ ॥ कामकुभादिक अधिकनु, धर्मनु को नवि मूलरे, दोकडे कुगुरु ते दाखवे, शु थयु एह जग सूलरे ॥ स्वामी० ५ ॥ अर्थनी देशना जे दीए, ओळवे धर्मना ग्रथरे, परमपदनो प्रगट चोर ते, तेहथी केम वहे पथरे ॥ स्वामी० ६ ॥ विषयरसमा गृही माचिया, नाचिया कुगुरु मदपूररे, धूमधामे धमाधम चली, ज्ञान मारग रह्यो दूररे ॥ स्वामी० ७ ॥ कलहकारी कदाग्रह भर्या, थापता आपणा बोलरे, जिन वचन अन्यथा दाखवे, आज तो वाजते ढोलरे ॥ स्वामी० ८ ॥ केई निज दोषने गोपवा, रोपवा केई मत कदरे, धर्मनी देशना पालटे, सत्य भाखे नहीं मदरे ॥ स्वामी० ९ ॥ बहु मुखे बोल एम साभळी, नवि धरे लोक विश्वासरे, ढूढता धर्मने ते थया, भमर जेम कमल निवासरे ॥ स्वामी० १० ॥

---

१ जुठा उपदेशने धारवारूप पाशमां २ फोगटना ३ कूळाचार मुजब धार्मिक क्रिया करावे छे ४ आत्माना गुणोने ५ कामकुंभ, कल्पवृक्ष कर तांय धर्म अमूल्य छतां तेने कुगुरुओ दोकडे वेचे छे ६ धनादि विषयरु ७ गृहस्थो रसिक बन्या

टाळ बीजी

एम ढूढतारे धर्म सोहामणो, मिलिओ सद्गुरु एक, तेहने साचोरे मारग दाखव्यो, आणि हृदय विवेक, श्री सीमंधर साहेब सांभळो ॥ श्री० ११ ॥ परघर जोतारे धर्म तुमे फिरो, निजघर न लहोरे धर्म, जेम नवि जाणेरे मृग कस्तुरीओ, मृगमद परिमल मर्म श्री० १२ ॥ जेम ते भोळोरे मृग सघळे फिरे, लेवा मृगमद गंध, तेम जग ढूंढेरे बाहिर धर्मने, मिथ्या दृष्टि अंध ॥ श्री० १३ ॥ जाति अंधनोरे दोष न आकरो, जे नवि देखेरे [illegible] मिथ्या दृष्टिरे तेहथी आकरो, माने अर्थ अनर्थ ॥ श्री० १४ ॥ [illegible] प्रशंसेरे परगुण ओळवे, न धरे गुणनोरे लेश, ते [illegible] नवि श्रवणे सुणे, दिये मिथ्या उपदेश ॥ श्री० १५ ॥ [illegible] शेरे मोह तिमिर हरे, जेहने सद्गुरुसूर, ते [illegible] धर्मनी, चिदानंद भरपूर ॥ श्री० १६ ॥ जेम [illegible] स्फटिक तणी, तेम ए जीव स्वभाव, ते जिन वीरेरे धर्म [illegible] प्रबल कषाय अभाव ॥ श्री० १७ ॥ जेम ते [illegible] फूलथीरे श्याम, पापपुण्यथी रे तेम जग [illegible] णाम ॥ श्री० १८ ॥ धर्म नै कहीएरे निश्चे [illegible] विभाव घडज्याधि पहेलेअंगेरे एणी परे भाखियु, कर्म [illegible] जे जे अंशेरे निरुपाधिकपणु, ते ते जाणे [illegible] गुणठाणा थकी, जाव लहे शिवशर्म ॥ श्री० [illegible] ज्ञानदशा भजी, रहीए आपस्वरूप, पर [illegible] नवि पडिये भवकूप ॥ श्री० २१ ॥

---

१ पोताना आत्मामां रहेला धर्मने जे [illegible] आत्मा ना निमळना प्रगट थाय ३ रे [illegible] निश्चयथी नहि, कारण रागद्वेष विभाव ए [illegible] ४ [illegible] मां ५ मिथ्यात्व अविरति कषाय ने योग ए [illegible] त्यारे धर्म ६ मोक्षसुख ७ आत्मज्ञानमां [illegible] ८ [illegible]

ढाळ त्रीजी

जिहा लगे आतम द्रव्यनु, लक्षण नवि जाण्यु, तिहा लगे गुण ठाणु भलु, केम आवे ताण्यु, आतम तत्त्व विचारीए ॥ २२ ॥ आतम अज्ञाने करी, जे भव दुख लहीए, आतमज्ञाने ते टळे, एम मन सद्दहीए ॥ आतम० २३ ॥ ज्ञान दशा जे आकरी तेह चरण विचारो निर्विकल्प उपयोगमा नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० २४ ॥ भगवई अगे भाखीओ, सामायिक अर्थ, सामायिक पण आतमा धरो सूधो अर्थ ॥ आतम० २५ ॥ लोकसार अध्ययनमा, समकित मुनि भावे, मुनिभावज समकित कह्यु, निज शुद्ध स्वभावे ॥ आतम० २६ ॥ कष्ट करो सजम धरो, गाळो निज देह, ज्ञान दशा विण जीवने, नहीं दुखनो छेह ॥ आतम० २७ ॥ बाहिर यतना बापडा करता दुहवाए, अतर जतना ज्ञाननी, नवि तेणे थाए ॥ आतम० २८ ॥ राग द्वेष मळ गाळवा, उपशम जल झीलो, आतम परिणति आदरी, पर परिणति पीलो ॥ आतम० २९ ॥ हु एहनो ए माहरो, ए हु एणि बुद्धि, चेतन जडता अनुभवे, न विमासो शुद्धि ॥ आतम० ३० ॥ बाहिर दृष्टि देखता, बाहिर मन धावे, अतर दृष्टि देखता अक्षय पद पावे ॥ आतम० ३१ ॥ चरण होय लज्जादिके, नवि मनने भगे, त्रीजे अध्ययने कह्यु, एम पहेले अगे ॥ आतम० ३२ ॥ अध्यातम विण जे क्रिया, ते तनुमल तोले, ममकारादिक योगथी,

---

१ धनादिन पोताना मानवाथी वधायने लीधे कर्म बधाय २ 'हु' ए धनादि नथी एवी सचोट मान्यताथी ३ श्रद्धा करवी ४ बध ५ आत्मज्ञानीज मुनिरे शवाळा चारित्री होय छ ६ आत्माना शुद्ध स्वभावरूप निश्चय समकितज चारित्र कहेवाय छ ७ उग्र विहारादि करवावाळा आत्मज्ञान विना दुख मात्र पामे छ ८ विचारो ९ लज्जाथी के लोकापवाद थीय चारित्र पळाय छे, पण मनना समाधि ए निश्चय नयथी भावचारित्र १० शरीरना मेल जेवी

[illegible] ॥ आतम० ३३ ॥ हु कर्ता परभावनो, एम जेम [illegible] पहे, तिन कर्मने बांधे ॥ आतम० ३४ ॥ [illegible] कर्मादिक नो, कर्ता व्यवहारे, कर्ता चेतन कर्मनो [illegible] ॥ आतम० ३५ ॥ कर्ता शुद्ध स्वभावनो, नयशुद्ध [illegible], [illegible] किरिया ग्रहीए ॥ आतम० ३६ ॥

ढाळ चोथी

[illegible] भावनो, अकर्ता कह्यो प्राणी, दान हरणादिक [illegible] सद्गुरु वाणी, शुद्ध नय अर्थ मन धारीए ॥ ३७ ॥ [illegible] सुख दीए, परजंतुने देतो, आप सत्ता रहे आपमां [illegible] ॥ शुद्ध० ३८ ॥ जोगवशे जे पुद्गल ग्रह्या, नवि [illegible], तेहथी जीव छे जूजूओ, वळी जूजूओ देह ॥ शुद्ध० ३९ ॥ [illegible] पानादि पुद्गल प्रते, न दीए छति विनां पोते, दान-हरणादि परजंतुने, एम नवि घटे जोते ॥ शुद्ध० ४० ॥ दानहरणादिक अवसरे, शुभ अशुभ संकल्पे, दिए हरे तु निज रूपने, मुनि [illegible] ॥ शुद्ध० ४१ ॥ अन्यथा वचन अभिमानथी वळी [illegible], शायक भाव जे एकलो, ग्रहे ते सुख साधे ॥ शुद्ध० ४२ ॥ शुभ अशुभ वस्तु संकल्पथी, धरे जे नट मीया, ते [illegible] सुख अनुभवे, प्रभु आतम राया ॥ शुद्ध० ४३ ॥ [illegible] विषवेलडी फळे कर्म बहु भांति, ज्ञानदहने वळी ते [illegible]

१ व्यवहार नयथी छ, निश्चय नयथी नथी २ [illegible] ३ मानिए तो जीव जिवा अने अजीव जिवा एम बने [illegible], अने ते सिद्धांतविरुद्ध छे ४ अमुक दान आप्युं, अमुक [illegible] ५ पोतानाना धर्म के सुख ६ जूदो ७ आहारादि [illegible] तमे दीधा केम कहेवाय? ८ शिष्यने जवाब आपे छे ९ [illegible] पोताना स्वरूपने प्रगट करे छे अने गुमावे छे १० [illegible] छु एम कहे छे ११ दीधु करेनार नाटकमां [illegible]

जे जाति ॥ शुद्ध० ४४ ॥ राग दोष रहित एक जे, दया शुद्ध ते पाळे, प्रथम अंगे एम भाखीयु, निज शक्ति अजुआळे ॥ शुद्ध० ४५॥ एकता ज्ञान निश्चय दया, सुगुरु तेहने भाखे, जेह अविकल्प उपयोगमा निज प्राणने राखे ॥ शुद्ध० ४६ ॥ जेह राखे पर प्राणने, दया तास व्यवहारे, निज दया विण कहो परदया होय कवण प्रकारे ॥ शुद्ध० ४७॥ लोकविण जेम नगर मेदिनी, जेम जीव विण काया, फोकट तेम ज्ञान विण परदया जिसी नटतणी माया ॥ शुद्ध० ४८ ॥ सर्व आचारमय प्रवचने भण्यो अनुभव योग, तेहथी मुनि वमे मोहने, वळी अरति शोक ॥ शुद्ध० ४९ ॥ सूत्र अक्षर परावर्तना, सरस शेलडी दाखी, तास रस अनुभव चाखीए, जिहां एक छे साखी ॥ शुद्ध० ५० ॥ आतमराम अनुभव भजो तजो पर तणी माया, एह छे सार जिन वचननो, वळी एह शिवछाया ॥ शुद्ध० ५१ ॥

ढाळ पांचमी

एम निश्चय नय सांभळीजी, बोले एक अजाण, आदरशु अमे ज्ञाननेजी, शु कीजे पच्चक्खाण, सोभागी जिन सीमंधर सुणो वात ॥५२॥ किरिया उत्थापी करीजी, छांडी तेणे लाज, नवि जाणे ते उपजेजी, कारण विण नवि काज ॥ सो० ५३ ॥ निश्चय नय अवलंबताजी, नवि जाणे तस मर्म, छोडे जे व्यवहारनेजी, लोपे ते जिनधर्म ॥ सो० ५४ ॥ निश्चय दृष्टि हृदय धरीजी, पाळे जे व्यवहार, पुण्यवंत ते पामशेजी, भवसमुद्रनो पार ॥ सो० ५५ ॥ तुरंगे चढी जेम पामिएजी, वेगे पुरनो पंथ, मार्ग तेम शिवनो लहेजी, व्यवहारे निर्ग्रंथ ॥ सो० ५६ ॥

---

१ एकज ज्ञायक भावे रहे तो जीवतु शुद्ध स्वरूप प्रगटे २ निर्विकल्प समाधिमां ३ जमीन ४ निष्फळ ५ ज्ञानयोग ६ पच्चक्खाण आदि क्रिया ७ घोडो

महेंइ पहवा जेम नहींजी, छेद गुरंगनु पाप, मध्यम नहीं निश्चय कहुजी, तेम व्यवहार साच ॥ सो० ५७ ॥ निश्चय नवि पामी शकेजी, पाळे नवि व्यवहार, पुण्यरहित जे एहवाजी, तेहनो कवण आधार ॥ सो० ५८ ॥ हेम परिक्षा जेम हुवेजी, सहत हुताशन ताप, ज्ञान दशा तेम परखीएजी, जिहां बहु किरिया व्याप ॥ सो० ५९ ॥ आलंबन विण जेम पडेजी, पामी विषमी वाट, मुग्ध पडे भव कूपमांजी, तेम विण किरिया घाट ॥ सो० ६० ॥ चरित भणी बहु लोकमांजी, भरतादिकना जेह, लोपे शुभ व्यवहारनेजी, बोधी हणे निज तेह ॥ सो० ६१ ॥ बहु दल दीसे जीवनाजी, व्यवहारे शिवयोग, छींडी ताके पाधरोजी, छोडी पंथ अयोग ॥ सो० ६२ ॥ आवश्यक मांहे भाखीयोजी, एह अर्थ विचार, फळ संशय पण जाणतांजी, जाणे संसार ॥ सो० ६३ ॥

ढाळ छठ्ठी

अवर इस्यो नय सांभळी, एक कहे व्यवहारोरे, मर्म द्विविध तेह नवि लहे, शुद्ध अशुद्ध विचारोरे ॥ सुन० ६४ ॥ सुन जिन गति नहीं तुजने, तुं जगजनुनो दीवोरे, जीवीए तुज अवलंबने, तुं साहिब चिरंजीवोरे ॥ सुन० ६५ ॥ जेह न आगम वारीओ, दीसे अशठ आचारोरे, तेहज बुधबहु मानीओ, शुद्ध कह्यो व्यवहारोरे ॥ सुन० ६६ ॥ जेहमां निजमति कल्पना, जेहथी नवि भव पारोरे, अंध परंपरा बांधीयो, तेह अशुद्ध आचारोरे ॥ सुन० ६७ ॥ शिथिल विहारीए आचर्या, आलंबन जे कूडारे, नियत वासादिक साधुने

---

१ शुद्ध निश्चय नय प्रमाण करी पछी शारीरिक क्रियानी जरूर नथी २ भरतादिना दाखला दई एकला व्यवहार नयथी मोक्ष गयेला जीवो घणा छे ३ भरतादिना दाखला दई एकला निश्चयथी मोक्ष माने ते हरिदास रस्तो मूकी गर्भकुची शोधे छे, पण ते ठीक नथी ४ जेमां आगमनो बाध नथी, जे अभिनदनीय होय अने घणा गीतार्थोए मान्यो होय तेज शुद्ध व्यवहार कहेवाय ५ नव कल्पनो त्याग

ते नवि जाणीए रूडारे ॥ तुज० ६८ ॥ आज न चरण छे आकरू, सहननादिक दोषेरे, एम निज अवगुण ओळवी, कुमति कदाग्रह पोषेरे ॥ तुज० ६९ ॥ उत्तर गुण माहे हीणडा, गुरु कालादिक पाखेरे, मूलगुणे नहीं हीणडा एम पचाशक भाखेरे ॥ तुज० ७० ॥ परिग्रह ग्रहवश लिंगीया, लेई कुमति रज माथेरे, निजगुण परअवगुण लवे, इंद्रिय वृषभ नवि नाथेरे॥ तुज० ७१॥ नाण रहित हित परिहरी, निज दर्शनगुण लूषेरे, मुनिजनना गुण साभळी तेह अनारज रूसेरे ॥ तुज० ७२ ॥ अणुसम दोष जे परतणो मेरु समान जे बोलेरे, जेहशु पापेनी गोठडी, तेहशु हियडलु खोलेरे ॥ तुज० ७३ ॥ सूत्र विरुद्ध जे आचरे, थापे अविधिना चाळारे, ते अति निबिड मिथ्यामति, बोले उपदेश माळारे ॥ तुज० ७४ ॥ पामर जन पण नवि कहे, सहसा जूठ सेंशूकोरे, जूठ कहे मुनि वेषे जे, ते परमारथ चूकोरे ॥ तुज० ७५ ॥ निर्दय हृदय छ कायमा, जे मुनिवेषे प्रवर्तेरे, गृहीयति धर्मथी बाहिरा, ते निर्धनगति वर्तेरे ॥ तुज० ७६ ॥ साधु भगति जिन पूजना, दानादिक शुभकर्मेरे, श्रावकजन कह्यो अति भलो, नहि मुनिवेषे अधर्मेरे ॥ तुज० ७७ ॥ केवलें लिंगधारीतणो, जे व्यवहार अशुद्धोरे आदरीये नविसर्वथा, जाणी धर्मविरुद्धोरे ॥ तुज० ७८ ॥

---

१ दुर्लक्ष करी २ काळ आदिना बहाने ३ पच महाव्रतधारीनेज साधु कहेवाय ४ बोले ५ इंद्रियरूपी बळदने नाथे नहीं ६ थई ७ श्रद्धानो नाश करे छ ८ द्वेष करे ९ महा पापी १० गाथा ५०४ ११ घृणा उपजावे तेवु जूठ १२ नथी यतिधर्ममां के श्रावकधर्ममां १३ भीखारी जेवा छे १४ मुनिवेष छतां अधर्म करे ते वेषने लजवे छे १५ क्रियारहित वेषधारी साधुनो व्यवहार

ढाळ मातमी

जे मुनिवेश नवि छंडे, [illegible] गुरु [illegible] ते [illegible] लाग मांडे हास्या, मुनिगुण पंथे मीरांजी, [illegible] वाणी, मारग गुरु प्रकाशतो, वंदे नवि [illegible] [illegible] [illegible] मोजी ॥ ७९ ॥ मुनिगुणरागें पूरापुरा, जे जे [illegible] [illegible] ते वैहिवे पुण्यात कही, फल आरत [illegible] [illegible] जे [illegible] मांडे, मनोभाव [illegible] ए वेली, ए दुंडक [illegible] ते नवि [illegible] ॥ ८० ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मवेन [illegible], ए [illegible] निष्कारण [illegible] ॥ ८१ ॥ [illegible] मालोजी। [illegible] अने मंथ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ते व्यवहार [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] पाडे, ते पण [illegible] आपणी, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] मावमा [illegible], ॥ ८२ ॥ जे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ते [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], ए व्यवहार नवि मन धारो, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आपपरण नवि [illegible]

---

१ [illegible] २ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करताय ३ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं ४ गुणपुना [illegible] [illegible] [illegible] ५ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नथी, माटे तेने मारे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ७ [illegible] [illegible] ८ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अने केवल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] व्यवहारदीन [illegible] [illegible] [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] १२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] देखो [illegible] [illegible] [illegible]

ढाळ आठमी

अवंर एक भाखे आचार, दया मात्र शुद्धज व्यवहार, जे बोले तेहज उत्थापे, शुद्ध करु हु मुग्ध इम जंपे ॥ ८४ ॥ जिनपूजादिक शुभ व्यवहार, ते माने आरंभ अपार, नवि जाणे उतरता नइ, मुनिने जीव दया क्या गई ॥ ८५ ॥ जो उतरता मुनिने नदी, विधि-जोगे नवि हिंसा वदी, तो विधि जोगे जिन पूजना, शिव कारण मत मूलो जना ॥ ८६ ॥ विषयारंभ तणो ज्या त्याग, तेहथी लहीए भवजल ताग, जिन पूजामां शुभ भावथी विषयारंभ तणो भय नथी ॥ ८७ ॥ सामायिक प्रमुखें शुभ भाव, यद्यपि लहीए भवजल नाव, तो पण जिन पूजा ए सार, जिननो विनय कह्यो उपचार ॥ ८८ ॥ आरंभादिक शंका धरी, जो जिनराज भक्ति परिहरी, दानमान वदन आदेश, तो तुज सघलो पड्यो क्लेश ॥ ८९ ॥ स्वरूपथी दीसे सावद्य, अनुबंधे पूजा निरवद्य, जे कारण जिन गुण बहु मान, ते अवसरे वर्ते शुभध्यान ॥ ९० ॥ जिनवर पूजा देखी करी, भवियण भावे भवजल तरी, छकायना रक्षक हो वळी, एह भाव जाणे केवळी ॥ ९१ ॥ जळ तरता जळ उपर यथा, मुनिने दया न होय वृथा, पुष्पादिक उपर तिम जोण, पुष्पादिक पूजाने ठाण ॥ ९२ ॥ तो मुनिने नहीं किम पूजना, एम तु शु चिंते शुभ मना, रोगीने औषध सम एह, निरोगी छे मुनिवर देह ॥ ९३ ॥

---

१ वचनबाणोथी मूर्तिनी भावनाने तोडनार स्थानकवासी आदि. २ बोले ३ विधि मुजब उतरवाथी ४ अत ५ वगेरेथी ६ शुभभाव रूप नाव ७ जिनपूजा ए जिनेश्वरनो श्रेष्ठ विनय उपचारथी कह्यो छे ८ आदिथी वायु कायादिनी हिंसा थाय छे तेमां स्थानकवासी साधु 'करो' कहे तो महापाप लागे ९ पूजा १० परिणामने लीधे उत्तरोत्तर ११ शुभभावथी उल्लसे छे माटे ते पूजा तारनारी छे १२ पण साची दया छे १३ साची दया पूजा करनारनी होय छे १४ साधु मलिन आरंभथी रहित होय छे

ढाळ नवमी

भावस्तव मुनिने भलोजी, येड भेदे गृही धर, [illegible] कह्योनी, महानिशीथ मझार, सुणो जिन [illegible] ॥ ९४ ॥ वळी तिहां फळ दाखियुजी, [illegible], [illegible] जोईनेजी, एम दानादिक चार ॥ सुणो० ९५ ॥ [illegible] जिन प्रतिमा पूजेय, सूरियाभपरे भावथीजी, [illegible] ॥ सुणो० ९६ ॥ नारद आवे नवि [illegible] ते श्राविकाजी, भाखे आळ अजाण ॥ सुणो० ९७ ॥ [illegible] आगम कह्योजी, शक्रस्तव [illegible] नार, आण [illegible] विध हृदय विचार ॥ सुणो० ९८ ॥ पूजे [illegible] सूरियाभ सूरराय, वांची पुस्तक रत्ननाजी, [illegible] सुणो० ९९ ॥ रायपसेणी सूत्रमांजी, [illegible] अणमानताजी, करे परमनो घध ॥ सुणो० १०० ॥ [illegible] वक्तव्यताजी, जीवाभिगमे एम, जो [illegible] जिनगुणथुति केम ? ॥ सुणो० १०१ ॥ [illegible] अनेक प्रकार, कल्पसूत्रे एम भाखियुजी, [illegible] ॥ सुणो० १०२ ॥ श्रमणोपासक ते कह्याजी, [illegible] अनेरा नवि करेजी ते जाणो निर्धार ॥ सुणो० [illegible] सूत्रे भण्युजी, जिनपूजा गृहिकृत्य, जे नवि [illegible] मत्र नृत्य ॥ सुणो० १०४ ॥

---

१ द्रव्यस्तव (पूजा) मां छायव (पापारंभ) [illegible] पणना त्यागी छे २ श्रावकने द्रव्यपूजा करने [illegible] अने द्रव्यपूजाथी गृहस्थने ४ द्रौपदी श्राविका [illegible] ५ पूजा करवी ए देवोनी परंपरा छे [illegible] ६ यागनो अर्थ जिनपूजाज घटे छे ७ [illegible] ८ गृहस्थने धर्मकृत्य [illegible] ९ [illegible]

ढाळ दशमी

अवर कहे पूजादिक ठामे, पुण्यबंध छे शुभ परिणामे, धर्म इहा नवि कोई दीसे, जेम व्रतपरिणामे मन हींसे ॥ १०५॥ निश्चयधर्म न तेणे जाण्यो, जे शैलेशी अंत वखाण्यो, धर्म अधर्म तणो क्षय कारी, शिवसुख दे जे भवजळ तारी ॥ १०६ ॥ तसें साधन तु जे जे देखे, निज निज गुणठाणाने लेखे, तेह धर्म व्यवहारे जाणो, कारज कारण एक प्रमाणो ॥ १०७ ॥ एवंभूत तणो मत भाख्यो, शुद्ध द्रव्यनय एम वळी दाख्यो, निज स्वभाव परणति ते धर्म, जे विभाव ते भावज कर्म ॥ १०८ ॥ धर्म शुद्ध उपयोग स्वभावे, पुण्य पाप शुभ अशुभ विभावे, धर्म हेतु व्यवहारजे धर्म, निज स्वभाव परणतिनो मर्म ॥ १०९ ॥ शुभयोगे द्रव्याश्रव थाय, निज परिणामे न धर्म हणाय, यावत् योग क्रिया नहीं थभी, तावत् जीव छे योगारंभी ॥ ११० ॥ मलिनारंभ करे जे क्रिया, असदारंभ तजीने तरिया, विषयकषायादिकने त्यागे, धर्ममति रहीए शुभमार्गे

---

१ पूजामां २ उल्लसे छे ३ आम कहेनारे ४ निश्चयधर्मनु ५ कार्य कारणना अभेदनी अपेक्षाए व्यवहारधर्म ए धर्म कहेवाय छे व्यवहारधर्म ए निश्चयधर्मनु कारण छे ६ शुद्ध व्यवहार नय ७ पौद्गलिक भावमां रमण करवु ते विभाव अने पोताना स्वभावमां रमण करवु ते धर्म ८ विभाव परिणाम ते भाव कर्म छे शुभ विभावपरिणाम ते भावपुण्य अने अशुभ विभावपरिणाम ते भावपाप छे ९ जिनपूजादि निज स्वभाव परिणति रूप धर्मनो हेतु होवाथी तेने व्यवहारे धर्म कहेवो १० पूजादिमां शुभ मनोयोगादिथी द्रव्याश्रव थाय छे छतां तेथी स्वभाव परिणामरूप धर्मने हानि थती नथी, पुष्टि मळे छे, थती होत तो जिनपूजादि न करात ११ शुभअशुभ योग यत्नाज, तो पछी शुभ योगने शुभ मार्गमां प्रवर्तावता पूजा केम न करवी ? १२ पाप बंधाय तेवा आरंभवाळी क्रिया १३ श्रावको जिनपूजादिथी १४ पूजादि शुभ मार्गे

॥ १११ ॥ स्वर्ग हेतु जो पुण्य कहीजे, तो सराग संयम पण लीजे, बहुरागे जे जिनवर पूजे, तस मुनिनी परे पातक धूजे ॥ ११२ ॥ भावस्तव एहथी पामीजे, द्रव्यस्तव ए तेणे कहीजे, द्रव्य शब्द छे कारण वाची, भ्रमे म भूलो कर्म निकाची ॥ ११३ ॥

ढाळ अगीयारमी

कुमति एम सकल दूरे करी, धारीए धर्मनी रीतरे, हारीए नवि प्रभु बळ थकी, पामीए जगतमा जीतरे, स्वामी सीमधरा तु जयो ॥ ११४ ॥ भाव जाणे सकल जंतुना, भव थकी दासने राखरे, बोलिया बोल जे ते गणु, सफल जो छे तुज साखरे ॥ स्वामी० ११५ ॥ एक छे राग तुज उपरे, तेह मुज शिवतरु कंदरे, नवि गणु तुजपरे अवरने जो मिले सुरनर वृंदरे ॥ स्वामी० ११६ ॥ तुज विना में बहु दु ख सह्या, तुज मिले ते केम होयरे, मेह विण मोर माचे नहीं, मेह देखी माचे सोयरे ॥ स्वामी० ११७ ॥ मनथकी मिलन में तुज कियो, चरण तुज भेटवा साईरे, कीजिए जतन जिन ए विना, अवर न वाछिए काईरे ॥ स्वामी० ११८ ॥ तुज वचन राग सुख आगळे, नवि गणु सुरनर शर्मरे, कोडि जो कपट कोई दाखवे, नवि तजु तोय तुज धर्मरे ॥ स्वामी० ११९ ॥ तु मुज हृदय-

---

१ पूजादि द्रव्यस्तवथी कर्मक्षय नथी, पण पुण्य बधावाथी स्वर्ग मळे छे, तेने न मानो तो स्वर्गनु कारण सराग संयम केम ल्यो छो?

२ व्यवहार अने निश्चयनु मर्म समजा ३ तो प्रभुना नामना अपूर्व बळथी कोई कुतर्कवादियाथी हार नहीं थाय ४ मारा कहेवामा आपनी साक्ष छे तोज मारा ए बोल सफळ ५ मोक्षरूपी वृक्षनु मूळ छे ६ देव अने मनुष्योनो समूह ७ महाम्हतो नथी ८ नाचवा केकारवा लागे छे ९ एकाग्र मनथी तमारु ध्यान कर्यु छे ९ दूरथीन १० देव के मनुष्यना सुखो ११ मारा हृदयरूपी पर्वतमा नि स्पृह सिंह समान तु

गिरिमा वसे, सिंह जो परम निरीहरे, कुमतें मातगना जूथथी, तो कशी प्रभु मुज बीहरे ॥ स्वामी० १२० ॥ कोडि छे दास प्रभु ताहरे, माहरे देव तु एकरे कीजिए सार सेवक तणी, ए तुज उचित विवेकरे ॥ स्वामी० १२१ ॥ भक्ति भावे इश्यु भाखीए, राखीए एह मन मांहिरे, दासना भवदुःख वारीए, तारीएं सो ग्रही बांहिरे ॥ स्वामी० १२२ ॥ बाळ जेम तात आगळ कहे, विनवु हु तेम तुजरे, उचित जाणो तेम आचरु, नवि रह्युं तुज किश्यु गूंजरे ॥ स्वामी० १२३ ॥ मुज होजो चित्त शुभ भावथी, भवभव ताहरी सेवरे, याचीए कोडि यतने करी, एह तुज आगळे देवरे ॥ स्वामी० १२४ ॥

कळश

इम सकल सुखकर, दुरित भयहर, विमळ लक्षण गुणधरो, प्रभु अजर अमर नरिंद वंदित, विनव्यो सीमंधरो, जिम नादेंतर्जित मेघ गर्जित, धैर्यनिर्जित मदरो, श्रीनयविजय बुध चरणसेवक, जस विजय बुध जय करो ॥ १२५ ॥

पद

अवधु निरपक्ष विरला कोई, देख्या जग सहु जोई ॥ अव० ॥ समरस भाव भला चित्त जाके, थापउथाप न होई, अविनाशीके घरकी बाता, जानेंगे नर सोई ॥ अवधु० १ ॥ रावरकमें भेद न जाणे, कनक उपल सम लेखे, नारी नागणीको नहि परिचय, तो

---

१ तो कुमत (पाखंडियो) रूपी हाथीओना टोळाथी २ मने बांय धरी तारनो ३ अजाण्यु ४ वाणी एवी गंभीर के मेघनी गर्जनाओने पण जीती जाय ५ मेरु पर्वतनी अचलताने य जीती जाय एवा धैर्यवाळा श्रीसीमंधर स्वामीनु आ स्तवन उपाध्याय यशोविजयजी महाराजे रच्यु ६ वैरागी ७ खंडनमंडन ८ आत्मतत्त्वनी वातो

शिवमंदिर देरो ॥ अवधु० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवण सुणीने, हर्षशोक नवि आणे, ते जगमें जोगीसर पूरा, नित्य चढते गुणठाणे ॥ अवधु० ३ ॥ चंद्रसमान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंभीरा, अप्रमत्त भारंडपरे नित्ये, सुरगिरिसम शुचि धीरा ॥ अवधु० ४ ॥ पंकजनाम धराय पंकशुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद इस्या जन उत्तम, सो साहेबका प्यारा ॥ अवधु० ५ ॥

राग ठुमरी

पद

पूर्व पुण्य उदय करी चेतन, नीका नरदेह पायारे, दीनानाथ दयाळ दयानिधि, दुर्लभ अधिक बतायारे, दश दृष्टांते दोहिला नरभव, उत्तराध्ययने गायारे ॥ पूर्व० १ ॥ अवसर पाय विषयरस राचत, ते तो मूढ कहायारे, काग उडावण काज विप्र जिम, डार मणि पछतायारे ॥ पूर्व० २ ॥ नदी घोल पाषाण न्यायकर, अर्धवाट तो आयारे, अर्ध सुगम आगे रही तिनकुं, जिन कछु मोह घटायारे ॥ पूर्व० ३ ॥ चेतन चार गतिमें निश्चे, मोक्षद्वार ए कायारे, करत कामना सुर पण याकी, जिनकुं अनर्गळ मायारे ॥ पूर्व० ४ ॥ रोहण गिरि जिम रतन खाण तिम, गुण सहु यामें समायारे, महिमा मूळथी वर्णत जाकी, सुरपति मन शरमायारे ॥ पूर्व० ५ ॥ कल्पवृक्षसम संयम केरी, अति शीतल जिहां छायारे, चरणकरण गुणधरण महामुनि, मधुकर मन मोहायारे ॥ पूर्व० ६ ॥ या तन वीण तिहुं काल कहो किम, साचा सुख निपजायारे, अवसर पाय न चूक चिदानंद, सद्गुरु सुदर पायारे ॥ पूर्व० ७ ॥

पद

विरथा जनम गुमायो हो मूरख, विरथा जनम गुमायो रंचक सुखरस वश होय चेतन, अपनो मूल नसायो, पाच मिथ्यात्व धार तु अजे हु साच भेद नवि पायो हो ॥ मू० १ ॥ कनककामिनी अरु एहथी, नेह निरतर लायो, ताहुथी तु फिरत सुरानो, कनकबीज मानु खायो ॥ मू० २ ॥ जनम जरा मरणादिक दु खमें, काल अनत गमायो, अरहट घटिका जिम कहो याको, अत अज हु नवि आयो हो ॥ मू० ३ ॥ लख चोराशी पहेर्या चोलना, नव नव रूप बनायो, विन समकित सुधारस चाख्या, गिनती कोऊ न गिनायो हो ॥ मू० ४ ॥ एतिपर नवि मानत मूरख, ए अचरज चित्त आयो, चिदानद ते धन्य जगतमें, जिणे प्रभुशु मन लायो हो ॥ मू० ५ ॥

पद

विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग लागोरे, जपतप सजम दानादिक सहु, गिनती एक न आवेरे, इद्रिय सुखमें जब लग ए मन, वक्र तुरग जिम धावे रे ॥ विषय० १ ॥ एक एकके कारण चेतन, बहुत बहुत दुःख पावेरे, ते तो प्रगटपणे जगदीश्वर, इणाविध भाव लखावेरे ॥ विषय० २ ॥ मन्मथवश मातग जगतमें, परव शता दुःख पावेरे, रसना लुब्ध होय जब मूरख, जाल पडे पिछतावेरे ॥ विषय० ३ ॥ घ्राण सुवास काज सुन भमरा, सपुट माहे बधावेरे ते सरोज सपुट सयुत फुन, करटी के मुख जावेरे ॥ विषय० ४ ॥ रूप मनोहर देख पतगा, पडत दीपमें जाईरे, देखो याकु दु ख कारणमें नयन भये हे सहाईरे ॥ विषय० ५ ॥ श्रोत्रेंद्रिय आसक्त

१ थोडु २ पोतानु खोयु ३ आज पण ४ दारुडीयानी जेम ५ धतुराना बीज ६ आटलेयाय ७ हाथणी

मिरगला, छिनमें शीर्ष कटावेरे, एकएक आसक्त जीव एम नाना-विध दु ख पावेरे ॥ विषय० ६ ॥ पच प्रबळ वर्ते नित जाकु, ताकु कहा ज्यु कहीएरे, चिदानद ए वचन सुणीने, निज स्वभावमें रहीएरे ॥ विषय० ७ ॥

पद

कथनी कथे सहु कोई, रहणी अति दुर्लभ होई, शुक रामको नाम बखाणे, नवि परमारथ तस जाणे, याविध भणी वेद सुणावे, पण अकल कळा नावि पावे ॥ कथनी० १ ॥ षट्त्रीस प्रकारे रसोई, मुख गणता तृप्ति न होई, शिशु नाम नहीं तस लेवे, रसस्वादत सुख अति लेवे ॥ कथनी० २ ॥ बदीजन कंडखा गावे, सुणी शूरा शीश कटावे, जब रुधमुडता भासे, सहु आगळ चारण नासे ॥ कथणी० ३ ॥ कहणी तो जगत मजूरी, रहणी है बदी हजूरी, कहेणी साकर सम मीठी, रहेणी अति लागे अनीटी ॥ कथनी० ४ ॥ जब रहणीका घर पावे, कथनी तब गिणती आवे, अब चिदानद इम जोई, रहणीकी सेज रहे सोई ॥ कथनी० ५ ॥

साधु वंदनी सज्झाय

इद्रिय जीपेरे मन सयम धरे चरण करण गुण ज्ञान, बाह्याचरणेरे देखी न राचीये भगवति सूत्र प्रमाण, ते मुनि वदोरे शुभ समता घरा ॥ १ ॥ वस्त्र न धोवे रे रंगे नवि कदा आचाराग मझार, प्रवचन मानेरे जे मुनि चालता तेहनी जाऊ बलिहार ॥ ते मुनि०२ ॥ जेम तरु फूलेरे भमरो बेसवा न करे काई उपघात, तेम मुनि जावेरे आहार गवेषवा दश वैकालिक वात ॥ ते मुनि० ३ ॥ आहार ते

---

१ रणगीतो सांभळी २ मुनि ना गुणोनी ३ जीते ४ आत्मज्ञान विना

लवी नीरस भोगवे, जिम दर माहेरे साप, अनुत्तरोववाइ धन्नो वरणव्यो नमता जायेरे पाप ॥ ते मुनि० ४ ॥ चउविह भाख्या रे पन्नवणा पदे, बोले मुनि निर्दोष, एहवा मुनिनेरे भावे वदीये, तो होय समकित पोष ॥ ते मुनि० ५ ॥ कहीय प्रमादीरे मुनि न उवेखीये, जुओ चारण मुनि दोय, लब्धि प्रयुजीरे जगतीरथ करे तेहनो महिमारे जोय ॥ ते मुनि०६ ॥ लवण न मूकेरे मर्यादा सही, जीवाभिगम तरग, श्रीजिन वचनेरे ते मुनि वादता बाधे सयम रग ॥ ते मुनि०७॥ निमल दीसेरे सोना तणी परे नवविध ब्रह्म सुहाय, पुण्य अकुरा रे दर्शन पालवे अमृत वदेरे पाय ॥ ते मुनि० ८ ॥

क्रोधनी सज्झाय

कडवा फळ छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले, रीस तणो रस जाणीए, हळाहळ तोले ॥ क० १ ॥ क्रोधे क्रोड पूर्वतणु, सयम फल जाय, क्रोधसहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥ क० २ ॥ साधु घणो तपीयो हतो, धरतो मन वैराग, शिष्यना क्रोध थकी थयो चड कोशियो नाग ॥ क० ३ ॥ आग ऊठे जे घर थकी, ते पहेलु घर बाळे, जळनो जोग जो नवि मळे, तो पासेनु घर जाळे ॥ क० ४ ॥ क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवळ नाणी, हाण करे जे हेतनी, जाळवजो एम जाणी ॥ क० ५ ॥ उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गळे झाही, काया करजो निर्मळी, उपशम रस नाही ॥ क० ६ ॥

---

१ फूलने पीडा २ स्वाद लीधा वगर ३ अनुत्तरोपपातिक सूत्रमां तपोमूर्ति धन्नाजीनु वर्णन छे ४ सत्या, मृषा, सत्यामृषा, असत्यामृषा ए चार प्रकारमांथी सत्या अने असत्यामृषा एम बे निर्दोष भाषाओ बोले ५ लब्धिधारी मुनि ६ लब्धिना प्रयोगथी

१ । [illegible] वेश्या छेड नामणारे, वळी पाय नमीने कर [illegible] न रहे केहनीरे, तमे संगत मूको तेहनी रे । [illegible] २ ॥ लोभे घर मूकी रणमा मरेरे, लोभे उंच ते नीचु [illegible] छाप भगी पगला भरेरे, लोभे अकार्य करता न [illegible] ॥ तमे० ३ ॥ लोभे मनडु न रहे निर्मळु रे, लोभे सगपण [illegible] रे, लोभे न रहे प्रीतिने पावडुरे, लोभे धन न मळे [illegible] रे ॥ तमे० ४ ॥ लोभे पुत्र प्रत्ये पिता हणे रे, लोभे हत्या [illegible] नवि गणेरे, ते तो दाम तणे लोभे करी रे, उपर मणिधर [illegible] ते मरी रे ॥ तमे० ५ ॥ जोता लोभनो थोभ दीसे नहीं रे, एवु सूत्र सिद्धांते कह्यु सही रे, लोभे चक्री सुभूम नामे जुओरे, ते तो समुद्र माहे डूबी मूओरे ॥ तमे० ६ ॥ एम जाणी लोभने छडज्योरे, एक धर्मशुं ममता मंडज्योरे, कवि उदयरत्न भाखे मुदारे, वदु लोभ तजे तेहने सदारे ॥ तमे० ७ ॥

सहजानंदीनी सज्झाय

(बीजी अशरण भावना-ए देशी)

सहजानंदीरे आतमा, सूतो काइ निश्चिंतरे, मोह तणा रणीया भमे, जाग जाग मतिमंतरे, लूटे जगतना जंतरे, नाखी वाक अत्यंत रे, नरकापास ठवंत रे, कोइ विरला [illegible] ॥ राग द्वेष परिणति भजी, माया कपट कर[illegible]
कोराट जगम [illegible]
राजु एक [illegible]
रावण सरि[illegible]
रूपक्यो[illegible]
मा[illegible]
२ ॥ [illegible]

नित्य प्रत्ये, जोता दश हजाररे, देश विदेश सधाररे, ते नर इण ससाररे, जाता जम दरबाररे, न जुए वार कुवाररे. ॥ सहजा० ४ ॥ नारायणपुरी द्वारिका, वळती मेटी निराधारे, रोता रणमा ते एकला, नाठा देव आधाररे, किहा तरुछाया आवासरे, जळ जल करी गयो सासरे, बळभद्र सरोवर छासरे, मुणी पाडव शिवयासरे ॥ सहजा० ५ ॥ गाजी गार्जने चोळता, करता हुकम हेरानरे, पोढ्या अभिमा एकला, काया राख समानरे, ब्रह्मदत्त नरक प्रयाणरे ए ऋद्धि अथिर निदानरे, जेवु पींपळपानरे, म धरो जुठ गुमानरे॥ सहजा० ६ ॥ वालेसर विना एक घडी, नवि सहातु लगाररे, ते विना जन्मारो वही गयो, नहीं कागळ समाचाररे, नहीं कोई कोईनो ससाररे, स्वार्थीओ परिवाररे, माता मरुदेवी साररे, पहोता मोक्ष मोझाररे,॥ सहजा० ७ ॥ मात पिता सुत बांधवा, अधिक राग विचाररे, नारी असारी रे चित्तमा, वळे विष देती भरताररे, नृप जिन धर्म आधाररे, सज्जन नेह निवाररे ॥ सहजा० ८ ॥ हसी हसी देतारे ताळीयो, शय्या कुसुमनी साररे, ते नर अते माटी थया, लोक चणे परजाररे पडवा पात्र कुभार रे, एहवु जाणी असाररे, छोडयो विषय विकाररे, धन्य तेहनो अवताररे ॥ सहजा० ९ ॥ थावच्चासुत शिववर्यो, वळी एलाची कुमाररे, धिकधिक् विषयारे जीवने, लई वैराग्य रसाळरे, मेहली मोह जजाळरे घर रमे केवळ बाळरे, धन्य करकडू भूपाळरे ॥ सहजा० १० ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु लही, धर्मरयण धरा छेकरे, वीरवचनरस झेलडी, चाले चतुर विवेकरे, न गने ते नर भेकरे, धरता धर्मनी टेकरे, भवजळ तरीया अनेकरे ॥ सहजा० ११ ॥

अढार नातरानी सज्झाय

(एकवीसना देशी)

मथुरा नगरीरे, कुबेरसेना गणिका वसे,

उल्लमे, तिण जायोरे, युगल इक सुत ने सुता, नाम दीधोरे, कुबेरदत्त कुबेरदत्ता ॥१॥ (उथलो) मुद्रालकृत वस्त्र वींटी, युगल पेटीमा ठव्यो, एक रात्रि माही नदी प्रवाहे, जमुना जळमा वह्यो, सोरियपुर प्रभाव शेठे, समदी ल्हेंची करी, एक पुत्र ने पुत्रीय बीजो, राखता हरखे धरी २ बिहु शेठेरे, ओच्छव कीयो अति घणो, कर्मयोगेरे, मळीयो विवाद बिहुँ तणो, मारी पासारे, रमता बिहु मुद्रा मिली, निज बधवरे जाणीने थइ आकुळी ३ (उथलो) आकुळी थई तव भगिनि, विषय विरक्त ते थइ, साधवी पासे ग्रही सजम, अवधिनाणी सा थई व्यवसाय काजे कुबेरदत्त हवे, अनुक्रमे मथुरा गयो, वळी कर्म-योगे वेश्या भोगे, विलसता अगज थयो ४ (चाल) निज बधवरे प्रतिबोधनने साहुणी, वेश्या घररे, आवीने सा साहुणी, धर्मशाळारे पारणाने पासे रही, हुलरावेरे, बाळकने मा इम कही ५ (उथलो) इम कही पुत्र भत्रीज बधव, देवर काको पोतरो, इम नातरा षट् तुज साथे, रुदन करती उच्चरो, पति पिता बधव जेठ सुसरो, पितरियो इणी परे कही, कुबेरदत्त सुसाधवी, षट् नातरा इणी परे लहे ६(चाल) भोजाईरे, शोक माता सासु वहु, उडी मातारे, इणी परे षट् सगपण लहु, तव भाखेरे, साध्वीने वेश्या इशु असमजसरे, शु भाखे छे ए किशु. ७ (उथलो) किशु भाखे लाज न राखे, साध्वी वेश्याने कहे, मजुष माहि ठविय मेल्या, तेह वीतक सव कहे, इम सुणीय गणिका लीये सजम, पार पामी भव तणो, साध्वी इम उपदेश दीधो, करी उपकार अति घणो ८ (चाल) सुणी प्रभावरे इणी परे सहु ससारमे, एकेकेरे, सगपण,दश अठ इम कह्या, चिंहु जननारे गिणता इम बहुतर थया ९ (उथलो) थया बहुतर इम पडुत्तर, कहे जबुकुमार ए, ससार विषय विकारगिरुआ, दु खना भडार ए, तेह सुणी सजम ग्रहे प्रभवो, सुरा तिणपरे उल्लसे, कविराज धीर विमळ सेवक, नय विमळ इम उपदिशे १०

श्रीदेवानंदानी सज्झाय

(हो कुंथु जिन मनडु किम ही न बाझे—ए दशी)

जिनवर रूप देखी मन हरखी, स्तनसें दूध झराया, तब गौतमकु भया अचभा, प्रश्न करनकु आया हो गौतम ए तो मेरी अबा ॥ १ ॥ तस कूखे तुम काहेको बसीया, कवण कीया एण कर्म, तब श्रीविर जिणद एम बोले, एई कीया एणे कर्म ॥ हो गौतम० २ ॥ त्रिसलादे देराणी हुती, देवानदा जेठाणी, विषय लोभ करी काइ न जाण्यो, कपट वात मन आणी ॥ हो गौतम०३ ॥ देराणी की रत्न दाबडी, बहुला रत्न चोराया, झगडो करता न्याय जब हुवो, तब कछु नाणा पाया ॥ हो गौतम० ४ ॥ ऐसा श्राप दीया देराणी, तुज सतान मुज होजो, कर्म आगळ काइ न चाले, इद्र चक्रवर्ति जोजो ॥ हो गौतम० ५ ॥ भरतराय जब ऋषभने पूछे, एहमा कोइ जिणदा, मरीचि पुत्र त्रिदडी तेरो, चोविसमो जिणदा ॥ हो गौतम० ६ ॥ कुळनो गर्व कियो म गौतम, भरतराय जब वधा, मन वचन कायाए करीने, हरख्यो अति आनदा ॥ हो गौतम० ७ ॥ कर्म सजोगे भिक्षुक कुळ पाम्या, जन्म न होवे कबहु, इद्र अवध जोता अपहर्यो, देव मुजगम बाहे ॥ हो गौतम० ८ ॥ ब्यासी दिवस तिहा कने वसिया, हरिण-गमेषि जब आया, सिद्धारथ त्रिशला देराणी, तस कूखे उटकाय ॥ हो गौतम० ९ ॥ सिद्धारथ त्रिसला देराणी, अच्युत देव लोक जाशे, वंजे अगे आचारागे, ते सूत्रे वहेवाशे ॥ हो गौतम० १० ॥ ऋषभदत्तने देवानदा, लेशे सजम भारा, तब गौतम ए मुक्ते जाशे, भगवति सूत्र विचारा ॥ हो गौतम० ११ ॥ तप गच्छ श्रीहीरविजय सूरि, दीयो मनोरथ वाणी, सकळचद प्रभु गौतम पूछे, उलट मनमा आणी ॥ हो गौतम० १२ ॥

श्री मेतारज मुनिनी सज्झाय

(मन मोहन जिनजी मीठी ताहरी वाण – ए देशी)

सयम गुणना आगरुजी, पंचमहाव्रत धार, मासखमणने पारणेजी, राजग्रही नगरी मझार, मेतारज मुनिवर, धनधन तुम अवतार॥१॥ सोनीने घेर आवीयाजी, मेतारज ऋषीराय, जवला घडतो उठीयोजी, वंदे मुनिना पाय ॥ मेतारज० २ ॥ आज फळ्यो घर आगणोजी, विण काळे सहकार, ल्यो भिक्षा छे सूझतीजी, मोदक तणो ए आहार ॥ मेतारज० ३॥ क्रौंच जीव जवला चर्येजी, वहोरी चाल्या ऋषिराज, सोनी मन शंका थईजी, साधु तणा ए काज ॥ मेतारज० ॥ ४ ॥ रीस करी ऋषिने कहेजी, द्यो मुज जवला आज वाधर शीशे वांधीया जी, तडके राख्या मुनिराज ॥ मेतारज० ५ ॥ फटफट फुटे हाडकाजी, तडतड तूटे चाम, सोनीडे परिसह कर्योजी, साधु राख्यो मन ठाम ॥ मेतारज० ६ ॥ एहवा पण मोटा जतिजी मन न आणे रोष, आतम निंदे आपणोजी, सोनीनो श्यो दोष ॥ मेतारज० ७ ॥ गज सुकुमाल संतापियाजी, बाधी माटीनी पाळ, खेर अंगारा शिरे धर्योजी, मुगते गया तत्काल ॥ मेतारज० ८ ॥ वाघण शरीर वलूरीयुजी, साधु सुकोमल सार, केवळ लही मुगते गयाजी, एम अरणिक अणगार॥ मेतारज० ९ ॥ पापी पालके पीलियाजी, खधक सूरिना शिष्य, अवड चेला पाचशेजी, नमो नमो ते मुनि शिष्य ॥ मेतारज० १०॥ एहवा पुरुष संभारताजी, मेतारज ऋषिराय, अंतगड हुआ केवळीजी, वंदे मुनिना पाय ॥ मेतारज ० ११ ॥ भारी काष्टनी स्त्रीए तिहाजी, लावी नाखी तेणी वार, धबके पंखी जागीयोजी, जवला काढ्या तिणे सार ॥ मेतारज ० १२ ॥ देखी जवला वींटमाजी, मनमा लाज्यो सोनार, ओघो मुहपत्ति साधुनानी, लेई थयो अणगार ॥ मेतारज ० १३॥ आतम तार्यो आपणोजी, थिर करी मन वच काय, राजविजय रंगे भणेजी, साधु तणी ए सज्झाय ॥ मेतारज ० १४ ॥

श्रीखंधक मुनिनी सज्झाय

नमो नमो खधक महामुनि, खधक क्षमाभंडाररे, [illegible]
मुनि विचरता, चारित्र खड्गनी धाररे ॥ नमो [illegible] ०१ ॥ [illegible]
गुसिने धारतो, जितशत्रु रानानो नंदरे, धारणी [illegible]
परमानंदरे. ॥ नमो ०२ ॥ धर्मघोष मुनि [illegible]
प्रतिबोधरे, अनुमति लेई मात तातनी, [illegible]
॥ नमो०३ ॥ छठ्ठ अठ्ठम आदि घणा, दुक्कर तप [illegible]
परिसह सहे, तो पण मने नही रोषरे ॥ [illegible]
खीजडा देहमा, चालता खडखडे हाडरे, तो [illegible]
जाणतो अथिर संसाररे ॥ नमो०५ ॥ [illegible]
थावीया साधुजी सोयरे, गोखे बेठी चिंते [illegible]
होयरे. ॥ नमो०६ ॥ वेनने बंधव सांभर्यो, [illegible]
छाती लागी छे फाटवा, नयणे वहे [illegible] ॥ नमो०७ ॥ [illegible]
चिंते मनमा इस्यू ए कोई नारीनो जारे, [illegible]
लावोजी खाल उतारे ॥ नमो ०८ ॥

ढाळ बीजी

रायसेवक कहे साधुने, खालडी [illegible], [illegible]
एह छे आणा, ते अमे आज करसुरे, [illegible]
वर्यो ॥ १ ॥ मुनिवर मनमांही आनंद्या, [illegible] आव्यो [illegible]
खपावानो अवसर आवो, फरी नहि [illegible] ॥ [illegible] २ ॥
ए तो वळी सखाई मिळ्यो, [illegible]
कायरपणु परिहरने, जिम न थाय भव [illegible] ॥ [illegible] ३ ॥ [illegible]
सेवकने मुनिवर कहे, कठण [illegible], [illegible]
हावे थाये, कहो तिम रहीए भावार ॥ [illegible] ४ ॥ [illegible]
करीने, भव [illegible], [illegible]

वोसिरावतरे ॥ अहो० ५ ॥ चड चड चामडी तेह उतारे, मुनि समतारस झीलेरे, क्षपक श्रेणी आरोहण करीने, करम कठणने पीलेरे ॥ अहो० ६ ॥ चोथुँ ध्यान धरता अते, केवळ लई मुनि सिध्यारे, अजर अमर पद मुनिवर पाम्या, कारज सघळा सिध्यारे ॥ अहो० ७ ॥ हवे मुहपत्ति लोही खरडी, पखीडे आमिष जाणीरे, राजद्वारे लेई नाखी, सेवके लीधी ताणीरे ॥ अहो० ८ ॥ सेवक मुखथी वातज जाणी, ऋषेने मुहपत्ति दीठीरे, निश्चे भाई हणीओ जाणी, हैये ऊठी अगीठीरे. ॥ अहो०९ ॥ विरह विलाप करे रायराणी, साधुनी समता धराणेरे, अथिर ससार स्वरूप तव जाणी, सजम ले रायराणीरे ॥ अहो ०१० ॥ आलोई पातक सवि उडी, करम कठिनने निंदीरे, तप दु कर करी काया गाळी, शिवसुख लहे आनदीरे. ॥ अहो ०११॥ भवियण एहवा मुनिवर वदी, मानव भव फळ लीजेरे, करजोडी मुनि मोहन विनवे, सेवक सुखिया कीजेरे ॥ अहो० १२ ॥

महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजीकृत आठ योगदृष्टि विचार
ढाळ पहेली—मित्रा दृष्टि विचार

शिवसुख कारण उपदिशी, योगतणी अड दिट्ठीरे, ते गुण थुणी जिन वीरनो, करशु धर्मनी पुट्ठीरे, वीर जिणेसर देशना ॥ १ ॥ सघन अघन दिन रयणीमा, बाळ विकल अनेरारे, अरथ जोये जिम जूजूआ, ओघ नजरे तिम फेरारे ॥ वीर०२ ॥ दर्शन जे हुआ जूजूआ, ते ओघ नजरने फेरेरे, भेद थिरादिक दृष्टिमा, समकित दृष्टिने हेरेरे ॥ वीर० ३॥ दर्शन सकलना नय ग्रहे, आप रहे निज भावेरे, हितकरी जनने सजीवनी, चारो तेह चरावेरे. ॥ वीर० ४ ॥ दृष्टि थिरादिक चारमा, मुक्तिप्रयाण न भाँजेरे, रयणी शयन जिम श्रम हरे, सुरनरसुख तिम छाजेरे ॥ वीर०५॥ एह प्रसगथी में कह्यु, प्रथम दृष्टि हवे कहियेरे, जिहा मित्रा तिहा बोध जे, ते तृण अगनिस्यो लहियेरे. ॥ वीर०६ ॥ व्रत पण यम इहा सपजे, खेद नहि शुभ

कालेरे, द्वेप नहि वळी अवरग्यु, एह गुण अगे विराजेरे ॥ वीर० [illegible] योगना बीज इहा ग्रहे जिनवर शुद्ध प्रणामोरे, भावाचारज [illegible] भवउद्वेग सुठामोरे, ॥ वीर०८ ॥ द्रव्य अभिग्रह पाळवा, [illegible] प्रमुखने दानेरे, आदर आगम आसरी, लिखनादिक [illegible] ॥ वीर०९ ॥ ऐरान पूजन आपनु, श्रुतवाचन [illegible], [illegible] विस्तार सज्झायथी चिंतन भावन चाहोरे ॥ वीर०१० ॥ [illegible] कथा भली साभळी, रोमाचित हुए देहरे, एह [illegible] लहिये धरम सनेहरे ॥ वीर०११ ॥ सद्गुरु योग [illegible] तेहथी फल होय जेहोरे, योग क्रिया फल [illegible], [illegible] एहोरे ॥ वीर०१२ ॥ चाहे चकोर ते चदने, [illegible] भोगीरे, तिम भवि सहज गुणे होवे, उत्तम [illegible] ॥ वीर०१३ ॥ एह अवचक योग ते, प्रगटे [illegible] सिद्धदशा सम्रु, बीजनु चित्त प्रवर्तेरे [illegible] अपूर्वना निरूटथी, जे पहेतु गुणठाणुरे, [illegible] विलासनु ठाणुरे ॥ वीर०१५ ॥

ढाळ बीजी—तारादृष्टि [illegible]

(मन मोहन मेरे—ए [illegible])

दर्शन तारा दृष्टिमा, मन मोहन मेरे, [illegible] मोहन मेरे ॥ शौच सतोप ने तप [illegible] मन० [illegible] ध्यान मन० १ ॥ नियम पच इहा [illegible] मन० ॥ जिज्ञासा गुण तत्त्वनी मन० [illegible] मन० २ [illegible] एह दृष्टि होय वरतता मन० [illegible] मन० [illegible] तेह न आचरे, मन० याव्यो [illegible] मन० ३ [illegible] अधिक गुणीनो करे मन०, देखे [illegible] मन० [illegible] भवभय थकी मन० भव माने [illegible] मन० ४ [illegible] मति थोडली, मन० शिष्ट [illegible] मन०, [illegible] भावथी मन० [illegible] करे [illegible] मन० [illegible]

ढाळ त्रीजी-बलादृष्टि विचार

(प्रथम गोवालिया तणे भवेजी-ए देशी)

त्रीजी दृष्टि बला कहीजी, काष्ठ अगनिसम बोध, क्षेप नहि आसन सधेजी, श्रवण समीहा शोधरे जिनजी ! धन धन तुज उपदेश ॥ १ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवर्योजी, जिम चाहे सुर गीत, साभळवा तिम तत्त्वनेजी ए दृष्टि सुविनितरे ॥ जि० ध० २ ॥ सेर ए बोध प्रवाहनीजी ए विण श्रुत थलकूप, श्रवण समीहा ते किसीजी ? शयित सुणे जिम भूपरे ॥ जि० ध० ३ ॥ मन रीझे तनु उल्लसेजी, रीझे बूझे एक तान, ते इच्छा विणु गुणकथाजी, बहेरा आगळ गानरे ॥ जिन० ध० ४ ॥ विघन इहा प्राये नहिजी, धर्म हेतुमाहे होय, अनाचार परिहारथीजी, सुजश महोदय होयरे. ॥ जि० ध० ५ ॥

ढाळ चोथी – दीप्रादृष्टि विचार

(झांझरीया मुनिवर धन धन तुम अवतार-ए देशी)

योगदृष्टि चोथी कहीजी, दीप्रा तिहा न उत्थान, प्राणायाम ते भावथीजी, दीप प्रभा सम ज्ञान ॥ मनमोहन जिनजी । मीठी ताहरी वाण ॥ १ ॥ बाह्य भाव रेचक इहाजी, पूरक अतर भाव, कुभक थिरता गुणे करीजी, प्राणायाम स्वभाव ॥ मन० २ ॥ धर्म अर्थे इहा प्राणनेजी, छाडे पण नहि धर्म, प्राण अर्थे सकट पडेजी, जुओ ए दृष्टिनो मर्म ॥ मन० ३ ॥ तत्त्वश्रवण मधुरोदकेजी, इहा होय बीज-प्ररोह, खार उदक सम भव त्यजेजी, गुरुभक्ति अद्रोह ॥ म० ४॥ सूक्ष्मबोध तो पण इहाजी, समकित विण नावि होय, वैद्य सवेद्य पदे कह्योजी, ते न अवेद्ये जोय ॥ मन० ५ ॥ वेद्यबध शिवहेतु छे जी, सवेदन तस नाण, नय-निक्षेपे अति भलुजी, वेद्य सवेद्य प्रमाण ॥ मन० ६ ॥ ते ते पद ग्रथि-विभेदथीजी, छेली पाप-प्रवृत्ति, तप्त लोह पद धृति समीजी, तिहा होय अते निवृत्ति

॥ मन० ७ ॥ एह थकी विपरीत छे जी, पद जे अवद्य संवेद्य, भव अभिनंदी जीवनेजी, ते होय वस्त्र अभेद्य ॥ मन० ८ ॥ लोभी कृपण दयामणोजी, मायी मच्छर ठाण, भव अभिनंदी भय भर्योजी, अफल आरंभ अयाण ॥ मन० ९ ॥ एहवा अवगुणवंतनुंजी, पद जे अवेद्य कठोर, साधु संग आगम तणोजी, ते जीते धरि जोर ॥ मन० १० ॥ ते जीते सहजे टळेजी, विषम कुतर्क प्रकार, दूर निकट हाथी हणेजी, जिम ए बठर विचार ॥ मन० ११ ॥ हुं पाम्यो संशय नहींजी, मूरख करे ए विचार, आळसु आ गुरुशिष्यनाजी, ते तो वचन प्रकार ॥ मन० १२ ॥ धीजे ते पति आववुंनी, आप मते अनुमान, आगम ने अनुमानथीनी, साचुं लहे सुज्ञान ॥ मन० १३ ॥ नहीं सर्वज्ञ जूजूआजी, तेहना जे वळी दास, भक्ति देवनी पण कहीजी, चित्र अचित्र प्रकाश ॥ मन० १४ ॥ देव संसारी अनेक छे जी, तेहनी भक्ति विचित्र, एक राग पर द्वेषथीजी, एक मुक्तिनी अचित्र ॥ मन० १५ ॥ इंद्रियार्थ गत बुद्धि छे जी, ज्ञान छे आगम हेत, असमोह शुभ कृति गुणेजी, तेणे फलभेद संकेत ॥ मन० १६ ॥ आदर क्रिया–रति घणीजी, विघ्न टळे मिळे लच्छि, जिज्ञासा बुध– सेवनाजी, शुभ कृति चिन्ह प्रत्यच्छि ॥ मन० १७ ॥ बुद्धि क्रिया भवफल दिएजी, ज्ञान क्रिया शिव अंग, असमोह क्रिया दिएजी, शीघ्र मुक्ति फल चंग ॥ मन० १८ ॥ पुद्गल रचना कारमीजी, तिहां जस चित्त न लीन, एक मार्ग ते शिव तणोजी, भेद लहे जग दीन ॥ मन० १९ ॥ शिष्य भणी जिन देशनाजी, कहे जन परिणति भिन्न, कहे मुनिनी नय देशनाजी, परमारथथी अभिन्न ॥ मन० २० ॥ शब्द भेद झगडो किस्योजी, परमारथ जो एक। कहो गंगा कहो सुरनदीजी, वस्तु फिरे नहीं छेक ॥ मन० २१ ॥ धर्म क्षमादिक पण मिटेजी, प्रगटे धर्म सन्यास, तो झगडा झॉटा तणोजी, मुनिने कवण अभ्यास ? ॥ मन० २२ ॥ अभिनिवेश सघळो त्यजीजी, चार लही जेणे दृष्टि। ते लहेसे हवे पांचमीजी, सुजश अमृत घन वृष्टि ॥ मन० २३ ॥

ढाळ पाचमी–स्थिरा दृष्टि विचार

(धन धन सप्रति साचो राजा–ए देशी)

दृष्टि थिरा माँहे दर्शन नित्ये, रत्नप्रभा सम जाणोरे, भ्रांति नहीं वळी बोध ते सूक्ष्म, प्रत्याहार वखाणोरे ॥ १ ॥ ए गुण वीरतणो न विसारुं सभारु दिनरातरे, पशु टाळी सुररूप करे जे, समकितने अवदातरे ॥ ए गुण० २ ॥ बाल धूलिघर लीलासरिखी, भव–चेष्टा इहा भासेरे, ऋद्धि वृद्धि घटमा सवि प्रगटे, अष्ट महासिद्धि पासेरे ॥ ए गुण० ३ ॥ विषय विकारे न इंद्रिय जोडे, ते इहा प्रत्याहारोरे, केवल ज्योति ते तत्त्व प्रकाशे, शेष उपाय असारोरे ॥ ए गुण० ४ ॥ शीतल चदनथी पण उपन्यो, अग्नि दहे जिम वननेरे, धर्मजनित पण भोग इहा तिम, लागे अनिष्ट ते मननेरे ॥ ए गुण० ५ ॥ अंश होय इहा अविनाशी, पुद्गल जाळ तमासीरे, चिदानदघन सुजस विलासी, किम होय जगनो आशीरे ॥ ए गुण० ६ ॥

ढाळ छट्ठी–कांता दृष्टि विचार

(भोळीडा हसारे विषय न राचीए–ए देशी)

अचपल रोग रहित निष्ठुर नहि, अल्प होय दोय नीति, गध ते सारोरे कांति प्रसन्नता, सुस्वर प्रथम प्रवृत्ति। धन धन शासन श्री जिनवरतणु ॥ १ ॥ धीर प्रभावीरे आगळे योगथी, मित्रादिक युत चित्त, लाभ इष्टनोरे द्वद्व अधृष्यता, जनप्रियता होय नित्य ॥ धन० २ ॥ नाश दोषनोरे तृप्ति परम लहे, समता उचित सयोग, नाश वयरनोरे बुद्धि ऋतभरा ए निष्पन्न योग ॥ धन० ३ ॥ चिन्ह योगनारे जे पर ग्रथमा, योगाचारय दिट्ठ, पचम दृष्टि थकी सवि जोडीए, एहवा तेह गरिट्ठ ॥ धन० ४ ॥ छट्ठी दिट्ठिरे हवे कांता कहु, तिहा ताराभ–प्रकाश, तत्त्वमीमासारे दृढ होय धारणा, नहीं अन्य श्रुतवास ॥ धन० ५ ॥ मन महिलानुरे वहाला उपरे, बीजा काम करत, तिम श्रुत

धर्मरे एहमा मन धरे, ज्ञान क्षेपकवत ॥ धन्य० ६ ॥ एहवे ध्यानेरे विघन-निवारणे, भोग नहीं भव हेत, नवि गुण दोष न विषय स्वरूपथी, मनगुण अवगुण खेत ॥ धन० ७ ॥ माया प्राणीरे जाणी तेहने, लघी जाय अडोल, साचु जाणीरे ते बीहतो रहे, न चले डामाडोळ ॥ धन० ८ ॥ भोग तस्वनेरे इम भय नवि टळे, जूठा जाणेरे भोग, ते ए दृष्टिरे भवनायर तरे लहे वळी सुजस सयोग ॥ धन० ९ ॥

ढाळ सातमी-प्रभा दृष्टि विचार

(ए छिंडी किहां राखी-ए देशी)

अर्क प्रभासम बोध प्रभामा, ध्यानप्रिया ए दिठ्ठि, तस्वतणी प्रतिपत्ति इहां वळी, रोग नहीं सुख पुठ्ठिरे । भविका वीरवचन चित्त धरिए ॥ १ ॥ सघळु परवश ते दुःख लक्षण, निजवश ते सुख लहिए, ए दृष्टि आतम गुण प्रगटे, कहो सुख ते कुण कहिएरे ॥ भ० २ ॥ नागरसुख पामर नवि जाणे, वहभसुख न कुमारी, अनुभव विण तिम ध्यान तणु सुख, कुण जाणे नरनारीरे ॥ भ० ३ ॥ एह दृष्टिमा निर्मल बोधे, ध्यान सदा होय साचु, दूषण रहित निरतर ज्योति ए, रतन ते दीपे जाचुरे ॥ भ० ४ ॥ विषभाग-क्षय शातवाहिता, शिवमारगध्रुव नाम, कहे असग क्रिया इहा योगी विमळ सुजस परिणामरे ॥ भ० ५ ॥

ढाळ आठमी – परादृष्टि विचार

(तुज साथे नहीं बोलु मारा व्हाला ! तें मुजने विसारीजी-ए देशी)

दृष्टि आठमी सार समाधि, नाम परा तस जाणुजी, आप स्वभावे प्रवृत्ति पूरण, शशि सम बोध वखाणुजी, निरविचारपद एहमा योगी, कहिये नहीं अतिचारीजी, आरोहे आरुढे गिरिने, तिम एहनी गति न्यारीजी ॥ १ ॥ चदन गंध समान क्षमा

इहा, वासकने न गवेषेजी, आसगे वर्जित वळी एहमां, किरिय निजगुण लेखेजी, शिक्षार्थी जिम रतन नियोजन, दृष्टि भिन्न तिम एहोजी, तास नियोगे करण अपूर्व, लहे मुनि केवलगेहोजी ॥ २ ॥ क्षीण दोष सर्वज्ञ महामुनि, सर्वलब्धिफलभोगेजी पर उपगार करी शिव सुख ते, पामे योग अयोगजी, सर्व शत्रु क्षय, सर्व व्याधिलय, पूरण सर्व समीहाजी, सर्व अरथ योगे सुख तेहथी, अनंत गुणह निरीहाजी ॥ ३ ॥ ए अडदिट्ठी कही संक्षेपे, योगशास्त्र संकेतेजी, कुलयोगीने प्रवृत्त चक्र जे, तेह तणे हित हेतेजी, योगी कुळे जाया तस धर्मे अनुगत ते कुळ योगीजी, अद्वेषी गुरुदेव द्विजप्रिय, दयावंत उपयोगीजी ॥ ४ ॥ शुश्रूषादिक अड गुण संपूरण, "प्रवृत्तचक्र" ते कहीयेजी यमद्वय लाभी परदुग अर्थी, आद्य अवंचक लहीयेजी, चार अहिंसादिक यम इच्छा, प्रवृत्ति थिर सिद्धि नामेजी, शुद्ध रुचे पाळे अतिचारह, टाळे फळपरिणामेजी ॥ ५ ॥ कुळयोगीने प्रवृत्त-चक्रने, श्रवण शुद्धि पक्षपातजी, योगदृष्टि ग्रंथे हित होवे, तेणे कही ए वातजी, शुद्ध भाव ने सूनी किरिया, बेहुमां अंतर केतोजी? झळहळतो सूरजने सजुओ, तास तेजमां जेतोजी ॥ ६ ॥ गुह्य भाव ए तेहने कहीये, जेहशुं अंतर भांजेजी, जेहशुं चित्त पटंतर होवे, तेहशुं गुह्य न छाजेजी, योग्य अयोग्य विभाग अलहतो, कहेशे मोटी वातोजी, खमशे ते पंडित परिषदमां मुष्टिप्रहारने लातोजी ॥ ७ ॥ सभा त्रण गुण श्रोता गुण अवगुण, नंदी सूत्रे दीसेजी, ते जाणी ए ग्रंथ योग्यने, देजो सुगुण जगीशेजी; लोक पूरजो निज निज इच्छा, योग भावगुणरयणेजी, श्रीनयविजय विबुधपय सेवक, वाचक जसने वयणेजी ॥ ८ ॥

सबाहुकुमरनी सज्झाय

हवे सुबाहु कुमर इस वीनवे अमे लेशु सजम भार माडी माहिरे, मा ! मे वीरप्रभुनी वाणी साभळी, तेणे मे जाण्यो अथिर ससार माडी हवे हु नही रहुं रे ससारमा ॥१॥ हारे जाया तुज विणा सूना मन्दिर माळिया जाया तुज विण सूनो ससार, जाया मोरारे, माणेक मोती ने मुद्रिका काइ, ऋद्धि तणो नही पार जाया तुज विना घडीय न नीसरे ॥२॥ हारे माजी तन धन जोबन कारमु, कारमो कुटुब परिवार, माडी० वारमा सगपणमा कुण रहे मे तो जाण्यो अथिर ससार माडी० हवे० ॥ ३ ॥ हारे जाया सजमपथ पणो आकरो, जाया व्रत छे खाडानी धार, जाया मोरारे, बावीस परिसह जीतवा, जाया रेहवुनी वनवास जा० तुज० ॥ हारे माजी वनमा वे रहे छे मरगला तेनी कुण करे छ सभाळ माडी० वन-मृगनी परे चालशु एम एकलडा निरधार मा० हवे० ॥५॥ हारे जाया शीयाळे शीत बहु पडे जाया उनाळे लु वाय जाया वरसादो अति दोहीलो, काइ पटीव वरसशो जाय जा० तु० ॥६॥ हारे माजी नरक नीगोदमा हु भम्यो अनत अनती हो वार मा० छेदन भेदन में सह्या वेहता नावे पार मा० ह० ॥ ७ ॥ हारे जाया पाचसे पाचसे नारीओ रूप अप्सरा समान जाया० ऊचा ते कुळनी उपनी रेहवा पाचसे आवास जा० तु० ॥ ८ ॥ हारे माजी परमा जो निकळे एक नागणी मुखे नावे निद्रा लगार मा० तो पाचश नागणियोमा केम रहु मारु मनडु आकुळ्याकुळ थाय मा० ह० ॥ ९ ॥ हारे जाया एटला दिवस हु तो जाणती रमाडीश वहुरोना बाळ जा० दिवस अवारो आवीयो तु छे छे सजमभार जा० तु० ॥ १० ॥ हारे माजी मुसाफर आव्यो कोइ परणलो, फरी भेगो थाय न थाय मा० इम माणस भव पामवो दोहीलो धर्मविना दुर्गतिमा जाय माडी० ह० ॥ ११ ॥ हवे पाचसो वहुरो एम वीनवे तेमा वडेरी करे

वालम मोरारे, स्वामी तमे तो सजम लेवा सचर्या स्वामी अमने कवण आधार, वालम विना केम रही शकु ॥ १२ ॥ हारे माजी मातपिता ने भाई बेनडी नारी कुटुंब परिवार मा० अंतसमय अळगा रहे एक धर्मज तारणहार मा० ह० ॥ १३ ॥ हारे माजी काची ते काया कारमी सडीपडी विणसी जाय मा० जीवडो जायने काया पडि रहे मूवा पछी बळी करे राख मा० ह० ॥ १४ ॥ हवे धारणी माता रही वीनवे आ पुत्र नही रहे ससार भविकजनरे एक दिवसनु राज भोगवी सजम लीधु वीर स्वामी पास भ० सोभागी कुवरे सजम आदर्यु ॥ १५ ॥ तप जप करी काया शोषवी आराधी गया देवलोक भ० पदर भव पूरा करी महाविदेहे जाशे मोक्ष भ० सो० ॥ १६ ॥ हारे माजी विपाक सूत्रमा भाखीयु वीजा सूत्र मोझार भ० प्रथम अध्ययने ए कह्यु सूत्र विपाकमा अधिकार भ० सो० ॥ १७ ॥

एलाची कुमरनी सज्झाय

नाम एलापुत्र जाणीये धनदत्त शेठनो पुत्र नटवी देखीने मोहियो नावे राख्यु घरनु सूत्र॥ १ ॥ कर्म न छूटेरे प्राणिया, पूरव नेह विकार, निजकुल छडी रे नट थयो नाणी शरम लगार कर्म० ॥ २ ॥ मातपिता कहे पुत्रने नट नवि थइयेरे जात पुल परणावुरे पदमणी सुख विलसो सघात क० ॥ ३ ॥ कहेण न मान्युरे तातनु पूरव कर्म विशेष नट थइ शीख्योरे नाचवा न मीटे लरयारे लेख क० ४ एक पुर आव्योरे नाचवा उचो वश विशेक, तिहा राय जोवाने आवियो मळिया लोक अनेक क० ॥ ५ ॥ ढोल बजावेरे नटवी गावे किन्नर साद, पायतळे घूघरा घमघमे गाजे अबर नाद क० ॥ ६ ॥ दोय पगे पहेरीरे पावडी वश चढ्यो गजगेल, नोधारो थइ नाचतो खेले नवनवा खेल कर्म० ॥ ७ ॥ नटवी रभारे सारिखी नयणे देखेरे

जाम, जो अतेउरमा ए रहे जन्म सफळ मुज ताम क० ॥ ८ ॥ तब तिहा चिंतेरे भूपति लुब्यो नटवीनी साथ जो नट पडेरे नाचवो तो नटवी करु मुज हाथ क० ॥ ९ ॥ कर्म वशेरे हु नट थयो नाचु छुं तिराधार मन नवि मानेरे रायतु तो कोण करवो विचार क० ॥ १० ॥ दान न आपेरे भूपति नटे जाणी ते वात हुं धन वाछु छु रायतु राय वाछे मुज घात क० ॥ ११ ॥ धन लहु जो हु रायनु तो मुज जीवित सार एम मन माहे ते चिंतवी चडियो चोथीरे वार क० ॥ १२ ॥ थाळभरी शुद्ध मोदके पद्मिनी उभी छे वार ल्यो ल्यो कहे छे लेता नथी धनधन मुनिअवतार क० ॥ १३ ॥ एम तिहा मुनिवर वहोरता नटे पेख्या महाभाग धिग्धिग् विषयारे जीवने एम नट पाम्यो वैराग क० ॥ १४ ॥ सवर भावेरे केवली थयो ते कर्म खपाय केवळ महिमारे सुर करे लब्धिविजय गुण गाय कर्म० ॥ १५ ॥

धन्नाजीनी सज्झाय

शीयाळामा शीत घणोरे धन्ना उनाळे लु वाय चोमासे जळ वादळारे धन्ना ए दु ख सहु न जाय हु तो वारीरे वननी आन नही ऐसो काळ ॥ १ ॥ वनमें तो रेहवु एकलुरे ध० कोण करे सारी सार भूख परीसह दोहिलोरे ध० मत कर एसी वात हो धननी मत लीयो सयम भार ध० ॥ २ ॥ वनमा तो मृग एकलोरे माता कोण करे तेहनी सार करणी तो जेसी आपकी रे माता कोण वेटा कोण बाप हो जननी हु लइश सजम भार ॥ ३ ॥ पच महाव्रत पाळवारे ध० पाचे मेरु समान बावीस परीसह जीतवारे ध० सयम खाडानी धाररे ध० मत लीयो सयम भार ॥ ४ ॥ नीर विनानी नदी किसीरे ध० चन्द विना केसी रात पियु विना केसी कामिनीरे ध० वदन कमळ विळखाय हो ध० मत० ॥ ५ ॥ दीपक विना मदिर कीश्यारे ध० कान विना केसो राग नयन विना कीश्यु निरखवुरे ध० पुत्र विना

परिवार हो ध० मत० ॥ ६ ॥ तु मज अधा लाकडीरे धन्ना सो कोई टेकोरे होय, जो कोइ लाकडी तोडशेरे ध० अन्यो होशे सुवार हो ध० मत० ॥ ७ ॥ रत्न जडितको पींजरोरे माता पोपट जाणे छे बन्ध कामभोग ससारनारे माता ज्ञानीने मन फन्द हो ज० हु० ॥८॥ आयु तो कचनभर्योरे ध० राइ परवत जेम सार मगर पच्चीसी खीरे ध० नहीं सर्यसकी वात हो ध० मत० ॥ ९ ॥ नित्य उठी घोडले फीरतारे ध० नित्य बागमें जाय एमी गुवा परमाणेरे ध० चमर ढोळाया जायरे ध० मत० ॥ १० ॥ चोडी पालखिये पोढतोरे ध० नित्य नइ सुखी माण एवो बत्रीश कामिनीरे ध० उभी करे अरदास हो ध० मत० ॥ ११ ॥ नारय सकारा हु गयोरे माता कने आयो राग मुनीश्वरनी वाणी सुणीरे माता आ ससार असार हो ज० हु० ॥ १२ ॥ हाथमे लेणो पातरोरे धन्ना घरघर मागवी भीख कोइ गाळज दइ काढशेरे धन्ना कोई देशे शीखहो ध० म० ॥ १३ ॥ तज दिया मन्दिर माळियारे माता तन दियो सब ससार तज दीनी घरकी नारियारे माता छोड चल्यो परिवारहो ज० हु० ॥ १४ ॥ जूठा ते मन्दिर माळियारे माता जुठा सब ससार जीवता छुटे काळजुरे माता मुवा नरके लेइ जायहो ज० हु ॥ १५ ॥ रात्री भोजन छोड देवो धन्ना परनारी पच्चक्खाण परधनशु दूरा रहोरे धन्ना सहज सयमभार हो ध० म० ॥ १६ ॥ मातपिता छोडो नहीरे ध० मत कर एसीरे वात एह बत्रीश कामिनिरे ध० एमा देगी शाप हो ध० म० ॥ १७ ॥ कर्म तणा दु ख में सह्यारे माता कोइ न जाणे भेद रागद्वेषके पूठडेरे माता वाध्या वैर विरोध हो ज० हु० ॥ १८ ॥ साधु पणामे सुख घणोरे माता नहीं दु खनो लवलेश मळशे सोई खावशुरे माता सोइ साधु उदेश ज० हु० ॥ १९ ॥ एकला उठी जायशेरे माता कोइ न राखणहार एक जीवके कारणेरे माता क्यु करे एवो विलापरे ज० हु० ॥ २० ॥ न कोई धन्नो मर गयोरे माता न कोई गयो परदेश उग्या सोइ आथमेरे माता फूल्या सोही करमाय हो ज० हु० ॥ २१ ॥ काळ ओचितो मारशेरे माता कोण छोडावणहार कर्म काट मुक्ते

गयारे माता देवलोक ससार हो ज० हु० ॥ २२ ॥ जे जेवी करणी करेरे माता तेणे तेसा फळ होय' दयाधर्म संयमविनारे माता शिवसुख पामे न कोय हो ज० हु० ॥ २३ ॥

कार्तिकशेठनी सज्झाय

पुर हथिणाउर वासीयो, कार्तिक शेठ प्रसिद्धरे, मुनिसुव्रत जिन देशना, साभळीने प्रतिबुद्धरे । धन्य लघुकर्मी जीवडा, जे करे धर्मनी वृद्धिरे, इन्द्रादिक पदवी लही, अन्ते पामे सिद्धिरे ॥ धन्य०२॥ तस वैरागे वैरागिया अठुत्तर हजाररे, पच महाव्रत आदरी, साथे लीनो सयम भाररे ॥ धन्य० ३ ॥ चौदे पूरव अभ्यासी करी मास सलेखना कीधरे, प्रथम सर्गे सुरपति हुओ, इक भवे होवे सिद्धरे ॥ धन्य० ४ ॥ शक्रभवे जय वादवा आव्यो वीरने तामरे, एह वृत्तात गौतम भणी कह्यो विशाखा ग्रामरे ॥ धन्य ५॥ भगवति शतक अढारमे, जोई एह सज्झायरे, पर उपकार भणी कहे मानविजय उवझायरे ॥ धन्य० ६ ॥

आठ मदनी सज्झाय

मद आठ महामुनि वारीये, जे दुर्गतिना दातारोरे, श्रीवीर जिनेसर उपदिसे, भाखे सोहम गणधारोरे॥ हाजी जातिनो मद पहेलो कह्यो, पूर्वे हरिकेशीए कीधोरे ॥ मद० १॥ चडाल तणे कुळ उपन्यो, तपथी सवि कारज सिध्योरे ॥ मद० २ ॥ हाजी कुलमद बीजो दाखीयो, मरीचि भवे कीधो प्राणीरे, कोडाकोडी सागर भवमा भम्यो मद न करो एम मन जाणीरे ॥ मद० ३ ॥ हाजी बलमदथी दुःख पामीया, श्रेणिक वसुभूति जीवोरे, जई भोगव्या दुःख नरक तणा, मुखे पाडता नित रीवोरे ॥ मद० ४ ॥ हाजी सनत्

१ एक हजार आठ साथे दीक्षा लीधी २ हालजे सौधर्मेंद्र छे ते ३

मोर, मच्छगलागल न्याय छे जीरे निर्भय नहीं कोई ढोररे जिवडा ए० ४ ॥ कर्मे नाटक माडियेजीरे, जिवडो नाचणहार, नवा नवा लै-बाशमाजी रे, खेले विविध प्रकाररे ॥ जिवडा ए०५॥ चोरासी चोगान-माजीरे, रूपरगना ठाठ, तमासा त्रण लोकनाजीरे, बाजीगरना पाठरे ॥ जिवडा ए० ६ ॥ वहोत गंइ थोडी रहीजी रे, परभव भातु रे बाध, समवासुदननी वेलडीजी रे, धर्म रत्न पद साररे ॥ जिवडा ए० ७॥

श्री जबूस्वामीनी सज्झाय

(रे जीव जिन धर्म कीजिये — ए देशी)

सरसती सामीणी विनवु, सद्गुरु लागुजी पाय । गुणरे गाऊ जबूस्वामीना, हरख धरी मनमाय । धन धन धन जबूस्वामी-ने ॥ १ ॥ सजम पथ स्वामी दोहिलो, व्रत छे खाडानी धार । वेलु समान जे कोळिया, ते केम वाव्या जाय ध० ॥ २ ॥ पाये अलवाणु स्वामी चालवु, दिनकर तपेरे निलाड । मध्यान्हे करवी गोचरी, लेवो सूझतो आहार ॥ ३ ॥ कोडि नवाणु सोवन ताहरे, ताहरे छे आठज नार । भोग वेळा रे जोग काई लीयो, भोगवो भोग ससार ध० ॥ ४ ॥ रामे सीताने वियोगडे, बहुत कियोरे सग्राम । उतीरे नारी पियु का तजो, का तजो धन ने माल ध० ॥५ ॥ परणीने पियुजी शुं परिहरो, हाथ मेल्यानो सबध । पछी करशो स्वामी ओरतो, जेम कियो मेघ मुणींद ध० ॥ ६ ॥ रत्नकचोळे जीमता, काचलडे व्यव-हार । पलग तळाइए पोढता, सथारो दुष्कार ध० ॥ ७ ॥ शीयाळे शीतळ ढळे, उनाळे लू वाय । वरसादो घणो दोहिलो, अति सुकुमाल तुम काय ध० ॥ ८ ॥ पखी मेळावे मी मीळे, परभावे ऊडी जाय । जे जे-वी करणी करे, ते तेहवी गति जाय ध० ॥ ९ ॥ जबू कहे नारी प्रते, अमे लेशु सजम भार । साचो स्नेह करी लेखवो, तो सजम ल्यो अम साथ धन० ॥ १० ॥ तेणे समे प्रभवोजी आवीयो,

ाचशे चोर सगाथ। तेने जंबू कुमरे बूझव्यो बूझवी आठेय नार ध० ११॥ ससरा सासूने बूझव्या, बूझव्या माय ने ताय। सुधर्मा स्वामी ासे आवीया, लीधो संजम सुखदाय धन ०॥ १२ ॥ पाचशें सचा ीसशु, विचरे मनने उल्लास । कर्म खपावी थया केवली, छेद्या मव केरा पाश ध० ॥ १३ ॥ संवत सत्तर छासठे, कडुपर नगर मोझार ाग्य विमळ सूरि इम भणे, जंबू नामे जयकार ध० ॥ १४ ॥

श्री जंबू स्वामीनी सज्झाय

राजग्रही नगरी वसे, ऋषभदत्त व्यवहारीरे, तस सुत जंबुकुमर नमु बालपणे ब्रह्मचारीरे ॥१॥ जंबू कहे जननी सुणो, स्वामी सुधर्मा आव्या रे, दीक्षा लेशु ते कने, अनुमति द्यो मोरी माय रे जं० ॥ २ ॥ माय कहे सुणो बेटडा, वात विचारी कीजेरे, तरुणपणे तरुणी वरी, छांडी केम छूटीजेरे ॥ जंबू० ३ ॥ आगे अरणिक मुनिवरा, फरी पाछा घेर आव्यारे, नाटकणी नेहे करी, आषाढभूति भोळायारे ॥ माय० ४ ॥ वेश्या वश पडिया पछी, नंदीषेण नगीनोरे, आर्द्र देशनो पाटवी, आर्द्रकुमार का कीनोरे ॥ माय० ५ ॥ सहस्र वरस संजम लीयो, तोय न पार पायोरे, कुंडकने करमे करी पडे घणु पस्तायोरे ॥ माय० ६ ॥ मुनिवर रहनेमिजी नेमिजिनेसर भाई रे, राजीमती देखी करी, विषयतणी मति आईरे ॥ माय० ७ ॥ दीक्षा छे वत्स दोहिली, पाळवी खाडानी धाररे, सरसनीरस अन्न जीमवु, सुवु डाभ संथाररे ॥ माय० ८ ॥ दीक्षा छे वत्स दोहिली, कहयु अमारु कीजेरे, परणो पनोता पदमणी, पूरो मनोरथ भाईरे ॥ माय० ९ ॥ जंबू कहे जननी सुणो, धन धन्नो अणगारोरे, मेघ मुनीसर मोटको, शालिभद्र सभागोरे ॥ जंबू० १० ॥ गजसुकुमाल गुणे भर्यो, आतम साधन कीनोरे, षण्मासी तप पारणे ढढणे केवळ लीनोरे ॥ जंबू० ११ ॥ दशार्णभद्र संजम लही इन्द्रने पाये लगाडयोरे, प्रसन्नचंद्र केवळ लही, पाम्यो छे परम

आणदोरे ॥ जबू० १२ ॥ एम अनेक मुनिवर हुआ, कहेता पार न पायरे, अनुमति यो मोगी मायजी, क्षण ढालेणो जायरे ॥ जबू० १३ ॥ पाचसे ने सत्तावीसे, जबू कुमार परिवरीओरे, पच महाव्रत उच्चरी, भवजल सागर तरीओरे ॥ जबू० १४ ॥ जबू चरमज केवली, तास तणा गुण गायारे, पडित ललितविजय तणो, हेतविजय सुपसायारे ॥ जबू० १५ ॥

श्री समकितनी सज्झाय

समकित नवी लह्युरे ए तो रुल्यो चतुर्गति माय । त्रस थाव रकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो । तीन काल सामायिक करता शुद्ध उपयोग न साध्यो ॥ सम० १ ॥ जूठ बोलवा को व्रत लीनो चोरीको पण त्यागी, व्यवहारादिक निपुण भयो पण अतर्दृष्टि न जागी ॥ सम० २ ॥ ऊर्ध्व बाहु करी ऊधे लटके, भस्म लगा धूम घटके, जटाजूट शिर मुडे जूठो, विणश्रद्धा भव भटके ॥ सम० ३ ॥ निज पर नारी त्यागज करके, ब्रह्मचर्य व्रत लीधो स्वर्गादिक याको फल पायो निज कारज नवि सिध्यो ॥ सम० ४ ॥ बाह्यक्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्य लिंग धर लीनो " देवचद्र " कहे याविध तो हम, बहुत बार कर लीनो ॥ सम० ५ ॥

ढढण ऋषिनी सज्झाय

ढढण ऋषिजीने वदना हु वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हु वारी लाल अभिग्रह लीधो आकरो हु० स्वलब्धे[१] लेशु आहार रे ॥ हु० ढ० १ ॥ दिनप्रति जावे गोचरी हु०, न मिले शुध्द आहार रे हु०, न लीये मूल असूझतो हु० पिंजर हुओ गातरे ॥ हु० ढ० २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने हु० चौद सहस अणगार रे हु० । उत्कृष्टो कोण एहमा हु० मुजने

---

[१] मोक्षना इच्छा विनानु चरित्र २ पोतानीज लब्धियी ३ हाडपिंजर

कहो कृपाल रे ॥ ढु० ढ० ३ ॥ ढढण आधिको दाखियो हु० श्री-मुख नेम जिणदरे, हु० । मन उमाह्ये वादवा हु०, धन्य जादवकुल चदरे हु० ॥ ढ० ४ ॥ गलियारे मुनिवर मल्या हु० वांदे श्रीकृष्ण नरेशरे हु० किणही मिथ्यात्वी देखीने हु०, आव्यो भाव विशेषरे हु०, ॥ ढ० ५ ॥ आवो मुज घर साधुजी हु०, ल्यो मोदक छे शुध्द रे हु० । ऋषिजी लेई आविया हु०, प्रभुजी पास विशुध्द रे हु० ॥ ढ० ६ ॥ मुज लब्धे मोदक मिल्या हु०, कहो मुजने कृपाळरे हु० ॥ लब्धि नही वत्स ! ताहरी हु०, श्रीपतिलब्धि निहाळरे हु० ॥ तो मुजने लेवो नही हु०, चाल्यो परठण काजरे हु०, ॥ ढ० ७ ॥ ईंटनीभाडे जाइने हु०, चूर्या कर्म समाजरे हु०, ॥ ढ० ८ ॥ आवी सूधी भावना हु०, पाम्या केवळज्ञानरे हु० ढढण ऋषि मुक्ते गया हु०, कहे जिनहर्ष सुजान रे हु वारी लाल ढढण • ९ ॥

अरणिक मुनिनी सज्झाय

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे शीशोजी, पाये अळवाणे वेलु परजळे, तन सुकुमार मुनीशोजी ॥ अर० १ ॥ मुख करमाणु रे मालती फूल ज्यु, ऊभो गोखनी हेठोजी, खरे बपोरे रे दीठो एकलो, मोहे मानवी देठोजी ॥ अर० २ ॥ वयणरगीली रे नयणे वींधीयो, ऋषि थम्यो तेणे ठाणेजी, दासीने कहे जा रे उतावळी ऋषि तेडी घर आण जी ॥ अर० ३ ॥ पावन कीजेरे ऋषि घर आगणु, वोहरो मोदक सारोजी, नवजोबनरस काया का दहो, सफल करो अवतारोजी ॥ अर० ४ ॥ चद्रवदनीए चारित्रथी चूकव्यो, सुख विलसे दिन रातोजी, बेठा गोखे रे रमता सोगठे, तव दीठी निज मातो जी ॥ अर० ५ ॥ अरणिक अरणिक करती मा फरे, गलिए गलिए बजारोजी, कहो कोणे दीठो मारो अरणीओ पूछे लोक हजारोजी ॥ अर० ६ ॥ हु कायर छु रे मारी-

चारित्र खाडानी धारोजी, धिक् धिक् विषयारे माहरा जीवने, मे कीधो अविचारोजी ॥ अर० ७ ॥ गोखथी उतरी रे जननीने पाय पडयो, मनशु लाज्यो अपारोजी, वत्स तुज न घटे रे चारित्रथी चूकवु जेहथी शिवसुख सारोजी ॥ अर० ८ ॥ एम समजावी रे पाछो वाळीयो, आण्यो गुरुनी पासेजी, सद्गुरु दीये रे शीख भली परे, वैरागे मन वासोजी ॥ अर० ९ ॥ अग्निधखती रे शीला ऊपरे, अरणिक अणसण कीधोजी, रूपविजय कहे धन्य ते मुनिवरु, जेणे मनवांछित लीधोजी, अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ १० ॥

आपस्वभावनी सज्झाय

आपस्वभावमेंरे अवधू[१] सदा मगनमें रहना, जगतजीव है कर्माधिना अचरज कछुअ न लीना ॥ आ० १ ॥ तु नहीं केरा कोई नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा, तेरा है सो तेरी पासे, अवर सब अनेरा ॥ आ०२ ॥ वपु विनाशी तु अविनाशी, अब है इनका विलासी, वपुसंग जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दु ख का दीसा, जब तुम इनको दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ४ ॥ परकी आशा सदा निराशा, ए है जगजनपासा, ते काटनकु करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ५ ॥ कबहीक काजी, कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी, कबहीक जगमे कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी ॥ आ०६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी ज्ञानध्यान मनोहारी, कर्म कलकको दूर निवारी जीव वरे शिवनारी ॥ आ० ७ ॥

श्रीरहनेमीनी सज्झाय

काउस्सग्ग ध्याने मुनि रहनेमी नामे, रह्या छे गुफामा शुभ परिणामेरे देवरिया मुनिवर[१] ध्यानमा रहेजो,' ध्यान थकी होय भवनो पारेरे ॥दे० १ ॥ वरसादे भीना चीवर मोकळा करवा, राजुल आव्या छे

१ वैरागी

तेणे ठामरे ॥ दे० ॥ रूपे रुडीरे वळी वनिता [illegible]
तेणे कामरे ॥ दे० ॥ दिळडु क्षोभाणु जाणी राजुल [illegible]
मन गुणना धामरे ॥ देव० २ ॥ जादव कुळमा जिनजी [illegible]
वमन करी छे मुजने तेणेरे ॥ दे० ३ ॥ [illegible]
जाया, एवडो पटतर कारण केणेरे ॥ देव० ३ ॥ [illegible]
नरकमा जाय, दुर्लभबोधि होय प्राणीरे ॥ दे० ॥ [illegible]
पाप जे बांधे, तेहनो छुटकारो कदीय न थायरे ॥ देव० ४ ॥ [illegible]
कायारे मळमूत्रनी क्यारी, तमने केम [illegible]
हुरे संयमी तुमे महाव्रतधारी, [illegible] ॥ देव०
॥ ५ ॥ भोगवम्या जे मुनि मनथी न [illegible]
तेमरे, दे० ॥ धिक् कुळ नीच थई नेहथी [illegible]
एमरे ॥ दे० ६ ॥ एवा रसीला राजुल [illegible]
प्रभुजी पासरे ॥ दे० ॥ पाप आलोई [illegible]
पाम्या शिव आवासरे ॥ देव० ७ ॥ [illegible]
व्रत पाळे, समुद्र तर्या सम व्रत [illegible]
तेहना नामथी होवे, अम मन निर्मळ [illegible] ॥ देव० [illegible]

श्रीअइमुत्तामुनिनी [illegible]

वीरजिणंद वांदीने गौतम गोचर[illegible]
मुनिवर घरघर आंगण फरीया, [illegible]
वहोरण वेळा ॥ इणे अवसरे अइमु[illegible]
कंचनवरणी काया देखी, मनमा [illegible]
कुमर अमीरस वाणी, एह कहो [illegible]
भमवु ते किणकामे ॥ आधा० ३ ॥ [illegible]
शुद्ध गवेषणा वर्जि, निर्दूषण न [illegible]
आघा० ४ ॥ आवो आज अमार [illegible]

१ जाया २ [illegible]

जोइये ते जुगति करीने, भावे भिक्षा घरशु ॥ आघा० ५ ॥ एम कही घर तेडी चाल्यो, आव्यो मन आणंदे । अइमुत्ताशु गौतम देखी, "श्रीदेवी" पय वंदे ॥ आघा० ६ ॥ आज अमारे रत्नचिंतामणि, मेह अमीरस वूठ्या, के अम आगण सुरतरु फळीयों, अम पर गौतम तूठ्या ॥ आघा० ७ ॥ रे वाल्हडा वहु बुद्धिवंता, गोतम गणधर आव्या, थाळ भरी मीठा मोदक, भावसहित वहोराव्या ॥ आघा० ८ ॥ पय प्रणमी अइमुत्तो पुछे, किहा वसो किरपाळ, वीर समीपे वसीए सुणीने, साथे चल्यो सुकुमाल ॥ आघा० ९ ॥ कुमर कहे एह भाजन आपो, भार घणो तुम पासे, गौतम कहे अमे एहने दइए, चारित्र ले जे प्रभु पासे ॥ आघा० १० ॥ चारित्र लेइश हु प्रभुजी पासे, झोळी दियो मुज हाथे, गौतम पूछे अनुमति केहनी, माए मोकल्या अणसाथे ॥ आघा० ११ ॥ वीर वादी जिनवाणी सुणीने, आव्या घर उल्लासे, अनुमति आपो माता मुजने, दीक्षा लऊ हु प्रभु पासे ॥ आघा० १२ ॥ श्रीदेवी कहे सुण नानडीया, सयमनी शी वातो, शु जाणे तु बाल पणामा, आगमना अवदातो ॥ आघा० १३ ॥ विनय करीने माव पिताने, कहे कुमर कुळभानु, जे जाणु ते हु नावि जाण, नवि जाणु ते जाणु ॥ आघा० १४ ॥ एक दिवसनु राज्य करीने, माय मनोरथ पूरे, सयम लीधो वीर जिन पासे, दुर्गति करवा दूरे ॥ आघा० १५ ॥ स्थविर साथे ठडीले पहोत्या, नीर वहतो दीठो, पाळ बाधीने पंडघो मेल्यो, कौतुक लाग्यो मीठो ॥ आघा० १६ ॥ न्हानु सरोवर न्हानु[1] भाजन, नाव कर्यु अइमुत्ते, रढियाळी रमत देखीने, बालक्रीडा करी रमते ॥ आघा० १७ ॥ मधुरे वचने मुनीसर बोल्या, नावा तरवी जोई; रमता देखी ऋषीसर बोले, हिंसा जीवनी होई ॥ आघा० १८ ॥ बोलावी कहे मुनि बाळकने, ए आपण नवि कीजे, छकाय जीव विराधना करता, दुर्गतिना फळ लीजे ॥ आघा० १९ ॥ लाज घणी मनमाहे ऊपनी, समवसरण बिच आया, इरियावहीने तिहा पडिक-

१ न्हानु पात्र

मता, ध्यान शुक्ल मन ध्याया ॥ आधा० २० ॥ स्थविर जई भगवतने पूछे, भव केटला एह करशे, चरम शरीरी छे अइमुत्तो, इण भव मुक्ति वरशे ॥ आधा० २१ ॥ पंच आचार शुद्ध मनथी पाळी, अंग अग्यार मुख कीधा, गुणरत्न संवत्सर तप कीधों, अंतगड केवली सिध्धा ॥ आधा० २२॥ अंतगड भगवती मध्ये, एह कह्यो अधिकार, रत्नसागर कहे एह मुनि वंदु, अइमुत्तो अणगार ॥ आधा० २३ ॥

कृष्ण महाराजानी सज्झाय

नगरी द्वारकामां नेमि जिनेसर विचरता प्रभु आवे । कृष्ण नरेसर वधाई सुणीने जीत निशान बजावे हो प्रभुजी ! नहि जाउ नरकगेहे ॥ नहि जाउ नहि जाउ नहि जाउ प्रभुजी ! नहि जाउ नरकगेहे ॥ १ ॥ अढार सहस साधुनीने विधिशुं वांद्या अधिके हरखे, पछी नेमि जिनेसर केरा ऊभा मुखडा निरखे हो प्रभु० ॥ २ ॥ नेमि कहे तुमे चार निवारी त्रण तणा दुःख रहिया, कृष्ण कहे हुं फरी फरी वांदु, हर्ष धरी मन हैया हो प्र० ॥ ३ ॥ नेमि कहे एह टाळ्या न टळे, सो वावे एक वात, कृष्ण कहे मारा वाळ ब्रह्मचारी नेमि जिनेसर भ्रात हो प्र० ॥ ४ ॥ मोटा राजानी चाकरी करता रांक सेवक बहु रळशे, सुरतरु सरखा अफळ जशे त्यारे विष वेलडी किम फळशे ? हो प्र० ॥ ५ ॥ पेटे आव्यो तेह भोरग बेठे पुत्र कपुत्रज जायो, भलो भूडो पण जादव कुळनो तुम बंधव कहे वायो हो प्र० ॥ ६ ॥ छप्पन क्रोड जादवनो रे साहेबो कृष्णज नरके जाशे, नेमि जिनेसर केरोरे बांधव जगमां अपजश थाशे हो प्र० ॥ ७ ॥ शुद्ध समकितनी पारख करीने बोल्या केवळनाणी नेमि जिनेसर दियो रे दिलासो खरो रुपैयो जाणी हो प्र० ॥ ८ ॥ नेमि कहे तुमे चिंता न करशो तुम पदवी अम सरखी, आवती चोवीशीमां होशो तीर्थंकर हरि पोते मन हरखी हो प्र० ॥ ९ ॥ जादव-

१ केवळज्ञान पामी अंतर्मुहूर्तमांज सिद्ध थया

कुक्ष अजवाळ्यु नेमजी समुद्रविजय कुळदीवो, इन्द्र कहे शिवा-
देवीना नन्दन क्रोड़ दिवाळी जीवो हो प्र० ॥ १० ॥

नागीला भवदेवनी सज्झाय

भवदेव भाई घेर आवीया रे प्रतिबोधवा मुनिराज रे, हाथमा वे दीधु घृततु पात्र रे भाई मने आवेरो वळाव रे, नवी रे परण्या वे गोरी नागीला रे ॥ १ ॥ इम कही गुरुजी पासे आवीया रे गुरुजी पूछे दीक्षानो काइ भाव रे, लाजे नाकारो तेणे नवि कर्योरे दीक्षा लीधी भाईनी पास रे नवी० ॥ २ ॥ वार वर्ष सजममा रह्या रे हैये धरता नागीलानुं ध्यान रे, हु मूरख आ शु कर्यु रे नागीला तजी जीवन प्राण रे नवी० ॥ ३ ॥ मात-पिता एहने नही रे एकली अबळा नार रे तास उपर करुणा करी रे हवे तेनी करवी सभाळ रे नवी० ॥ ४ ॥ शशिवयणी मृगलोयणी रे वळवलती मेली घरनी नार रे, सोळ वरसनी सा सुदरी रे सुदर तनु सुकुमार रे नवी० ॥५॥ उमर फोफळ व्रत जे करे रे हरखे ग्रही कर माही रे पाम्या ते शुभमती जेहनी रे दु वो पडियो दु ख अजाळ रे नवी० ॥ ६ ॥ भवदेव भाग्ने चित्ते आवीया रे जणओळखी पूछे घरनी नार रे, कोइए दिठी ते गोरी नागीला रे अमे छीये व्रत छोडणहार रे नवी० ॥ ७ ॥ नारी कहे सुणो साधुजी रे वम्यो न लिये कोइ आहार रे, हस्ती चडीने खर पर कोण चढे रे तमे छो काइ ज्ञानना भडार रे नवी० ॥ ८ ॥ एडकीए वम्यो आहार जे करे रे ते नवि मानव आचार रे, जे तमे घर घरणी तज्यारे हवे तेनी करो शी सभाळ रे नवी० ॥ ९ ॥ धन्य बाहुबळ धन्य शालीभद्रनी रे धन्य धन्य मेघ कुमार रे, स्त्री तजीने सयम जेणे लियो रे धन्य धन्य तेह अणगार रे नवी० ॥ १० ॥ देवकी सुलसा सुत सागरु रे नेम तणी सुणी वाणी रे, बत्रीश बत्रीश प्रिया तजी रे परिहर्या भोग विलास रे नवी० ॥ ११ ॥ अकुश वश गज आणीयो रे राजुल मति रहनेम रे, वचन अकुशे तिहा वारीयो रे नागीला

भवदेव तेम रे नवी० ॥ १२ ॥ नारी ते नरकनी खाण छे रे नरकनी देवणहार रे ते तमे तजो मुनिराजजी रे जिम पामो भवजळ पार रे नवी० ॥ १३ ॥ नागीलाए नाथने समजावीया रे पछी लीधो संजम भार रे, कर्म खपावी मुगते गया र हुवा हुवा शिव भरतार रे नवी० ॥ १४ ॥ पाचमे भवे जबूस्वामीजी रे परण्या परण्या पद्मिनी नार रे, *अेढ नवाणु कचन लावाया रे कल्पसूत्र माहीं अधिकाररे नवी०* ॥ १५ ॥ प्रभव साथे चोर पांचसे रे पद्मिनी आठे नार रे कर्म खपावी मुगते गया रे समयसुदर सुखकार रे नवी० ॥ १६ ॥

श्रीसिद्धमगवाननी स्तवन – सज्झाय

श्रीगौतमस्वामी पृच्छा करे, विनय करी शीश नमाय हो प्रभुजी अविचळ स्थानक में सुण्यो, कृपा करी मोय बताय हो प्रभुजी, शिवपुर-नगर सोहामणो ॥ आठ करम अळगा करी, सार्यो आतम काम हो प्रभुजी छूटया ससारना दुःख थकी, तेहने रहेवानो कुण ठाम हो प्रभुजी शिवपुर० ॥ २ ॥ वीर कहे ऊर्ध्व लोकमा, मुक्तिशिला तस ठाम हो गौतम[1] सरग छव्वीसा ऊपरे, तेहना धारज नाम हो ॥ गौ० शि० ॥३॥ लाख पिस्तालीश जोजननी, लाबी पहोळी जाण हो, गौ० ॥ आठ जोजन जाडी ए छेहे, पातळी अत्यत वखाण हो ॥ गौ० शि० ४ ॥ उज्वल हार मोती तणो, गाय दूध शख वखाण हो; गौ० ॥ तेनाथी ऊजली अती घणी समचोरस सस्थान हो ॥ गौ० शि० ५ ॥ अर्जुन सोनामय दीपती, घठारी मठारी जाण हो गो० ॥ स्फटिकरत्नथी निर्मळी सुआळी अत्यत वखाण हो ॥ गौ० शि० ६ ॥ सिद्धशिला ओळगी आघे गया अधर रह्या विराज हो गौ० ॥ अलोकेसु जई अड्या, सार्यो आतम काज हो ॥ गौ० शि० ७ ॥ जिहा जन्म नहीं, मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गौ० ॥ शत्रु नहीं मित्र नहीं नहीं सजोग विजोग हो ॥ गौ० शि० ८ ॥ भूख नहीं तृषा नहीं, नहीं हर्ष नहीं शोक हो गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषयारसभोग हो ॥ गौ० शि० ९ ॥ शब्द रूप रस गध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो गौ० ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मौन

ज्या नहीं खेद हो ॥ गौ० शि० १० ॥ गाम नगर एके नहीं, नहीं वस्ती नहीं उज्जड हो गौ०॥ काल सुकाळ वरते नहीं, नहीं रातदिवस तिथि वार हो ॥ गौ० शि० ११ ॥ राजा नहीं प्रजा नहीं, नहीं ठाकोर नहीं दास हो, गौ० ॥ मुक्तिमे गुरुचेला नहीं, नहीं लघुवडाई वास हो ॥ गौ० शि० १२ ॥ अनुपम सुखमें झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो गौ० ॥ सघळाने सुख सारीसो, सहुने अविचळ वास हो ॥ गौ० शि० १३ ॥ अनत सिद्ध मुक्ते गया, फेर अनता जाय हो गौ० ॥ ओर जगा रुधे नहि, ज्योतमे ज्योत समाय हो ॥ गौ० शि० १४ ॥ केवळज्ञानसहित छे, केवळ दरिसण पासहो, गौ० ॥ खायक समकिते दीपता, कदीय न होवे उदास हो ॥ गो० शि० १५ ॥ सिद्धिस्वरूप जे कोई ओळखे, आणी मन वैरागहो गौ० ॥ शिवरमणी वेगे वरे, "नय" कहे सुख अथाग हो ॥ गौ० शि० १६ ॥

वैराग्यनी सज्झाय

मरण न छूटे रे प्राणिया, करता कोटि उपाय रे, सुरनर असुर विद्याधरा, सहु एक मारग जायरे ॥ मरण न० १ ॥ इद्र चद्र रवि हलीमली, गणपति कामकुमार रे, सुरगुरु सुरवैद्य सारिखा, पहोंच्या जमदरबार रे ॥ मरण न० २ ॥ मत्र जत्र मणि औषधि, विद्या हुनर हजार रे, चतुराई करे रे चोकमा, जमडा लूटे बजार रे ॥ मरण न० ३ ॥ गर्व करी नर गाजता, करता विविध तोफान रे, माथे मेरु उपाडता पहोंच्या ते जइ शमशान रे ॥ मरण न० ४ ॥ कपडा घरेणा उतारशे, बाधी ठाठरीमाय रे, खोखली हाडली आगळे, रोता रोता सहु जाय रे ॥ मरण न० ५ ॥ काया माया सहु कारमी, कारमो सहु घरबार रे, रकने राय छे कारमो, कारमो सकल ससार रे ॥ मरण न० ६ ॥ भीडी मूठी लई अवतर्यो, मरता खाली छे हाथ रे, जीवडा जोने तु जगतमा, कोई न आवे छे साथ रे ॥ मरण न० ७ ॥ नाना

१ भयकर.

मोटा सहु सचर्या, कोई नहि स्थिर वासरे, नामरूप सहु नावे रहे " धर्मरत्न " अविनाश रे ॥ मरण न० ८ ॥

श्री उत्तराध्ययनना दशमा अध्ययननी सज्झाय

समवसरण सिंहासनेजी, वीरजी करे रे वखाण, दशमे उत्तराध्ययनमेजी, दिये उपदेश सुजाण, समयमें गोयम म कर प्रमाद ॥ वीरजिनेश्वर शीखवेजी, परिहर मद विखवाद ॥ समय० १ ॥ जिम तरु पडुर पादडाजी, पडवा न लागेजी वार, तिम ए मानुष जीवडोजी, स्थिर न रहे ससार॥ समय० २॥ डाभ अणी जल ऊसनोजी रे, क्षण एक रहे जलबिन्द, तिम ए चचल जीवडोजी, न रहे इद्र नरींद ॥ समय० ३ ॥ सूक्ष्म निगोद भमी करीजी रे, राशि चढ्यो व्यवहार, लाख चोराशी जीवयोनिमाजी, लाध्यो नरभव सार ॥ समय० ४ ॥ शरीर जरीए जर्जर्युजी, शिरपर पलियॉरे केश, इन्द्रियबळ हीणा पड्याजी, पग पग पेरे क्लेश ॥ समय० ५ ॥ भवमायर तरवा भणीजी, चारित्र प्रवहेण मूळ, तप जप संयम आकराजी, मोक्षनगर छे दूर ॥ समय० ६ ॥ इम निसुणी प्रभू देशनाजी, गणधर थया सावधान, पापपडळ पाछा पड्याजी, पाम्या केवलज्ञान ॥ समय० ७ ॥ गौतमना गुण गावताजी घर सपत्तिनी कोड, " वाचक श्रीरूपे " इम भणेजी, वदू वे कर जोड ॥ समय० ८ ॥

श्री चौद गुणस्थानकनी सज्झाय

ढाळ १ ली

(सिद्धारथना रे नदन[1] वीनवु – देशी)

भवियण जाणोरे गुणठाणा भला, जिम हुए आतमशुद्धि, जेहथी

१ पाकां २ वृद्धावस्था ३ धोळा थया ४ वहाण

दुदुभि नाद भेरी ॥ समर० ४ ॥ अष्ट वली अष्ट सय अष्ट सहस्रा वली, अष्ट लाख जपे अष्ट कोडी, " कीर्ति विमल " कहे मुक्तिलीला लहे, आपणा कर्म आठ विछोडी ॥ समर० ५ ॥

श्री दश दृष्टांतनी सज्झाय

(प्रभु तुज शासन अति भलु—ए देशी)

दश दृष्टांते दोहिलो, मानव तणो अवतार रे, पच प्रमादने परि हरी, भरीये सुकृत भडार रे ॥ दश० १ ॥ भोजन पासा धान जुआ रयण सुपन विचार रे, चक्र कच्छप वली धूसरु, तिम परमाणुओ सार रे ॥ दश० २ ॥ ए दश सक्षेपे कहु, सुणजो सहु नर नार रे, चक्रवर्ती तूठो विप्रने, घरघर एक आहार रे ॥ दश० ३ ॥ पहेलो जम्यो चक्री घेरे, दोहिलो बीजी वार रे । देवी पासा आलीया, कुण जीते उदार रे ॥ दश० ॥ ४ ॥ धान ते सघला भेलिया, ढग मेरु समान रे, डोकरी केम करे जूजूआ, होय चतुर सुजाण रे ॥ दश० ५ ॥ एक शत आठ हास थाभले, एक शत आठ थभोरे, तेह निरतर जीपता, होय अति हि अचभो रे ॥ दश० ६ ॥ रयण घणा घर शेठने, करतो कोडी जतन रे, बेटे ते वेच्या जूजूआ, केम भेळा रतन रे ॥ दश० ७ ॥ सुपन वेहु सरखु लहे, सुपमा पेठे चद रे, राज लहे एक रोटलो, समरे सोम योगींदरे ॥ दश० ८ ॥ चक्र ते अचल–सचल फरे, ऊपर पूतळी जोई रे, नीची दृष्टि वींधे बाणशु, किम एणी पेरे होई रे ॥ दश० ९ ॥ अध कूपमाही काचबो, ऊपर सेवाल्वृद रे, अवकाश लही दीठो चदलो, फरी किम देखे चद रे ॥ दश० १० ॥ पूर्वे समुद्रे धूसरु, समिला पश्चिमे पेसरे, दोय सयोग मले दोहिलो, तिम मानव भव देसरे ॥ दश० ११ ॥ रयण तणा परमाणुआ, देवे कीधा चूर रे, मेरु चढी वायु वशीए, गया दह दिशी दूर रे ॥ दश० १२ ॥ ते सघला परमाणुआ, किम एकठा थाय रे, तिम मानव जन्म दुल्लहो, फरी फरी केम अवाय रे ॥ दश० १३ ॥

सद्गुरु वचन सेवा करी, पामे भव तणो पारोरे, रत्न विजय सत्य विजय तणो, "वृद्धि विजय" जयकारोरे ॥ दश० १४ ॥

दृष्टिरागनी सज्झाय (राग-प्रभाती)

दृष्टिरागे नवि लागीये, वली जागिये चित्ते, मागिये शीख ज्ञानी तणी, हठ भागिये नित्ते ॥ दृष्टि० १ ॥ जे छता दोष देखे नहि, जिहां जिहां अति रागी, दोष अछता पण दाखवे, जिहांथी रुचि भागी ॥ दृष्टि० २ ॥ दृष्टिराग चले चित्तथी, करे नेत्र विकराले, पूर्व उपकार न सांभरे, पडे अधिक जंजाले ॥ दृष्टि० ३ ॥ वीर जिन जब हुता विचरता, तव मरखली पुत्तो, "जिन" कही जड जने आदर्यो, इहां मोह अति धुत्तो ॥ दृष्टि० ४ ॥ ऋद्धि भंडार रमणी तजी, भजी स्वमते दृष्टि रागी, दृष्टि रागे जमालि दह्यो, नावे भवजल तागो ॥ दृष्टि० ५ ॥ वली आचार्य सावद्य जे, हुओ अनंत ससारो, दृष्टिराग स्वमते थयो, "महा निशीथ" विचारो ॥ दृष्टि० ६ ॥ हुए जिनधर्म आशातना, अजाण्यु कहे रंगे, मडु आगले जिनवरे, वह्यु भगवई अंगे ॥ दृष्टि० ७ ॥ भामना नट ने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो, दृष्टिराग मिल्यो ते हवो, कथक सेवक लोगो ॥ दृष्टि० ८ ॥ आपण गोठडी मीठडी, हठीने मन लागे, ज्ञानी वचन रुखीयामणा, कटुक खीर जेया वागे ॥ दृष्टि० ९ ॥ दृष्टि रागे भ्रम ऊपजे, वधे ज्ञान गुणरागे, एहमा एक तुमे आदरो, भलो होय जे आगे ॥ दृष्टि० १० ॥ दृष्टि रागी कदा मत हुजो, सदा सुगुरु अनुसरजो, वाचक "जस विजय" कहे, हित शीख मन धरजो ॥ दृष्टि० ११ ॥

मिथ्यात्वशल्य पापस्थानकनी सज्झाय

(वीर जिणंद जगत उपगारी-ए देशी)

अढारमु जे पापनु थानक, ते मिथ्यात्व

पण ते एक भारी होय तुटाए जो धरीयेजी ॥ कष्ट करो परे परे दमो अप्पा, धर्म अर्थ धन खर्चोजी, पण मिथ्यात्व छते ते जूठुं, तिणे तेहथी तुमे थिरमोजी ॥ १ ॥ किरिया करतां त्यजतो परिजन, दुःख सहतो मन रीझेजी, अंध न जीपे परनी सेना, तिम मिथ्यात्वी न सीझेजी, वीरसेन सूरसेन दृष्टांते, समकितनी नियुक्तेजी, जोईने भली परे मन भावो, एह अर्थवर युक्तेनी ॥ २ ॥ धम्मे अधम्म अधम्मे धम्मह, सन्ना मग्ग उमग्गाजी, उन्मार्गे मार्गनी सन्ना, साधु असाधु सलिंगाजी। असाधुमां साधुनी मति जीवे, अजीव अजीव जीव वेदोजी, मुत्ते अमुत्त अमुत्ते मुत्तह, सन्ना ए दश भेदोजी ॥ ३॥ अभिग्रहिक निज निजमते अभिग्रह अनभिग्रहिक सहु सरिखाजी, अभिनिवेशी जाणतो कहे जूठुं करे न तत्त्व परिक्खाजी। संशय ते जिन वचननी शंका, अव्यक्ते अनाभोगाजी, ए पण पांच भेद छे विश्रुत, जाणे समजु लोगोजी ॥ ४ ॥ लोक लोकोत्तर भेद ए षड्विध देव गुरु वळी पर्वजी, शक्ते तिहां लौकिक त्रण आदर, करतां प्रथम निगर्वजी। लोकोत्तर देव माने नियाणे, जे गुरुलक्षणहीनाजी, पर्व निष्ठे इहलोकने काजे, माने गुरुपदलीनाजी ॥ ५ ॥ एम एकवीश मिथ्यात्व त्यजे जे, भजे चरण गुरु केरेजी, सजे न पापे रजे न राचे मत्सर द्रोह अनेराजी। समकितधारी श्रुत आचारी, तेहनी जगबलिहारीजी, शासन समकितने आराधे, तेहनी करो मनोहारीजी ॥ ६ ॥ मिथ्यात्व ते जग परम रोग छे, वलीय महा अंधकारोजी, परम शत्रुने परम शास्त्र ते, परम नरक संचारोजी। परम दोहग ने परम दरिद्रता, परम संकट ते कहिएजी, परम कतार परम दुर्भिक्ष ते, ते छांडे सुख लहिएजी ॥ ७ ॥ जे मिथ्यात्व लवलेश न राखे सूधो मारग भाखेजी, ते समकित सुरतरु फल चाखे, रहे वली अणीए आखेजी। महोटाई शी होय गुण पाखे, गुण प्रभु समकित दाखेजी, श्रीनयविजय विबुध पयसेवक, "वाचक जस" इम भाखेजी ॥ ८ ॥

एकादशीनी सज्झाय

आज मारे एकादशीरे नणदल मान करी मुख रहीये, पूछयानो पडुत्तर पाछो, केहने काइ न कहिए ॥ आज० १ ॥ माहरो नणदोई तुजने वाहलो, मुजने तारो वीरो, धूमाडानी बाचका भरता, हाथ न आवे हीरो ॥ आज० २ ॥ घरनो धधो घणो कर्या पण, एके न आव्यो आडो। परभव जाता पालव झाले, ते मुजने देखाडो ॥ आज० ३ ॥ मागशर शुदि अगिआरश मोटी नेवु जिनना निरखो। दोढसो कल्याणक मोटा, पोथी जोइजोइ हरखो ॥ आज० ४ ॥ सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्रावक, मान धरी मुख रहीयो, पावक पुर सघळो परजाल्यो, तेहनो काई न दहीयो ॥ आज० ५ ॥ आठ पहोर पोसह ते करीये, ध्यान प्रभुनु धरीये, मन वच काया जो वश करीये, तो भवसायर तरीये ॥ आज० ६ ॥ ईर्यासमिती भाषा न बोले, आडु अवलु पेखे, पडिक्कमणाशु प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे ॥ आज० ७ ॥ कर ऊपर तो माला फरती, जीव फिरे वनमाही, चित्तडु तो चिहु दिसि डोले, इणे भजने सुख नाहीं ॥ आज० ८ ॥ पोषधशाळे भेगा थईने, चार कथा वळी साधे, काइक पाप मिटावण आवे, बारगणु वली बाधे ॥ आज० ९ ॥ एक उठवी आळस मोडे, बीजी ऊंघे बेठी, नदीओमाथी काइक निसरती, जई दरियामा पेठी ॥ आज० १० ॥ आई बाई नणद भोजाई, न्हानी म्होटी वहुने, सासु ससरो ने मा ने माशी, शीखामण छे सहुने ॥ आज० ११ ॥ "उदय रतन वाचक" उपदेशे जे नर नारी रहेशे, पोसह माहे प्रेम धरीने, अविचल लीला लहेशे ॥ आज० १२ ॥

विजय सेठनी सज्झाय

शुक्लपक्ष विजया व्रत लीनो, शेठ कृष्णपक्ष रोजानी, धनधन श्रावक पुण्य प्रभावक, विजय शेठ ने शेठाणी ॥ १ ॥ सजी शिणगार

चढी प्रिय मादिर, हुये हर्ष और हुलसाणी, त्रण दिवस मुज व्रत तणा छे, शेठ बोले मधुरी वाणी ॥ ध० २ ॥ वचन सुणीने तो नीर दलियों, वदन कमल थे बिलकाणी, प्रेम धरी पदमणीने पूछे छे केम थाय विलखाणी ॥ ध० ३ ॥ शुद्धपक्ष व्रत गुरुमुख लीनो, थे परणोजी दुजी नारी। दुजी नारी मारे वेन बरावर, वन धीरज सारी हे राणी ॥ध० ४॥ हैये हार शणगार सजी सब श्याम घटा हिय हुलसाणी, वर्षाकाल आवे घणो गरजे, चिंहु धारा हो वरसे पाणी ॥ ध० ५ ॥ एकज शय्या ने दोनु प्रवल तो, पण मन राख्या हुलसानी, पट्रस मास द्वादश सवत्सर, सरस समज हिय हुलसानी ॥ ध० ६ ॥ मन वच काया अखडित निर्मल, शील पाल्यो साचो जाणी। विमल केवली करी प्रशसा, ए दोनु उत्तम प्राणी ॥ ध० ७॥ प्रगट हुवा सयम व्रत लीनो, मोह कर्म किया धूलधानी, "रतनचद" कर जोडी विनवे, केवल लहि गया निर्वाणी ॥ ध० ८॥

महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी वाचक विरचित
समकितना सडसठ बोलनी सज्झाय

सुकृतवल्ली कादबिनी, समरी सरसती मात, समकित सडसठ बोलनी, कहीशु मधुरी वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरु तणो, प्रत्युपकार न थाय, भवकोडाकोडी करी, करता सर्व उपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दिये, समकित विण शिवशर्म, ते माटे समकित घडु, जाणो प्रवचन मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुणठाण । ते निश्चय समकित कह्यु, तेहना ए अहिठाण ॥ ४ ॥

ढाळ पहेली

चउ सद्दहणा तिलिंग छे, दशविध विनय विचारोरे, त्रण शुद्धि पण दूषण, आठ प्रभावक धारोरे ॥ ५ ॥

हरिगीत छद

प्रभावक अड पच भूषण, पच लक्षण जाणिये, पट् जयणा पट्

आगार भावना, छन्विहा मन आणिवे, पट्ठाण समकित तणा, सडसठ भेद एह उदार ए, एहनो तत्त्वविचार करता, लहीजे भव पार ए ॥ ६ ॥

ढाळ

चउविह सद्दहणा तिहां, जीवादिक परमत्थोरे, प्रवचन माही जे भाखिया, लीजे तेहना अत्थोरे । ७ ॥

हरिगीत छंद

तेहनो अर्थ विचार करिये, प्रथम सद्दहणा खरी, बीजी सद्दहणा तेहना जे जाण मुनिजन जोहरी, संवग रंग तरंग झीळ, मार्ग शुद्ध भाखे सदा, तेहनी सेवा कीजिये जिम, पीजिये समतासुधा ॥ ८॥ समकित जेणे ग्रही वम्यु, निह्नवने अहाछन्दारे, पासत्था ने कुशीलिया, वषविडंबक मंदारे ॥ ९ ॥

ढाळ बीजी

(जंबूद्वीपना भरतमारे-ए देशी)

त्रण लिंग समकित तणारे, पहेलु श्रुत अभिलाष । जेहथी श्रोता रस लहे रे, जेहवो साकर द्राखरे प्राणी धरीए समकित रंग, जिम लहिए सुख अभग रे ॥ प्राणी० १० ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवर्योरे, चतुर सुणे सुरगीत । तेहथी रागे अति घणोरे, धर्म सुण्यानी रीत रे ॥प्राणी० ११॥ भूख्यो अटवी उतर्योरे, जिम द्विज घेवर चंग । इच्छे तिम जे धर्मने रे, तेहज बीजु लिंग रे ॥ प्राणी० १२ ॥ वैयावच्च गुरुदेवनुरे, त्रीजु लिंग उदार । विद्यासाधक परे करे रे, आळस नहिय लगार रे ॥ प्राणी० १३ ॥

ढाळ त्रीजी

[समकितनु मूल जाणियेजी — ए देशी]

अरिहंत ते जिन विचरताजी, कर्म खपी हुआ सिद्ध, चेइय जिण पडिमा कहीजी सूत्र सिद्धांत प्रसिद्ध, चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिम लहिये समकित सार ॥ चतुरनर० १४ ॥ धर्म क्षमा दिक भाखियोजी, साधु तेहना रे गेह, आचारज आचारनाजी, दायक नायक जेह ॥ चतुर० १५ ॥ उपाध्याय ते शिष्यनेजी, सूत्र भणावणहार, प्रवचन संघ वखाणिये जी, दरिसन समकित सार ॥ चतुर० १६ ॥ भक्ति बाह्य प्रतिपत्तिथीजी, हृदय प्रेम बहुमान, गुणथुति अवगुण ढांकवाजी, आशातननी हाण ॥ चतुर० १७ ॥ पांच भेदे ए दश तणोजी, विनय करे अनुकूल । सींचे तेह सुधारसेजी, धर्मवृक्षनु मूल ॥ चतुर० १८ ॥

ढाळ चोथी

त्रण शुद्धि समकित तणीरे, तिहां पहेली मन शुद्धीरे, श्री जिन ने जिनमत विनारे, जूठ सकल ए बुद्धिरे । चतुर विचारो चित्तमांरे ॥ १९ ॥ जिनभगते जे नवि थयुरे, ते बीजाथी केम थायरे, एवु जे मुखे भाखीये रे, ते वचनशुद्धि कहेवायरे ॥ चतुर० २० ॥ छेद्यो भेद्यो वेदना रे, जे सहेतो अनेक प्रकाररे । जिन विण पर सुर नवि नमे रे, तेहनी क्रियाशुद्धि उदार रे ॥ चतुर० २१ ॥

ढाळ पचमी

[कडवा फल छे क्रोधना-ए देशी]

समकित दूषण परिहरो, जेहमां पहेली छे शंका, ते जिनवचन मां मत करो, जेहने सम नृप रंका, समकित दूषण परिहरो ॥ २२ ॥ कंखा कुमतनी वांछना, बीजु दूषण त्यजीए, पामी सुरतरु परगडो,

किम थाऊल भजिये ॥ समकित० २३ ॥ सशय धर्मना फलतणो, वितिगिच्छा नामे, त्रीजु दूषण परिहरो, निज शुभ परिणामे ॥ समकित० २४ ॥ मिथ्यामति गुणवर्णननो, टाळो चोथो दोष, उन्मारगी थुणता हुवे, उन्मारग पोष ॥ समकित० २६ ॥ पाचमो दोष मिथ्यामति, परिचय नवि कीजे, इम शुभ मति अरविंदनी, भली वासना लीजे ॥ समकित० २७ ॥

ढाळ ७ठी

[अभिनदन जिन दरिसण तरसीए-ए दशी]

आठ प्रभावक प्रवचनना कह्या, पावयणी धुरि जाण वर्तमान जे श्रुतना अर्थनो, पार लहे गुणखाण । धन धन शासन मडन मुनि वरा ॥ २७ ॥ धर्मकथी ते बीजो जाणीये, नदिषेण परे जेह, निज उपदेशे रे रजे लोकने, भजे हृदय सदेह ॥ धन० २८ ॥ वादी त्रीजोरे तर्क निपुण भण्यो, मल्लवादी परे जेह । राजद्वारे जयकमला वरे गाजतो जिम मेह ॥ धन० २९ ॥ भद्रबाहु परे जे निमित्त कहे, पर मत जीपण काज, तेह निमित्ती रे चोथो जाणीये, श्रीजिनशासन राज ॥ धन० ३१ ॥ तप गुण ओपे रे रोपे धर्मने, गोपे नवि जिन आण । आस्रव लोपे रे नवि कोपे कदा, पचम तपसी ते जाण ॥ धन० ३१ ॥ छट्ठो विद्या रे मत्र तणो बली, जिम श्रीवयर मुणिंद सिद्ध सातमो रे अजन योगथी, जिम कालिक मुनिचद ॥ धन० ३२ ॥ काव्यसुधारस मधुर अर्थभर्यो, धर्महेतु करे जेह, सिद्धसेन परे राजा रीझवे, अट्ठम वरकवि तेह ॥ धन० ३३ ॥ जब नवि होवे प्रभावक एहवा, तब विधि पूर्व अनेक, जात्रापूजादिक करणी करे, तेह प्रभावक छेक ॥ धन० ३४ ॥

ढाळ सातमी (सरीत सुभद्रानी देशी)

सोहे समकित जेहथी सखी, जिम आभरणे देह, भूषण पांच ते मन वस्यां, सखि मन वस्यां तेहमां नहि संदेह ॥ मुज समकित रंग अचल होजो ॥ ३५ ॥ पहेलुं कुशलपणुं तिहां सखी, वंदन ने पच्चक्खाण, किरियानो विधि अति घणो, सखि अति घणो आचरे तेह सुजाण ॥ मुज० ३६ ॥ बीजुं तीरथ सेवना सखी, तीरथ तारे जेह, ते गीतार्थ मुनिवरा, सखि तेहशुं कीजे नेह ॥ मुज० ३७॥ भक्ति करे गुरुदेवनी सखि त्रीजुं भूषण होय, किणहि चलाव्यो नवि चले, सखि चोथुं ए भूषण जोय ॥ मुज० ३८ ॥ जिन शासन अनुमोदना सखी जेहथी बहुजन हुंत, कीजे तेह प्रभावना, सखी पांचमुं भूषण खंत ॥ मुज० ३९ ॥

ढाळ आठमी (धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं – ए देशी)

लक्षण पांच कह्यां समकित तणा, धुर उपशम अनुकूल, अपराधीशुं पण नवि चित्त थकी, चिंतवीए प्रतिकूल, सुगुणनर ! श्रीजिन भाषित वचन विचारिए ॥ ४० ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवे, वछे शिवसुख एक, बीजुं लक्षण ते अंगीकरे, सार संवेगशुं टेक ॥ सु० श्रीजि० ४१ ॥ नारक चारक सम भव ऊभग्यो, तारक जाणीने धर्म, चाहे निकलवुं रे निर्वेद ते तेह, त्रीजुं लक्षण मर्म सु० श्रीजिन० ४२ ॥ द्रव्य थकी दुखियानी जे दया, धर्महिणानी रे भाव, चोथुं लक्षण अनुकंपा कही, निजशक्ते मन लाव ॥ सु० श्रीजिन० ४३ ॥ जे जिन भाख्युं ते नवि अन्यथा, एहवो जे दृढरंग, ते आस्तिकता लक्षण पांचमुं, करे कुमतिनो ए भंग ॥ सु० श्रीजिन० ४४ ॥

ढाळ नवमी (त्रीजे भव वर स्थानक तप करी–ए देशी)

परतीर्थी परना सुर तेणे, चैत्य ग्रह्यां वली जेह, वंदन प्रमुख तिहां नवि करवुं, ते जयणा षट् भेद रे ॥ भविका, समकित यतना कीजे

॥ ४६ ॥ वदन ते करयोजन कहिये, नमन ते शीश नमाड्ये ! दान इष्ट अशनादिक देवु, गौरव भक्ति देखाड्ये रे ॥ भविका० ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहिये, वारवार जे दान, दोष कुपात्र पात्रमतिए, नहि अनुकम्पा मानरे॥ भ० भ० ४८॥अण बोलाव्ये जे बोल्वु, ते कहिये आलाप, वारवार आलाप जे करवो, ते कहिये सलाप रे। भ० स० ४९॥ ए जयणाथी समकित दीपे, वली दीपे व्यवहार; एहमां पण कारणथी जयणा, तेहना अनेक प्रकार रे ॥ भ० म० ५०॥

ढाल दशमी (ललनानी देशी)

शुद्ध धर्मथी नवि चले, अतिदृढ गुण आधार, ललना, तो पण जे नहिं एहवा, तेहने ए आगार, ललना ॥ ५१ ॥ बोल्यु तेहेंचु पाळीए, दन्तीदंत सम बोल ललना सज्जन ने दुर्जन तणा, कच्छप-कोटिने तोल, ललना ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अभियोग, ललना तेहथी कातिक शेठ परे, नहि मिथ्यात्व सयोग, ललना ॥ ५३ ॥ मळो जननो गण कह्यो, बल चारादिक जाण, ललना, क्षेत्रपालादिक देवता, तातादिक गुरुठाण, ललना ॥ ५४ ॥ वृत्ति दुलभ आजीविका, ते भीषण कातार, ललना, ते हेते दूषण नहि, करता अन्य आचार, ललना ॥ ५५॥

ढाल अग्यारमी (जिन जन्म्याजी जिण वेळा जननी घरे – ए देशी)

भावीजे रे समकित जेहथी रूअडु, ते भावनारे भावो करी मन परवडु। जो समकितरे ताजु साजु मूलरे, तो व्रततरुरे दीए शिव फल अनुकूल रे ॥ ५६ ॥

हरिगीत छद

अनुकूल मूल रसाल समकित, तेह विण मति अध रे, जे करे किरिया गर्व भरिया, तेह जूठे धध रे। ए प्रथम भावना गुणे, रुडी

सुणो बीजी भावना, कारणु समकित धर्मपुरनु, ऐहवी ते पावना ॥ ५७॥

ढाल

त्रीजी भावना रे, समकित पीठ जो दृढ सही, तो मोटो रे धर्म-प्रासाद डगे नहीं। पाये खोटे रे, मोटो मडाण न शोभिये, तिण कारण रे समकितशु चित्त थोभीए॥ ५८॥

हरिगीत छंद

थोभिए चित्त नित एम भावी, चोथी भावना भाविए, समकित निधान समस्त गुणनु, एहवु मन ल वेए, ते विना छूटा रत्न सरिखा, मूल उत्तर गुणसवे। किम रहे ताके जेह हरवा, चोर जोर भवोभवे ॥ ५९ ॥

ढाल

भावो पचमीरे, भावना शमदम सार रे । पृथ्वी परे रे, समकित तस आधार रे। छट्ठी भावनारे, समकित भाजन जो मळे। श्रुतशीलनोरे, तो रसते इमांथी नवि ढळे ॥ ६० ॥

हरिगीत छद

नवि ढळे समकित भावना रस अमिय सम सवरतणो, पद् भावना ए कही एहमा करो आदर अति घणो। इम भावना परमार्थ जलनिधि होय नतु झकल्लोळ ए, घन पवन पुण्य प्रमाण प्रगटे चिदानन्द कल्लोळ ए॥ ६१ ॥

हरिगीत छंद

ठरे जिहां समकित ते थानक, तेहना षट्‌विध कहियेरे, तिहां पहेलुं थानक छे चेतन लक्षण आतम लहियेरे। खीरनीरपरे पुद्गलमिश्रित, पण एहथी छे अलगोरे, अनुभव हंसचंचु जो लागे, तो नवि दीसे वळगोरे ॥ ६२ ॥ बीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुभूत संभारे रे, बाळकने स्तनपानवासना, पूरव भव अनुसारे रे। देव मनुज नरकादिक तेहना, छे अनित्य पर्यायरे, द्रव्य थकी अविचलित अखंडित, निजगुण आतमराय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजुं स्थानक चेतन कर्ता, कर्म तणे छे योगे रे, कुंभ कार जिम कुंभ तणो जग, दंडादिक संयोगे रे। निश्चयथी निजगुण-नो कर्ता, अनुपचरित व्यवहारे रे, द्रव्य कर्मनो नगरादिकनो, ते उपचार प्रकारे रे ॥ ६४ ॥ चोथु थानक चेतन भोक्ता, पुण्यपाप-फल केरो रे, व्यवहारे निश्चय नय दृष्टे, भुंजे निजगुण नेरो रे, पांचमु थानक छे परमपद, अचल अनंत सुखवासोरे, आधिव्याधि तनमन-थी लहिए, तस अभावे सुख खासो रे ॥ ६५ ॥ छठ्ठु थानक मोक्ष तणो छे, संजम ज्ञान उपायोरे, जो सहेजे लहिए तो सघळे, कारण निष्फळ थायरे। कहे ज्ञाननय ज्ञानज साचुं, ते विण जूठी किरियारे, न लहे रूपु रूपु जाणी सीप भणी जे फिरियारे ॥ ६६ ॥ कहे किरिया-नय किरिया विण जे, ज्ञान तेह शुं करशे रे, जल पेसी कर-पद न हलावे, तारू ते किम तरशे रे। दूषण भूषण छे इहां बहुलां, नय एकेकने वादेरे, सिद्धांती ते बेहु नय साधे, ज्ञानवंत अप्रमादे रे ॥ ६७ ॥ इणिपरे सडसठ बोल विचारी, जे समकित आराहे रे, राग द्वेष टाळी मन वाळी, ते शमसुख अवगाहे रे। जेहनुं मन समकितमां निश्चल, कोई नहि तस तोले रे, श्री नयविजय विबुध पयसेवक, "वाचक जस" इम बोले रे ॥ ६८ ॥

समकितनी सज्झाय

समकितना पच भेदए, सुणजो सज्जन लोक रे, सुखिया समकितदर्शने, जेम रवि उदये कोक रे, सेवो आगम सेवधी ॥ १ ॥ करण अपूर्व अमोघरे, हणिया चोर महतरे, आदिव घर आतमा, पामे समकित सत रे ॥ सेवो० २ ॥ ज्ञानादिक रुचि तत्वनी, निश्चय समकित सार रे, शमसंवेगादिक गुणा, लक्षणथी व्यवहार रे ॥सेवो० ३॥ काळ अनादि प्राणियो, क्षय उपशम धुर भाव रे, निर्मल पुञ्ज उदय करी, शीतल जल उटकावरे ॥ सेवो० ४ ॥ अतरकरण प्रथम समे, उपशम समकित भाव रे, धुर पामे कम्म पयडीए ऊखर क्षत्रने दाव रे ॥ सेवो० ५ ॥ अथवा उपशमश्रेणिओ, भव चक्रे करे पार रे, समकित उपशम सार ए, पामे वेटली वार रे ॥सेवो० ६॥ मधुर वदन आस्वादन, सास्वादन गुणठाण रे, पडतो पामिये श्रेणीथी, आवली षट् परिमाण रे ॥ सेवो० ७ ॥ बीजा पुन चरम समे, जे परमाणु शेष रे, एक समय थिति वेदता, वेदक समकित लेश रे ॥ सेवो० ८ ॥ बद्धायु मळे सातमे, क्षयथी खायकवत रे, त्रण चार भव अतंर, पामे सुख अनत रे ॥ सेवो० ९ ॥ क्षायोपशम सागर छासठी, वार असख्य विचार रे, अतर्मुहूर्त उपशमे, सास्वादन पच वार रे ॥ सेवो० १० ॥ एक वार वेदक खायक, अबधक भव पार रे, श्री शुभवीर आलिंगवा, शिवसुदरी हुशियार रे ॥ सेवो० ११ ॥

सोळ स्वप्ननी सज्झाय

सुपन देखी पेलडे, भागी छे कल्पवृक्षनी डाळरे, राजा सजम लेशे नहि, दुषम पचम काळ रे, चद्रगुप्त राजा सुणो ॥ १ ॥ अकाले सूरज आथमे, तेनो हवो विस्तार रे, जन्म्यो ते पचम कालमा, तेने केवल नावे होशे रे । चद्र० ॥ २ ॥ त्रीजे चद्रमा चारणी,

तेनो इयो विस्तार रे, समाचारी जुई जुई हशे, घारे वाटे धर्म होशे रे चद्र० ॥ ३ ॥ भूतप्रेतादि दीठा नाचता, चौथा सुपननो विस्तार रे, कुदेव कुगुरु कुधर्मनी मान्यता घणी होशे रे, चद्र० ॥ ४ ॥ नाग दीठो बार फणो तेनो इयो विस्तार रे, वरस थोडाने आतरे, होशे वळी दुकाळ रे । चद्र० ॥ ५ ॥ देवविमान छट्ठे वळ्यो, तेनो इयो विस्तार रे, विद्या ते जघाचारणी, लब्धि ते विच्छेद होशे रे चद्र० ॥ ६ ॥ ऊग्यु ते ऊरडा मध्ये, सातमे कमल विमासवे रे, एक नहीं ते सर्व वर्णीया जुदा जुदा मत होशे रे ॥ चद्र० ७ ॥ थापना थापशे आपआपनी, पछी विराधक घणा होशे रे, उच्छेद होशे जैन धर्मनो, वधे मिथ्यात्व घोर अधारे ॥ चद्र० ८ ॥ सूका सरोवर दीठु त्रण दिशे, दक्षिण दिशे डोळा पाणी रे, त्रण दिशे धर्म होशे नहि, दक्षिण दिशे धर्म होशे रे ॥ चद्र० ९ ॥ सोनानी थाली मध्ये कूतरडो खावे खीर रे, ऊच तणी रे लक्ष्मी, नीच तणे घेर होशे रे ॥ चद्र० १० ॥ हाथी माथे बेठो रे वादरो, तेनो इयो विस्तार रे, म्लेच्छ राजा ऊचा होशे, असली हिन्दू हेठा हाथ रे ॥ चद्र० ११ ॥ समुद्रे मर्यादा मूकी बारमे, तेनो इयो विस्तार रे । शिष्य–चेला ने पुत्र–पुत्रीओ, नहि राखे मर्यादा लगार रे ॥ चद्र० १२ ॥ राजकुवर चढयो पोठीये, तेनो इयो विस्तार रे, ऊचो ते जैन धर्म छाडीने, राजा नीच धर्म आदरशे रे ॥ चद्र० १३ ॥ रत्न झाखारे दीठा चौदमे, तेनो इयो विस्तार रे, भरत क्षेत्रना साधु साधवी, तेना हेत मेळावा थोडा होशे रे ॥ चद्र० १४ ॥ महाव्रते जूत्या वाछरडा तेनो इयो विस्तार रे, बालक धर्म करशे सदा, बुड्ढा प्रमादी पडया रहेशे रे । चद्र० १५ ॥ हाथी लडे रे मावत विना, तेनो इयो विस्तार रे, वरस थोडा ने आतरे, मागया नहि वरसे मेह रे ॥ चद्र० १६ ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलिका मध्ये, "भद्रबाहु" एम भाखे रे, सोल सुपननो अर्थ ए, साभलो राय सुधीर रे ॥ चद्र० १७ ॥

श्री स्थूलिभद्रजीनी सज्झाय

वेष जोईने स्वामी आपणो, लागी मारा वनडामा लामजी, अणधार्युं स्वामी आ शु कर्युं, लाजे सुंदर कायजी, कोण रे धूतारे तमने भोळव्या ॥ १ ॥ आवी रे खबर होत तो, जावा देत नहि नाथजी, छेतरी छेह दीधो मने, पण छोडु नहि साथजी ॥ कोण रे० २ ॥ बोध सुणी सुगुरुतणो, लीधो संजम भारजी, मात पिता परिवार सहु, जूठा आळ पपाळजी, नथी रे धूतारे मने भोळव्यो ॥ ३॥ एवु जाणीने कोश्या सुंदरी, धर्यो साधुनो वेषजी, आव्यो गुरुनी आज्ञा लई, देवा तने उपदेशजी ॥ नथी० ४॥ काळे मवारे भेगा रही, लीधो सुख अपारजी, अमने बोध देवा आवीया, जोग धरीने आचारजी, जोग रे स्वामीजी अहीं नहीं रहे ॥ ५ ॥ कपट करीने मने छांडवा, आव्या तमे निर्धारजी, पळ छोडु नहि कदी नाथजी, नथी नारी गमारजी ॥ जोग रे० ६ ॥ छोड्या मात पिता वळी, छोड्यो सहु परिवारजी, ऋद्धि सिद्धि रे मे सहु तजी, मानी सघळु असारजी। छेटी रहीने कर वात तु ॥ ७ ॥ जोग धर्यो अमे साधुनो छोड्यो सघळानो प्यारजी, मात समान गणु तने, सत्य कहु निर्धारजी। छेटी० ८ ॥ बार वरसनी प्रीतडी, पळमा तूटी न जायजी, पस्तावो पाछळथी थशे, कहु लागी ने पायजी। जोग रे० ॥ ९ ॥ नारी चरित्र जोई नाथजी, तुरत छोडशो जोगजी, माटे चेतो प्रथम तमे, पछी हसशे लोकजी। जोग रे० ॥ १० ॥ चाळा जोईने तारा सुंदरी, डगु नहीं लगारजी, कामशत्रु में कब्जे कर्यो, जाणी पाप अपारजी। छेटी रहीने गमे ते करो ॥ ११ ॥ छेटी रहीने गमे ते करो, मारा माटे उपायजी, पण तारा सामु जोऊ नहि, शाने करे तु हांयजी ॥ छेटी० ॥ १२ ॥ माछी पकडे छे जाळमा, जाळमाथी जेम मीनजी, तेम मारा नेत्रना बाणथी, करीश हु तमने आधीनजी ॥ जोग रे० १३ ॥ ढोंग करवा तजी दई प्रीते प्रहो

मुज हाथजी, काळजु कपाय छे माहरु, वचनो सुणीने नाथजी। जोग रे० १४॥ बार वरस तुज आगळे, रह्यो तुज आवासजी, विविध सुख में भोगव्या, कीधो भोग विलासजी ॥ आशा तज रे हवे माहरी ॥ १५ ॥ त्यारे हतो अज्ञान हु हतो कामनो अन्जी, पण हवे ते रस में तज्यो, सुणी शास्त्रना प्रबधजी। आशा० १६ ॥ ज्ञानी-मुनि ने ऋषियो, मोटा विद्वान भूपजी, ते पण दास बनी गया, जोई नारीतु रूपजी ॥ जोग रे० १७॥ साधुपणु स्वामी नहि रहे, मिथ्या बहु नहीं टेशजी, देखी रे नादारभ माहरो, त्यजशो साधुनो वेशजी ॥ जोग रे० १८ ॥ विविध भूपणो धारीने, सजी रुडी शणगारजी, प्राण काढी नाखे ताहरो, कूदी कूदी अवारजी ॥ आशा० १९॥ तो पण सामु जोउ नहीं, गणु विप समानजी, सूर्य ऊगे पश्चिम कदी, तो पण छोडु न मानजी॥ आशा० २०॥ भिन्नभिन्न नाटक में कर्या, स्वामी आपनी पासजी, तो पण सामु जोई तमे, पूरी नहीं मननी आशजी॥ हाथ रे म्हो हवे माहरो॥ २१ ॥ हस्त जोडी हवे विनवु, प्यारा प्राण जीवनजी, बार वरसनी प्रीतडी, याद करो तुम, मनजी ॥ हाथ रे० २२ ॥ चेत चेत रे कोश्यासुदरी, शुं कहु वारवारजी, आ ससार असार छे, नथी सार लगारजी॥ साधक करो हवे देहतु ॥ २३ ॥ जन्म भरी आ ससारमा, नहीं ओळख्यो धर्मजी, विधविध वैभव भोगव्या, कीधा घणा कुकर्मजी ॥ साधक० २४ ॥ ते सहु भोगववु पडे, मूआ पछी तमामजी, अधर्मी प्राणीने मळे नहीं, शरणु कोईतु ठामजी ॥ साधक० २५ ॥ सिंधुरूपी आ ससारमा, मानव मीन रूप धारजी। जजाळ जाळ ऊपर डगडगे, काळरूपी मच्छीमारजी ॥ साधक० २६ ॥ विपयरस वहालो गणी, कीधा भोग विलासजी, धर्मना कार्य कर्या नहीं, राखी भोगनी आशजी ॥ उद्धार करो मुनि माहरो ॥ २७ ॥ व्रत चूकववा आपनु, कीधा

श्री स्थूलिभद्रजीनी सज्झाय

वेष जोईने स्वामी आपणो, लागी माय
अणधार्युं स्वामी आ शु कर्युं, राजे सुदर का
वमने भोळव्या ॥ १ ॥ आवी रे खबर होत
नाथजी, छेतरी छेह दीधो मने, पण छोडु
२ ॥ बोध सुणी गुरुतणो, लीधो सजम
धार सहु, जूठी आळ पपाळजी, नथी
एहु जाणीने कोश्या सुदरी, धर्यो स
आज्ञा लई, देवा तने उपदेशजी ॥
लीधो सुख अपारजी, अमने बोध
वारजी, जोग रे स्वामीजी अई
छोडवा, आव्या तमे निर्धार
नारी गमारजी ॥ जोग रे०
सहु परिवारजी, ऋद्धि
असारजी। छेटी रहीने
छोड्यो सघळानो
निर्धारजी। छेटी०
जायजी, पस्तायो
॥ ९ ॥ नारी
चेतो प्रथम
जोईने तार
जाणी पाप
गमे ते
शाने क
जाळ
वम

चरण
परिहरी,
नरनार ॥ ३ ॥
सुणता ध्यावता,
ऋषियोमा शिर
अपार ॥ ४ ॥

तस घर घरणी
रे जाय
मामे

युवरा

करीजी, गुणनिप्पन्न तस दीघ ॥ हो माडी ० २ ॥ भणी गणी पंडित थयोजी, यौवन वय जब आय, सुदर मदिर करावीयाजी, परणावे निज माय ॥ हो माडी० ३ ॥ तव वय रूपे सारीखीजी, परण्या बत्रीस नार, पच विषय सुख भोगवेजी, नाटकना धमकार ॥ हो माडी० ४ ॥ रत्नजडित सोहामणाजी, अद्भुत ऊचा आवास, देवदोगदुकनी परेजी, विलसे लीलविलास ॥ हो माडी० ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा माळियेजी, नारी ने परीवार मस्तक पग दाढे सझाजी, दीठा श्रीअणगार ॥ हो माडी० ६ ॥ मुनि देखी भव साभर्योजी, वळीयो मन वैराग, उतर्यो आमण दूमणोजी, जननीने पाये लाग ॥ हो माडी० ७ ॥ पाय लागीने वीनवेजी, सुणसुण मोरी माय, नटवानी परे नाचियोजी, लख चोराशीमाय ॥ हो माडी० ८ ॥ पृथ्वी पाणी तेउमाजी चोथी रे वाउकाय, जन्म मरण दुःख भोगव्याजी, तेम वनस्पतिमाय ॥ हो माडी० ९ ॥ विगलेंद्रि तिर्यचमाजी, मनुष्य देव मोझार, धर्म विहूणो आतमाजी, रडवडीयो ससार ॥ हो माडी० १० ॥ साते नरके दु भम्योजी, अनतअनतीरे वार, छेदनभेदन त्या सह्याजी, कहेता न आवे पार ॥ हो माडी० ११ ॥ सायरना जळथी घणाजी, मे पीधा मायना थान, तृप्ति न पाम्या आतमाजी, अधिक आरोग्या धान हो माडी० १२ ॥ चारित्र चिन्तामणि समोजी, अधिक म्हारे मन थाय, तन धन जोवन कारमोजी, क्षणक्षण छूटे आय ॥ हो माडी० १३ ॥ माता अनुमति आपीयेजी, लेइशु सयम भार, पच रतन सुख सामर्योजी, करशु वेहनी सार ॥ हो माडी० १४ ॥ वयण सुणी बेटा तणाजी, जननी धरणी ढळत, चित्त थयु तव आरडेजी, नयणे नीर झरत, रे जाया, तुजविण घडीरे छ मास ॥ १५ ॥ वळती माता इम भणेजी, सुण सुण मोरा रे पुत्र, मनमोहन तु वाल्हेोजी, काई भागे घरसूत्र रे जाया० ॥ १६ ॥ म्होटा मदिर माळियाजी, रान समोवड थाय, तुज विण सहु अळ-

रामणाजी, रातदिवस केम जाय रे जाया० ॥ १७ ॥ नव मस-बाडा उदरे धर्योजी, जन्म तणा दुख दीठ, कनककचोले पोपि-योजी, हवे हु थई अनीठ रे जाया० ॥ १८ ॥ यौवन वय नारी तणाजी, भोगवो बहोळा रे भोग, यौवन वय वीत्या पछीजी, आदरजो तप योग रे जाया० ॥ १९ ॥ पड्यों अघाडी जिम हाथि-योजी, मृगलो पडीयो रे पास, पत्नी पडीयो पाजरेजी, तेम कुमर घरवास रे जाया० ॥ २० ॥ घरघर भिक्षा मागवीजी, सरस निरस होय आहार, चारित्र छे वत्स दोहिलुजी, जेवी खाडानी धार रे जाया० ॥ २१ ॥ पच महाव्रत पाळवाजी, पाल्या पच आचार, दोप वेतालीश टालीनेजी, लेवो सहजो आहार रे जाया० ॥ २२ ॥ मणि दाते लोहमय चणाजी, किम चावीश कुमार, वेलु कोळीया समेवडोजी, जिने भाख्यो सयम भार रे जाया० ॥ २३ ॥ पलग तळाइये पोढतोजी, करवो भूमि सथार, कनक कचोळा छोड-वाजी, काचलीए व्यवहार रे जाया० ॥ २४ ॥ मस्तके लोच करावबाजी, तु सुकुमार अपार, बावीस परिसह जीतवाजी, करवा उग्र विहार रे जाया० ॥ २५ ॥ पाय अलवाणे चालवुजी, शीयाळे शीत वाय, चोमासु वत्स दोहिलुजी, ऊनाळे लू वाय रे जाया० ॥ २६ ॥ गगा सायर जादे करीजी, उपमा देखाडी रे माय, दुक्कर चारित्र दाखियुजी, कायर पुरुपने थाय रे जाया० ॥ २७ ॥ कुमर भणे सुण मावडीजी, सयम सुखभडार, चौद राज नगरी तणाजी, फेरा टाळणहार रे जाया० ॥ २८ ॥ अनुमति तो आपु खरी जी, कुण करशे तुज सार, रोग जव आवी लागशेजी, नहीं औषध उपचार रे जाया० ॥ २९ ॥ वनमा रहे छे मृगलाजी, कुण करे तेहनी सार, वनमृगनी परे विचरशु जी, एकलडा निरधार हो माडी० ॥ ३० ॥ अनुमति आपे मावडीनी, आव्या वनह मोझार, पच महाव्रत आदर्याजी, पाळे सयम भार ॥ मुनीश्वर धन धन तुम अवतार ॥ ३१ ॥ मृगापुत्र ऋषि राजियोजी, पट्काया

गोवाळ, ए समो नहिं वैरागियोजी, जेणे टाळ्यो आतम साल ॥ ॥ मुनी० ३२ ॥ भण्यो अध्ययन ओगणीशमेजी, मृगापुत्र अधिकार, तप-जपक्रिया शुद्ध करीजी, आराधी पचाचार ॥ मुनी० ३३ ॥ सयम दुक्कर पाळियुजी, करी एक मास सथार, कर्म खपावी केवळ ल्हीजी, पहोंच्या मुक्ति मझार ॥ मुनी० ३४ ॥

श्री चदनबालानी सज्झाय

बालकुवारी चदनबाला, बोले बोल रसाळा रे, रूप अनुपम नयण विशाला, गुण गगाजल माला रे ॥ बाल० १ ॥ शेठ धनावह मदिर आणी, चेटीनी परें जाणी रे, अणख अदेखाई मनमा आणी, तस घरणी दुहवाणी रे ॥ बाल० २ ॥ मूळा कुमति तणी छे कूडी, बाला मस्तक मूंडी रे, बेडी जडी ने जोइ मति ऊडी, तालु देती भूडी रे ॥ बाल० ३ ॥ आयो शेठ त्रण दिन अते, दिवस बपोरे चडते रे, अडद बाकुळा देई एकाते, सुपडा खूणे खावे रे ॥ बाल० ४ ॥ पाच दिन ऊणो छमासी, अभिग्रह वीर अभ्यासी रे, आव्या आगणे योगविलासी, देखी हुवरी उल्लासी रे ॥ बाल० ५ ॥ एक पग उबर बाहेर राखी, नयणे आसुडा नाखी रे, बाकुळा पडिलाभ्या मन साखी, मुक्ति तणी अभिलाषी रे ॥ बाल० ६ ॥ साडी बार कोडीय सिद्धि वृष्टि सोनैयानी कीधी रे, अनुक्रमे सयम कमला लीधी, मृगावतीने दीक्षा दीधी रे ॥ बाल० ७ ॥ एक दिन वीर को शाबी आव्या, चद्र सूरज मन भाया रे, मूळ विमाने वादवा आव्या, तेज अधिक तस पाया रे ॥ बाल० ८ ॥ ऊठो स्थानक आपणे चेली, जाशु बे जण वहेली रे, में ए वाणी जाये न मेली, आवी गुरुणी अकेली रे ॥ बाल० ९ ॥ घोर घपट अधारं आई, रही पगे लगाई खमाई रे, केवळ लई निज कर्म खपाई, गुरुणीये खबर न पाई रे ॥ बाल० १० ॥ हाथ ऊचो लई चदना जगाई, आवे नाग ऊभाई रे, वें अधारे खबर किम पाई, केवळ ज्ञान उपाई रे ॥

११ ॥ में ए कीधी माठी करणी, ज्ञानीनी आशातना कीनीरे, चेली-ने पगे लागी गुरुणी, तुहीज तारण तरणी रे ॥ वाल० १२ ॥ गुरुणी चेली कर्म विछोडी, पहोंची मुक्तिशु जोडी रे, विजय कवि पंडितनी जोडी, शिष्य "उदय" कहे कर जोडी ॥ वाल० १३ ॥

---

३३ द्वारिका नगरीनी सज्झाय

(दोहा)

दोनु बंधव आरडे, दुख धरता मनमांय, बळती देखी द्वारिका, कीजे कवण उपाय ॥ १ ॥ रत्नभींत सुवर्ण तणी, तेह बळे तत्काळ, सुवर्णथंभा कांगरा, जाणे बळे पराळ ॥ २ ॥

ढाळ

बळती द्वारिका देखीने रे, भाई थया घणा दिलगीर, हैडु ते लागु फाटवारे, भाई नयणे वछूट्या नीर रे । माधव एम बोले ॥ १ ॥ बे बंधव मळीने तिहांरे, भाई वात करे करुणाय, दुःख साले द्वारिका तणुरे, भाई कीजे कवण उपाय रे ॥ मा० ॥ २ ॥ किहां रे द्वारिकानी साहबीरे, भाई किहां गजदलना ठाठ, सज्जन नो मेळो किहांरे, भाई क्षणमां हुआ घणा घाट रे ॥ मा० ३ ॥ हाथी घोडा रथ बळेरे, भाई बेंतालीस बेंतालीस लाख, अडताली करोड पाळा हता रे, भाई क्षणमां हुय गया राख ॥ मा० ४ ॥ हळधर ने हरिजी कहे रे भाई, धिक् कायरपणु मोय, नयरी बळे मुज देखतारे, भाई मुज जोर न चाले कोय रे ॥ मा० ५ ॥ नगरी बळे मुज देखतारे, भाई राखी न शकु रे जेम, इंद्रधनुष में चडावी युंरे, भाई ए बळ भाग्यु केम रे ॥ मा० ६ ॥ जिण दिशे जोता वेणी दिशेरे, भाई सेवक सहस अनेक, हाथ जोडी ऊभा खडारे, भाई आज न दीसे एकरे ॥ मा० ७ ॥ मोटा मोटा राजवी, भाई शरणे

रहेता आही; उलटो शरणो ताकियो रे, भाई वरण वेळा आही रे ॥ मा० ८ ॥ बादल बीज तणी परे रे, भाई ऋद्धि बदलाए सोय, इण दोहिलीमें आपणोरे, भाई सगो न दीसे कोय रे ॥ माधव० ९ ॥ महल उपकरण आयुध बळेरे, भाई बळे सहु परिवार, आ आपदा पूरी पडीरे भाई कीजे कवण विचार रे ॥ मा० १० ॥ वळता हळधर इम कहेरे, भाई प्रगट्या पूर्वेना पाप, धीजु तो सघळु रह्यु रे, भाई माही बळे माय ने बापरे ॥ मा० ११ ॥ दोनु बधव माही धसयारे, भाई नगरीमा चाल्या जाय, रथ जोडी तेणे समेरे, भाई माही घाल्या माय ने बापरे ॥ मा० १२ ॥ दोनु बधव जूतियारे, भाई आव्या पोळने माय, दोनु बधव बाहर नीकल्यारे, भाई दरवाजो पडयो आयरे ॥ मा० १३ ॥ पाडु वाळी जुए तिहारे, भाई घणा थया दिलगीर, छाती ते लागी फाटवारे, भाई नयणे वछूटया नीररे ॥ मा० १४ ॥ हलधरने हरिजी कहेरे, भाई साभळ बधव वात, किणी दिशे आपणे जाइशुरे, भाई ते दिशा मने बतावरे ॥ मा० १५ ॥ वचन सुणी बधव तणारे, भाइ हलधर बोले एह, पाडव भाई कुती तणारे, भाई अब चालो तेह घेर रे ॥ मा० १६ ॥ वयण सुणी हलधर तणा रे, भाई माधव बोले एम, देशवटो दई काढियारे, भाई ते घर जावु केमरे ॥ मा० १७ ॥ वळता हलधर एम कहेरे, भाई देखी होशे दिलगीर, ते केम अवगुण आणशेरे, भाई गिरुआ गुण गभीर रे ॥ मा० १८ ॥ तें तेहना कारज कीधारे, भाई धाववी सहमा जाय, द्रौपदी सोंपी आणीने रे, भाई ते केम भूलशे भाय रे ॥ मा० १९ ॥ अहकारी शिर शेहरो रे, भाई एहवी सपदा पाय, ते नर पाळा चालिया रे, भाई आपदा पडी बहु आयरे ॥ मा० २० ॥ पाडव मथुरा प्रगटी जिहारे, भाई अभिरुण समुद्रतीर, ते नगरी भणी चालियारे, भाई बधव बेहु सुधीर रे ॥ मा० २१ ॥ जे नर शय्याए पोढतारे, भाई ते नर पाळा होय, कर जोडी 'विनय विजय' भणेरे, भाई भव पार उतारो सोय ॥ मा० २२ ॥

श्रीधन्नाजीनी सज्झाय

वीर वखाण कामिनीरे धन्ना,धुर ऊभी परणाय; रवि आथमतो एम कहेरे, धन्ना वदन कमळ विलखाय, धन्ना हु तो वारीरे धन्ना, आज नहीं एसो काल ॥ १ ॥ तु मुज अधर लाकडीरे, धन्ना तु मुज प्राण आधार,तुज विना जग सूनो पडयोरे धन्ना भावे ए जाणम जाण॥ध०२॥ तन धन जोबन कारमोरे, माता जाणे संसार असार, अनुमति दियो मुज मातजीरे, हु लइश संयम भार हो जननी ॥ हु० ३ ॥ पंच महाव्रत पाळवारे धन्ना, पांचे ए मेरु समान, बावीश परिसह जीतवारे धन्ना, संजम खांडानी धार ॥ धन्ना हु० ४ ॥ रत्न जडितनो पांजरोरे माता, पोपट जाणे छे बंध, कामभोग संसारनारे माता, ज्ञानी जाणे छे फंद हो जननी हु० ॥ ५ ॥ तुज रूप सरीखी कामिनीरे धन्ना, लक्षण बत्रीश नार, पांच इन्द्रियना सुख परिहरे रे धन्ना, फरी परणावे शो वार ॥ हु वारि० ६ ॥ धन जोबन माया स्थिर नहीं रहे माता, जेवु आवे एवु जाय, ए सौ चंचल जीवडा रे माता, जेवा पीपलकेरा पान हो जननी हु० ७ ॥ घरे बेठा धर्म कीजीए रे धन्ना दान, शीयळ, तप, भाव, संजम मारग दोहिलोरे धन्ना, मत कर एवडो उन्माद ॥धन्ना हु० ८॥ रमणीशु राची रेह्यो रे माता, नहींरे गण्यो नवकार, मन पस्तावो नहि कर्योरे माता, गयोरे जन्मारो हार हो जननी हु० ॥ ९ ॥ रमणीशु राचु नहींरे माता, माहरी मावे भरपूर, जे रमणीशु राची रह्यारे माता, ते दुर्गति जाशे दूर हो जननी हु० १० ॥ तु सुकुमाळ सोहामणोरे, धन्ना, तुज माताजीने सोच, सोच कीधो मोरी मातजीरे, हु तो करीश कर्मनो लोच ॥ हो जननी हु० ११ ॥ दीपक विना मंदिर किशोरे धन्ना, विणपुत्र परिवार, बीरविहूणी बहेनडीरे धन्ना, झूरे वार तेह्वार रे धन्ना हु० ॥ १२ ॥ चन्द्र विना केसी चांदनीरे धन्ना, तारा विना केसी रात, कंथ विना केसी कामिनीरे धन्ना, झूरे बारे मास॥ धन्ना हु० ॥ १३ ॥

भावने समजावीने धन्ने, लीधो छे संयम भार, मास सलेखना पाळी नेरे, धन्नो पहोंच्यो मोक्षने धामरे धन्ना हु० ॥ १४ ॥ दान, शीयळ, तप, भावनारे धन्ना, ए जन्मांतर सार, "मान" कहे मुनि वादवारे धन्ना, वरत्यो जयजयकाररे ॥ धन्ना० १५ ॥

बार भावनानी सज्झाय

पहेली अनित्य भावना

पास जिनेसर पाय नमी, सद्गुरुने आधार, भव्य जीवना हित भणी, भाखु भावना बार ॥ १ ॥ प्रथम अनित्य अशरणपणु एह संसार विचार, एकत्वपणु अन्यत्व तेम, अशुचि आश्रव संभार ॥ २॥ संवरनिर्जर भावना, लोकस्वरूप सुबोधि, दुर्लभ भावन जिन धर्म, एणी परे करे जीव शोधि ॥ ३ ॥ रसरूपी रस भावियो, लोह थकी होय हेम, जीव इण भावना शुद्ध हुए, परमरूप एह तेम ॥ ४ ॥ भाव विना दानादिका, जिम अलूणो धान, भाव रसांग मळ्या पछी, त्रूटे कर्म निदान ॥ ५ ॥

ढाळ १ ली (देशी भावना)

पहेली भावना एणी परे भाविएजी, अनित्यपणु संसार, डाभ अणी ऊपर जळ बिन्दुओजी, इन्द्रधनुष अनुहार ॥ १ ॥ सहज संवेगी सुंदर आतमाजी, धर जिन धर्मशु रंग, चचळ चपलानी परे चिन्तवेजी, कृत्रिम सवि ए संग ॥ स० ॥ २ ॥ इंद्रजाल सुहणा शुभ अनुभवुजी, कूडो तोष ने रोष, तिम भ्रम भला अथिर पदारथेजी, इयो कीजे मन शोष ॥ स० ३ ॥ ठार तेह पामरना नेह ज्यु जी, ए यौवन रंगरोल, धनधपद पण दीसे कारमीजी, जेहवा जलकल्लोल ॥ स० ४ ॥ मुज सरीखे मागी भीखडीजी, राम रह्या वनवास । एवा संसारे ए मुख संपदाजी, जिम सन्ध्या राग विलास ॥ स० ५ ॥ सुंदर ए तनु

शोभा कारमीजी, विणसता नहि वार, देवतणे वचने प्रतिवूझियो चक्री सनतकुमार ॥ स० ६ ॥ सूरज राहुग्रहणे समजीओ श्रीकीर्तिधर राय, करकंडु प्रतिवूझ्यो देखीनेजी, वृषभ जरा थ काय ॥ स० ७ ॥ जिहां लगी धूआ धवलरा रहजी, जलपरपो जोय, आउखु अथिर तिम मनुष्यनुंनी, गर्व मकरशो कोई ॥ जे ज्ञा मा सत्व होय ॥स० ८ ॥ अतुल बल सुरवर जिनवर जिस्याजी, च हरिवल जोडी, न रह्या एणे जुग कोई थिर थईजी, सुरनर-भूप कोडी ॥ स० ९ ॥

बीजी अशरण भा०

पलपल छीजे आउखु, अजलिजल ज्युं एह, चलते साथे सवले लेई शके तो लेह ॥ १ ॥ छे अचिन्त्य गरुश्रु मही, समय सिंचाण आवी, शरण नहीं जिन वचण विण, तिणे हवे अशरण भावि ॥२

ढाल बीजी (सामेरी राम भगो हरि उठोरे—ए देशी)

बीजी अशरण भावना, भावो हृदय मझार रे, धर्म विना प भव जता, पापे न लहीश पाररे ॥ जाइश नरक द्वाररे, तिहां तुझ कोण आधाररे ॥ १ ॥ लाल सुरंगी रे प्राणिया, मुकने मोह जजालरे मिथ्या मति सवि टालरे, माया आल पपालरे ॥ ला० २ ॥ मात पिता सुत कामिनी, भाई भगिनी सहायरे, में में करतो रे अज परे, कर्मे ग्रह्यो जीव जायरे ॥ तिहां आडो को नवि थायरे, दुःख ना लिये वहेंचायरे ॥ ला० ३ ॥ नन्दनी सोवन डुंगरी, आखर नावी को काजरे, चक्री सुभूम ते जलधिमा, द्वार्यो छ खंड राजरे । वूड्यो चरम जहाज रे, देव गया सवि भागरे, छोभे गई तस लाजरे। ला० ४ ॥ द्वीपायन दही द्वारिका, बलवंत गोविंद रामरे, राखी न शक्यारे राजवी, मात पिता सुत धामरे । तिहां राख्या जिन

नामरे, शरण कियो नेमि स्वामरे, नव लेई अभिरामरे, पोहोंता शिवपुर ठामरे। ला० ॥ ५ ॥ नित्य मित्र सम देहडी, मयणा पर्व सहायरे, जिनवर धर्म उगारती, जिम ते पश्चिक भायरे। रास्यो मनी उपायरे, सतोष्यो वळी रायरे, टाल्या वेदना अपायरे॥ला० ६॥ जन्मजरामरणादिका, वैरी लाग्या छे केडरे, अरिहत शरणु तु आदरी, भवभ्रमण दुःख फेडरे। शिवसुन्दरी पर वेडरे, नेहनवल-रस रेडरे, सींचे सुकृत सुर पेडरे। ला० ॥ ७ ॥

त्रीजी ससार भावना

थावचा सुत थरहर्यो जोर देखी जम धाड, सयम शरणु संग्रह्यु, धनकचन छाड ॥ १ ॥ इण शरण सुखिया थया, श्री अनाथी अणगार, शरण लह्या विण जीवडा, इणी परे रुळे ससार॥ २॥

ढाल त्रीजी (राग-मारुणी)

त्रीजी भावना एणी परे भाविये रे, एह स्वरूप ससार, कर्मवशे जीव नाचे नवनव रगशुरे, ए ए विविध प्रकार ॥ १ ॥ चेतन चेतिये रे, लही मानव अवतार, भव नाटकथी जो हुओ ऊभगोरे, तो छोडो विषय विकार ॥ चे० २ ॥ कबही भू-जल-जलना-निल-तरुमा भम्योरे, कबही नरक निगोद, बितिचउरिन्द्रमाहे केई दिन वस्योरे, कबहीक देव विनोद ॥ चे० ३ ॥ कीडी पतग हरि मातगपणु भजेरे, कबही सर्प शियाल, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कहा-वतारे, होवे शुद्र चडाल ॥ चे० ४ ॥ लाख चोरासी चोटे रमता रगशुरे, करी करी नवनव वेष, रूप कुरूप धनी निर्द्रव्य सौभागीयोरे, दुर्भागी दरवेश ॥ चे० ५ ॥ द्रव्य क्षेत्र सूक्ष्म ने बादर भेदशुरे, काळभाव पण एम, अनतानत पुद्गल परावर्तन कर्यारे, कह्यो पन्नवणा एम ॥ चे० ६ ॥ भाई-बहेन-नारी तातपणु भजेरे, मात

पुत्र, तेहीज नारी वैरी ने थली थाय्होंरे, एह ससार सूत्र ॥ चे० ४॥ मुवनभाउ जिन भाख्या चरिय मुणी धणारे, समज्या चतुर सुजाण, कर्म विवर वश मूकी मोह विटवणारे, मल्या मुक्ति जिनभाण ॥ चे० ५ ॥

चोथी एकत्व भावना

इम भवभव जे दु ख सह्या, ते जाणे जगनाथ, भवभंजण भावठहरण, न मिल्यो अविहड साथ ॥ तेणे कारण जीव एकलो, छोडी राग गळ पाश, सवि ससारी जीवशु, धर चित्त भाव उदास ॥

ढाळ ४ थी

[राग–गोडी पुनत कीजे हो साधु पिपासडो–ए देशी]

चोथी भावना भवियण चित्त धरो, चेतन तु एकाकीरे, आव्यो तिम जाइश परभव वली, इहा मूकी सवि बाकीरे । मम कर ममता समता आदरो ॥ १ ॥ आणी चित्त विवेकरे, स्वार्थिया स्वजन सहुए मल्या, सुखदुःख सहशे तु एकरे ॥ मम० २॥ वित्त वहेंचण आवी सहुए मल्या, विपत्ति समये जाये नासीरे, द्रव बळती देखी दश दिशे पले, जिम पसु वनवासीरे ॥ मम० ३ ॥ षट् खंड नव निधि चौद रतन धणी, चौसठ सहस सुनारीरे, छेडो छोडीरे चाल्या एकला, हार्यो जेम जुगारीरे ॥ मम० ४ ॥ त्रिभुवन कटक निश्द धरावतो, फरतो गर्व गुमानरे, त्राग विण नाशा ते सहु चाल्या, रावण सरीखा राजानरे ॥ मम० ५ ॥ माल रहे घर स्त्री विश्रामणा, प्रेतवना लगे लोकरे, चय लगे कायारे आसर एकलो, प्राणी चले परलोकरे ॥ मम० ६ ॥ नित्य कलहो बहु मेळे देखियो, बहुपणे खटपट थायरे, वलयनी परे विहरीश एकलो, एम बूझ्यो नमिराय रे ॥ मम० ७ ॥

पाचमी अन्यत्व भावना

भवसायर बहु दु ख जल, जनम मरण तरग, ममता ततु तेणे ग्रह्यो, चेतन चतुर मातग ॥ १ ॥ चाहे जो छोडण भणी, तो भज भगवत महत, दूर करे पर बधने, जिम जलथी जलक्त ॥२॥

ढाल ५ मी

[कपूर हुए अति ऊजलो ए राग]

पाचमी भावना भावीयेरे, जीव अन्यत्व विचार, आपस्वार्थीयो सहुरे, मळियो तुज परिवार ॥ १ ॥ सवेगी सुदर, बूझ मा मूझ गमार, तहारु को नही इण ससार, तु नही केहनो ए निर्धार ॥ स० २ ॥ पथमिरे पथी मल्यारे, कीजे किणशु प्रेम, रात वसे प्रह ऊठ चलेरे, नेह निवाहे केम ॥ स० ३ ॥ जिम मेलो तीरथे मलेरे, जनजन वणजनी चाह, के तोटो के फायदोरे, लेई लेई निज घर जाय ॥ स० ४ ॥ जिहा कारज जेहनो सरेरे, तिहा ते न्हाले नेह, सूरीकतानी परेरे, छटकी देखाडे छेह ॥ स०५॥ चुलणी अगज मारवारे, कूडु करी जतुगेह, भरत बाहुबली जूझीयारे जोजो निजना नेह ॥ स० ६ ॥ श्रेणिक पुत्रे बाधीयोरे, लीधु वहेंची राज्य, दुःख दीधु बहु तातनेरे, देखो सुतना काज ॥ स० ७ ॥ इण भावना शिवपद लहेरे, श्रीमरुदेवी माय, वीर शिष्य केवळ लहयुरे, श्री गौतम गणराय ॥ सवेगी० ५ ॥

छट्ठी अशुचि भावना

मोह वशे मन मत्रवी इद्रिय मल्या कराल, प्रमाद मदिरा पायके, बाध्यो जीव भूपाल ॥ १ ॥ कर्म जजीर जडी करी मुरत माळ सवि लीध, अशुभ विरस दुर्गंधमय, तनगोत ह्रदे तस दीध ॥ २ ॥

ढाल ६ ठी राग–सिंधु सामेरी.

छट्ठी भावना मन धरो, जेम अशुचि भरी ए कायारे; शी माया रे, माडे काचा पिंडशु ए ॥ १ ॥ नगर खाळ परे नितु वहे, कफ-मल-मूत्र भंडारोरे, तिम द्वारोरे, नर नव द्वादश नारीना ए ॥ २ ॥ देखी दुर्गंध दूरथी, तु मुह मचकोडे माणरे, नवि जाणरे, तिण पुद्गल निज तनु भर्यु ए ॥ ३ ॥ मास रुधिर मेदा रसे, अस्थि मज्जा नर बीनेरे, तु रीझे रे, रूप देखी देखी आपणु ए ॥ ४ ॥ कृमिजालादिक कोथळी, मोहरायनी चेटी रे, ए पेटीरे, चर्म जडी घणा रोगनी ए ॥ ५ ॥ नव मास गर्भावास रह्यो, कृमि परे मळमा वसियोरे, तु रसियोरे, रूपे मावे एम इह्यो ए ॥ ६ ॥ कनक कुमरी भोजन भरी, तिहा देखी दुर्गंध बुझ्यारे, अति जुझ्यारे, मल्लि मिल निजकर्मशु ए ॥ ७ ॥

सातमी आश्रव भावना

तन छिल्लर इन्द्रिय मच्छा, विषय कलण जजाळ, पाप फलुष पाणी भर्यु, आश्रव वहे गढनाळ ॥ १ ॥ निर्मळ पस सहेजे सुगति, नाण विनाण रसाल, शु बगनी परे पकजल, चूये चतुर मराल ॥ २ ॥

ढाळ ७ मी (राग – धोरणी)

आश्रव भावना सातमीरे, समजो सुगुरु समीप, क्रोधादिक तुमे कांई करोरे, पामी श्रीजिनदीपो रे ॥ १ ॥ सुणसुण प्राणीया, परिहर आश्रव पचोरे, दशमे अगे कह्या, जेहना दुष्ट प्रपचो रे ॥ सुण० ॥ २ ॥ हॅरो जे हिंसा करे रे, ते लहे कटुक विपाक, परिहॉसे गोत्रासनीरे, जो जो जग विपाको रे ॥ सुण० ३ ॥ मिथ्या वयणे वसु पड्यो रे, मडिक पर धन लेई, इण अवझे सवि

रोळव्या रे, इन्द्रादिक सुर केई रे ॥ गुण० ४ ॥ महा आरंभ परिग्रहे रे, ब्रह्मदत्त नरय पहुंच, सेव्या शत्रुघण भंजेरे, पामे दुर्गति दूतोरे ॥ गुण० ५ ॥ छिद्र सहित नावा जले रे, बूडे नीर भराय, तिम हिंसादिक आस्रवे रे, पापे पिंड भरायोरे ॥ गुण० ॥ अविरति लागे एकेन्द्रियार, पापस्थान अढार, लागे पांचे ही क्रियारे, पंचम अंग विचारो रे ॥ गुण० ७ ॥ कटुक किया धानक फळ्या रे, बोल्या बीजे रे अंग, कहेता हियडू कमकमेरे, विरुओ तास प्रसंगो रे ॥ गुण० ८ ॥ मृग पतंग अलि माछलो रे, करी एक विषय प्रपंच, दुखिया ते तिम सुख लहरे, जस परवश एह पंचार ॥ गुण० ९ ॥ हास्यनिद्राविकथावशें रे, नरक निगोदे रे जाय, पूरवधर श्रुत हारियारे, अवरानी शी वातोरे ॥ गुण० १० ॥

आठमी संवर भावना

शुभ मानस मानस करी, ध्यान अमृतरस रेली, नवदल श्री नवकार पद, करी कमलासन केली ॥ १ ॥ पातक पंक पखालीने, करी संवरनी पाळ, परम हंस पदवी भजो, छोडी सकल जंजाळ ॥ २ ॥

ढाल ८ मी (ऊदर्नी देशी)

आठमी संवर भावनानी, धरी चित्तनु एक तार, समिति गुप्ति सुधी धरोजी, आपोआप विचार ॥ सलूणा, शांतिसुधारस चाख ॥ १ ॥ विरस विषय फळ फूलडजी, अटतो मन अलि राख ॥ स० ॥ लाभ अलाभे सुख दु खेजी, जीवित मरण समान, शत्रु मित्र सम भावतोजी, मान अने अपमान ॥ स० २ ॥ कदी एह परिग्रह छांडगुंजी, लेशु संयम भार, श्रावक चिंते हु कदाजी, करीश संथारो सार ॥ स० ३ ॥ साधु आशंसा एम करेजी, सूत्र भणीश गुरु पास, एकलमल्ल प्रतिमा वहीजी, करीश सलेखना खास ॥ स० ४ ॥ सर्व

जीव हित चिंतवेजी, वैर न करे जग मित्त, सत्य वयण मुखे भाखियेजी, परिहर परनु वित्त ॥ स० ५ ॥ काम कटक भेदण भणीजी, धर तु शीलसनाह, नवविध परिग्रह मूकताजी, लहिये सुख अथाह ॥ स० ६ ॥ देव मणुअ उपसर्गशुजी, निश्चल होइ सुधीर, बावीस परिसह जीतियेजी, जिम जीत्या श्रीवीर ॥ स० ७ ॥

नवमी निर्जरा भावना

दृढ प्रहारी दृढ ध्यान धरी, गुणनिधि गज सुकुमाल, मेतारज मद न भ्रमो, सुकोशल सुकुमाल ॥ १ ॥ एम अनेक मुनिवर तर्या, उपशम संवर भाव, कठिन कर्म सवि निर्जर्या, तिण निर्जर प्रस्ताव ॥२॥

ढाळ ९ मी (राग–गोडी)

नवमी निर्जर भावना चित्त चेतोरे, आदरो व्रत पच्चखाण, चतुर चित्त चेतोरे, पाप आलोवो गुरु कने चित्त०, धरिये विनय सुजाण ॥ च० १ ॥ वैयावच्च बहु विध करो, चित्त०, दुर्बल बाल गिलान ॥ च० ॥ आचारज वाचक तणो, चि०, शिष्य सार्धमिक जाण ॥ च० २ ॥ तपसी कुल गण सघनो, चि०, थविर प्रवर्तक वृद्ध ॥ च० ॥ चैत्य भक्ति बहु निर्जरा, चि०, दशमे अंग प्रसिद्ध ॥ च० ३ ॥ उभय टक आवश्यक करो, चि०, सुन्दर करी सज्झाय, च० ॥ पोसह सामायक करो, चि०, नित्य प्रत्ये नियम निभाय ॥ च० ४ ॥ कर्मसूदन कनकावली, चि० सिंहनिष्क्रीडित दोय ॥ च० ॥ श्रीगुणरयणसंवत्सरु, चि०, साधु पडिमा दश दोय । च० ५ ॥ श्रुत आराधन साचवो, चि० योगवहन उपधान । च० । शुक्ल ध्यान सुधु धरो चि०, श्री आंबिल वर्धमान । च० ६ ॥ चौद सहस अणगारमा चि०, धन धन्नो अणगार। च० । स्वय मुख वीर प्रशंसीओ, चि० राधक मेघ कुमार ॥ च० ७ ॥

दशमी लोकस्वरूप भावना

मन दारू तन नालि करी, ध्यानानळ सळगाव, कर्म कटक भेदन भणी, गोळा ज्ञान चराव ॥ १ ॥ मोहराय मारी करी, ऊचो चढी अवलोय, त्रिभुवन मडप माडणी, जिम परमानन्द होय ॥ २ ॥

ढाल १० मी (राग-गोडी)

दशमी लोक स्वरूपरे, भावना भावीये, निगुणी गुरु उपदेशथी ए ॥ १ ॥ ऊर्ध्व पुरुष आकार रे, पग पहोळा करी, कर दोय कटिए राखिये ए ॥ २ ॥ इण आकारे लोकरे, पुद्गलपूरीओ, जिम काजलनी कूपलीए ॥ ३ ॥ धर्माधर्माकाश रे, देश प्रदेश ए, जीव अनते पूरीयो ए ॥ ४ ॥ सात राज देशोन रे, ऊर्ध्व तिरिय मही, अधो लोक सात साधीकु ए ॥ ५ ॥ चौद राज त्रस नाडीरे, त्रस जीवा लय, एक रज्जु दीर्घ विस्तरे ए ॥ ६ ॥ ऊर्ध्व सुरालय सार रे, निरय भुवन नीचे, नाभी नर तिरि दो सुरा ए ॥ ७ ॥ द्वीप समुद्र असख्यरे, प्रभु मुख साभली, राय ऋषि शिव समजीओ ए ॥ ८ ॥ लाख पोहोळी पणयाल रे, लख जोयण लही, सिद्धशिला शिर ऊजली ए ॥ ९ ॥ ऊचा धनु सय तीनरे, तेत्रीश साधिके सिद्ध योजनने छेहडे ए ॥ १० ॥ अजर अमर निष्कलकरे, नाणदसणमय, ते जोवा मन गहगहे ए ॥ ११ ॥

अग्यारमी बोधि दुर्लभ भावना.

वार अनती फरसियो, उत्ती वाटक न्याय, नाण विना नवि साभरे, लोक भ्रमण भडवाय ॥ १ ॥ रत्नत्रय त्रिहु भुवनमें, दुल्लहा जाणी दयाल । बोधिरयण काजे चतुर, आगम खाणी सभाळ ॥ २ ॥

ढाल ११ मी. (राग — प्रभाती)

दश दृष्टांते दोहिलेरे, लीधो मनुष्य जमारो रे, दुल्लहो अम्बर फूल ज्यु रे, आरज घर अवतारो रे ॥ मोरा जीवन रे, बोधि भावना अभ्यासमेरे, लावो हृदय मोझारो रे ॥ मोरा० १ ॥ उत्तम कुल तिहा दोहिलो रे, सद्गुरु धर्म सयोगोरे, पाचे इन्द्रिय परवडारे, दुल्लहो देह निरोगोरे ॥ मोरा० २ ॥ साभळ्वु सिद्धातनुरे, दोहिलु वस चित्त धरवु रे, सूधी सद्दहणा दोहीली रे, दुक्कर अगे करवु रे, ॥ मोरा० ३ ॥ सामग्री सघळी लहीरे, मूढ मुधा मम हारो रे । चिन्तामणि देवे दियो रे, हार्यो जेम गमारो रे ॥ मोरा० ४ ॥ लोह कीलकने कारणे रे, गुण यान जलधिमा फोडेरे, गुण कारण कोण नवळखोरे, हार दैयानो तोडे रे ॥ मोरा० ५ ॥ बोधिरयण उवेखीने रे, कोण विषयार्थे दोडे रे, काकर माणि समोवड करे रे, गज वेचे खर होडे रे ॥ मोरा० ६ ॥ गीत सुणी नटणी कने रे, क्षुल्लके चित्त विचार्यु रे, कुमरादिक पण समझिया रे, बोधिरयण सभार्यु रे ॥ मोरा० ७ ॥

बारमी धर्मतत्त्व भावना

परिहर हरिहर देव सवि, सेव सदा अरिहत । दोष रहित गुरु गुणधरा, सुविहित साधु महत ॥ १ ॥ कुमति कदाग्रह मूक तू, श्रुत चारित्र विचार । भवजल तारण पोत सम, धर्म हैयामा धार ॥ २ ॥

ढाल १२ मी. (राग — डुगरियानी देशी)

धन धन धर्म जगत हितकरु, भाख्यो भलो जिन देवरे, इह परभव सुखदायको, जीवडा जनम लगी सेव रे ॥ धन० १ ॥ भावना सरस सुर वेलडी रोप तु हृदय आरामरे, सुकृत वर

उद्दिम बहु पसरतो, सफळ फळशे अभिराम रे ॥ धन० २ ॥ क्षेत्र शुद्ध करी करुणा रने, काढी मिथ्यात्वादिक साळ रे, गुप्ति त्रिहु गुप्ति रुडी करी, नीक तु सुमतिनी पाळ रे ॥ धन० ३ ॥ सींचजे सुगुरु वचनामृते, कुमति कंथेर तजी संगरे, क्रोध मानादिक सूकरा, वालरो वारि अनगरे ॥ धन० ४ ॥ सेववा एहने केवली, पन्नर मय तीन अणगार रे, गौतम शिष्य शिवपुर गया, भाववा देव गुरु सार रे ॥ ध० ५ ॥ शुक परिव्राजक सीधले, अर्जुन माळी शिववासरे, राय परदेशी जे पापीयो, कापीयो तास दुःख पासरे ॥ धन० ६ ॥ दुःषम समय दुष्पसह लगे, अविचल शासन एहरे, आदरु भविअण जे भजे, तेह शुभ मति गुण गेहरे ॥ धन० ७ ॥

(दोहा)

तप गच्छपति विजयदेव गुरु, विजयसिंह मुनिराय, शुद्ध धर्मदायक सदा, प्रणमु एहना पाय ॥ १ ॥

ढाळ १२ मी (राग – धनाश्री)

तुमें भावोरे, भवि इणी परे भावना भावो, तनमन वचण धर्मक्रय लावो, जिम सुरा संपद पावो रे ॥ भवि० १ ॥ उज्वलोचन चित्त न डोलावो, धन कारण काइ धावो, प्रभुशु तारोवार मिलावो, जो होय शिवपुर जावो रे ॥ काइ गर्भावास न आवो रे ॥ भवि० २ ॥ जयूनी परे जीव जगावो, विषय थकी विरमावो, ए हिव शांति अमारी मानी, जग जश पडह वजावोरे ॥ भवि० ३ ॥ श्रीजशसोम विबुध वैरागी, जग जस जिहु लहु पावो, तास शिष्य कहे भावना भणतां, घरघर होय वधावो रे ॥ भवि० ४ ॥

दोहा

भोजन नभ गुण बरस शुचि, सित तेरस कुजवार, भक्ति हेतु भावना भणी, जेसलमेर मेझार ॥

अग्यार पडिमानी सज्झाय.

सातमे अंगे भाखियोजीरे, जगगुरु वीर जिणंद, श्रावक तप पडिमा तणोजी रे, वहेता कर्म निकंद। सवेगी श्रावक वहे पडिमा अग्यार। आनन्द कामदेवनी परे जी रे, पामे भवनो पार ॥ सवेगी० १ ॥ समकित पाले निर्मलोजी, शंका न आणे रे चित्त, ए पडिमा एक मासनी जी रे, करे एकांतरे नित्य ॥ सवेगी० २ ॥ दोय उपवासे पारणु जी रे, धारे व्रत उच्चार, ए पडिमा दोय मासनीजी, न लगाडे अतिचार ॥ सवेगी० ३ ॥ त्रण टंक सामयिक करे जी रे, तप सख्या त्रण मास, त्रण उपवासे पारणु जी रे, तण अंग उल्लास ॥ सवेगी० ४ ॥ आठ पहोर पोसह करे जी रे, आठम चौदश जाण, चार उपवासे पारणु जी रे, चार मास परिमाण ॥ सवेगी० ५ ॥ ब्रह्मव्रत पाले दिवसनो जी रे, राते करे परिमाण, पाच उपवासे पारणु जी, पचमी पच मास जाण ॥ सवेगी० ६ ॥ ब्रह्मव्रत पाले सर्वथा जी रे न करे सचित्त अणगार, छ उपवासे पारणु जी रे, मोह त्याग छ मास ॥ सवेगी० ७ ॥ सातमीए सचित्त सहु तजे जी रे, असनादिक आहार, सात उपवासे पारणु जी रे सात मास निर्धार ॥ सवेगी० ८ ॥ आठमी ग्रही आठ मासनी जी रे, न करे आप आरभ, आठ उपवासे पारणु जी रे, राखे चित्तमां थभ ॥ सवेगी० ९ ॥ नवमीए न करे न करावियें जी रे, आरभनी काइ वात, नव उपवासे पारणु जी रे, नव मास विख्यात ॥ सवेगी० १० ॥ दशमी कही दस मासनी जी रे, उद्दिष्टसावि परिहार, क्षुरमुंडित राखे शिखा जी रे, दश उपवासे

आहार ॥ सवेगी० ११ ॥ अनुमाति लिए परिवारनी जी रे, विचरतो मुनिवर जेम, ग्यारह उपवासे पारणु जी रे, मास अग्यार नियम॥ स० १२ ॥ आठम' चउदश पूनमे जी रे, पाखी काउसग्ग रात लाग न वाळे धोतिडेजी, नीर न धोवे गात्र ॥ सवेगी० १३ ॥ पडिमा तप एणी परे वहे जी रे, पच वरस छ मास, कहे " जिन हर्ष " सोहिलो लहे जी रे, वेगे शिवपुर वास ॥ सवेगी० १४ ॥

श्रीसिद्धाचलजीनु स्तवन

सघपति भरत नरेसरु, शत्रुजय गिरि आवे रे लोल, अहो शत्रुजय गिरि आवे रे लोल, सोवन देरासर वली, आगळ पधरावे रे लोल । अहो० ॥ वासव प्रमुख सुरा बहु साथे तिहा सोहेरे लोल अहो० ॥ वश इक्ष्वाकु सोहावीआ त्रिभुवन मन मोहेरे लोल॥ अहो सघपति० ॥ १ ॥ बाहुबल आदे करी, क्रोड मुनिवर मलिया रे लोल, अहो० । ज्ञानी गणधर जाणीये, नमि विनेमि वलीया रे लोल । अहो० । सोमयशा आदि दइ, महीधर रथवाळारे लोल । अहो० । सामत मत्री, अधिपति, मानी मछराळा रे लोल । अहो० सघ० ॥ श्रावक ने वळी श्राविका, वर अणुव्रतधारीरे लो० । अहो० । कनकसेनादिक साववी, व्रतिनी तवारी रे लो० । अहो० । चतुरग सेनाए परिवर्यो, छत्रचामरधारी रे लो० । अहो० ॥ अढळक दानने वरसता जेम सजल जलधारा रे लो० । अहो० सघ० ॥ ३ ॥ साथे सुभद्रादिक बहु, प्रवर पट्टराणीरे लोल । अहो० । इद्रमाळ पहेरे तिहा, धन्य धन्य अवतारा रे लो० । अहो० । ओळवयु गिरिराजनी, करे भक्ति अपारा रे लो० अहो० । शिखर-शिखर विहु वालना, करे जिनविहारा रे लो० । अहो० सघ० ॥ ४ ॥ गणधर नाभि साथेअ छे, बहु मुनि आधारा रे लो० ॥ अहो बहु० ॥

बिंब प्रतिष्ठा ते करे विधिशु जयकारा रे लो० अहो विधि० सघपति तिलक सोहावीयु इद्रादिक साखे रे लो० अहो० इ० ॥ स्थापी थापे जश घणो ज्ञानविमल इम भाखे रे लो अहो ज्ञानं० ॥ ५ ॥

अध्यात्मिक पद

हो प्रीतमजी[1] प्रीत की रीत अनित्य तजी चित्त धारीये, हे वालमजी, वचन तणो अति उडो मर्म विचारिये । तुमे कुमति के घर जाओ छो, निज कुल में खोट लगाओ छो, धिक्[2] एठ जगतकी खाओ छो, हो प्रीतमजी० ॥ १ ॥ तुमे त्यागी अमी विष पीयो छो, कुमतिनो मारग लीयो छे, ए तो काज अजुगतो कीयो छे, हो प्रीतमजी० ॥ २ ॥ ए[3] तो मोहरायकी चेटी छे, शिवसपत्ति एहथी छेटी छे, ए तो साकरसें गळे[4] पेटी छे हो प्रीतमजी० ॥ ३ ॥ एक शका मेरे मन आवी छे, ए किण विध तुम चित्त भावी छे, ए तो डाकण जगमें चावी छे हो प्रीतमजी० ॥ ४ ॥ सहु ऋद्धि तुमारी खाई छे, करी कामण मति भरमावी छे, तुमे पुण्य जोगे ए पाई छे हो प्रीतमजी० ॥ ५ ॥ मत आबकाज बावल बोवो, अनुपम भव विरथा नवि खोवो, अब खोल नयण परगट जोवो हो प्रीतमजी० ॥ ६ ॥ इण विध सुमति बहु समजावे, गुण अवगुण सहु कही बतलावे सुणी चिदानद निज घरे[5] आवे, हो प्रीतमजी० ॥ ७ ॥

---

१ सुबुद्धि आत्माने प्रीतमजा कही जणावे छे २ बीजाओए छोडेला अने मळमूत्रादिना परमाणुओ आपणे आहार पाणी रूपे खाईए पाईए छीए ३ कुमति मोहनो दासी छ ४ उपरथी धारी शाकर जेवी ५ आत्मा विभावमांथी स्वभावमां आवे

नाथीबाई व्होरावा पूत तें मन० ॥ ६ ॥ धनबाई धन वीकुखो, धन शाह साही रे पूत, धनबाई नाथीरो जीविओ, हिरजी मरिखा सपूत, तें मन० ॥ ७ ॥ सामी मेलुजी पालखी, मोतीडे नवसर हार, एक चोमासु पूज्य इहां करो, होशे धर्मेरो लाभ तें मन० ॥ ८ ॥ लाख टकानोजी पूररो, झबक्यो माजम रात, झबके गुरुजी जागिया, पुस्तक जमणेजी हात तें मन० ॥ ९ ॥ गलियें गलियेंथी गोरडी, भरभर मोत्योंका थाल, पद्मिनी चालीजी पूजवा, हाथे सोवन थाल, तें मन० ॥ १० ॥ कपडो केशरियो सामटो, ओघो अधिको बणाय, चदा झबकेजी मुमती, पदम झलकेजी पाय, तें मन० ॥ ११ ॥ पींपलपान खरे खरे, जाणे पाणीरी रेल, में थाने अणिहारे ओळख्या, हीरजी मोहनवेल, तें मन० ॥ १२ ॥ परमन थायजी मीळवा, परमन थयाजी थभ, ब्राह्मनीजोरा मीलवा, रत्ने जडियाजी थंभ, तें मन० ॥ १३ ॥ पहेलु चोमासु आगरे, बीजु लाहोर माय, त्रीजुं चोमासु मेडते, चोथुं जालोर माय तें० ॥ १४ ॥ डामर सरोवर छोडीया छोड्या वदीना वान, छोड्या पखीने मृगला अकबर देवे बहुमान तें० ॥ १५ ॥ प्रभुजो मुगति कीयो, मरती रातीजी गाय, जजियो ठोकारो छोडावियो, हिरजी तुम पसाय तें० ॥ १६ ॥ तपगच्छनायक राजीयो, श्री विजयसेनसूरीन्द, तास शिष्य भगते भणे, होजो मुज आनद तें० ॥ १७ ॥

श्री मद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत

कुमती-मद-गालन श्री वीरस्तुतिरूप

दोढसो गाथानु हुंडीनुं स्तवन.

ढाळ १ ली

(ए छिंडी किहा राखी, अथवा भविका ! सिद्धचक्र पद वदो ए देशी)

प्रणमी श्रीगुरुना पयपकज, थुणस्यु वीर जिणंद, ठवण निक्षेप प्रमाण पचांगी परखी लहो आणंदरे, जिनजी ! तुज आणा शिर वहिए तुज शासन नय शुद्ध प्ररूपण,–गुणथी शिवसुख लहिएरे, जिनजी ! तुज आणा शिर वहिए ॥ १ ॥ श्रीअनुयोगदुवारे भाष्या, चार निक्षेपा सार, चार सत्य दश सत्या भाख्या ठाणांगे निरधाररे, जिनजी० ॥ २ ॥ जास ध्यान निरियामांहि आवे, तेह सत्य करी जाणु, श्रीआवश्यक सूत्र प्रमाणे, विगते तेह वखाणुरे, जिनजी० ॥ ३ ॥ चोवीसत्थयमांहि निक्षेपा, नाम द्रव्य दोय भावु, काउस्सग्ग आलावे ठवणा, भाव ते सघळे ल्यावु रे, जिनजी० ॥ ४ ॥ पुस्तक-लिखित सकल जिम आगम, तिम आवश्यक एह, भगवई नांदि साखे सम्मत, तेहमां नहीं संदेहरे जिनजी० ॥ ५ ॥ सुत्र आवश्यक जे परपरस्तु वहेसे ते अज्ञानी, पुस्तक–अर्थ-परपर आव्यु, माने तेहज ज्ञानीरे, जिनजी० ॥ ६ ॥ बभीलिपि श्री गणधर देवे, प्रणमी भगवई आदे, ज्ञानतणी ते ठवणा अथवा द्रव्यश्रुत अविवादेरे जिनजी० ॥ ७ ॥ लेख अढारज बभी लिपिना समवायांगे दीठा, शुद्ध अरथ मरडी भव बहुला, भमशे कुमती धीठारे जिनजी० ॥ ८ ॥ बभीलिपि जो तेहनो कर्ता, तो लेखक पण आव, गुरुआणा विण अरथ करे जे तेहनो बोल न भावेरे जिनजी० ॥ ९ ॥ जिनवाणी पण द्रव्य–श्रुत छे, नंदिसूत्रने लेखे, जिम ते तिम बभीलिपि नमिये भाव ते द्रव्यविशेषे रे, जिनजी० ॥ १० ॥ जिम अजीव संयमनु साधन, ज्ञानादिकनु तेम,शुद्ध भाव आरोपे विधिशु, वंदने सघले खेम रे जिनजी०॥ ११ ॥ शुद्ध भाव जेहनो छे तेहना, चार निक्षेपा साचा, जेहमां भाव अशुद्ध छे तेहना, एक काचे सवि काचारे, जिनजी० ॥ १२ ॥ दशवैका लिके दूषण दाख्यु, नारीचित्रने ठामे, तो किम जिन प्रतिमा देखीने, गुण नवि थाय परिणामेरे ? जिनजी० ॥ १३ ॥ रुचकद्वीप एक डगले जाता, पडिमा नमिय आवंदे, आवता एक डगले नंदीसरे, बीजे इहां जिन वंदेरे जिनजी० ॥ १४ ॥ त्रिजी गति ए भगवई भाखी

अधाचारण केरी, पंडगवन नदन इहां पडिमा, उपरि नमे घणेरीरे जिनजी० ॥ १५ ॥ विद्याचारण त एक डगले मानुषोत्तरे जाय, बीजे नदीसरे जिनप्रतिमा प्रणमी प्रमुदित थाय रे जिनजी० ॥ १६ ॥ तिहांथी पडिमा वदण कारण, एक डगले इहां आवे, ऊर्ध्वपणे जातां बे डगलां, आवता एक स्वभावेरे जिनजी० ॥ १७ ॥ शतक (इक-) वीशमे नवम उद्देशे प्रतिमा मुनिवर वदी, इम देखी जे अवळा थाशे, तस मति कुमति फदीरे, जिनजी० ॥ १८ ॥ आलोयणनु ठाण कह्यु जे तेह प्रमाद गति केरो, वीर गति जे जात्र विचाले, रहे ते खेद घणेरोरे, जिनजी० ॥ १९ ॥ करी गोचरी जिम आलोए दशवैकालिक माखे, तिम ए ठाम प्रमाद आलोए, नहीं दोष ते पाखेरे जिनजी० ॥ २० ॥ यदे कोई ए कहेवा मात्रज कोई न गयो नवि जाशे, नहीं तो रुचकगिरा मांहि जाता, किम आराधक थाशेरे जिनजी० ॥ २१ ॥ सत्तर सहस जोयण जइ उंचा, चारण तीर्छा चाले, समवायांगे प्रगट पाठ ए, शु कुमति ! भ्रम घालेरे ! जिनजी० ॥ २२ ॥ 'चैत्य' शब्दनो ज्ञान अरथ ते, कहो करवो कुण हेते, ज्ञान एक ने चैत्य घणा छे, भूले जड सकेतेरे जिनजी० ॥ २३ ॥ रुचकादिकना चैत्य नम्या ते, सासय पडिमा कहिए, जेह इहांना तेह अशाश्वत, चिह्नमा भेद न लहिएरे जिनजी० ॥ २४ ॥ जे उपर साहिब ! तुज करुणा, शुद्ध अरथ तेह भाखे, तुज आगमनो शुद्ध प्ररूपक, सुजस अमियरस चाखेरे, जिनजी० ॥ २५ ॥

ढाळ २

महाविदेह क्षेत्र सोहामणु — ए देशी

तुज आणा मुज मन वसी, जिहां जिनप्रतिमा सुविचार, लालरे, रायपसेणी सूत्रमां सूरिआभ तणो अधिकार, लालरे, तुज० ॥ १ ॥ ते सुर अभिनव उपन्यो, पूछे सामानिक देव, लालरे, 'शु मुज

पूरव ने पछी, हितकारी कह्यो प्रवसेव, लालरे, तुज० ॥ २ ॥ ते कहे " एह विमानमा, जिनपडिमादाढा जेह, लालरे, तेहनी तुमे पूजा करो, पूर्वपच्छाहित एह " लालरे, तु० ॥ ३ ॥ पूरव पच्छा शब्दथी, नित्य करणी जाणे सोय, लालरे, समकितदृष्टि सद्दहे ते द्रव्यथकी किम होय ? लालरे, तुज० ॥ ४ ॥ द्रव्य थकी ज पूजिया, प्रहरण कोशादि अनेक, लालरे, तेहज थिहु जुदा कह्या, ए तो साचो भाव विवेक लालरे, तुज० ॥ ५ ॥ चक्ररयण जिणनाणनी, पूजा जे भरते कीध, लालरे जिम तिहां तिम अन्तर इहां, समकित दृष्टि सुप्रसिद्ध, लालरे तु० ॥ ६ ॥ पहिले भव पूरव कह्यु, माता दर्दुरसबंध, लालरे, पच्छा कडुअ विपय कह्या, वळी मृगापुत्र प्रबंध, लालरे तु० ॥ ७ ॥ आगमेसीभद्दा कह्या, सद्दहिद्दसहणा देव, लालरे, तस पूरव पच्छ कहे, थिहु काले हित जिनसेव लालरे तु० ॥ ८ ॥ जस पूरव पच्छा नहीं, मध्ये पण तस संदेह, लालरे, इम पहेले अंगे कह्यु, मूषा अर्थ ते एह, लालरे तु० ॥ ९ ॥ पच्छा पेच्चा शब्दनो, जे फेर कहे ते दुठ्ठ, लालरे, शब्द तणी रचना घणी, पण अरथ एक छे पुठ्ठ लालरे तुज० ॥ १० ॥ वाची पुस्तक रतना, हवे लेइ धरम व्यवसाय, लालरे, सिद्धायतने ते गयो, निहां देवछंदानो ठाय, लालरे, तुज० ॥ ११ ॥ जिन प्रतिमा देखी करी करे शिर प्रणाम शुभ चीत, लालरे, पुप्पमाल्यचूर्ण करे, वस्त्राभरणे वळी पूज लालर तुज० ॥ १२ ॥ फूलपगर आगे करी, आठेम मंगल आठ लालरे, धूप देइ काव्ये स्तवी, करे शक्रस्तवनो पाठ, लालर तुज० ॥ १३ ॥ जेहना स्वमुखे जिन कहे, भवसिद्धि प्रमुख छ बोल, लालरे, तास भगति जिनपूजना, नावि माने तेह निटोल, लालरे तुज० ॥ १४ ॥ प्रभु आगळ नाटक कर्यु, भगति सूरियाभे सार, लालरे, भगतितणा फळ शुभ कह्या, श्री उत्तराध्ययन मोझार, लालरे तुज० ॥ १५ ॥ अगडपांगे घणे कही, एम देव देवीनी भक्ति, लालरे, आराधकता तेणे थई, इहां

इद्रनी युक्ति लालरे तुज० ॥ १६ ॥ भक्ति जीतधर्मे करी, ढीय दाढा अवर जिन अग, लालरे, पूजा रचे सुर त्रण ते, कहे जवूपन्नत्ती चग, लालरे, तुज० ॥ १७ ॥ शतक दशमे अग पाचमे, उद्देशे छठ्ठे इद, लालरे, दाढ तणी आशातना, टाले ते विनय अमद, लालरे तुज० ॥ १८ ॥ समकितदृष्टी सुर तणी, आशातना करशे जेह, लालरे, दुर्लभबोधी ते हशे, ठाणागे भाख्यु एह लालरे तुज० ॥ १९ ॥ तेहने जश बोल्ये कह्यु, थकी सुलभबोधिता थाय, लालरे, तेणे पूजादिक तेहना, करणी शिवहेतु कहाय, लालरे तुज० ॥ २० ॥ तप सयम तरुसम कह्या, फलसम ते शिव-सुरशर्म, लालरे, सुरकरणी माने नहीं, नवि जाण्यो तेणे ए मर्म, लालरे, तुज० ॥ २१ ॥ दशवैकालिके नर थकी, सुर अधिक विवेक जणाय, लालरे, द्रव्यस्तव तो तेणे कर्यो, माने तस सुजस गवाय, लालरे तुज० ॥ २२ ॥

ढाळ ३ जी

(ऋषभनो वश रयणायरु – अे देशी,)

शासन ताहरु अति भलु, जगि नहीं कोई तस सरिखु रे, तिमतिम राग घणो वधे, जिमजिम जुगतिशु परखुरे ॥ १ ॥ शासन ताहरु अति भलु ॥ अरिहत अने तेहना, चैत्य नमु न अनेरारे, अबड ने तस शिष्यना, वचन उववाइ घणेरारे शासन० ॥ २ ॥ ' चैत्य ' शब्द तणो अरथ ते, " प्रतिमा " नहि कोई बीजोरे, जेह देखी गुण चेतिअे, तेहज चैत्य पतीजोरे शासन० ॥ ३ ॥ इमज आलावे आणदने जिन प्रतिमा नति दीसेरे, सप्तम अगना अर्थथी, ते नमता मन हींसेरे शासन० ॥ ४ ॥ परतीर्थी सुर तेहनी, प्रतिमानी नवि वारीरे, तेणे मुनि जिन प्रतिमा तणी, वदननीति निरधारीरे शासन० ॥ ५ ॥ परतीर्थीअे जे परिग्रह्या, मुनि ते तो परतीर्थीरे, त्रण शरण माहि

चैत्य ते, कहे प्रतिमा शिवअर्थीरे शासन० ॥ ६ ॥ ' दान किशु प्रतिमा प्रति ' ? अेम कहे जे छल हेरीरे, उत्तर तास सभव तणी, शैली छे सूत्र केरीरे. शासन० ॥ ७ ॥ दशविध बहुविध जिम कह्यु, वैयावच्च जेहजोगेरे, दशमे ते अगे तथा इहां, जोडीअे नय उपयोगेरे शासन० ॥ ८ ॥ साधुने जिन प्रतिमा तणु, वैयावच्च तिहां बोल्युरे, तेह अरथ थकी कुमतिनु हियडु काइ न खोल्युरे शासन० ॥ ९ ॥ सघ तणी जिम थापना, वैयावच्च जस वादोरे, जाणीअे जिन प्रतिमा तणु, तिम इहां कवण विवादो रे [१] शासन० ॥ १० ॥ इम सवि श्रावक साधुने, वदननो अधिकारोरे, सूत्रे कह्यो प्रतिमा तणो, हवे कहु पूजाविचारो रे शासन० ॥ ११ ॥ याग अनेक कर्या कह्या, श्री सिद्धारथ राजे रे, ते जिनपूजना कल्पमा पशुना याग न छाजे रे शासन० ॥ १२ ॥ श्री जिन पासने तीरथे श्रमणोपासक तहां रे, प्रथम अगे कह्यो तेहने, श्रीजिनपूजानो नेहो रे शासन० ॥ १३ ॥ श्रेणिक महाबळ प्रमुखना, इम अधिकार अनेको रे, छठ्ठे अगे वळी द्रौपदी, पूजे प्रगट विवेको रे शासन० ॥ १४ ॥ नारद देखीने नवि थइ, उभी तेह सुजाण रे, जाणीअे तेणे ते श्राविका, अक्षर अेहज प्रमाण रे शासन० ॥ १५ ॥ आम्बिल अन्तर छठ्ठनु, उपसर्गे तप कीधु रे, किम नवि कहिअे ते श्राविका ? धर्मे कारज सीधु रे शासन० ॥ १६ ॥ रायकन्या कही श्राविका, न कही इम जे भूले रे, राजीमती कही तेहवी, तिहां सन्देह ते झूले रे शासन० ॥ १७ ॥ हरि पासे कर्म नियाणनु, इह भवे भोग न नासे रे, समकित लेइ परण्या पछी, कहे ते शु न विमासे रे, शासन० ॥ १८ ॥ जिनघर केणे कराविशु ? तिहां प्रतिमा ने पइट्ठा रे, तेहने पूजा ते शुण करे ? अेम परखे ते गरिट्ठा रे शासन० ॥ १९ ॥ वर नवि माग्यो पूजता शक्रस्तवे शिव मागे रे, भक्ति समी सूरियाभने,

---

१ तेह. २ वन्दन ३ यथायोग

विरति विशेषथी जागे रे शासन० ॥ २० ॥ धर्म, विनय, अरिहन्तनो, इम अे लोगउवयारो रे, सभवे सर्वने जाणिजे, समकित शुद्ध आचारो रे, शासन० ॥ २१॥ आणन्दनो विधि नवि कह्यो, रायप्रदेशीने पाठे रे, संभव सर्व न मानशे, वींटाशे तेह आठे रे शासन० ॥ २२ ॥ पडिकमणादिक क्रम नहीं, पाठ सप्तम अगे रे, पदम अनुयोगथी प्रकरणे सर्व कह्यु विधि रगे रे शासन० ॥ २३ ॥ किहा अेक अेक देशज महे, किहा अेक महे ते अशेषो रे, किहा अेक क्रम उत्क्रम महे, अे श्रुतशैली विशेषो रे शासन० ॥ २४ ॥ शासननी जे प्रभावना, ते समकितनो आचारो रे, श्रीजिनपूजाअे ते करे, ते लहे सुजस भडारो रे शासन० ॥ २५ ॥

ढाळ चोथी

(झाझरीया मुनिवर ! धन धन तुम अवतार–ए देशी)

कोइ कहे जिन पूजताजी जे षट्काय आरंभ, ते किम श्रावक आचरेजी ? समकितमा थिरथभ, सुखदायक ! तोरी आणा मुज सुप्रमाण ॥ १ ॥ तेहने कहीए जतना भक्ति किरियामा नहि दोष, पडिकमणे मुनिदानविहारे, नहीं तो होय तस पोष, सुख० ॥२॥ साहमीवच्छळ पक्खियपोसह, भगवइ अग प्रसिद्ध, परनिर्वाह चरण लिए तेहना, ज्ञातामाहि हरि कीध सुख० ॥ ३ ॥ कूणिक राय उदायन कीधा, वदनमह सुविवेक, "ण्हायाकयबलिकम्मा" कहिया, तुगिय श्राद्ध अनेक सुख० ॥ ४ ॥ समकितसवरनी ते किरिया, तिम जिनपूजा उदार, हिंसा होय तो अर्थदडमा, कहे नही ? तेह विचार सुख० ॥ ५ ॥ नाग-भूत-जक्षादिक हेते, पूजाहिंसा रे उत्त, सूयगडागमा नवि जिनहेते, बोले जे होय जुत्त सुख० ॥ ६ ॥ जिहा हिंसा तिहा नही जिन-आणा, तो किम साधु विहार ? कर्म बन्ध नही जयणाभावे, ए छे शुभ व्यवहार सुख० ॥ ७ ॥ प्रथम

बन्ध ने पछी निर्ज्जरा, कूपतणा रे दिठ्ठंत, कहि कोइ जोडे बुध भाखे, भाव ते शुचिजळ तंत सुख० ॥ ८ ॥ उपादानवश बन्धन कहियु, तस हिंसा शिर उपचार, पुष्पादिक आरम्भतणो इम, होय भावे परिहार सुख० ॥ ९ ॥ जळ तरता जळ उपर मुनिने जिम करुणानोरे रग, पुष्पादिक उपर श्रावकने, तिम पूजामांहि चग सुख० ॥ १० ॥ पात्रदानथी शुभविपाक जिम, लहे सुबाहु-कुमार, पहेले गुणठाणे भद्रक पण, तिम जिनपूजा उदार सुख० ॥ ११ ॥ उपलक्षणथी जिम शीलादिक, तिम जिनपूजा लीध, मनुजआयुबन्धे त सुबाहु, तेणे समकित न प्रसिद्ध सुख० ॥ १२ ॥ मेघजीव गज शशअनुकम्पा, दान सुबाहु विचार, पहेले गुणठाणे पण सुन्दर, तिम जिनपूजा प्रकार सुख० ॥ १३ ॥ दानदयपूजादिक सघळा, द्रव्यस्तव कह्या जेह अमदारम्भी तस अधिकारी मांडी रहे जे गेह, सुख० ॥ १४ ॥ सदारम्भमा गुण जाणीने, असदारम्भनिवृत्ति, अरमणिकता त्यागे भाखी, इमज प्रदेशी प्रवृत्ति, सुख० ॥ १५ ॥ लिपिने शिल्पशत गणित प्रकाश्या, जगे प्रजाहित हेत, प्रथम राय श्रीऋषभजिणन्दे तिहा पण ए संकेत सुख० ॥ १६ ॥ यतनाए सूत्रे बहु मुनिने, आर्यकर्म उपदेश पारिणामिक बुद्धि विस्तारे, समजे श्राद्ध अशेष सुख० ॥ १७ ॥ आर्यकार्य श्रावकना जे छे तेहमा हिसा दिठ, हेतु-स्वरूप-अनुबन्ध विचार नाशे देइ निज पीठ सुख० ॥ १८ ॥ हिंसाहेतु अयतना भावे जीव वधे ते स्वरूप, आणाभग मिथ्यामति भावे ते अनुबन्धवि रूप सुख० ॥ १९ ॥ हेतुस्वरूप न हिंसा साची, सेवी ते अनुबन्ध, तो जमालि प्रमुखे फळ पाम्या, कडुआं करी बहु धन्ध सुख० ॥२०॥ स्वरूपथी हिंसा न टळे छे, समुद्रचले जे सिद्ध, वळी अपवाद पदे ज वरते, पण तेणे शिवपद लीध सुख० ॥ २१ ॥ साधुविहार परि अनुबन्धे, नही हिंसा जिनभक्ति, इम जे माने तेहनी वाधे सुजश आगमशक्ति सुख० ॥ २२ ॥

ढाल पांचमी

माहरी सहिरे समाणी – ए देशी

मासयपडिमा अडसय माने, सिद्धायतन विमानेरे, धन धन जिन वाणी ॥ प्रभु ! ते भाखी अंगउवंगे वरणवशु तिम रंगेरे धन० ॥ १ ॥ कचनमय करपदतल सोहे भविजनना मन मोहे रे, धन० अकरतनमय नख सासनेहा लोहिताक्षमध्ये रेहा रे धन० ॥ २ ॥ गात्रयष्टि कचनमय सारी, नाभि ते कचनक्यारी रे, धन० रिट्ठरतन रोमराजि विराजे, चुच्चुक कचन छाजे रे, धन० ॥ ३ ॥ श्रीवच्छ ते तपनीय विशाला, होठ ते लाल प्रवाला रे, धन० दत फटिकमय जीह दयालु, वळी तपनीयनु तालु रे, धन० ॥ ४ ॥ कनकनासिका तिहा सुविशेषा, लोहिताक्षनी रेखा रे, धन० लोहिताक्षरेखित सुविशाला, नयन अक रतनाला रे, धन० ॥ ५ ॥ अच्छिपत्ति भमूहावलि कीकी, रिट्ठरतनमय नीकी रे, धन० श्रवण निलाडवटी गुणशाला, कचन झाकझमाला रे धन० ॥ ६ ॥ वज्ररतनमय अतिहि सोहाणी शीशघडी सुखखाणी रे, धन० केशभूमि तपनीय निवेशा, रिट्ठरतनमय केशा रे, धन० ॥ ७ ॥ पूठे छत्र धरे प्रत्येके, प्रतिमा एक विवेके रे, धन०, दोय पासे दोय चामर ढाले, लीलाए जिनने उवारे रे, धन० ॥ ८ ॥ नागभूतयक्ष ने कुडधारा, आगे दोय उदारा रे, धन० ते पडिमा जिन पडिमा आगे, मानु सेवा मागे रे, धन० ॥ ९ ॥ घट कलश भृंगार आयसा, थाल पाइ सुपइट्ठारे, धन० मणगुलिया वायकरग प्रचडा, चित्ता रयणकरडा रे धन० ॥ १० ॥ हय गय नर किन्नर किंपुरिसा, कठ उरग वृष सरीसारे, रयणपुज वळी फूल चगेरी, माल्य ने चूर्ण अनेरी रे धन० ॥ ११ ॥ गध वस्त्र आभरण चगेरी, सरसव पुजणी केरी रे, धन० इम पुप्फादिक पडल वखाण्या, आगे सिंहासन जाण्या रे, धन० ॥१२॥ छत्र ने चामर आगे समुग्गा,

तेल कुष्ठभृत जुमारे, धन० भरिया चैत्र (पात्र) चोयग सुविलासें तगर एलाशुचि वासे रे, धन० ॥ १३ ॥ वळी हरताल ने मनसिल अंजन, सवि सुगध मनरजन रे, धन० ध्वजा एक शत आठ ए पूरा, साधन सर्व सनूरा रे, धन० ॥ १४ ॥ सुर ए पूजासाधन साथे, जिन पूजे निज हाथे रे, धन० सिद्धायतन आप विमाने, थूभादिक बहु माने रे, धन० ॥ १५ ॥ एह अपूर्व दरिशण दीठु, सुरतरु फलथी मीठु रे, धन० ए ससारसमुद्रे नावा, तारणतरणसहावा रे, धन० ॥ १६ ॥ इम विस्मय भरभवे गुणरागे, झीले तेह अथागे रे, धन० राचे माचे ने वलि नाचे, धरमध्यान मन साचे रे, धन० ॥ १७ ॥ थेइ थेइ करता ते ते भमरी, हर्षे प्रभुगुण समरी रे, धन० योग निरालबन लय आणी, पद्म करता शिवराणी रे, धन० ॥ १८ ॥ इम नदीश्वर प्रमुख अनेरा, शाश्वतचैत्य भलेरा रे, धन० विहा जिन पूजी ते अनुमाने, जन्म सफल निज माने रे, धन० ॥ १९ ॥ कल्याणक अट्ठाई वरसी, तिथि चउमासी सरसी रे, धन० तेह निमित्ते सुर जिन अर्चे, नित्य भक्ति पण विरचे रे, धन० ॥ २० ॥ भाव अक्रमय भावे जे मठियो, ते नवि जाए टळियो रे, धन० परि प्रायु नहि होय निषेधे, हुओ हेमरस वेधे रे, धन० ॥ २१ ॥ एके जललवे जलधि भरावे, तो ते अक्षय थावे रे, धन० आपभाव जिन गुणमाही आणे, तिम ते अक्षय प्रमाणे रे, धन० ॥ २२ ॥ अपुणरुत्त अक्खय वडवृत्ते, इम सुर भावे चित्ते रे, धन० इम जिन पूजी जे गुण गावे, सुजस लील ते पावे रे, धन० ॥ २३ ॥

ढाल छट्ठी

भोलीडा हसा रे ! विषय न राचिए—ए देशी

समकित सूधुरे तेहने जाणीए, जे माने जिन आण, सूत्र ते वाचे रे योग वही करी, करे पचागी प्रमाण, समकित० ॥ १ ॥ उद्देशादिक नहीं चउनाणना, छे सुअनाणना तेह, श्री अनुयोगदुवार थकी लही,

धरीये योगशु नेह, समकित० ॥२॥ उद्देशादिक क्रम विण जे भणे, आशाते तेह नाण, नाणावरणी रे बांधे तेहथी, भगवई अंग प्रमाण, समकित०॥३॥ श्री नन्दि-अनुयोगदुवारमा, उत्तराध्ययनेरे योग, कालग्रहणनेरे विधि सघळो कह्यो, धरिजे ते उपयोग समकित० ॥ ४ ॥ ठाणे त्रीजे रे वळी दशमे कह्यु, योग वहे जेह साध, आगमेसिभद्दा ते सपजे, तरे ससार अगाध समकित० ॥ ५ ॥ योग वहीने रे साधु श्रुत भणे, श्रावक ते उपधान, तपउपधाने रे श्रुतपरिग्रह कह्या, नन्दिये तेह निदान समकित० ॥६॥ हरियादिकना रे पद उपधान छे, तेणे आवश्यक शुद्ध, गृही सामायिक आदि श्रुत भणे, दीक्षा लेई अशुद्ध समकित० ॥७॥ सूत्र भण्या कोइ श्रावक नवि कह्या, लद्धठ्ठा कह्या तेह, प्रथम ज्ञान ने पछी दया कही, तिहां सजत गुण रेह समकित० ॥८॥ नवमे अध्ययनेरे बीजा अगमा, धरमाहि दीव न दिठ्ठ, वलिय चौदमेरे कह्यु शिक्षा लहे, मन्य तजे ते गरिठ्ठ समकित० ॥९॥ सप्तम अगेरे अपढिया सवरी, दाख्या श्राद्ध अनेक, नवि आचारधरादिक ते कह्या, मोटो एह विवेक समकित० ॥१०॥ उत्तराध्ययनेरे कोविद जे कह्यो, श्रावक पालित चप, ते प्रवचन निर्ग्रंथवचन थकी, अरथ विवेक अकम्प समकित० ॥ ११ ॥ मूले दीधु रे सत्थ ते साधुने, सुरनरने वळी अत्थ, सवरद्वारे रे बीजे इम कह्यु, अग दशमे समरत्थ समकित० ॥ १२ ॥ वलिय विगयपडिबद्धने वाचना, श्री ठाणांगे निषिद्ध, नविय मनोरथ श्रुत भणवा तणो, श्रावकने सुप्रसिद्ध समकित० ॥ १३ ॥ वाचना देतां रे गृहीने साधुने, पायच्छित्त चउमास, कह्यु निशीथेरे तो शु एवडी करवी हुश निराश ? समकित० ॥१४॥ तजिय असज्झाइ गुरुवाचना, लेई योग गुणवत, जे अनुयोग लिखिय साचो लहे, करे ते कर्मनो अन्त समकित० ॥ १५ ॥ सूत्र अथ पहिलो बीजो कह्यो, निज्जुत्तीए रे मीस, निरवशेष त्रीजो अग पचमे, इम कहे तु जगदीश ! समकित० ॥ १६ ॥ सूत्र-निज्जुत्तिरे बिहु भेदे कहे, त्रीजु अनुयोगद्वार, कूडा

कपटीरे जे माने नहीं, तेहने कवण आधार ? समकित० ॥ १७ ॥ सूत्र ते सूत्रेरे अर्थ निकाचिया, निर्युक्तिने अपार, उपधिमान गणनादिक किहां छे ? ते विण मार्ग विचार समकित० ॥ १८ ॥ जो निर्युक्ति गइ कुमति कहे सूत्र गया नहीं केम ? जेह वाचनाए आव्युं ते सवे, माने तो होय खम समकित० ॥ १९ ॥ अंधा आगेरे दर्पण दाखवो, बहिरा आगरे गीत, मूर्ख आगेरे कहेवु युक्तिनु, " सवि येकज रीत समकित० ॥ २० ॥ मारग–अरथी पण जे जीव छे, भद्रक अविहिं विनीत, तहने " हितशीख मोहामणी, वळी जे मुनय अधीत समकित० ॥ २१ ॥ प्रवचनमांखेरे एम ए भाखीया, विगते अर्थविचार, तुज आगमनी रे महिम परम्परा, अहिये जगउपकार समकित० ॥ २२ ॥ गुण तुज मधळारे प्रभु ! कोण गणी शके ? आणागुण लव एक, इम मे धुणता रे समकित दृढ कर्युं, राखी आगमटेक समकित० ॥ २३ ॥ आणा ताहरी रे जो में शिर धरी, तो नु कुमतिनु जोर ? तिहां नवि पसरे रे वळ विषधर तणु किंगार जिहां मोर समकित० ॥ २४ ॥ पवित्र कर्यांजे रे जीहा तुज गुणे, शिर धरीए तुज आण, हियडी धरिय रे प्रभु न विसारीए, एहीज सुजस कल्याण समकित० ॥ २५ ॥

ढाळ सातमी

राग धनाश्री

वर्तमान शासननो स्वामी चामीकरसम देहोजी, वीर जिनेश्वर में इम थुणिओ, मन धरी धर्मसनेहोजी, एह तवन जे भणशे गणशे, तस घर मंगळमाळाजी, समकितभाण होशे घट तेहने, परगट झाकझमाळाजी ॥ १ ॥ अरथ एहना छे अति सूक्ष्म, ते धारो गुरुपासेजी, गुरुनी सेवा करता लहीए अनुभव निज अभ्यासेजी, जेह बहुश्रुत गुरु गीतारथ, आगमना अनुसारीजी, तेहने पूछी

टाळो, ए हितशीख छे सारीजी ॥ २ ॥ इदलपुरमा रहिय चोमासु, धर्मध्यान सुख पायाजी, सवत सत्तर तेत्रीशा वरसे, विजयदशमी मन भायाजी, श्रीविजयप्रभसूरि सवाया विजयरतन युवराग्राजी, तस राजे भविजनहित काजे, इम में जिनगुण गायाजी ॥ ३ ॥ श्री कल्याणविजय वरवाचक, तपगच्छगयणदिणींदाजी, तास शिष्य श्री लाभविजयबुध, भविजनकेरवचदाजी, तास शिष्य श्रीजीत विजय बुध श्रीनयविजयमुणींदाजी, वाचक जसविजये तस शिष्ये थुणिया वीरजिणींदाजी ॥ ४ ॥ दोसी मूलासुत सुविवेकी, दोसी मेघा हेते जी, एह तवन मे कीधु सुदर श्रुतअक्षर सकेतेजी, ए जिनगुणसुरतरनो परिमल, अनुभव तो ते लहशेजी, भमर परि जे अरथी होइने, गुरुआणा शिर वहशे जी ॥ ५ ॥

इति श्री समस्त पडित शिरोमणि महोपाध्याय श्रीमद्-यशोविजयजी विरचित कुमति-मदगालन दोढसो गाथानु श्रीमहावीर जिनस्तुति रूप हुडीनु स्तवन सपूर्ण

श्रीयशोविजयजी उपाध्याय विरचित सिद्धातविचाररहस्यगर्भित

साडा त्रणसो गाथानु श्री सीमधरजिन स्तवन

ढाळ पहेली

(ए छींडी किहा राखी ? ए देशी)

श्रीसीमधर साहिब आगे, वीनतडी एक कीजे, मारग शुद्ध मया करी मुजने मोहनमूरति दीजे रे, जिनजी ! वीनतडी अवधारो ! ॥ १ ॥ चाले सूत्र विरुद्धाचारे, भाषे सूत्र विरुद्ध एक कहे अम मारग राखु, ते किम मानु शुद्धरे ? जिनजी० ॥ २ ॥ आलबन पूजा देखाडी मुग्धलोकने पाडे, आणाभग तिलक ते काळु, थापे आप

निलाडे रे, जिनजी० ॥ ३ ॥ "विधि जोवा कलियुगमा होवे, विरथनो उच्छेद, जिम चाले तिम चलवे जइये," एह धरे मतिभेद रे, जिनजी० ॥ ४ ॥ इम भाखी ते मारग लोपे, सूत्रक्रिया नवि पीखी, आचरणा शुद्धि आचरिए, जोइ योगनी वीसी रे जिनजी० ॥ ५ ॥ पचम आरे जिम विष मारे, अविधिदोष तिम लागे, इम उपदेशपदादिक देखी, विधिरसियो जन जागे रे, जिनजी० ॥ ६ ॥ कोइ कहे "जिम बहु जन चाले, तिम चलिये शी चर्चा ? मारग महाजनचाले भाख्यो, तेहमा लहीये अर्चा रे," जिनजी० ॥७॥ ए पण बोल मृषा मन धरीये, बहु जन मत आदरता, छेद न आवे बहुल अनारय, मिथ्यामतमा फिरता रे, जिनजी० ॥ ८ ॥ थोडा आर्य अनारयजनथी, जैन आर्यमा थोडा, तेहमा पण परिणत जन थोडा, श्रमण अल्प बहु मोडा रे जिनजी० ॥ ९ ॥ भद्रबाहु गुरुवदनवचन ए, आवश्यकमा लहिये, आणाशुद्ध महाजन जाणी, तेहने संगे रहिएरे, जिनजी० ॥ १० ॥ अज्ञानी नवि होवे महाजन, जो पण चलवे टोलु, धर्मदासगणि-वचन विचारी मन नवि कीजे भोलुं रे, जिनजी० ॥ ११ ॥ अज्ञानी निजछंदे चाले, तस निश्राये विहारी, अज्ञानी जे गच्छने चलवे, ते तो अनंतससारी रे जिनजी० ॥ १२ ॥ खण्डखण्डपण्डित जे होवे ते नवि कहीये नाणी, निश्चित समय लहे ते नाणी, समतिनी सहिनाणी रे जिनजी० ॥ १३ ॥ जिम जिम बहुश्रुत बहुजनसमत बहु शिष्ये परिवरियो तिम तिम जिनशासननो वयरी, जो नवि निश्चय दरीओ रे, जिनजी० ॥ १४ ॥ कोइ कहे "लोचादिक कष्टे, मारग भिक्षावृत्ति," ते मिथ्या नवि मारग होवे, जनमननी अनुवृत्ति रे, जिनजी० ॥ १५ ॥ जो कष्टे मुनिमारग पावे, बळद थाय तो सारो,

१ हरिभद्रसूरिकृत योगविंशिका २ स्वपरसमयनो जाण ३ लाच, गोचरी आदि कष्टेन साधुपणु मनावे, पण ते मिथ्या छ कारण तथा करे लोकोना मननेज रजन करनार छ

भार वहे जे तावडे भमतो, खमतो गाढ प्रहारो रे, जिनजी० ॥ १६ ॥ छट्ठे पापानुबंधी पापे, बलहरणी जन भिक्षा, पूरवभव व्रतखंडन-फळ ए, पंचवस्तुनी शिक्षा रे जिनजी० ॥ १७ ॥ कोइ कहे 'अमे लिंग तरशुं जैनलिंग छे वारु', ते मिथ्या, नवि गुण विणुं तरिये, भुज विण न तरे तारु रे, जिनजी० ॥ १८ ॥ फूटलिंग जिम प्रगट विडंबक, जाणो नमता दोष, निद्धंधस जाणीने नमता, तिमज कह्यो तस पोष रे, जिनजी० ॥ १९ ॥ शिष्य कहे 'जिम जिम प्रतिमाने, जिनवर थापी नमिये, साधुवेष थापी अति सुंदर, तिम असाधुने नमिये रे, जिनजी० ॥ २० ॥ भद्रबाहु गुरु बोले 'प्रतिमा, गुणवती नहि दुष्ट, लिंगमांहे बे वाना दीसे, ते तु मान अदुष्टे रे, जिनजी० ॥ २१ ॥ कोइ कहे 'जिन आगे मागी, मुक्तिमार्ग अमे लेशुं, निर्गुणने पण साहिब तारे, तस भक्ति गहगहिशुं रे,' जिनजी० ॥ २२ ॥ पामी बोध न पाले मूरख, मागे बोध विचाले, लहिये तेह कहो कुण मूले? बोल्युं उपदेशमाले रे जिनजी० ॥ २३ ॥ आणा पाळे साहिब तूसे, सकळ आपदा कापे, आणाकारी जे जन मागे, तस जस लीला आपे रे, जिनजी० ॥ २४ ॥

ढाळ बीजी

(आदर जीव क्षमागुण आदर—ए देशी अथवा राग आसाउरी उपशम आणो ए देशी)

कोइ कहे 'अमे गुरुथी तरशुं, जिम नावाथी लोहा रे,' ते मिथ्या न लहे सहवासे, काचपाचनी सोहा रे ॥ १ ॥ श्री सीमंधर साहिब! सुणजो भरतक्षेत्रनी वातो रे, लहु देव! केवल

४ भावसाधुपणा विनानी गोचरी पापानुबंधी पापना उदयवाळी अहकनी सास्त्र बलहरणी भिक्षा कहेवाय, अने ते पूर्वभवमा चारित्रनी विराधनानुं फळ छे ५ जैनसाधुवेशमात्रथी गुणहीन तरी न शके ६ गुणहीन साधुवेशधारी ७ सहवास मात्रथी काच रत्न न बने

रवि इणे युगे, हु तो तुज गुणरातो रे श्रीसी० ॥ २ ॥ कोइ कहे 'जे गच्छथी न टळ्या, ते निरगुण पण साधुरे, नावि माहे निरगुण पण गणीये, जस नहीं नाविवाधोरे श्रीसी० ॥ ३ ॥ गुण अवगुण इम सरिखा करवो, ते जिनशासनवैरी रे, निरगुण जो निजछन्दे चाले, तो गच्छ थाये स्वैरी रे श्रीसी० ॥ ४ ॥ निरगुणनो गुरु पक्ष करे जे, तस गच्छ त्यजवो दाख्यो रे, ते जिनवरमारगनो घातक, गच्छाचारे भाख्यो रे, श्रीसी० ॥ ५ ॥ विषमकाळमा निरगुणगच्छे, कारणथी जो वसिये रे, द्रव्य थकी व्यवहारे चलिये, भावे नवि उल्लसिये रे, श्रीसी० ॥ ६ ॥ जिम कुवृष्टिथी नगर लोकने, घेला देखी राजा रे, मली सहित घेला होइ रहेवा, पण मनमाह ताजा रे, श्रीसी० ॥ ७ ॥ इम उपदेशपदे ए भाख्यु, तिहा मारग अनुसारी रे, जाणीने भावे आदरीये, कल्पभाष्य निरधारी रे, श्रीसी० ॥ ८ ॥ ज्ञानादिकगुणवन्त परस्पर, उपगारे आदरवो रे, पचवस्तुमा गच्छ सुगुणनो, अवर कह्यो छे त्यजवो रे श्रीसी० ॥ ९ ॥ जे निरगुण गुणरत्नाकरने, आप सरीखा दाखे रे, समकितसार रहित ते जाणो, धर्मदासगणी भाखे रे श्रीसी० ॥ १० ॥ कोइ कहे ' जे बकुशकुशीला, मूलोत्तरपडिसेवी रे, भगवइ अंगे भाख्या तेथी, अ तें वात नवि लेवी रे श्रीसी० ॥ ११ ॥ ते मिथ्या निःकारणसेवा, चरणघातिनी भाखी रे, मुनिने वहने सम्भवमात्रे, सत्तमठाणु साखीरे श्रीसी० ॥ १२ ॥ पडिसेवावचने ते जाणो, अतिचारबहुलाइ रे, भावबहुलवाये ते टाळे, पचवस्तु मुनि ध्याई रे श्रीसी ॥ १३ ॥ सहसा दोष लगे ते छूटे, मेचवने ततकाळे रे,

८ साधु कहेवाय ९ निर्गुण पण न्यातमा गणाय १० मूलोत्तरगुणना दोषोना सेवन मात्रथी बकुशकुशीलपणु नष्ट थतु नथी एम कोइ कहे ते मिथ्या छे कारण, निष्कारण दोष सेवनार चारित्रना घातक छे ११ प्रतिसेवा शब्दे अतिचारनी बहुलता, अने ते टळे भावबहुलताए.

पच्छित्ते ओआउट्टिय कीधुं, प्रथम अगनी भाल रे श्रीसी ॥ १४ ॥ पायच्छित्तादिक भाव न राख्य, दोष करी नि[13]शूको रे, निद्धधस सेवीथी[14] हेठो, ते मारगथी चूको रे श्रीसी० ॥ १५ ॥ कोइ कहे 'जे पातिक कीधां, पडिकमतां छूटीने रे,' ते मिथ्या, फल पडिकमणानुं अपुणकरणथी लीजे रे, श्रीसी० ॥ १६ ॥ मिथ्यादुक्कड देइ पातिक, ते भावे जे सेवे रे, आवश्यक साखे ते परगट, मायामोसने सेवे रे, श्रीसी० ॥ १७ ॥ मूलपदे पडिकमणुं भाख्युं, पापतणुं अणकरवुं रे, शक्ति भावतणे अभ्यासे, ते जस अर्थे वरवुं रे श्रीसी० ॥ १८ ॥

ढाळ त्रीजी

(तुंगीयागिरि शिखर सोहे – ए देशी)

देव ! तुज सिद्धांत मीठो, एक मने धरिये, दुष्ट आलंबन निहाळी, कहो किम तरिये ? ॥ देव० १ ॥ दुष्ट आलंबन धरे जे, भग्न-परिणामी, तेह आवश्यक भाख्या, त्यजे मुनि नामी ॥ देव० २ ॥ नियतवासविहार चेइय,-भक्तिनो धंधा, मूढ अज्जोलाभ थापे, विगयपडिबंधो, ॥ देव० ३ ॥ कहे उग्रविहारभाग्गा, संगम आयरिओ, नियतवास भजे बहुश्रुत, सुणिआ गुणदरिओ, ॥ देव० ४ ॥ न जाणे ते खीणजंघा,-बलथिविर तेहा, गोचरीना भाग

---

१२ जाणीने सेवेला दोषो प्रायश्चित्तथी दूर थाय १३ पापनी दरकार न राखनार निरपेक्ष १४ सख्तश्रेणिथी पण १५ तेवा पापो फरी न करवाथी प्रतिक्रमणनुं फळ पामे १६ मिथ्यादुष्कृतथी दोषो दूर कराय ए भावनाए तज पापो फरी करे ते मायामृषावाद गणाय १७ वास्तविक रीत १८ पतितपरिणामी १९ भाडीए लावी आपना आहारादि ले २० संगमाचार्य जेवा बहुश्रुत पण नियतवास सेवे छे इत्यादि कूडां आलंबनो लेनार एम नथी जाणता के ते वृद्ध होवाथी तेमनुं जंघाबळ क्षीण हतुं तेथी तेओ नियतवास सेववा छतां गोचरीना स्थानोनो नियम करता

कल्पी, बहु रह्यो जेहो, ॥ देव० ५ ॥ चैत्यपूजा मुक्तिमारग, साधुने करवी, जिणे कीवी वयर मुनिवर, चैत्यवास ठवी, ॥ देव० ६ ॥ तीर्थउन्नति अन्यशासन-मलिनता टाणे, पूर्व अवचित पुष्प-महिमा, तेह नवि जाणे ॥ देव० ७ ॥ चैत्यपूजा करत सयत, देव-भोइ कह्यो, शुभ मने पण मार्गनाशी, महानिशीथे लह्यो ॥ देव० ८ ॥ पुष्ट कारण विना मुनि नवि, द्रव्य अधिकारी, चैत्यपूजाय न पामे, फल अनधिकारी, ॥ देव० ९ ॥ आर्य अग्निपुत्त अर्ज्जा,-लाभथी लागा, कहे निजलाभे अतृप्ता, गोचरी भागा ॥ देव० १० ॥ न जाणे गतशिष्य अवमे, थिविर बलहीणो, सुगुणपरिचितसयतीकृत, पिंडविधि लीणो ॥ देव० ११ ॥ विगय लवी नित्य मूझे लष्टपुष्ट भणे, अन्यथा किम दोष एहनो, उदायन न गणे ? ॥ देव० १२ ॥ उदायनराजर्षितनु नवि, शीत रुक्ष सहे, तेह व्रतमा विगय सेवे शु ते न लहे ? ॥ देव० १३ ॥ लोक आलम्बन भरीओ, जन असयतने, तेह जगमा काइ देखे, धरे तेह मने ? ॥ देव० १४ ॥ शिथिल आल म्बन गहे, मुनि मद सवेगी, सयतालनन मुजम गुण, तीव्रसवेगी, ॥ देव० १५ ॥

---

२१ वज्रस्वामीनी जेम करवी क्ले एम काइ रहे, ते एम नथी जाणतो के तेओए जिनशासननी उन्नति अने अन्यशासनने प्रभावहीन करवा माटे पुष्पो लाव्या, ते पण पहेलाज तोडी एकत्र करी राखेला २२ पूजारी २३ द्रव्यपूजानो २४ पोते लावेल आहारथी अतृप्त अर्णिकापुत्र आचार्य पुष्पचूला साध्वीए लावेला आहारादि लेता, एम कहेनार नथी जाणता के दुष्काळवशात् तेओ बलहीन, वृद्ध अने शिष्यरहित हता, माटे साध्वीए लावेल आहार लेता, ते पण गुणवान्, परिचित साध्वीए विधिपूर्वक लावेलज आहारादि लेता २५ गोकुळमायी विगय लेनार उदयन पुष्टालबने ले छे आ वात उदयनतु आलबन लेनार शु नथी जाणतो ?

ढाळ चोथी

(प्रभु पासनु मुखडु जोवा, भवभवना पातिक खोवा–ओ देशी)

सुणजो सीमन्धर स्वामी ! वळी ओेक कहुं शिर नामी, मारग फरतांने प्रेरे, दुर्जन जे दूषण हेरे ॥ १ ॥ कहे " निज साचे व्रत पाळो, पण धर्मदेशना टाळो, जनमेल्यानुं शुं काम ? बहु बोल्युं निदाठाम ' ॥ २ ॥ इम कहेता मारग गोपे, खोटुं दूषण आरोपे, जे निर्भय मारग बोले, ते कह्यो द्वीपने तोले ॥ ३ ॥ अज्ञानी गारवरसिया, जे जन छे कुमते ग्रसिया, तेहनो कुण टाळणहार ? विण धर्मदेशना सार ॥ ४ ॥ गीतारथ जयणावंत, भवभीरु जेह महंत, तस वयणे लोके तरिये, जिम प्रवहणथी भरदरीये ॥ ५ ॥ बीजा तो बोथे बोले (बोळे), शुं कीजे निर्गुण टोळे ? भाषाकुशीलनो लेखो, जन ! महानिशीथे देखो ॥ ६ ॥ जनमेलननी नहीं ईहा, मुनि भाखे मार्ग निरीहा, जो बहुजन सुणवा आवे, तो लाभ धरमनो पावे, ॥ ७ ॥ तेहने जो मार्ग न भाखे, तो, अंतराय फळ चाखे, मुनि शक्ति छतां नवि गोपे, वारे तेहने श्रुत कोपे ॥ ८ ॥ नवि निंदा मारग कहेतां, समपरिणामे गहगहतां, मुनि आर्द्रचरित मनरंगे, जोई लीजे बीजे अंगे ॥ ९ ॥ कोइ भाखे ' नवि समजावो, श्रावकने गूढा भावो, ' ते तूठ कह्या लद्धट्ठा, श्रावक सूत्रे गहियट्ठा, ॥ १० ॥ कहे कोइ ' नवि मी जोडी ?, श्रुतमां नहीं काइ खोडी, ते मिथ्या

---

२५ जनना मेळ्यानुं. २६ गारवरसिक अने उत्सूत्रप्ररूपकनो २७ अगीतार्थोनो उपदेश वचनव्यापार मात्र छे, भव्य जीवोने तारक नथी, एवा निर्गुणना टोळाने भाषाकुशील कह्या छे २८ मुक्तिमार्ग २९ आर्द्रकुमारे उपदेश आपीने हस्तीभक्षक तापसोने तार्या ३० श्रावकने गूढ वातो न समजाववी कहेनार जूठा छे, कारण शास्त्रमां श्रावकोने पण सूत्रना अर्थना जाणनारा अने धारनारा कह्या छे ३१ नवा ग्रंथो बनाववी नवुं शुं उभेर्युं ? सूत्रोमां तो कंइ खामी छे नहीं ! एम कहनारे जाणवुं जोइए के नवा ग्रंथोनी रचना शास्त्ररूपी दरियामां प्रवेश करवा नावसमान छे

उद्भुत भावा, श्रुतजलधि प्रवेशे नावा ॥ ११ ॥ पूरवसूरिए कीधी, तेणे जो नावि करवी सिध्धी, वो सर्वे कीधो धर्म, नवि करवो जोयो मर्म ॥ १२ ॥ पूर्वबुधने बहुमाने, निज शक्ति मारगज्ञाने, गुरुकुलवासीन जोडी, युगति अेहमा नहीं खोडी ॥ १३ ॥ इम श्रुतनो नहीं उच्छेद, अे तो अेकदेशनो भेद, अे अर्थ सुणी उल्लासे, भवी वरते श्रुतअभ्यासे ॥ १४ ॥ इहा दूषण अेक कहाय, जे खलने पीडा थाय, तो पण ते नावि छोडीजे, जो सज्जनने सुख दीजे ॥ १५ ॥ वे पुण्ये हासे तोष, तेहने पण इम नहि दोष, उजमता हियडे हीसी, जोइ लीजे पहेर्ला वीसी ॥ १६ ॥ कहे कोइक जुदी रीवे, मुनिभिक्षा भाजे 'भीवे, वे जूठुं शुभमवि ईहे, मुनि अतरायथी बीहे ॥ १७ ॥ जे जन छे अतिपरिणामी, वळी जेह नहि परिणामी, तेहने निरये समजावे, गुरु कल्पवचन मन भावे ॥ १८ ॥ खलवयण गणे कुण सूरा, जे काढे पयमा पूरा, तुज सेवामा जो रहीये, तो प्रभु ! जशलीला लहीये ॥ १९ ॥

---

३२ पूर्वाचार्योनी रचनानुं समर्थन करवामां न आवत तो, धर्म तो पहेला पूर्वाचार्योए कर्यो छेन, परन्तु अल्पबुद्धिवाळा आपणे जेनाथी एनु रहस्य समजाय नहीं माटे नवीन ग्रंथरचना उपकारक नीवडे छे ३३ नवी ग्रंथरचना करता पूर्वपुरुषोनुं बहुमान थाय ने स्वशक्तिनो मुक्तिमार्गनु ज्ञान करावबामां सदुपयोग थाय, माटे स्थविरकल्पीओनुं नवीन ग्रंथनुं निर्माण युक्तियुक्त छे ३४ नवीन ग्रंथरचनाथी सूत्रनो उच्छेद थतो नथी, परन्तु दुर्गम विषयोनो विस्तार छे, के जे विस्तारने जाणी भव्यात्माओ तेना अभ्यासमा प्रवृत्ति करे. ३५ नवीन ग्रंथरचनाथी ३६ ग्रंथरचना ३७ शिथिलाचारीने मळता भिक्षा अटकावना नवीन ग्रंथो रचाय छे एवो आक्षेप न कराय, कारण ग्रंथकारो तो तेम करवामा अतराय (पाप) माने छे

ढाळ पाचमी

(राग रामग्री – मंत्री कहे एक राजसभामा – ए देशी)

विषमकालने जोरे केइ, उठ्या जड मलधारीरे, गुरु गच्छ छांडी मारग लोपी, कहे अमे उग्रविहारी रे ॥ १ ॥ श्री जिन ! तु आलंबन जगने, तुज विण कवण आधारो रे भगतलोकने कुमतिजलधिथी, बांहि ग्रहीने तारो रे, श्रीजिन ! तु आलंबन जगने, ॥ २ ॥ गीतारथ विण भूला भमता, कष्ट करे अभिमाने रे, प्राये गंठी लगे नवि आव्या, ते खूता अज्ञाने रे, श्रीजिन० ॥ ३ ॥ तेह कहे गुरु गच्छगीतारथ, प्रतिबन्ध शु कीजे रे ? दर्शन – ज्ञान – चरित आदरिय, आपेआप तरीजे रे, श्रीजिन० ॥ ४ ॥ नवि जाणे ते प्रथम अगमा, आदि गुरुकुलवासो रे, कह्या न ते विण चरण विचारो, पचाशकनय खासो रे श्रीजिन० ॥ ५ ॥ नित्ये गुरुकुलवासे वसवु उत्तराध्ययने भाख्यु रे, तेहने अपमाने वळी तेहमा, पापश्रमणपणु दाख्यु रे, श्रीजिन० ॥ ६ ॥ दशवैकालिक गुरुशुश्रूषा, तस निंदाफळ दाख्या रे, आगतिमा द्रहसम सद्गुरु मुनिकुलमच्छसम भाख्यारे श्रीजिन० ॥ ७ ॥ गुरुदृष्टि अनुसारे रहेता, लहे प्रवाद प्रवादे रे, ए पण अर्थ तिहा मन धरिये, बहुगुण सुगुरु प्रसादे रे, श्रीजिन० ॥ ८ ॥ विनय वधे गुरु पासे वसता, जे जिनशासनमूळो रे, दर्शन निर्मल उचितप्रवृत्ति, शुभरागे अनुकूलो रे, श्रीजिन० ॥ ९ ॥ वैयावच्चे पातिक त्रूटे, ग्लानादिकगुणशकित रे, हित उपदेशे सुविहित-संगे, ब्रह्मचर्यनी गुप्ति रे, श्रीजिन० ॥ १० ॥ मन बाधे मृदुबुद्धि केरा, मारगभेद न होवे रे, बहु गुण जाणे ए अधिकारे, धर्मरयण जे जोवे रे, श्रीजिन० ॥ ११ ॥ नाणतणो संभागी होवे, थिरमन दर्शन

२८ गच्छमा गुरुना आधीन रहेवु फरजियात शा माटे ? ज्ञानदर्शन-चारित्रथी तरी जवाशे एम कहेनारा नथी जाणता के आचारांगमा प्रथम गुरुकुलवासने कह्यो छे

चरिते रे, न त्यजे गुरु पहे ए बुध भाख्यु आवश्यकनिर्युक्तिरे श्रीजिन० ॥ १२ ॥ भीतप्रेतें जिम वाणे हणता, पग अणफरसी सबरारे, गुरु छाडी आहारतणो तप, करता तिम मुनि नवरारे श्रीजिन० ॥ १३ ॥ गुरुकुलवासे ज्ञानादिक गुण, वैयावचमने वाधे रे, तो आहारतणो पण दूषण, तप करता नवि बाधेरे, श्री जिन० ॥ १४ ॥ धर्मरतन उपदेशपदादिक, जाणी गुरु आदरजो रे, गच्छ कह्यो तेहनो परिवारो, ते पण नित अनुसरजोरे श्रीजिन० ॥ १५ ॥ सारण धारण प्रमुख लहीने, मुक्तिमारग आराधे रे, शुभवीर्ये तिहां सुविहितकिरिया, देखादेखे वाधे रे, श्रीजिन० ॥ १६ ॥ जलधि तणो सक्षोभ असहता, जेम नीकलता मीनोरे, गच्छसारणादिक अण सहता, तिम मुनि दुखिया दीनोरे, श्रीजिन० ॥१७॥ छाक नर्मदातट जिम मूकी, मृगतृष्णाजल जाता रे, दुःख पाम्या तिम गच्छ तजीने, आपमति मुनि धाता रे श्रीजिन० ॥ १८ ॥ पाली विना जिम पाणी न रहे, जीव विना जिम काया रे, गीतारथ विण तिम मुनि न रहे, जूठ कष्टनी मायारे, श्रीजिन० ॥ १९ ॥ अध प्रते जिम निर्मळ लोचन, मारगमा लेइ जायरे तिम गीतारथ सूरज मुनिने, दृढ आलबन थायरे, श्रीजिन० ॥ २० ॥ सत्तभापी गीतारथ नाणी, आगम मांहे लहियेरे, आतमअरथी शुभमति सज्जन, कहो ते विण किम रहिये रे, श्रीजिन० ॥ २१ ॥ लोचन आलबन जिनशासन, गीतारथ छे मेढी रे, ते विण मुनि चढती सयमनी, आरोहे किम सेढी रे, श्रीजिन० ॥ २२ ॥ गीतारथने मारग पूछी, छाडीजे उन्मादो रे, पाळे किरिया ते तुज भक्ति, पामे जग जशवादोरे, श्रीजिन० ॥ २३ ॥

---

३९ दोपरहित आहारनो तप कर छे ते "गुरुने वाणथी हणजो पण रखे एमना पगे स्पर्श करी आशातना करता" एवु कहनारना जेवा छे ४० साधुना ज्ञानादिगुणो वधे छे

ढाळ छट्ठी

[साभळ रे तु सजनी मोरी, रामुटानी अथघा हितशिक्षाठत्री
शीनी देशीं]

प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा, •दशवकालिक साखी
ज्ञानवत ते कारण भजिये, तुज आणा मन राखी रे, साहिब
सुणजो रे ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल न जाणे, भाव पुरुष पडिसेवे
नवि उत्सर्ग लहे अपवादह, अगीतारथ नितमेव रे, साहिब० ॥ २ ॥
सचित्त अचित्त मिश्र नवि जाणे, कल्प अकल्प विचार रे, योग्य
जाणे निज निज ठामे, द्रव्य यथास्थित सार रे साहेब० ॥ ३ ॥ क्षेत्र
न जाणे तेह यथास्थित, जनपद अध्वविशेष रे, सुभिक्ष दुर्भिक्ष
कल्प नवि जाणे, कालविचार अशेष रे साहिब० ॥ ४ ॥ भावहिट्ठ
गिलाण न जाणे, गाढ अगाढह कल्प रे, समतो असमतो जन न
लहे, वस्तु अवस्तु अनल्प रे साहिब० ॥ ५ ॥ जे आकुट्टी प्रमादे दर्पे
पडिसेवा वळि कल्प रे, नवि जाणे ते तास यथास्थित, पायच्छित्त
विकल्परे, साहिब० ॥ ६ ॥ नयण रहित जिम अनिपुण देशे, पथ
नष्ट जिम सत्थ रे, जाणे हु ठामे पहुंचावु, पण नहि तेह समत्थ रे.
साहिब० ॥ ७ ॥ अगीतारथ तिम जाणे गॅरवे, हु चलवु सवि गच्छ
रे, पण तस पासे गुणगणनासे, होई गलागॅलमच्छ रे साहिब०
॥ ८ ॥ पच्छित्ते अतिमात्र दिजे जे, अपाच्छित्ते पच्छित्त रे, आसा
यण तस सूले बोली, आसायण मिच्छत्त रे, साहिब० ॥ ९ ॥
तपसी अनहुश्रुत विचरतो, करी दोपनी श्रेणी रे, नवि जाणे ते
कारण तेहने, किम वाधे गुणश्रेणिरे ? साहिब० ॥ १० ॥ मार्ग मात्र
जाणे जिम पथी, अलही तास विसेस रे, लिंगाचारमात्र ते जाणे,

---

४१ दाणों खरनारनो आशय न समझनार अगीताथ मुनि ४२ निरागी
४३ अभिमानपूर्वक ४४ अगीतार्थ पासे रहेनारा साधुओना गुणानो नाश
करे छ

पामे मूढ किलेश रे साहिब० ॥ ११ ॥ भेद लह्या विण नाना परिणति, मुनि मननी गतबोध रे, खिणराता खिणताता थाता, अते उपाइ विरोध रे साहिब० ॥ १२ ॥ पत्थरसम पामर आदरवा मणिसम बुध जन छोडीरे, भेद लह्या विण आगमरीतिनो, ते पामे बहु खोडीरे साहिब० ॥ १३ ॥ ज्ञानभगति भाजि अणलहता, ज्ञानतणो उपचार रे, आशसारे मारग लोपे चरणकरणनो सार रे साहिब० ॥ १४ ॥ उत्सर्पी तेहने ते शिक्षा उदासीन जे सार रे, पुरुषवचन तेहने ते बोले, अग कहे आचार रे साहिब० ॥ १५ ॥ समसरिखा हो तो तुम जाणो, नही तो स्या तुम मोलरे ? अेम भारवी जान्द्रिक दूषण, काढे तेह विटोलरे साहिब० ॥ १६ ॥ पासत्थादिक [illegible] पाती, हीले ज्ञानी तेह रे, यथाछन्दता विण गुरुभाणा, [illegible] निज देह रे साहिब० ॥ १७ ॥ ज्ञानीथी तिम अलगा [illegible] थकी जिम काक रे, भेद वितथना बावन भागथा, [illegible] परिपाक रे साहिब० ॥ १८ ॥ सर्व उद्यमे पण [illegible] कष्ट अप्रमाण रे, सूत्र अभिक्तणे अनुसारे, [illegible] साहिब० ॥ १९ ॥ ते तो ऋजु भावे एकाकी, [illegible] योग्य कुवासन जे अनुवासन, देशाराधक उत्तरे [illegible] ॥ २० ॥ अज्ञानी गुरुतणे नियोगे अथवा शुभपरिणाम रे, [illegible] सुदृष्टि वहिये अेहनो ठाम रे साहिब० ॥ २१ ॥ [illegible] छाटी समचरणपरिणाम रे, सर्व उद्यमे [illegible] आवे ठाम रे. साहिब० ॥ २२ ॥ [illegible] पचाशकें हरिभद्र रे, व्यवहारे तो थो[illegible] साहिब० ॥ २३ ॥ शिष्य कहे 'जो गुरु [illegible] जाणीरे, जो सुवासना तो किम [illegible] साहिब० ॥ २४ ॥ गुरु बोले 'शुभ [illegible]

४५ वचन ४६ छोडवा [illegible]
उपदेशायोग्य छे

रे, त आयत्तपणे छे आवे, जस मन भद्रक भावरे, साहिब० ॥२५ सूधु मानी सूधु थाता, चउभगी आचार रे, गुरु फ्हणे तेहमा फल जाणी, कहीये सुजश अपार रे साहिब० ॥ २६ ॥

ढाळ सातमी

(राजगीतानी अथवा सुरति महिनानी – देशी)

कोई कहे ' गुरुगच्छ गीतारथ सारथ शुद्ध, मानु पण नवि दीसे जोता कोई विशुद्ध। निपुणसहाय विना कह्यो सूत्रे एक विहार, तेहथी एकाकी रहेता नही दोष लगार ॥ १ ॥ अणदेखता आपमा ते सवि गुणनो योग, किम जाणे परमा व्रतगुणनो मूलवियोग ? छेद दोष ताइ नवि कह्या प्रवचने मुनि दु शील, दोषलवे पण थिरपरिणामी बकुशकुशील ॥ २ ॥ ज्ञानादिक गुण गुरुआदिक माहे जोय, सर्व प्रकारे निर्गुण नवि आदरवो होय, ते छाडे गीतारथ जे जाणे विधि सर्व, ग्लानौषधदृष्टाते मूढ धरे मन गर्व ॥ ३ ॥ ते कारण गीतारथने छे एक विहार, अगीतारथने सर्व प्रकारे ते नहि सार, पाप वरजतो काम असजतो भाख्यो जेह, उत्तराध्ययने गीतारथ एकाकी तेह ॥ ४ ॥ पाप तणु परिवर्जन ने वलि काम असग, अज्ञानीने नवि हुए ते नवि जाणे भग, अज्ञानी शु करशे शु लहशे शुभ पाप, दशवैकालिक वयणे पचाशकआलाप ॥ ५ ॥ एकविहारे दोसो आचारे सवाद, बहु क्रोधादिक दूषण वळी अज्ञान प्रमाद, वळिय विशेषे वार्यो छे अव्यक्त विहार, पक्षीपोतदृष्टाते जाणो प्रवचनसार ॥ ६ ॥ एकाकीने स्त्रीरिपुश्वानतणो उपघात, भिक्षानी नवी शुद्धि महा-

---

८८ छद प्रायश्चित्त सुधी मुनि दु शील न गणाय ४९ कर्मरोगना गुण हीन चिकित्सक जाणी गीतार्थ गुरुनो त्याग करे, ज्यारे अगीतार्थ अभिमानथी त्याग करे. ५० अव्यक्त (अगीतार्थ) न समुद्रमां पसाने वहाणनी जेम गीतार्थनी निश्रा कही छे

मदनो पण घात, एकाकी सच्छंदपणे नवि पामे धर्म, नवि पामे पृच्छादिक विण ते प्रवचन मर्म, ॥ ७ ॥ समिति गुप्ति पण न धरे एकाकी निःशंक, भाव परावर्ते धरे आलंबन सपंक, जूजूआ जुदा थाता थविरकल्पना भेद, दोहिलाए मन लोकना थाए धर्मउच्छेद ॥८॥ टोळे पण जा मोळे अयप्रवाह निपात, आणा विण नवि संघ छे अस्थितणो संघात तो गीतारथ उद्धरे निज परि जलधी येद, अगीतारथ नवि जाणे ते भवि विधिनो भेद ॥ ९ ॥ कारणथी एकाकी-पणु पण भाख्यु तास, विषमकाळमां तो पण रुडो भेळो वास, पंचकल्पभाष्ये भण्यु आतमरक्षण एम, शालि एरंडतणे इम भाखे लहिए खेम ॥ १० ॥ एकाकी पासत्थो सच्छंदो गतयोग, ठाणवासी उसन्नो बहु दूषण संयोग, गच्छवासी अणुयोगी गुरुसेवी वळी होय, अनियतवासी आउत्तो बहुगुण इम जोय ॥ ११ ॥ दोषहानि गुणवृद्धि जयणा भागे सूरि, ते शुभपरिवारे हुइ विघन टळे सवि दूरि, देव फळे जो आगणे तुज करुणा सुरवेली, शुभपरिवारे लहिये तो सुख जस रंगरेली ॥ १२ ॥

ढाळ आठमी

(प्रभु ! चित्त धरीने अवधारो मुज वात, एहवा आगमिया मुनिवर ! धनधन – ए देशी)

काइ कहे सिद्धान्तमांजी, धर्म अहिंसा रे सार, आदरिए ते एकलीजी स्यनिये बहु उपचार, मन मोहन जिनजी ! तुज वचने मुज

---

५ १ कारणसर अगीतार्थने पण एकाकीपणुं [illegible] विषम-काळमां तो समुदायमां रहेवु योग्य गण्यु छे [illegible] उत्तम आतमार्थी रक्षण थाय छे, [illegible] जुदा [illegible] एरंडने असह्य दुःखो सहवा पडे छे, माटे [illegible] आनेनावता पंचकल्पभाष्यमां जणाव्यु छे

रग, मन० ॥ १ ॥ नवि जाणे ते सर्व स्वजीने, अंक अहिंसा रग, केवल लौकिक नीति होवे, लोकोत्तर पथभग मन० ॥ २ ॥ वनमा वसतो बालतपस्वी, गुरुनिश्रा विण साध, अेक अहिंसाए ते राचे, न लहे मर्म अगाध मन० ॥ ३ ॥ जीवादिक जिम बालतपस्वी अणजाणतो मूढ, गुरुलघुभाव तथा अणलहे तो, गुरुवर्जित मुनि गूढ मन० ॥ ४ ॥ भवमोचक परिणाम सरीखो, तेहनो शुभ उद्देश, अणाराहितपणे जाणीजे, जोइ पद उपदेश मन० ॥ ५ ॥ अेक वचन झालीने छाडे बीजा लौकिक नीति, सकल वचन निज ठामे जोइ, ओ लोकोत्तर नीति मन० ॥ ६ ॥ जिनशासन छे अेक कियामा, अन्यक्रिया सम्बन्ध, जिम भाखी जे त्रिविध अहिंसा, हेतु-स्वरूप अनुबन्ध मन० ॥ ७ ॥ हेतु अहिंसा जयणारूपे, अनु-अघातस्वरूप, फलरूपे जे तेह परिणामे, ते अनुबन्धस्वरूप मन० ॥ ८ ॥ हेतु स्वरूप अहिंसा आपे शुभफल विण अनुबन्ध, दृढअज्ञान थकी ते आपे, हिंसानो अनुबन्ध मन० ॥ ९ ॥ निह्नव प्रमुख तणी जिन किरिया, जेह अहिंसारूप, सुरदुरगति तेह ते पाडे, दुंस्तर भवजलरूप मन० ॥ १० ॥ दुर्बल नग्न मास उपवासी, जो छे मायारंग, तो पण गरभ अन ता लेशे, बोले बीजु अग, मन० ॥ ११ ॥ निंदित आचारे जिनशासन, जेहने हीले लोक, माया पहिली तस अज्ञाने, सर्व अहिंसा फोक मन० ॥ १२ ॥ स्वरूपथी निरवद्य तथा जे, छे किरिया सावद्य, ज्ञानशक्तिथी तेह अहिंसा, दिजे अनुबन्धे मद्य, मन० ॥ १३ ॥ जिनपूजा अपवादपदादिक, शीलप्रवादिक जेम, पुण्य अनुत्तर मुनिने आपी, दिजे शिवपद बहु अेम मन० ॥ १४ ॥ अेह भेद विण अेक अहिंसा, नवि होवे थिर थभ, यावत् योगक्रिया छे तावत्, बोल्यो छे आरभ मन० ॥ १५ ॥ लागे पण लगवे नहि हिंसा मुनि जे मायावाणी, शुभकिरिया लागी जे आवे,

५२ दु ले तरी शकाय

तेमा तो नहि हाणी, मन० ॥१६॥ हिंसा मात्र विषय [illegible] अहिंसकभाव, सूक्ष्म अकेंद्रियने होवे तो ते शुद्ध स्वभाव मन० ॥१७॥ भाव तेह अहिंसा माने, ते सवि चोडे ठाम, [illegible] जिननी जाणे जाम मन० ॥ १८ ॥ कोइ कहे [illegible] छे अपवाद, ते मिथ्या अणपामे अर्थे, साधारण [illegible] मन० ॥ १९ ॥ मुख्यपणे जिम भावे आणा तिम दश [illegible] इच्छतो कारण इच्छे, अे छे शुभमति तेह मन० ॥ २० ॥ कर्म वचन कह्यु अपवादे, ते आणानु रे मूल, [illegible] न घटे, तेह नही अनुकूल मन० ॥ २१ ॥ [illegible] परम गुणठाण, भावअपेक्षाये जिन [illegible] मन० ॥ २२ ॥ अेक अहिंसामा जे आणा [illegible] अेकांत माते नवि ग्रहिये, तिहा नयविधि [illegible] आतमभावहिंसनथी हिंसा, सघळा अे पापस्थानक [illegible] अहिंसा, तास विरहतु ध्यान मन० ॥ २४ ॥ [illegible] आगममा, बहुविध छे व्यवहार, ते [illegible] फल उपचार, मन० ॥ २५ ॥ [illegible] हिंसा, नैगमनय मतयुक्त, समइ व्यवहारे [illegible] मन० ॥ २६ ॥ आतमरूप शब्दनय [illegible] ओघवृत्ति जोइने लहिये, सुख जस [illegible] मन० ॥ २७ ॥

ढाल नवमी

(हमीरानी, चैत्री पूनम अनुक्रमे [illegible]

कोइक सूत्रज आदरे, अर्थ न [illegible] जिनजी अवळु करे, मूल्या तेह गमार, [illegible] वयणे ॥ १ ॥ प्रतिमा लोपे पापीआ [illegible] उपधान गुरुनो वास न शिर धरे, मायावी [illegible] ॥ २ ॥

तेहनी नवी, केती कहिये देव ! जिनजी ! नित्य त्रूटे छे साधता, गुरु-विण तेहनी टेव, जिनजी ! ॥ ३ ॥ वृत्तिप्रमुख जोइ करी, भाखे आगम आप, जिनजी ! तेहज मूढा ओळवे, जिम कुपुत्र निज बाप, जिनजी ! ॥ ४ ॥ वृत्त्यादिक अणमानता, सूत्र विरावे दीन, जिनजी ! सूत्र-अरथ-तदुभय थकी, प्रत्यनीक कह्या तीन ! जिनजी ॥ ५ ॥ अक्षर अर्थज एकलो, जो आदरता एम, जिनजी ! भगवई अंगे भाखियो विविध अर्थ तो केम ? जिनजी ! ॥ ६ ॥ सूत्र अरथ पहेलो बीजो, निज्जुत्ती य मीस जिनजी ! निरवशेष त्रीजो वळी, इम भाखे जगदीश जिनजी ! ॥ ७ ॥ छाया नर चाले चले, रहे थिती तस जेम, जिनजी ! सूत्रअरथ चाले चले, रहे थिती तस तेम, जिनजी ! ॥ ८ ॥ अर्थ कहे विधि वारणा, उभय सूत्र जिम वाण, जिनजी ! तिम प्रमाण सामान्यथी नवि प्रमाण अप्रमाण जिनजी ॥ ९ ॥ अधपंगु जिम बे मळे, चाले इच्छित ठाण जिनजी ! सूत्रअरथ तिम जाणीए, कल्प-भाष्यनी वाण जिनजी ! ॥१०॥ विधि-उद्यम-भय-वर्णना, उत्सर्गह-अपवाद, जिनजी ! तदुभय अर्थे जाणीये, सूत्रभेद अविवाद जिनजी ! ॥ ११ ॥ एह भेद जाण्या विना, कखामोह लहंत, जिनजी ! भगवंतर प्रमुखे करी, भाष्यु भगवईतन्त जिनजी ! ॥ १२ ॥ परिवॉसित वारी करी, लेपन अशन अशेष, जिनजी ! कारणथी अवि आदर्या, पचकल्प उपदेश जिनजी ! ॥ १३ ॥ वर्षागमन निवारिओ कारणे भाष्यु तेह, जिनजी ! ठाणांगे श्रमणी तणु, अवलम्बादिक जेह, जिनजी ! ॥ १४ ॥ आधाकर्मादिक नही, बन्ध तणो एकन्त, जिनजी ! सूयगडे ते किम घटे, विण वृत्त्यादिक सन्त ? जिनजी ! ॥ १५ ॥ विहरमान गणधर पिता, जिनजनकादिक जेह, जिनजी ! क्रम वळी आवश्यक तणो, सूत्र मात्र नही तेह जिनजी ! ॥ १६ ॥ अर्थ विना किम पामिए, भाव सकल अनिबद्ध जिनजी ! गुरुमुख वाणी

५३ वासी आहार.

धरता, होवे सर्व सुबद्ध जिनजी ! ॥ १७ ॥ पुस्तक अर्थ परम्परा, सघळी जहने हाथ, जिनजी ! ते सुविहित अणमानता, किम रहेसे निज आथ ? जिनजी ! ॥ १८ ॥ सद्‌गुरु पासे शीखता अर्थमांहि न विरोध, जिनजी! हेतुवाद आगम प्रते, जाणे जेह सुबोध, जिनजी! ॥ १९ ॥ अर्थ मतभेदादिक, जेह विरोध गणन्त, जिनजी ! ते सूत्रे पण दाखशे, जे जोशे एकन्त, जिनजी ! ॥ २० ॥ महरता जाणे नही, कोर कहे इम कल्प, जिनजी ! महरता पण नाणनो, प्रथम अंग छे जल्प, जिनजी ॥ २१ ॥ ऋषभकूट अडजोयणो, जंबूपन्नत्ति सार, जिनजी ! यार वळी पाठान्तरे, मूळ रहे विस्तार, जिनजी! ॥ २२ ॥ सम्भावन सब मल्लिने, मननाणी समवाय, जिनजी ! आठ सया ज्ञाता कहे, ए सो अवर उपाय, जिनजी! ॥ २३ ॥ उत्तराध्ययन स्थिति कही, अन्तर्मुहूर्त जघन्य, जिनजी ! वेदनीयनी बार त, पन्नवणामां अन्य, जिनजी ! ॥ २४ ॥ अनुयोगद्वारे कह्या, जघन निक्षेपा चार, जिनजी! जीवादिक तो नवि घटे, द्रव्यभेद आधार, जिनजी ! ॥ २५ ॥ इम बहु वचन नयान्तरे, कोइ वाचनाभेद, जिनजी ! इम अर्थे पण जाणीये, नवि धरीये मन खेद, जिनजी ! ॥ २६ ॥ अर्थकथी अजन्य, अधिक शुभमति शुं ? जिनजी ! तोले अमियतणे न्हीं, आवे शैवे तुला ? जिनजी ! ॥ २७ ॥ राजावरीसु सूत्र छे, महीमर्गिळो अर्थ जिनजी ! एहमां एके ढीलीओ, दिये ससार अनर्थ, जिनजी ! ॥ २८ ॥ जे समतोले आचरे, सूत्र अर्थसु प्रीति, जिनजी ! ते तुम करुणाय वरे, सुयजश निर्मळनीति, जिनजी ! ॥ २९ ॥

ढाळ दशमी.

(आप छंद छबिला छलावरे, अथवा आव – जीवडा ! प्रभु किहां गयारे – ए देशी)

ध्यान विना जे जीवनेरे किरियामां छे क्षेपर, कर्मबन्ध तेहथीरे, नही शमसुख सन्तापरे ॥ १ ॥ प्रभु ! तुम वाणी

हीरे, तुझ मन सहेज सुहायरे, अमीयसमी मन धारतोर, पापताप सवि जायरे. प्रभु ! तुझ वाणी मीठडीरे ॥ २ ॥ लोकपति किरिया करेरे, मनमेळे अज्ञाणरे, भय – इच्छाना जोरथीरे, विण शिवसुख विन्नाणरे प्रभु० ॥ ३ ॥ कामकुम्भसम धर्मनेरे, मूढ करी इम तुच्छरे, जनरंजन केवळ लहेरे, न लहे शिवतरुगुच्छरे. प्रभु० ॥ ४ ॥ करुणा न करे हीननीरे, विण पणिहाण सनेहरे, द्वेष धरन्ता तेहशुरे, हेठा आवे तेहरे प्रभु० ॥ ५ ॥ जेक काजमा नवि धरेरे, विण प्रवृत्ति थिर भावरे, जिहांतिहां मोटु धालतारे, धारे ढोरसभावरे, प्रभु० ॥ ६ ॥ विना विघनजय साधुनेरे, नवि अविछिन्न प्रयाणरे, किरियाथी शिवपुरी होयेरे, किम जाणे अज्ञाणरे ? प्रभु० ॥ ७ ॥ शीतताप मुख विघन छेरे, बाधिर अन्तर व्याधिरे, मिथ्यादर्शन अेहनीरे, मात्रा मृदुमध्याधिरे प्रभु० ॥८॥ आसन अशनजयादिकेरे, गुरुयोगे जय तासरे, विघनजोर अे नवि टळेरे, विगर ज्ञान अभ्यासरे, प्रभु० ॥ ९ ॥ विनय अधिकगुण साधुनोरे, मध्यमनो उपगाररे, सिद्धि विना होवे नहिरे कृपा हीननी साररे, प्रभु० ॥ १० ॥ विण विनियोग न सम्भवेरे, परने धर्म योगरे, तेह विना जनमान्तरेरे, नहि सवतिसयोगरे, प्रभु० ॥ ११ ॥ किरियामां खेदे करीरे, दढता मननी नाहिरे, मुख्यहेतु ते धर्मनो जिम पाणी कृषिमांहिरे प्रभु० ॥ १२ ॥ वेठा पण जे उपजेरे, किरियामां उद्वेगरे, योग–द्वेषथी ते क्रियारे, राजवेठ सम वेगरे प्रभु० ॥ १३ ॥ भ्रमथी जेह न सांभरेरे, काइ अकृत – कृत – काजरे, तेहथी शुभक्रिया थईरे, अर्थविरोधी अकाजरे प्रभु० ॥ १४॥ शान्तवाहिता विण हुअेरे, जे योगे उत्थानरे, त्यागयोग छे तेहथीरे, अणछंडातु ध्यानरे. प्रभु० ॥ १५ ॥ विचे विचे बीजा काजमारे, जाअे मन ते क्षेपरे, ऊखणता जिम शालिनुरे, फल नहीं तिहां निर्लेपरे, प्रभु० ॥ १६ ॥ जेकज ठामे रंगथीरे, किरियामां आसंगरे, तेहज गुणठाणे थितिरे,

वेदथी फल नही चगरे. प्रभु० ॥ १७ ॥ माडी किरिया अवगणीरे, बीजे ठामे हर्षरे, इष्ट अर्थमा जाणियेरे, अंगारानो वर्षरे, प्रभु० ॥ १८ ॥ रोग होओ समजण विनारे, पीडा भगस्वरुपरे, शुद्धक्रिया उच्छेदथीरे, वेद वन्ध्यफलरूपरे प्रभु० ॥ १९ ॥ मानहानिथी दुःख दीओरे अंग विना जिम भोगरे, शान्तोदात्तपणा विनारे, तिन किरियानो योगरे प्रभु० ॥ २० ॥ शान्त ते कषाय अभावथीरे, जे उदात्त गम्भीररे, किरियादोष टही त्यजेरे ते सुख जशभर धीररे. प्रभु० ॥ २१ ॥

ढाळ अगियारमी

(दूहा, अथवा सूरती महीनानी देशी)

ओकवीस गुण परिणामे, जास चित्त नितमेव, धरमरतननी योग्यता, तास कहे तू देव[1] ॥ १ ॥ १ खुद्द नहि २ रूपी रूपनिधि ३ सोम्म ४ जनप्रियज धन्य, ५ क्रूर नहीं ६ भीरु वळी ७ असठ ८ सार दक्खिन्न ॥ २ ॥ ९ लज्जालुओ १० दयालुओ ११ सोम दिट्ठि मज्झत्थ, १२ गुणरागी १३ सत्कथ १४ सुपक्ष १५ दीर्घदर्शी अत्थ ॥ ३ ॥ १६ विशेषज्ञ १७ वृद्धानुगत १८ विनयवत १९ कृतजाण, २० परहितकारी २१ लब्धलक्ष, ए एकवीस प्रमाण ॥ ४ ॥ खुद्द नही ते जेह मने, अतिगंभीर उदार, न करे जन उतावळो, निजपरनो उपगार. ॥ ५ ॥ गुनसंपदमां रूपनिधि, पूरण अंग उपंग, ते समरथ सहेजे धरे धर्म प्रभावन चंग ॥ ६ ॥ पापकर्म वरते नहीं, प्रकृति सौम्य जगमित्र, सेवनीक होवे सुखे, परने प्रशमनिमित्त ॥ ७ ॥ जनविरुद्ध सेवे नहीं, जनप्रिय धर्मे सूर, मलिनभाव मनथी त्यजी, करी शके अक्रूर. ॥ ८ ॥ इहपर लोक अपायथी, बीहे भीरु जेह, अपयशथी वळी धर्मनो, अविर

[1] ५८ तुच्छवृत्ति

छे तेह ॥ ९ ॥ अशठ न वचे पर प्रते, लहे कीर्ति विश्वास, भावसार उद्यम करे, धर्म ठाम ते खास ॥ १० ॥ निजकार्य छाडी करी, करे अन्य उपकार, सुदक्षित्न जन सर्वने, उपादेय व्यवहार ॥ ११ ॥ अंगीकृत न त्यजे त्यजे, लज्जालुओ अकाज, धरे दयालु धर्मनी, दयामूलनी लाज ॥ १२ ॥ धर्म मर्म अवितथ लहे सोमदिट्ठि मज्झत्थ, गुणसंयोग करे सदा, वर्जे दोष अणत्थ ॥ १३ ॥ गुणरागी गुण संग्रहे, दूसे न गुण अनंत, उवेखे निर्गुण सदा, बहुमाने गुणवंत ॥ १४ ॥ अशुभकथा कलुषित मति, नासे रतन विवेक, धर्मार्थी सत्कथ हुवे, धर्मनिदान विवेक ॥ १५ ॥ धर्मशील अनुकूल यश, सदाचार परिवार, धर्म सुपक्ख विघन रहित, करी शके ते सार ॥ १६ ॥ मांडे सवि परिणामहित, दीर्घ दर्शी परम, लहे दोष गुण वस्तुना, विशेषज्ञ गुणधाम ॥ १७ ॥ वृद्धानुगत सुसंगते, होवे परिणतबुद्धि, विनयवंत नियमा करे, ज्ञानादिकनी शुद्धि ॥ १८ ॥ गुण जोडे गुरु आदरे, तत्त्वबुद्धि कृतजाण, परहितकारी पर प्रते थापे मार्ग सुजाण ॥ १९ ॥ शीखे लखे सुखे सफल, लब्धलक्ष शुभ काम, इम अेकवीस गुणे वर्यो, लहे धर्मनुं राज ॥ २० ॥ पूरण गुण उत्तम कह्यो, मध्यम पादे हीन, अर्द्धहीन जघन्य जन, अपर दरिद्री दीन ॥ २१ ॥ अरजे वरजी पापने, अेह धर्म सामान्य, प्रभु तुझ भक्ति जश लहे, तेह होअे जनमान्य ॥ २२ ॥

ढाळ बारमी

चौपाइनी देशी

अेकवीस गुण जेणे लह्या, जे निज मर्यादामां रह्या, तेह भावश्रावकता लहे, तस लक्षण अे तु प्रभु ! कहे ॥ १ ॥ कृतव्रतकर्मा शीलाधार, गुणवन्तोने ऋजु व्यवहार, गुरुसेवी ने प्रवचनदक्ष,

५९ सत्कथा करनार.

भावस्भावे जे प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ श्रवण जाणणा ग्रहण उद्दार, पडिसेवा जे चार प्रकार, प्रथम भेदना मन धारीये, अर्थ तास इम अवतारीये ॥ ३ ॥ बहुमाणे निसुणे गीयत्थ, पासे भंगादिक बहु अत्थ, जाण गुरु पासे व्रत ग्रहे, पाले उपसर्गादिक सहे ॥ ४ ॥ सेवे आयतना उद्देश, परगृह तजे अणु-भट वेस, वचन विकार त्यजे शिशुशील, मधुर भणे जे षड्विध शील ॥ ५ ॥ आयतने सेवे गणपोष, परगृहगमने वाधे दोष, उद्भटवेष न शोभा लाग, वचन विकारे जागे राग ॥ ६ ॥ मोहतणो शिशुलीला लिंग अनर्थ दंड अछे जे धग, कठिन वचननु जल्पन जेह, धर्मिने नहि सम्मत तेह ॥ ७ ॥ उद्यम करे सदा सज्झाय, करण विनयमां सर्वे उपाय, अनभिनिवेशी रुचि जिनआण, धरे पंच गुण जेह प्रमाण ॥ ८ ॥ सज्झाये धारे वैराग, तप नियमादिक करणे राग, विनय प्रयुंजे गुणनिधि तणो, जिम मन वाधे आदर घणो ॥ ९ ॥ अनभिनिवेशी अवितथ गणे, गीतारथ भाषित जे सुणे, सद्दहणाये सुणवा चाह, समकितनो मोटो उच्छाह ॥ १० ॥ अवितथकथन अवंचकक्रिया, पातिकप्रकटन मैत्रीप्रिया, बोधबीज सद्भावे सार, चार भेद ऋजुव्यवहार ॥ ११ ॥ गुरुसेवी चउविह सेवणा, कारण सम्पादन भावना, सेवे अवसरे गुरुने तेह, ध्यानयोगनो न करे छेह ॥ १२ ॥ तिहां प्रवर्तावे पर प्रतें, गुरु गुण भाखे निज पर छतें, सम्पादे ओषधमुख वळी, गुरुभावे चाले अविचळी ॥ १३ ॥ सूत्र अर्थ उस्सग्गववाय भावे व्यवहारे सोपाय, निपुणपणु पाम्यो छे जेह, प्रवचनदक्ष कहीजे तेह ॥ १४ ॥ उचित सूत्र गुरु पासे भणे, अर्थ सुतीर्थे तेहनो सुणे, विषयविभाग लहे अविवाद, वळी उत्सर्ग तथा अपवाद ॥ १५ ॥ पक्षभाव विधि माहे धरे, देशकाळमुख जिम अनुसरे, जाणे गीतारथ व्यवहार, तिम सवि प्रवचन कुशळ उदार ॥ १६ ॥ किरियागत अे षड्विध लिंग, भावे तु जिनराज अभंग, अे विधि श्रावक जे आचरे, सुजसलीला ते आदरे ॥

ढाळ तेरमी

(छठ्ठी भावना मन धरो–ए देशी)

भावश्रावकना भाखिए, हवे सत्तर भावगत तेहोरे, नेहोरे, प्रभु तुझ वचने अविचळ होजो ए ॥ १ ॥ इत्थी चपळ चित्तथी, जे वाट नरकनी मोटीरे, खोटीरे, छाडे ए गुण धुरी गणो ए ॥ २ ॥ इन्द्रियचपल तुरगने, जे रुधे ज्ञाननी राशे रे, पासेरे, ते बीजो गुण श्रावक धरे ए ॥ ३ ॥ क्लेशतणु कारण घणु, जे अर्थ असारज जाणेरे, आणेरे, ते त्रीजो गुण सनिधि ए ॥ ४ ॥ भवविडंबनामय अछे, वळी दु खरूपी दु ख हेतो रे, चेतोरे, इम चोथो गुण अगीकरे ए ॥ ५ ॥ खीणसुख विषय विषोपमा, इम जाणी नवि बहु ईहेरे, बीहेरे, तेहथी पचम गुण वर्यो ए ॥ ६ ॥ तीव्रारभ त्यजे सदा, गुण छठ्ठानो सभागीरे, रागी रे निरारभजननो घणु ए ॥ ७ ॥ माने सत्तम गुण वर्यो, जन पाससदृश गृहवासोरे, अभ्यासोरे मोह जीतवानो करे ए ॥ ८ ॥ अठ्ठम दसण गुण भर्यो, बहु भाते करे गुरु भक्तिरे, शक्तिरे, निज सद्दहणानी फोरवे ए ॥ ९ ॥ लोकसज्ञा सवि परिहरे, जाणे गाडरियो प्रवाहोरे, लाहोरे, इम नवमा गुणनो लपजे ए ॥ १० ॥ आगमने आगळ करे, ते विण कुण मारग साखीरे, भाखीरे, इम किरिया दशमा गुण धकी ए ॥ ११ ॥ आप अबाधाये करे, दानादिक चार शक्तिरे, व्यक्तिरे, इम आवे गुण इग्यारमो ए ॥ १२ ॥ चिंतामणि सरिखो लही, नवि मुग्ध हस्यो पण लाजेरे, गाजेरे, निज धर्मे ए गुण बारमो ए ॥ १३ ॥ धन–भवनादिकभावमा, जे नावे रागी नावे द्वेषीरे, समपेखीरे, ते विलसे गुण तेरमो ए ॥ १४ ॥ रागद्वेष मध्यस्थनो समगुण चउदमे न बाधेरे, साधेरे, ते हठ छाडी मारग भलो ए ॥ १५ ॥ क्षणभगुरता भावतो, गुण पन्नरमे सेवतोरे, सवोरे, न धनादि सगति करे ए ॥ १६ ॥ भावविरति सेवे मने, भोगादिक पर अनुरोधेरे, बोधेरे, इम उल्लटमे गुण सोळमे ए ॥ १७ ॥ आज काल ए छाडिशु, इम वेश्या परे

निसनेहोरे, गेहोरे, पर माने गुण सत्तरमे ए ॥ १८ ॥ ए गुणवृंदे जे भर्यो, ते श्रावक कहिये भावेरे, पावेरे, सुजसपूर सुख भक्तिथी ए ॥ १९ ॥

ढाळ चौदमी

ते भाव साधुपणु लहे, जे भावश्रावक सार, [illegible] छे सवि जाणे हो तु गुणभंडार, साहिबजी ! [illegible] ॥ १ ॥ किरिया मारगअनुसारिणी १, श्रद्धा प्रवर [illegible] २, ऋजुभावे पन्नवणिज्जता ३, किरियामा हो निर्वे [illegible] ४ सा० ॥ २ ॥ निज शक्ति – सारु काजनो, आरंभ ५ गुण [illegible] ६ आराधना गुरु आणनी ७, जेहथी लहिये हो भवजलतार सा० ॥ ३ ॥ मार्ग ते समयनी थिति तथा, संविग्नबुधनी नीति, [illegible] क्रिया, जे पाळे हो ते न लहे भीति, सा० ॥ ४ ॥ [illegible] अन्यथा, जुदूज बहुगुण जाण, संविग्नविबुधे आचर्यु, [illegible] हो [illegible] दिप्रमाण, सा० ॥ ५ ॥ कल्पनु धरवु [illegible], [illegible] विधि पजूसणनी पालटी, भोजनविधि [illegible] इत्यादि प्रमाण, सा० ॥ ६ ॥ व्यवहार पांचे भाखिया, अनुक्रमे जेह प्रधान, आज तो तेहमा जीत छे, ते त्यजिये हो किम [illegible] ? सा० ॥ ७ ॥ श्रावकममत्व अशुद्ध वळी, उपकरण [illegible], [illegible] जे आचरे, नवि धरिये हो ते चित्त [illegible], सा० ॥ ८ ॥ विधि-सेवनाअवितृप्ति शुभदेशन [illegible] श्रद्धा धर्म इच्छा [illegible] चउभेदे हो इम जाणे सुबुद्धि, सा० ॥ ९ ॥ दृढ राग [illegible] भोज्यमा, जिम सेवताये विरुद्ध, [illegible] रस [illegible] मुनिने हो चरणे ते शुद्ध, सा० ॥ १० ॥ [illegible] तृप्ति जग [illegible] धनहीन लेतो रत्न, तप – विनय – [illegible] प्रमुख

---

५६ सुंदर भोजन

हो मुनिवर बहु यत्न सा०॥ ११ ॥ गुरुनी अनुज्ञा लेइने, जाणतो पात्र कुपात्र, तिम देशना शुद्ध दिजे, जिम दीपे हो निज सयमगात्र सा० ॥ १२ ॥ जे कदाचित लागे व्रते, अतिचार पक्कलंक, आलोयणें ते शोधतां, मुनि धरे हो श्रद्धा नि शक, सा० ॥ १३ ॥ श्रद्धा थकी जे सर्व लहे, गभीर आगमभाव, गुरुवचने पन्नवणिज्ज ते, आराधक हो होवे सरल स्वभाव सा० ॥ १४ ॥ षट्कायघात प्रमत्तने, पडिलेहणादिक योग, जाणी प्रमादी नवि हुवे, किरियामा हो मुनि शुभसयोग सा० ॥ १५ ॥ जिम गुरु आर्यमहागिरि, तिम उजमे बलवत, बल अविषय नवि उजमें, शिवभूति हो जिम गुरु हीलत सा० ॥ १६ ॥ गुणवतनी सगति करे, चित्त धरत गुण अनुराग, गुणलेश पण परनो थुणे, निज देखे हो अवगुण बडभाग सा० ॥ १७ ॥ गुरुचरणसेवारत्त होई, आराधतो गुरुआण, आचार सर्वना मूल गुरु, ते जाणे हो ते चतुर सुजाण सा० ॥ १८ ॥ ओ सात गुण लक्षण वर्या, जे भावसाधु उदार, ते वरे सुरराजजशसम्पदा तुज चरणे हो जस भक्ति अपार सा० ॥ १९ ॥

ढाळ पन्नरमी

(आज मारे एकादशीरे नणदल! मौन करी मुख रहिए–ए देशी)

धन ते मुनिवरा रे, जे चाले समभावे, भवसायर लीलाए उतरे, सयमकिरियानावे धन० ॥ १ ॥ भोगपक त्यजी उपर बेठा, पकज परे जे न्यारा, सिंहपरे निजविक्रम-शूरा, त्रिभुवनजन आधारा धन० ॥२॥ ज्ञानवन्त ज्ञानीशु मिलता, तनमन वचने साचा, द्रव्यभाव सुधा जे भाखे, साची जिननी वाचा, धन० ॥ ३ ॥ मूलउत्तर गुण समह करता, त्यजता भिक्षादोषो, पग पग व्रतदूषण परिहरता, करता सयमपोषो धन० ॥ ४ ॥ मोह प्रते हणता नित्य आगम, भणता सद्गुरु पासे, दूषमकाले पण गुणवन्ता, वर्ते शुभ अभ्यासे धन०

॥५॥ उद्‌धु गुणठाणु भव अडवां, उद्धपण जेम लहिउ, वस सोभाग सकळ मुख एके, किम करि जाय कहिउ? धन० ॥ ६ ॥ गुणठाणानी परिणति जेहनी, न छिपे भवजजाळे, रहे रेखडी न्हाडी राखी, केवो काळ पराळे, धन० ॥ ७ ॥ तेहवा गुण धरवा आचीरा, जो पण मूधु भाख्यो, जिनशासन शोभावे ते पण, सूधा संवेगपाख्यो, धन० ॥ ८ ॥ सद्दहणा अनुमोदन कारण, गुणथी संयमकिरिया, व्यवहारे दीसे ते भरसे, जे निश्चयनयदरिया, धन० ॥९॥ दुक्करकारक थकी पण अधिका, ज्ञान गुणे इम तेहा, धर्मदासगणि वचने लहिए, जेहने प्रवचननेहो, धन० ॥ १० ॥ सुविहितगच्छकिरियानो धोरी, श्रीहरि-भद्र कहाय, एह भाव धरतो ते कारण, मुज मन तेह सुहाय धन०॥११॥ संयमठाण विचारी जोतां, जो न लहे निजसाखे, तो झूठु बोलीने दुर्मति, शु साधे गुणपाखे? धन० ॥ १२ ॥ नहि माया धर्म नहि कहेवु, परजननी अनुवृत्ति, धर्मवचन आगममा कहिए, कपट रहित मनवृत्ति, धन० ॥ १३ ॥ संयमविण संयतता थापे, पापश्रमण ते भाख्यो, उत्तराध्ययने सरळस्वभावे, शुद्ध प्ररूपक दाख्यो, धन० ॥ १४ ॥ एक बाल पण किरियानये ते, ज्ञाननय नवि बाळा, सेवा योग्य सुसंयत बने ते, बोले उपदेशमाळा धन० ॥ १५ ॥ किरियालवे पण एक बाउ ते, जे लगी मुनिरागी, ज्ञानयोगमा जस मन वर्ते, ते किरिया सोभागी, धन० ॥ १६ ॥ बाह्यादिक अनुकूलकियाथी, आपे इच्छायोगी, अध्या-तम मुखयोग अभ्यासे, किम नवि कहिये योगी, धन० ॥ १७ ॥ उचित किया निज शक्ति छांडी, जे अति वेगे चढतो, ते भवथितिपरिपाक थया विण, जगमा दीसे पडतो, धन० ॥ १८ ॥ माचे मोटाईमा जे मुनि, चलवे डाकडमाळ, शुद्ध प्ररूपक गुण विण न घटे, तस भव अरहटमाळ धन० ॥ १९ ॥ निजगुण सचे मन नवि खचे, ग्रंथ भणी जन वचे, लुचे केश न मुचे माया, तो व्रत न रहे पचे, धन० ॥ २० ॥ याग प्रथा भाव न जाणे, आपे तो न प्रकाशे फोगट मोटाई मन राखे, तस गुण दूरे नासे, धन० ॥ २१ ॥ मेळ वेशे महीयळ म्हाले, बक

परे नीचो चाले, ज्ञान विना जग धंधे घाले, ते किम मारग चाले, धन० ॥ २२ ॥ परपरिणति पोतानी माने, वर्ते आरतध्याने, बन्ध-मोक्ष कारण न पीछाने, ते पहिले गुणठाणे, धन० ॥ २३ ॥ किरिया-लव पण जे ज्ञानीनो, दृष्टि थिरादिक लागे, तेहथी सुजश लहीजे साहिब, सीमंधर ! तुज रागे, धन० ॥ २४ ॥

ढाळ सोळमी

(सकल संसार अवतार हु अे गणु – अे देशी)

स्वामी सीमंधर ! तु भले ध्याइये, आपणो आतमा जिम प्रगटे पाइये, द्रव्यगुणपज्जवा तुज यथा निर्मला, तिम मुज शक्तिथी जइवि भवसामला ॥ १ ॥ चार छे चेतनानी दशा अवि-तथो, बहुशयनें – शयने – जागरणें-चोथी तथा, मिच्छ अविरत सुयत तेरमे तेहनी, आदि गुणठाणे नयचक्र माहे सुणी ॥ २ ॥ भावसंयोगजा कर्मउदयागता, कर्म नवि जीव नवि मूल ते नवि छता, खडीयथी भित्तिमा जिम होय श्वेतता, भित्ति नवि खडीय नवि तेह भ्रमसंगता ॥ ३ ॥ देह नवि वचन नवि जीव नवि चित्त छे, कर्म नवि राग नवि द्वेष नवि चित्त छे, पुद्गली-भाव पुद्गलपणे परिणमे द्रव्य नवि जूजूआ अेक होवे किमे ? ॥ ४ ॥ पथिजन लूटता चोरने जिम भणे, वाट को लूटीइ तिमज मूढो गिणे, अेकक्षेत्रे मिल्या अणुतणी देखतो, विकृति अे जीवनी प्रकृति उवेखतो ॥ ५ ॥ देहकर्मादि सवि काज पुद्गलतणा जीवना तेह व्यवहार माने घणा, सयलगुणठाण जिअठाणसंयोगथी शुद्धपरिणाम विण जीवकार्यं नथी, ॥ ६ ॥ नाण – दंसण – चरण शुद्ध परिणाम जे, तत्त्व जोता न छे जीवथी भिन्न ते, रत्न जिम ज्योतिथी काजकारण पणे, रहित इम अेकता सहज नाणी मुणे ॥ ७ ॥ अंश पण नवि घटे पूरणद्रव्यना, द्रव्य पण किम कहु द्रव्यना गुण

विना ? अकल ने अलख इम जीव अतितन्तथी, प्रथमअगे वद्यु अपदने पद नथी ॥ ८ ॥ शुद्धता ध्यान इम निश्चये आपनु, तुझ समापत्ति औषध सकल पापनु द्रव्य अनुयोग समति प्रमुखथी लही, भक्ति वैराग्य ने ज्ञान धरिये सही ॥ ९ ॥ जेह अहंकार-ममकारनु बंधन, शुद्धनय ते दहे दहन जिम इंधन, शुद्धनयदीपिका मुक्तिमार्गे भणी, शुद्धनय आथि छे साधुने आपणी ॥ १० ॥ सकल गणिपिटकनु सार जेणे लह्यु, तेहने पण परमसार अेहज कह्यु; ओघनिर्युक्तिमा जेह विण नवि मिटे, दुःख सवि वचन अे प्रथम अगे घटे ॥ ११ ॥ शुद्धनयध्यान तेहने सदा परिणमे, जेहने शुद्ध व्यवहार हियडे रमे मलिनवस्त्रे यथा राग कुंकुमतणो, हीनव्यवहार चित्त अेहथी नवि गुणो ॥ १२ ॥ जेह व्यवहार सदी प्रथम छाडता, अेक अे आदरे आपमत माडता, तास उतावळे नवि टळे आपदा, क्षुधित इच्छाये उंवर न पाचे कदा ॥ १३ ॥ भावलव जेह व्यवहार गुणथी भळे, शुद्धनयभावना तेहथी नवि चळे, शुद्ध व्यवहार गुरुयोग परिणतपणु तेह विण शुद्धनयमा नहि ते गणु ॥ १४ ॥ केइ नवि भेद जाणे अपरिणतमति, शुद्धनय अति हि गभीर छे ते वती, भेदलव जाणता केई मारग त्यजे, होय अति परिणति परसमय स्थिति भजे ॥ १५ ॥ तेह कारण थकी सर्व नय नवि कह्या, कालिकश्रुत माहे तीन प्राये लह्या, देशी आवश्यके शुद्धनय धुरि भणी, जाणिये उलटी रीति बोटिक तणी ॥ १६ ॥ शुद्ध व्यवहार छे गच्छकिरियाथिति, दुप्पसह जाव तीरथ कह्यु छे नीति, तेह सविज्ञगीतार्थथी सभवे, अवर अेरड सम कोण जग लेखवे ॥ १७ ॥ शास्त्र अनुसार जे नवि हठे ताणिये, नीति तप गच्छनी ते भली जाणिये, जीत दाखे जिहा समय – सारु बुधा, नाम ने ठाम कुमते नहीं जस मुधा ॥१८॥ नाम निर्ग्रंथ छे प्रथम अेहनु रह्यु, प्रथम अड पाट लगे गुरु गुणे सग्रह्यु, मत्र कोटी जपी नवम पाटे यदा, तेह कारण थयु नाम कोटिक तदा ॥ १९ ॥

पनरमे पाटे श्री चन्द्रसूरि कर्युं, चद्र गच्छ नाम निर्मलपणे विस्तर्युं, सोलमे पाट वनवास निर्ममति, नाम वनवासी सामंतभद्रो यति ॥ २० ॥ पाट उगणीसमे सर्वदेवाभिधा, सूरि वडगच्छ तिहां नाम श्रवणे सुधा, वडतल सूरिपद आपीयु ते वती, वर्धीय तस बहुगुणे तेह वाध्या यति ॥ २१ ॥ सूरि जगचंद जग समरसे चन्द्रमा, जेह गुरुपाटे चउ अधिक चालीसमा, तेह पाम्यु तपा नाम बहु तप करी, प्रगट आघाटपुरि विजयकमला वरी ॥ २२ ॥ अेह पट नाम गुणठाम तपगण तणा, शुद्ध सद्दहण गुणरयण अेहमा घणा, अेह अनुगत परंपर भणी सेवता, ज्ञानयोगी विबुध प्रगट जगदेवता ॥ २३ ॥ कोइ कहे मुक्ति छे वीणता चीयरा, कोइ कहे सहज जमता घर दहियरा, मूढ अे दोय तस भेद जाणे नहीं, ज्ञानयोगे क्रिया साधता ते सही ॥ २४ ॥ सरलभावे प्रभो! शुद्ध इम जाणता, लहु सुजस तुझ वजन मन आणता, पूर्व सुविहिततणा ग्रथ जाणी करी, मुज होजो तुझ कृपा भव पयोनिधि–तरी ॥ २५ ॥

ढाळ सत्तरमी

फटखानी देशी

आज जिनराज ! मुज काज सिध्या सवे, विनती माहरी चित्त धारी, मार्ग जो में लह्यो तुज कृपारस थकी, तो हुइ सम्पदा प्रगट सारी आज० ॥ १ ॥ वेगलो मत हुजे देव ! मुज मन थकी, कमलना वनथकी जिम परागो, चमकपाषाण जिम लोहने खेंचशे, मुक्तिने सहेज तुज भक्तिरागो आज० ॥ २ ॥ तु वसे जो प्रभो ! हर्षभर हियडले, तो सकल पापना बन्ध तूटे, ऊगते गगनसूर्यतणे

मण्डले, दहदिशि जिम तिमिरपडल फूटे आज० ॥ ३ ॥ मींचजे तू सग विपुलकरुणारसे, मुझ मने शुद्ध मति कल्पवेली, नाणदसण-कुसुम चरणवरमंजरी, मुक्तिफल आपशे ते अकेली, आज० ॥ ४ ॥ लोकसंज्ञा थकी लोक बहु वाउलो, राउलो दास ते सवि उवेखे, एक तुज आणमु जेह राता रहे, तेहने एह निज मित्र देखे आज० ॥ ५ ॥ आणजिनभाण ! तुज एक हु शिर धरु, अवरनी वाणि नवि काने सुणिए, सर्वदर्शन तणु मूल तुज शासन, तेणे ते एक सुविवेक थुणिए, आज० ॥ ६ ॥ तुझ वचनराग सुखसागर हु गणु, सकळ सुरमनुजसुख एक बिंदु, सार करजो सदा देव ! सेवक तणी, तु सुमतिकमलिनीवनदिणिंद आज० ॥ ७ ॥ ज्ञानयोगे धरी तृप्ति नवि लाजिए, गाजिए एक तुज वचनरागे, शक्तिउल्लास अधिको हुसे तुज थकी, तु सदा सकलसुखहेत जागे, आज० ॥ ८ ॥ वडतपागच्छनन्दनवने सुरतरु, हीरविजयो जयो सूरिराया, तास पाटे विजयसेन सुरीसरु, नित नमे नरपति जास पाया आज० ॥९॥ तास पाटे विजयदेव सुरीसरु, पाट तस गुरु विजयसिंह धोरी, जास हितसीखथी मार्ग ए अनुसर्यो, जेहथी मवि टळी कुमतिचोरी, आज० ॥ १० ॥ हीरगुरुशीस अवतंस मोटो हुओ, वाचका राज कल्याणविजयो हेमगुरु सम वडे शब्द अनुशासने शीस तस विबुधवर लाभविजयो आज० ॥ ११ ॥ शीस तस जीतविजयो जयो विबुधवर, नयविजय विबुध तस सुगुरुभाया, रहिए काशी-मठे जेहथी में भले, न्यायदर्शन विपुल भाव पाया आज० ॥ १२ ॥ जेहथी शुद्ध लहिए सकल नयनिपुण, सिद्धसेनादिकृत शास्त्रभाया, तेह ए सुगुरु करुणाप्रभो ! तुज सुगुण, वयणरयणायरे मुज नाया, आज० ॥ १३ ॥

कलश

इम सकलसुखकर दुरित भयहर स्वामि सीमधर तणी, ए विनती जे सुणे भावे ते लहे लीला घणी, श्रीनयविजयबुधचरणसेवक जसविनय बुध आपणी, रुचि शक्ति सारु प्रगट कीधी शास्त्रमर्यादा भणी ॥

इति महोपाध्याय श्रीमद् यशोविजयजी विरचित
श्री सीमधर जिन विज्ञप्ति
अपरनाम साडी त्रणसो गाथानु स्तवन सपूर्ण

श्रीमद् यशोविजयजीकृत
चढ्यापड्यानी सज्झाय, हितशिक्षा स्वाध्याय.

(रे कुमति ! का प्रतिमा उत्थापी ? – ए देशी)

चडवापडयानो अतर समझी, मम परिणामे रहीइरे, थोडो पण जिहा गुण देखाजे, तिहा अतिहि गहगहीइरे, लोको ! भोळविया मत भूलो, ए आकणी ॥ १ ॥ अतर्मुहूर्त अछे गुण–वृद्धि, अतर्मुहूर्त हाणि, चडवु पडवु तिहाताइ मलवु, ते गव किणहि न जाणी रे, लोको० ॥ २ ॥ बाह्य कष्टथी ऊचु चढवु, ते तो जडना भामा, सयम–श्रेणि-सिखरे चढवु, अतरग परिणामा रे, लोको० ॥ ३ ॥ तिहा निमित्त छे बाहिर किरिया, ते जो मूले साची, नहि तो दु खदायक पग साहमुं, मोर जए जिम नाची रे, लोको० ॥ ४ ॥ पासत्थादिक सरिखे वेषे, जूठा कारण दाखे, इक्वीस पाणीनो खप न करे, मीठा पाणी चाखे रे, लोको० ॥ ५ ॥ परिचित घरनी भिक्षा लेवे, न करे ते समुदाणी,

५७ परिचित अपरिचितना भेदभाव विना अनेक घरोथी भिक्षा न ले

वसति-दोष न तजे क्रीतादिक, जिन-आणा मनि आणी रे, लोको० ॥ ६ ॥ वस्त्र-पात्र-दूषण नवि टाळे, करे पतितनो सगो, कलह वैरनी वात उदीरे, मनमान्यु विहा रगो रे, लोको० ॥ ७ ॥ हीणो निज परिवार वधावे, आप कष्ट बहु दाखी, चढियो तेहने किणी परे कहीइ ? सूत्र नहि तिहा साखी रे, लोको० ॥ ८ ॥ न गणे सत्तरगुणनी हाणी सूत्र-क्रियानाही पगु, दुख सहशे जिम उपदेशमाळे, बोल्यो मथुरामगुरे, लोको० ॥ ९ ॥ एक मूल कारण विनवता, आवे मोटु हासु, पच महाव्रत किहा उच्चरिया ?, सेवु केहनु पासु रे, लोको० ॥ १० ॥ पहेलो जे व्रत जूठ उच्चरिया, ते तो नावे लेखे; फेरीने हवे ते उच्चरीइ, पच लोको जिम देखे रे, लोको० ॥ ११ ॥ मुनिने ते सघलु साचवबु वात घटे नवि कूडी, शुद्ध-प्ररुपकनी जे जे यतना, ते ते जाणो रुडी रे, लोको० ॥ १२ ॥ पहेला मूल गुणेथी हीणो, फरी दिक्षा ते लेवे, चरण अश होइ ते तप छेदे, उद्यम मारग सेवे रे, लोको० ॥ १३ ॥ एहवु भाष्य कह्यु व्यवहारे, क्रियामूढ नावि जाणे, अधिकाइ दाखी कोइ फेरे, मतवालो मत ताणे रे, लोको० ॥ १४ ॥ शुद्ध-कथकने कहे अज्ञानी, घणी उपधि जे धारे, द्विविध बाल ते मारग लोपे, भाख्यु अग आचारे रे लोको० ॥ १५ ॥ पासत्थादिक जाति न तजीइ, तो किम ऊचा चढिइ ? ज्ञानाधिक-आणाई रहीइ, ते साथे नवि वढिइ रे, लोको० ॥ १६ ॥ पासत्थो तेहने पण कहीइ, जे व्रत लेइ विराधे, धुरथी जेणे व्रत नवि लीधा, ते श्यो मारग साधे रे ? लोको० ॥ १७ ॥ सर्व शुद्धि विण पणि व्रत यतना, शुद्ध-कथकने छाजे, इच्छायोगी आप हीनता, कहेतो ते नवि लाजे रे, लोको० ॥ १८ ॥ कुसुमपुरे एक शेठ तणे घरि, हठि रह्यो सवेगी, उपरि इक सवर गुण-हीणो, पणि गुण-निधि गुणरगी रे. लोको० ॥ १९ ॥ सवेगी कहे 'उपरि छे ते, महा मोकलो पापी, गुणरगी कहे 'जे व्रत पाळे, तस कीर्ति जग व्यापी रे, लोको०

८ क्लेशनी वात फरी जागृत करे

॥ २० ॥ सवेगीना याह्य कष्टथी, थया लोक नहु रागी, कोइक शुद्ध-कथकना पणि मति, जेहनी ज्ञाने लागी रे, लोको० ॥ २१ ॥ चोमासु पूरी विहु विचरीया, तिहा आव्या इक नाणी, "बिहुमा अल्प अधिक भव कुणना ?" पूछे इम बहु प्राणी रे, लोको० ॥ २२ ॥ ज्ञानी कहे सवेगी निंदाई, घणा भव रडवडश्ये, शुद्ध-कथक बहिलो शिव-सुखमा, पाप खपावी भळश्ये रे, लोको० ॥ २३ ॥ सुणी एहवु बहुजन समज्या, भाव मार्ग रुचि जागी, ए उपदेशपदे सवि जोयो, जो तुह्ये गुणना रागी रे लोको० ॥ २४ ॥ शुद्ध चारित्र कलि माहि विरला, शुद्ध कथक पण थोडा, इच्छाचारी बहुला दीसे, जाणे वाका घोडा रे, लोको० ॥ २५ ॥ पासस्थादिकने पण सयम-ठाण कह्यो जे हीणो, शुद्ध प्ररुपक पवयणे शासन, कहिये न होजे खीणो ! रे, लोको० ॥ २६ ॥ जिन विण अछतु चरण न करीये, होय ते तो उद्धरीये, नवो मारग जन आगे भाखे, कहो किणि परि निस्तरीये रे ? लोको० ॥ २७ ॥ सजम-ठाण विचारी जोता जो न लहे निज सारो, तो जुठु बोलीने दुर्मति ! श्यु साधे गुण पारो रे ? लोको० ॥ २८ ॥ सयम विण सयतता थापे पापश्रमण ते भाख्यो, उत्तराध्ययने सरल स्वभावे, शुद्ध-प्ररुपक दाख्यो रे लोको० ॥ २९ ॥ सुविहित गच्छ क्रियानो धोरी, श्री हरिभद्र कहाये, एह भाव धरो ते कारणे, मुज मन तेह सुहाये रे, लोको० ॥ ३० ॥ शुद्ध कथक वचने जे चाले, मूल उत्तर गुण धारी, वचन क्षमादिक रगे लीना, ते मुनिनी बलिहारीरे, लोको० ॥ ३१ ॥ पूजानिक ज्ञाने ज्ञानाधिक, सयत चरण विलासे, एके नहि जेहने बिहु माहे, किम जइये तस पासे रे ? लोको० ॥ ३२ ॥ जिम जिम प्रवचन-ज्ञाने झीले, तिम सवेगे तरगी, ए आवश्यक-वचन विचारी, होजो ज्ञानना रगी रे, लोको० ॥ ३३ ॥ ज्ञानाधिकना गुणने दूषे, कष्ट करे अभिमानी, प्राये गठी लगे नवि आव्या, ते खूता अज्ञाने रे, लोको० ॥ ३४ ॥ तेहनी कष्टक्रिया अनुमोदे, उन्मारगथिर

थावे, तेहथी दुर्गतिना दुःख लहीजे, जे पचाशक कहावरे, लोको० ॥ ३५ ॥ कुलगणसघ तणी जे लज्जा ते आपददे टाळी, पाप भीरु गुरुआणाकारी, जिन मारग अजुआळी रे, लोको० ॥ ३६ ॥ ज्ञानाधिकनी दीक्षा लेवे, करे तस वयणे परखी, बीजानी षोडशके भाखी, होलीनृपने सरिखी रे, लोको० ॥ ३७ ॥ ज्ञानाधिकनो विनय विराधे, श्री जिनवर दुहवाये, विनयभेद समजाने किंकर, ज्ञानवतनो थाओरे लोको० ॥ ३८ ॥ ते माटे ज्ञानाधिकवयणे, रही क्रिया जे करशे, अध्यात्मपरिणति परिपाके, ते भवसायर तरशे रे लोको० ॥ ३९ ॥ वाचक जसविजये इम दाखी, शीख सर्वने साची पणि परिणमशे तेह तणे मनि, जेहनी मति नवि काची रे, लोको० ॥ ४० ॥

इति श्री सविग्न – पक्षीय – वदन चपेटा
स्वाध्याय (सज्झाय) समाप्त
इति श्री हितोपदेश स्वाध्याय

अमृतवेलिनी नानी सज्झाय

चेतन ! ज्ञान अजुआलजे, टालजे मोह सताप रे, दुरित निज सचित गालजे, पालजे आदर्युं आप रे, चेतन ! ज्ञान अजुआलजे ! राल तणी सगति परिहरे, मत करे मोईशु क्रोधरे, शुद्ध सिद्धात सभारजे, धारजे, मति प्रतिबोध रे, चेतन० ॥ २ ॥ हरख मत आणजे तूसव्यो, दूहव्यो मत धरे खेद रे, रागद्वेषादि सधि (सघे) रहे, मनि वहे चारनिर्वेद रे चेतन० ॥ ३ ॥ प्रथम उपकार मत अवगणे, तु गणे गुरु गुण शुद्ध रे, जिहा तिहा मत फरे फूलतो, झूलतो म म रहे मुद्ध रे चेतन० ॥ ४ ॥ समकित राग चि अंजजे नेत्र विवेक [illegible] ममकार मत लावजे,

अेक रे, चेतन० ॥ ५ ॥ गारव पकमा म म ढुळे, मत भळे मच्छर भाव रे, प्रीति म त्यजे गुणवतनी, सवनी पछिमा आदि रे, चेतन०॥ ६ ॥ बाह्य क्रिया कपट तु मत करे, परिहरे आर्तध्यान रे; मीठडो वदने मने मेळडो, इम किम तु शुभध्यान रे, चेतन० ॥ ७॥ चालतो आपछदे रखे, मत भखे पूठनो मस रे, वचन गुरुनु सदा भावजे, आप शोभावजे वश रे, चेतन० ॥ ८ ॥ हठ पड्यो बोल मत ताणजे, आणजे चित्तमा सान रे, विनयथी दुःख नाशे वाधशे, वाधशे जगतमा मान रे चेतन० ॥ ९ ॥ वोक वारे तुझ भोळव्ये, ओळवे धर्मनो पथ रे, गुरुवचनदीप तो कर धरे, अनुसरे प्रथम निर्ग्रंथ रे, चेतन० ॥ १० ॥ धारजे ध्याननी धारणा, अमृतरस पारणा प्राय रे, आलस अगनु परिहरे, तप करी मूपजे काय रे चेतन० ॥ ११ ॥ कलिचरित देखि मत भडकने, भडकजे मत शुभ योग रे, मूखडी नवम रस पावना, भावना आणजे भोग रे, चेतन० ॥ १२ ॥ लोकभयथी मन गोपवे, रोपवे तु महादोष रे, अपर सुकृत कीधा विना, तुझ दिन जशे शुभ शोषरे, चेतन०॥ १३॥ लोकसत्रावमा चतुर तु, काइ अछतु नवि बोल रे, इम तुझ सुगतिशुए, वाझशे जिम गृही मोळ र चेतन० ॥१४॥ ज्ञान–दर्शन –चरणगुण तणा, अति घणो धरे प्रतिबध रे, तन मन वचन साचो रहे, तु वहे साचली सधरे चेतन० ॥ १५ ॥ पोपट जिम पड्यो पाजरे, मनि धरे सबल सताप रे, तिम पडे प्रतिबधे तु, साधि सभाळजे आप रे, चेतन० ॥ १६ ॥ मन रमाडे शुभ प्रथमा, मत भमाडि भ्रमपाश रे, अनुभव रसवती चाखजे, राखजे सुगुरुनी आश रे, चेतन० ॥ १७ ॥ आपसम सकळ जग लेखवे, शीखवे लोकने तत्त्व रे, मार्ग कहेतो मत हारजे, धारजे तू दढ सत्त्व रे चेतन० ॥ १८ ॥ श्री नयविजय गुरु शिष्यनी, शीखडी अमृतवेल रे, साभळी जेह अे अनुसरे, ते लहे जस रगरेल रे चेतन० ॥ १९॥

---

५९ पाछळ निंदा करवी

इति श्री हितशिक्षा सज्झाय समाप्त.

जिन प्रतिमा स्थापन स्वाध्यायो

[१]

जिनजीनी प्रतिमावदन दीसे, समकितने आलावे, अगोपाग प्रगट अर्थ ए, मूरख मनमा नावेरे. कुमति ! का प्रतिमा उत्थापी ? ए मति शुभमति कापी रे कुमति ! का प्रतिमा उत्थापी ? मारग लोपे पापी रे, कुमति ! का प्रतिमा उत्थापी ? एह अरथ अनव अधिकारे, जुओ उपाग उववाइ, ए समकितनो मारग मरडी, कहे दया शी भाई रे ? कुमति० ॥ २ ॥ समकित विण सुरदुगति पामे, अरस विरस आहारे, जुओ जमाली दयाए न तरीओ, हुओ बहुल ससारी कु० ॥ ३ ॥ चारण मुनि जिन प्रतिमा वदे भाख्यु भगवई अगे, चैत्य साखी आलोयण भाखे, व्यवहारे मनरगे रे कु० ॥ ४ ॥ प्रतिमानतिफल काउस्सग्गे, आवश्यकमा भाख्यु, चैत्यअर्थ वैयावच्च मुनिने, दसमे अगे दाख्यु रे, कु० ॥ ५ ॥ सूरियाभ सुरे प्रतिमा पूजी, रायपसेणी माहिं, समकित विणु भवजलमा पडता, दया न साहे बाहि रे, कु० ॥ ६ ॥ द्रौपदीए जिनप्रतिमा पूजी, छठे अगे वाचे, तो शु एक दया पोकारी, आणा विण तु माचे रे, कु० ॥ ७ ॥ एक जिन-प्रतिमा-वदन-द्वेषे, सूत्र घणा तु लोपे, नदिमा जे आगम सख्या, आपमती का गोपे ? कु० ॥ ८ ॥ जिनपूजा फल दानादिक सम, महानिशीथे लहिए, अधपरपर कुमतिवासना, तो किम मनमा वहिए रे ? कु० ॥ ९ ॥ सिद्धारथ राये जिन पूज्या, कल्पसूत्रमा देखो, आणाशुद्ध दया मन धरतां, मिले सूत्रनो लेखो रे कु० ॥ १० ॥ थावर हिंसा जिन पूजामा, जो तु देखी धूने, तो पापी ते दूर देशथी, जे तुझ आवी पूजे रे

कु० ॥ ११ ॥ पडिकमणे मुनिदान विहारे, हिंसा दोष विशेष, लाभालाभ विचारी जोता, प्रतिमामा शो द्वेष रे ? कु०॥ १२ ॥ टीका चूर्णि भाष्य उवेख्या, उवेखी निर्युक्ति, प्रतिमा कारण सूत्र उवेख्या, दूर रही तुझ मुगति रे कु० ॥ १३ ॥ शुद्ध परपर चाली आवी, प्रतिमावदन वाणी, सम्मूर्च्छिम जे ए मूढ न माने, तेह अदीठ कल्याण रे कु० ॥ १४ ॥ जिनप्रतिमा जिन सरिखी जाणे, पचागीना जाण, कवि जसविजय कहे ते गिरुआ, कीजे तास वखाण रे कु० ॥ १५ ॥

---

[२]

सत्तर भेद पूजा साभळी, शु कुमति ! जगववे रे, शुद्ध परपर सूत्र न माने धाठी अधोअधेरे सत्तर० ॥ १ ॥ जिन प्रासाद करा व्यानु फल, महानिशीथे वखाण्यु, दान शील तप भावना सरीखु, तो शु ते नवी जाण्यु रे ? सत्तर० ॥ २ ॥ जिन प्रतिमा जिनदाढा पूजा, नति हित करण भाखीरे, सूरिआभ सुरने इहा जोयो, रायपसेणी साखीरे सत्तर० ॥ ३ ॥ मोक्ष तणु कारण जिनपूजा, बहुविध भगति कीधीरे, समकितदृष्टि सुरनर कहे, आगमवात प्रसिद्धीरे, सत्तर० ॥ ४ ॥ पुष्फारोहणादिक विधिसूत्रे, देखी पण काइ मूले रे ? हिंसा दाखी सूत्र उत्थापी, फळ पामी फूल मूले रे सत्तर० ॥ ५ ॥ जिनपूजामा दोष न दाख्यो, आधाकर्मिक भाति रे, जिन आणा विणु कुमति ! पडी तु, कुगुरु तणी शु वाते रे सत्तर० ॥ ६ ॥ नाग-भूतजक्षादि कहे ते, पूजा हिंसा लहीए रे, सूयगडागमा नवि जिन हते, ते किम हिंसा कहीए रे ? स० ॥ ७ ॥ मिथ्यादृष्टि हरीहर पूजे, जैन जिनेश्वर पूजेरे, तु तो बेमा एक न पूजे, कुमति पडिओ धूजे रे स० ॥ ८ ॥ सार सूत्रनु समझी जिननी, पूजा जे मन धारेरे, जसविजय कहे ते गिरुआ, तेह तर्या ने तारे रे स० ॥ ९ ॥

[३]

पच महाव्रत तणी रे चारि, त्रिविधत्रिविध जे भासी, आणा कूट नदी उतरता, अेह छींडी किहा राखी रे कुमति ! अेह छींडी किहा राखी ॥ १ ॥ नदीय तणा जीव घणु अजयोकारी, कां माथे पग मूको ? मुक्ति मार्ग रखवाला थईने, चोर थई का चूको रे, कु० ॥ २ ॥ अेक गुरुवदन आणी हेते, नदी पाप आचरता, कर्मे विशोधिने जन विमला, फळ अतर कुण करता ? कु० ॥ ३ ॥ जीव हिंसाना स्थानक जाणी, जिनप्रतिमा उत्थापी, सजम काजे नदीय तरता, के धरमी के पापी रे ? कु० ॥ ४ ॥ बत्रीस सूत्र माहि जिन_ प्रतिमा, सुर मानवे अे पूजी, भव्य हुइ ते कहो किमपि, तारी मत का मूझी रे ? कु० ॥ ५ ॥ निनजनमे सहु सुरपति आवे, नीरे कलश भरावे, अेक कोडी साठि लखि नवरावे, कहो ते शु फळ पावेरे ? कु० ॥ ६ ॥ दया दया मुखे पर पोकारे, दया मर्म नवि जाणे, सकळ जतु जेणे शरणे राख्या, नदीय मही का नाणे रे ? कुमति० ॥ ७ ॥

["जे प्रतमाथी आ स्वाध्याय लीधी छे ते प्रतमा बधी यशोविजयजीनी कृतिओ छे, तेथी जो के आमा छेवटे तेमना नामनो उल्लेख नथी तो पण आ तेमनीज कृति लागे छे ' गृ सा स]

चेतन अने कर्म

राग–धनाश्री, अथवा आशावरी

चेतन जो तु ज्ञान अभ्यासी, आपही बाधे आपही छाडे, निज मति शक्ति विकासी चे० ॥ १ ॥ जो तू आप स्वभावे खेले, आसा छोरी उदासी, सुर–नर–निम्नर–नायकसपत्ति, तो तुज घरकी दासी, चे०॥ २ ॥ मोह–चोर जन–गुण धन लूसे, देत आसगळ–

फासी, आसा छोर उदास रहे जो, सो उत्तम सन्यासी चे० ॥ ३ ॥ जोग लइ पर आस धरतु है, या ही जगमें हासी, तु जाने मैं गुणकु सचु, गुण तो जावें नासी चे० ॥ ४ ॥ पुद्गलकी तू आस धरत है, सो तो सवहि विनाशी, तू तो भिन्नरूप है उनतें, चिदानंद अविनाशी, चे० ॥ ५ ॥ धन खरचे नर बहुत गुमाने, करवत लेवे कासी, तोभी दुःख को अंत न आवे, जो आशा नहीं घासी, चे० ॥ ६ ॥ सुख जल विषम विषय मृगतृष्णा, होत मूढमति प्यासी, विभ्रमभूमि भइ परआशी, तू तो सहज विलासी, चे० ॥ ७ ॥ याको पिता मोह दुःख भ्राता, होत विषय-रति मासी, भव सुत भरता अविरति प्राणी, मिथ्यामति ए सासी चे० ॥ ८ ॥ आशा छोर रहे जो जोगी, सो होवे शिववासी, उनको सुजस वखाने ज्ञाता, अंतरदृष्टि प्रकासी चे० ॥ ९ ॥

मायानी भयानकता (सज्झाय)

[आप स्वभावमेंरे, अवधू सदा मगनमें रहना-ए देशी]

माया कारमी रे, माया म करो चतुर सुजान – ए टेक माया वाह्यो जगतविलुधो, दुःखियो थाय अजान, जे नर मायाए मोही रह्यो, तेने सुपने नहि सुख ठाण माया० ॥ १ ॥ नाना मोटा नरने माया, नारीने अधिकेरी, वळी विशेषे अधिकी माया, घरडाने झाझेरी माया० ॥ २ ॥ माया कामण माया मोहन, माया जग धूतारी, मायाथी मन सहुनु चळीयु, लोभीने वहु प्यारी माया० ॥ ३ ॥ माया कारण देशदेशांतर, अटवी वनमा जाय, जहाज बेसीने द्वीप-द्वीपांतर, जइ सायर झंपलाय माया० ॥ ४ ॥ माया मेली करी बहु भेळी, लोभे लक्षण जाय, भयथी धन धरतीमा घाले, उपर विषधर थाय माया० ॥ ५ ॥ जोगी-जति-तपसी-सन्यासी,

नग्न थइ परवरिया, ऊधे मस्तक अग्नि तापे, मायाथी न उगरिया माया० ॥ ६ ॥ शिवभूति सरिखो सत्यवादी, सत्य घोष कहेवाय, रत्न देखी तेहनु मन चलियु, मरीने दुर्गति जाय माया० ॥ ७ ॥ ऋषिदत्त मायाओ नडीयो, पडीयो समुद्र मोझार, मच्छ मारणीओ थइने मरीयो, पोत्यो नरक मोझार माया० ॥८॥ मन वचन कायाथी माया, मूकी वनमा जाय, धन धन ते मुनीसर राया, देव गांधर्व जस गाय माया० ॥ ९ ॥

नयनी अपेक्षाओ सामायिक (सज्झाय)

राग सोरठ, अथवा जयतसिरि धनाश्री

चतुर नर, सामायिक नय धारो ! टेक लोकप्रवाह छाड कर अपनी, परिणति शुद्ध विचारो चतुर नर० ॥ १ ॥ द्रव्यत अक्षय अभग आतमा, सामायिक निज जाति, शुद्ध रूप समतामय कहीओ, समह नयकी बाति, चतुर नर० ॥ २ ॥ अब व्यवहार कहे यू सब जन, सामायिक हुई जाओ, वातें आचरणा सो माने, औसा नैगम गाजे चतुर नर० ॥ ३ ॥ आचरणा ऋजुसूत्र शिथिलकी, विनु उपयोग न माने, आचारी उपयोगी आतम, सो सामायिक जाने चतुर नर० ॥ ४ ॥ शब्द कहे संजत जो औसो, सो सामायिक कहिये, चोथे गुणठाणे आचरणा, उपयोगे भिन्न लहिये चतुर नर० ॥ ५ ॥ अप्रमत्त गुणठाणे इर्याको, समभिरुढ नय साखी, केवल-ज्ञानदशाथिति उनकी, अेवभूते भाखी चतुर नर० ॥ ६ ॥ सामा-यिक नय जो न हु जाने, लोक कहे सो माने, ज्ञानवतकी सगति नाही, रहियो प्रथम गुणठाणे चतुर नर० ॥ ७ ॥ सामायिक नय अतर-दृष्टे, जो दिनदिन अभ्यासे, जग जसवाद लहे सो बैठे, ज्ञानवतके पासे चतुर नर० ॥ ८ ॥

श्रीमद् यशोविजयजीकृत सुगुरुनी सज्झाय

ढाळ पहेली

[ऋषभनो वश रयणायरु – ए देशी]

सद्गुरु जेहवा सेवियें, जे संयम गुण राता रे, निज सम जग जन जाणता, वीर वचनने ध्याता रे सद्गुरु ओहवा सेवियें — ए आकणी ॥ १ ॥ चार कषायने परिहरे गायु शुभमति भाखे रे, सजमवंत अकिंचना, सनिधि काइ न राखे रे, स० ॥ २ ॥ आणिय भोजन सूझतु, साहर्मिने देई भुजे रे, कलह–कथा सवि परिहरे, श्रुत सज्झाय प्रयुजे रे, स० ॥ ३ ॥ कटक ग्राम नगर तणा, सम सुघदु ख अहिआसे रे, निर्भय हृदय सदा करे, बहुविध तप सुविलासे रे स० ॥ ४ ॥ मेह मेदिनी परि सवि सहे, काउसग्गे परितापो रे, खमिय परीसह उद्धरे, जाति मरण भय व्यापो रे स० ॥ ५ ॥ करे क्रम वचन सुसयता, अध्यातम गुण लीनारे, विषयविभूति न अभिलषे, सूत्र अरथ रस पीनारे, स० ॥ ६ ॥ " ओह कुशील " न इम कहे, जेहथी परजन रुसे रे, जाति-मदादिक परिहरी, धर्मध्यान विभूसे रे स० ॥ ७ ॥ आप रही व्रत धर्ममा, परने धममा थापे रे, सर्व कुशील लक्षण त्यजी, बंधन भव तणा कापे रे स० ॥ ८ ॥ अध्ययने कह्या गुण घणा, दशवै-कालिक दशमे रे, कचन परि तेह परखिये, ओ कालि पणि विसमे रे स० ॥ ९ ॥

ढाळ त्रीजी

(चोपाईनी देशी)

उत्तराध्ययने कहियो ते तणो, मारग ते हवे भवियण ! सुणो, हिंसा अलिय अदत्त अबभ, छाडे पुन परिग्रहआरभ ॥ १० ॥ धूप-पुष्प वासित घर चित्र, मने न वछे परम पवित्र, जिहा रहे त्या इद्रिय सविकार, काम हेतु होवे इणि वार ॥ ११ ॥ स्त्री-पशु-पडक वर्जित ठाम, प्रासुक वास करे अभिराम, घर न करे करावे सदा, त्रस थावर वध जिहा छे सदा ॥ १२ ॥ अन्न-पान न पचावे पचे, पचतु देखी नवी मन रुचे, धान-नीर-पृथ्वी-तृण पात, निश्रित जीव तणो तिहा घात ॥ १३ ॥ दीव अगनी दीपावे नहि, शस्त्र पदधारा ते सही, कचन-तृण समवडि मन धरे, क्रयविक्रय वहिये नावि करे ॥ १४ ॥ खरीददार त्र्य करतो कहिउ, विक्रय करतो वलि वाणिउ, क्रयविक्रयमा वर्ते जेह, भिक्षुभाव नवि पाले तेह ॥ १५ ॥ क्रय-विक्रयमा बहुली हाणि, भिक्षावृत्ति महा गुणखाणि, इम जाणी आगम अनुसरी, मुनि समुदान करे गोचरी ॥ १६ ॥ रसलालची न करे गुणवत, रस अर्थे नवि भुजे दत, सयमजीवितरक्षा हेत, सतोषी मुनि भोजन लेत ॥ १७ ॥ अर्चन-रचना प्रजा-नति, नवि वछे शुभध्यानी यति, करी महाव्रत-आराधना, केवल ज्ञान लहे शुभ मना ॥ १८ ॥

ढाळ त्रीजी

(श्री सीमधर जिन त्रिभुवनभाण – ए देशी)

मारग साधु तणो छे भावे, दर्शन ज्ञानचारित्र स्वभावे, चरका दिक आचार कुपथ, पासत्थादिकनो निज यूथ ॥ १९ ॥ आधाकर्मी

दिक जे सेवे, काळहानि मुने दूषण देवे, जिनमारग छोडी भवकामी, धावे कुमत कुमारगगामी ॥ २० ॥ मारग एक अहिंसा रूप, जेहथी उतरीए भव कूप, सर्व युक्तिथी एहज जाणो, एहज सार समय मन आणो ॥ २१ ॥ ऊर्ध्व-अध-तीर्छो जे प्राणी, त्रस-थावर ते न हणे नाणी, एषणदोष त्यजे उद्देशी, पिंडसु अन्न न लिए शुभवेशी ॥ २२ ॥ आधाकर्मादिक अविशुद्ध, अवयव मिश्रित जे छे अशुद्ध, ते पण पाते दोषथी टाळे, ए मार्ग संयम अजुआळे ॥ २३ ॥ हणताने नवि मुनि अनुमोदे, कूपादिक न वखाणे प्रमोदे, पुण्य पाप विहां पूछे कोई, मौन धरे जिनआगम जोई ॥ २४ ॥ पुण्य कहे तो पातक पोषे, पाप कहे जन-वृत्ति विशोषे, केइ भाखे 'निर्दोष आहार,' सूझे श्रमणने इहां अधिकार ॥ २५ ॥ शुद्धि काजे सवि किरिया करतो, पूरण मार्ग भाख्य निरतो, भवजल पडता जनने जेह, दीप समान करे दुःख छेह ॥ २६ ॥ एह धर्म न लहे अज्ञानी, पळिय अपंडित पंडित मानी बीज-उदक-उद्देशिकभुजी, ध्यान धरे असमाधि प्रयुंजी ॥ २७ ॥ माछा भक्षण ध्याये पक्षी, ढुंकादिक जिम आमिष कक्षी, विषय-प्राप्ति ध्याये तिम पापी, बहुतारंभ परिग्रह थापी ॥ २८ ॥ विषय तणा सुख वंछे प्राणी, परिग्रहवंत न ते शुद्धवाणी, ते हिंसाना दोष न दाखे, निजमति कल्पित कारण भाखे ॥ २९ ॥ अध चलावे काणी नावा, तेह समर्थ न तीरे जावा, मिथ्यादृष्टि भवजल पडिया, पार न पामे तिम दुःख नडिया ॥ ३० ॥ जेह अतीत अनागतनाणी, वर्तमान तस एक कहाणी, दया मूळ समतामय सार, धर्म तेहनो परमाधार ॥ ३१ ॥ धर्म लही उपसर्ग-निपाते, मुनि न चले जिम गिरी घनवाते, इग्यारमुं अध्ययन संभारो, बीजे अंगे इम मन धारो ॥ ३२ ॥

ढाळ चोथी

(इणि पुरी कमल कोइ न लेसी – ए देशी)

वे मुनिने भामणडे जइए, जे व्रत-किरिया पाळेरे, सूधु भाखी जे वळी जगमा, जिन-मारग अजुआळेरे वे मुनिने भामणडे जइये, ओ आकणी ॥ ३३ ॥ जे सूधो मारग पाळे ते, शुद्ध कहिये निरधारी रे, बीजो शुद्ध कहे भजनाए, कह्यु भाव्य व्यवहारे रे वे० ॥ ३४ ॥ द्विविध बाल वे शुद्ध न भाखे, भाखे सवेगपाखी रे, अे भजनानो भाव विचारो, ठाणागादिक साखीरे. वे० ॥ ३५ ॥ कुगुरुवासना पास पड्याने, निज बळथी जे छोडेरे, शुद्ध कथक वे गुणमणि भरिया, मार्ग मुक्तिने जोडेरे वे० ॥ ३६ ॥ बहुल असयतनी जे पूजा, अे दसमु अछेरु रे, पडिशतके भ ख्यु ठाणागे, कलिलक्षण अधिकेरु रे, ते० ॥ ३७ ॥ अेहमा पण जिनशासन बळथी, जे मुनिपूना चलावेरे, तेह विशुद्ध कथक बुध जनना, सुरपति पण गुण गावे रे वे० ॥ ३८ ॥ करतो अति दुकर पण पडियो, आगीवार्य जजाळेरे, शुद्धकथन हेणो पण सुदर, बोले उपदेशमालेरे वे० ॥ ३९ ॥ शुद्ध प्ररुपक साधु नमीजे, शरण तेहनु कीजेरे, तास वचन अनुसारे रही, चिदानद फल लीजे रे वे० ॥ ४० ॥

गाथा

सिरिणयविजय गुरुण, पसायमासज्ज सयलकम्मकर ।
भणिया गुणा गुरुण, साहुणा जससिसेण एए ॥ १ ॥
इति श्री सुगुरुनी सज्झाय

आगम० ॥ ४ ॥ इम अनवस्थित दोष ते, सगविधी पावे, निबस-गधी आवमा, जिम कडुवा आवे आगम० ॥ ५ ॥

ढाळ पांचमी

(कुमति ! ए टिंडी किहां राखी — ए देशी)

चाले सत्र विरुद्धाचारे, भाखे सूत्रविरुद्ध, यथाछंद इच्छाए चाले, ते नहि मनमा शुद्धरे, प्राणी ! वीर-वचन चित्त धारो, ए आकणी ॥१॥ सूत्र परंपरा जे न मिळे, ते उत्सूत्र विचारो, अथ-परंपर चाल्यु आव्युं, ते पण तिम निरधारोरे प्राणी० ॥ २ ॥ निजमति कल्पित जनने भाखे, गारवरसमा माचे, यथाछंद गृहिकाज करतो, नवनव रूपे नाचेरे, प्राणी० ॥ ३ ॥ एक प्ररूपण तेहनी परणे, बीजी गमने खोटी, 'पडिलेहण मुहपत्तिए करश्युं, किसी परवरी मोटीरे ! प्राणी० ॥ ४ ॥ मावरविधि पात्रकची होश्ये, पडला काज चलोटे, लेपे दोष घणो इत्यादिक, चरण मृषा मलि छोटेरे, प्राणी० ॥ ५ ॥ चोमासे जो भेद न धरसे, तो हींड्ये श्यो दोष ? राजविरुद्ध गमन शु वारीयु ? मुनिने श्यो ततु पोषरे प्राणी० ॥ ६ ॥ वर्षाकाळे वस्त्र-विरहता लप करता नही हाणी, नित्यवासमा काई न दूषण साहसु हुए नाणीरे प्राणी० ॥ ७ ॥ इम गति विषयप्ररूपण खोटी ए सवि छे विस्तारे, आगममर्यी जोई लेजो, भाष्य सहित व्यवहारेरे, प्राणी० ॥ ८ ॥

ढाळ छठ्ठी

(सुरसुंदरी कहे शिरनामी — ए देशी)

इम पांचे कुगुरु प्रकाश्या आवश्यकमा जिम भाख्या, समकित-प्रकरण बहु भाखी, योगबिंदु प्रमुख इहा साखी, ए थानक सव

घडाकि, जो सेवे कारण व्यकि ॥ १ ॥ वो मुनिगुणनी नहि हाणी, ए उपदेशमाला वाणी ॥ २ ॥ जस परिग्रह प्रमुख अकाज, उन्मार्ग कहिए नावि लाज, ते तो बोल्यो विषमणो पाठ, जुओ पहिलो अग विसाल ॥ ३ ॥ आधाकर्मादिक थापे, यति नाम धरावे आपे, ते पापश्रमण जाणीजे, उत्तराध्ययने मन दीजे, ॥ ४ ॥ जे कुगुरु होए गच्छनाथ, नवि लीजे तेहनो साथ, अज्ञानी जे गच्छधारी, ते बोल्यो अनंत संसारी ॥ ५ ॥ भावाचारय जिन सरिखो, बीजा नथि उख परिख्यो, पूछे गौतम कहे वीर, मध्य महानिशीथ गभीर ॥ ६ ॥ जे ज्ञानक्रियानो दरियो, ते सद्गुरु गुणमणि भरियो, जे शुद्ध-प्ररूपक नाणी, ते पण उत्तम गुणखाणी ॥ ७ ॥ उमग्गो पण रज टाले, जे जिन मारग अजुआले, इम बोले गच्छाचार, गुरुज्ञानी जगदाधार ॥ ८ ॥ ज्ञानी छे केवलीकल्प, ए कल्पभाष्यनो जल्प, जे शुद्ध कथक गुणधारी, ते सद्गुरुनी बलिहारी ॥ ९ ॥

अंतिम गाथा

एसो कुगुरुसज्झाओ, जिनवयणाउ फुड भणिओ ।
सिरिणयविजयमुणीण, सीसेण जणाण बोहट्ठा ॥ १ ॥

श्रीऋषभनाथजिन चैत्यवन्दन

सद्भक्त्यानतमौलिनिर्जरवरभ्राजिष्णुमौलिप्रभा—, सम्मिश्रारुणदीप्तिशोभिचरणाम्भोजद्वय सर्वदा । सर्वज्ञ पुरुषोत्तम सुचरित धर्मार्थिना प्राणिना, भूयाद् भूरिविभूतये मुनिपति श्रीनाभिसूनुर्जिन ॥ १ ॥ सद्बोधोपचित सदैव दधता भौद्ध्यवापश्रियो, येनाज्ञानतमोवितानमखिल निश्चितमन्व क्षणम् । श्रीशत्रुञ्जयभूधरैकशिखर निवोद्भासयन्, भ ... जिन म ... जयतु मे

यो विज्ञानमयो दगत्त्रयगुरुर्यं सर्वलोका श्रिता, सिद्धिर्येन वृता समस्तजनता यस्मै नतिं तन्वते। यस्मान्मोहमतिर्गता मतिभृता यस्यैव सेव्य वचो, यस्मिन् विश्वगुणास्तमेव सुतरा वन्दे युगादीश्वरम् ॥ ३ ॥

श्रीअजितनाथजिन चैत्यवन्दन

सकलसुखसमृद्धिर्यस्य पादारविन्दे, विलसति गुणरक्ता भक्तराजीव नित्य। त्रिभुवनजनमान्य शान्तमुद्राभिराम, स जयति जिनराजस्तुङ्गवारङ्गतीर्थे॥ १॥ प्रभवति किल भव्यो यस्य निर्वर्णनेन, व्यपगतदुरितौघ प्राप्तमोदप्रपञ्च । निजबलजितरागद्वेषविद्वेषिवर्गं, तमजितवरगोत्र सिंधनाथ नमामि ॥ २ ॥ नरपतिजितशत्रोर्वंशरत्नाकरेन्दु, सुरपतियतिमुख्यैर्भक्तिदक्षे समर्च्य । दिनपतिरिव लोकेऽपास्तमोहान्धकारो, जिनपतिरजितेश पातु मा पुण्यमूर्ति ॥ ३ ॥

श्रीसम्भवजिन चैत्यवन्दन

यद्भक्त्यासक्तचित्ता प्रचुरतरभवभ्रान्तियुक्ता मनुष्या । सजाता साधुभावोल्लसितनिजगुणान्वेषिण सद्य एव। स श्रीमान् सम्भवेश प्रशमरसमयो विश्वविश्वोपकर्ता, सद्धर्ता दिव्यदीप्ति परमपदकृते सेव्यता भव्यलोका ॥ १॥ शुक्लध्यानोदकेनोज्वलमतिशयितस्वच्छभावाद्भुतेन, स्वस्मादात्य वृत्त शिवपदनिगम कर्मपङ्कप्रपञ्चम्। नीरन्ध्र दूरयित्वा प्रकृतिमुपगतो निर्विकल्प स्वरूप, सेव्यस्तार्क्ष्यध्वजोऽसौ जगति जिनपतिर्वीतराग सदैव ॥ २ ॥ वार्द्धौ विद्योति रत्नप्रकर इव परिभ्राजते सर्वकाले, यस्मिन्निशेषदोषव्यपगमविशदे श्रीजितारेस्तनूजे। दुष्प्रापो दुष्टसत्त्वै स्फुटगुणनिकर शुद्ध-

बुद्धिक्षमादि, कल्याणश्रीनिवास स भवति यदताऽभ्यर्चनीयो न केषाम् ? ॥ ३ ॥

श्रीअभिनन्दनजिन चैत्यवन्दन

विशदशारदसोमसमानन कमलकोमलचारुविलोचन । शुचिगुणः सुवरामभिनन्दन ! जय सुनिर्मलताञ्चितभूघन ॥ १ ॥ जगति कान्तिहरीश्वरलाञ्छित-कमसरोरुह ! भूरिकृपानिधे ! मम समीहितसिद्धिविधायक त्वदपर कमपीह न तर्कये ॥ २ ॥ प्रवरसंवर ! संवरभूपवेस्तनय ! नीतिविचक्षण ! ते पदम् । शरणमस्तु जिनेश ! निरन्तर रुचिरभक्तिमुयुक्तिभृतो मम ॥ ३ ॥

श्रीसुमतिजिन चैत्यवन्दन

सुवर्णवर्णो हरिणा सवर्णो मनोवन मे सुमतिर्वलीयान् । गतस्ततो दुष्टकुटिराग-द्विपेन्द्र ! नैव त्वयितरत्र कार्यो ॥१॥ जिनेश्वरो मेघनरेन्द्रसूनु-र्घनोपमो गर्जति मानसे मे । अहो गुरुद्वेषहुताशन ! त्वामसौ शम नेष्यति सद्य एव ॥ २ ॥ इतः सुदूर व्रज दुष्टबुद्धे ! समं दुरात्मीयपरिच्छदेन । सुबुद्धिभर्ता सुमतिर्जिनेशो मनोरमं स्वान्तमितो मदीयम् ॥ ३ ॥

श्रीपद्मप्रभजिन चैत्यवन्दन

उदारप्रभामण्डलैर्भासमान कृतात्यन्तदुर्दान्तदोषापमान । सुसीमाङ्गज ! श्रीपतिर्देवदेवः सदा मे मुदाऽभ्यर्चनीयस्त्वमेव ॥१॥ यदीय मनः पङ्कजं नित्यमेव त्वयाऽलङ्कृतं ध्येयरूपेण देव ! प्रधानस्वरूपं त्वमेवातिपुण्य जगन्नाथ ! जानामि लोके सुधन्यम् ॥ २ ॥ अतोऽधीश ! पद्मप्रभाऽऽनन्दधाम ! स्मरामि प्रणाम तवैवाङ्क नाम । मनोवाञ्छितार्थप्रदं योगिगम्यं यथा चक्रवाको रवेर्धाम रम्यम् ॥ ३ ॥

श्रीचन्द्रप्रभजिन चैत्यवन्दन

अनन्तकान्तिप्रकरेण चारुणा कलाधिपेनाभितमात्मसाम्यत. । जिनेन्द्र ! चन्द्रप्रभ ! देवमुत्तम भवन्तमेवात्महृदि विभावये ॥ १ ॥ उदारचारित्रनिधे जगत्प्रभो ! तवाननाम्भोजविलोकनेन मे। त्वया समस्ताऽस्तमितोदित सुख यथा तमिस्रा दिवमर्कतेजसा ॥ २ ॥ सदैव ससेवनतत्परे जने भवन्ति सर्वेऽपि सुरा: सुहृद्वय । समग्रलोके समचित्तवृत्तिना त्वयैव सञ्जातमतो नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

श्रीसुविधिनाथजिन चैत्यवन्दन

विश्वाभिवन्द्य मकराङ्कितपादपद्म ! सुग्रीवजात ! जिनपुङ्गव शान्तिसद्म ! भव्यात्मतारणपरीत्तमयानपात्र ! मा तारयस्व भववारिनिधेर्विरूपात् ॥ १ ॥ नि:शेषदोषविगमोद्भवमोक्षमार्ग भव्या श्रयन्ति भवदाश्रयतो मुनीन्द्र ! । ससेवित सुरमणिर्भुहुधा जनाना किं नाम नो भवति कामितसिद्धिकारी ? ॥२॥ विश्व कृपारसनिधिं सुविधे। स्वयम्भूर्मत्वा भवन्तमिति विज्ञपयामि तावत् । देवाधिदेव ! तव दर्शनवल्लभोऽहं शश्वद्भवामि भुवनेश ! तथा विधेहि ॥ ३ ॥

श्रीश्रेयासनाथजिन चैत्यवन्दन

चिरपरिचिता गाढव्याप्ता सुबुद्धिपराङ्मुखी निजबलपरिस्फूर्त्योद्दमा सममतया मम । व्यपगवती दूर दुष्टा स्वनिष्ठसुदृष्टिता अपचितसहा सद्यो भूत्वा यदीयसुदृष्टित ॥ १ ॥ निरुपमसुखश्रेणिहेतुर्निराकृतदुर्दशा शुचितरगुणग्रामावासो निसर्गमहोज्ज्वला । हृदयकमले प्रादुर्भूता सुवस्त्वरुचिर्मम विदलितभवभ्रान्तिर्यस्याप्यजस्रमनुस्मृते ॥२॥ उपकृतिमतिर्दाने दक्षो निरस्तजगद्व्यथ समुचितकृतिर्विज्ञाना सुप्रकाशितसत्पथ । नृपगणगुरोर्विष्णोर्वंशे प्रभाकरसन्निभ स भवतु मम श्रेयासो न प्रबोधसमृद्धये ॥ ३ ॥

श्रीविमलनाथजिन चैत्यवन्दन

ममारेऽस्मिन् महति महिमाऽमेयमानन्दिरूप, त्वा सर्वज्ञ सकलसुकृतिश्रेणिससेव्यमानम्। दृष्ट्वा सम्यग्विमलसदसज्ज्ञानधाम प्रधान, सम्प्राप्तोऽहं प्रशममुखदं सम्भृतानन्दवीचिम् ॥ १ ॥ ये तु स्वामिन्! कुमतिपिहितस्फारसद्बोधमुद्रा, सांख्याकारा प्रतिकृतिमपि प्रेक्ष्यते विश्वपूज्यान्। द्वेषोद्भूते कलुषितमनोवृत्तय स्यु प्रकाम, मन्ये तेषा गतशुभदशा का गतिर्भाविनीति ? ॥ २ ॥ स्यामासूनो! प्रतिदिनमनुस्मृत्य विज्ञानिवाक्य, हित्वाऽनार्यं कुमतिवचन ये भुवि प्राणभाज । पूर्णानन्दोल्लसितहृदयास्त्वा समाराधयन्ति, श्लाघ्याचारा प्रकृतिसुभगा सन्ति धन्यास्त एव ॥ ३ ॥

श्रीशान्तिनाथजिन चैत्यवन्दन

विपुलनिर्भरकीर्तिभरान्वितो जयति निर्जरनाथनमस्कृत । लघु विनिर्जितमोहधराधिपो जगति य प्रभुशान्तिधराधिप ॥ १ ॥ विहितशान्तिसुधारसमज्जन निखिलदुर्जयदोषविवर्जित । परमपुण्यवता भजनीयता गतमनन्तगुणै सहित सताम्॥ २ ॥ तमचिरात्मजमीशमधीश्वर भविकपद्मविबोधदिनेश्वरम् । महिमधाम! भजामि जगत्त्रये वरमनुत्तरसिद्धिसमृद्धये ॥ ३ ॥

श्रीवीरजिन चैत्यवन्दन

वरेण्यगुणवारिधि परमनिर्वृत सर्वदा, समस्तकमलानिधि सुरनरेन्द्रकोटिश्रित । जनालिसुखदायको विगतकर्मवारो जिन:, मुमुक्षुजनसङ्गमस्त्वमसि वर्धमानप्रभो!॥१॥ जिनेन्द्र! भवतोऽद्भुत सुखमुदारबिम्बस्थित, विकारपरिवर्जित परमशान्तमुद्राङ्कितम् । निरीक्ष्य मुदितेक्षण क्षणमितोऽस्मि यद्भावना, जिनेश!

हरपतु संघ मे सर्वदा ॥२॥ विवेकिजनवल्लभ भुवि दुरात्मना दुर्लभ दुरन्तदुरितव्यथाभरनिवारणे तत्परम्। नयाङ्गपदपद्मयोर्नुतमनि न्यपीरत्नमो। प्रभूतसुखसिद्धये मम भिराय सम्पद्यताम् ॥३॥ इति॥

आवती चोवीसीनु चैत्यवंदन

पद्मनाभ प्रथम जिणंद नृप श्रेणिक जीव, सुरदेव बीजा नमु सुपार्श्व श्रावक जीव॥ सुपास त्रीजा वडी नृप कोणिक उदयी, स्वयंप्रभ चोथा जिणंद पोटिल मुनि भाइ। सर्वानुभूति जिन पांचमा दढायु श्रावक जाण, देवश्रुत छठा जिन कार्तिक सेठ वखाण। श्री उदायी जिन सातमा शंख श्रावक जीव, श्री पेढाल जिन आठमा आनन्द मुनि जीव॥ नवमा पोटिल वन्दिए जीव जेह सुनन्द, शतकीर्ति दशमा नमु शतक श्रावक जाण। श्री सुव्रत अग्यारमा देवकी राणी जाण, श्री अमम जिन बारमा जीव केशव गुणखाण॥ निष्कषाय जिन तेरमा सत्यकी विद्याधर, निष्पुलाक जिन चौदमा बलभद्र सुहंकर॥ श्री निर्मम जिन पंदरमा जीव सुलसा साधी, चित्रगुप्त जिन सोलमा रोहिणी जीव भाखी॥ श्री समाधि सत्तरमा रेवती श्राविका जाण। श्री संवर अढारमा जीव शताङ्क वखाण॥ श्री यशोधर ओगणीसमा, कृष्ण द्वीपायन जीव। विजय नामे वीसमा जिणंद, जीव कर्ण सोहाय॥ एकवीसमा श्री मल्लीनाथ कृष्ण नारद कहिए, अबड श्रावक जीव देव बावीशमा लहिए। अनन्तवीर्य तेवीसमा जीव अमरनो जेह, भद्रंकर चोवीशमा स्वातिबुद्ध गुण गेह। ए चोवीसे जिनवरा ए होरो आवते काले, भाव धरीने वन्दिए कर जोडीने भाले॥ लछन वर्ण प्रमाण आयु अवर सवि सरखा, सघवि जिन चोवीस परे पढते भावे निरखया। पंचकल्याणक एहनाए होशे एहज दिवस, धीरविमल गुरुनो कहे, ज्ञानविमल सूरीश॥ इति॥

चोवीस जिन लछन चैत्यवंदन

वृषभ लछन ऋषभ देव, अजितलछन हाथी, संभव लछन घोडलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभिनंदन लछन कपि, कौंच लछन सुमति, पद्मलछन पद्मप्रभु, विश्वंदवा सुमति ॥ २ ॥ सुपार्श्व लछन साथीयो, चंद्रप्रभु लछन चंद्र, मगर लछन सुविधि प्रभु, श्रीवत्स शीतल जिणंद ॥ ३ ॥ लछन खड्गी श्रेयासने, वासुपूज्यने महीष, सूअर लछन विमल देव, भविया ते नमो शीष ॥ ४ ॥ सिंचाणो जिन अनंतने ग, वज्र लछन श्रीधर्म, शांतिलछन मृगलो, राखे धर्मनो मर्म ॥ ५ ॥ कुंथुनाथ जिन बोकडो, अरजिन नंदावर्त्त, मल्लि कुंभ वखाणीए, सुव्रत कच्छप विख्यात ॥ ६ ॥ नमि जिनने नीलो कमल, पामिए पंकज नाहि, शंख लछन प्रभु नेमजी, दीसे ऊंचे आहि ॥ ७ ॥ पार्श्वनाथ जीने चरण सर्प, नीलवरण शोभित, सिंह लछन कंचन तनु, वर्धमान विख्यात ॥ ८ ॥ एणी परे लछन चितवीए, ओळखीए जिनराय, ज्ञान विमल प्रभु सेवता लक्ष्मी रतन सूरिराय ॥ ९ ॥

श्री ऋषभजिन चैत्यवंदन

अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेसर जिनराज नमो। प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिद्धया सघळा काज नमो ॥ अ० १ ॥ प्रभु पारगत परम महोदय, अविनाशी अकळक नमो, अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचनजलधिमयंक नमो ॥ अ० २ ॥ तिहुअण भवियण जन मनवंछिय, पूरण देव रसाल नमो, ळळी-ळळी पाय नमुं हुं भावे, कर जोडीने त्रिकाल नमो ॥ अ० ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जगजन सज्जन, नयनानंदन देव नमो, सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहनिश सेव नमो ॥ अ० ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तुं निष्कारण बंधु नमो, शरणागत भविने हित-वत्सल, तुहि कृपारससिंधु नमो ॥ अ० ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे

दर्शित, लोकालोकस्वभाव नमो, नाशित सकल कलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अ० ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित–कारक जगजननाथ नमो, घोर अपार भवोदधि तारण, तु शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ७ ॥ अशरण शरण निराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो, बोधि दियो अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अ० ८ ॥

श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन

जगन्नाथने ते नमु हाथ जोडी, करु विनति भक्तिशु मान मोडी, कृपानाथ संसार कूपार तारो, लह्यो पुण्यथी आज देदार तारो ॥ १ ॥ सोहिला मळे राज्य देवादि भोगो, परम दोहिलो एक तुज भक्ति जोगो, घणा काळथी तु लह्यो स्वामी मीठो, प्रभु पारगामी सहु दुःख नीठो ॥ २ ॥ चिदानंद रूपी परब्रह्म लीला, विलासी विभो ! त्यक्तमायाप्रिनीला, गुणाधार जोगीश नेता अमायी, जय त्वं विभो ! भूतले सुखदायी ॥ ३ ॥ न दीठी जेणे तादृशी योगमुद्रा, पड्या रातदिसे महामोह निद्रा, किसी तास होशे गति ज्ञानसिंधो, भमता भवे हे जगज्जीवबंधो ॥ ४ ॥ सुधारसदीने दर्शन नित्य देखे, गणु तेहनो हे विभो ! जन्म लेखे, त्वदाज्ञा वशे जे रह्या विश्व माहे, करे कर्मनी हाण क्षण एक माहे ॥ ५ ॥ जिनेशाय नित्य प्रभाते नमस्ते, भवि ध्यान होजो हृदये समस्ते, स्तवो देवसदेवने हर्ष पूरे, सुखाभोज भाळी हेज उरे ॥ ६ ॥ कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी, सुणे पर्षदा बार बेठी भलेरी, सुधाभोधधारा समी ताप टाळे, बेहु पखवा साभळे एक ढाले ॥ लहे मोक्षना सुखलीला अनती, वर क्षायिक ज्ञान भावे लहती, चिदानंद चित्ते धरे ध्येय जाणी, कहे राम नित्ये जपो जैनवाणी ॥ ८ ॥

जिनपूजानु चैत्यवदन

प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिन मदिर केरो, पुण्य भणी करशुं सफल, जिन वचन भलेरो ॥ १ ॥ देहरे जावा मन करे, चोथ तणु फल पामे, जिनवर जुहारवा उठता, छठ पोते आवे ॥ २ ॥ जइशु जिनवर भणी, मारग चालता, होवे द्वादश तणु पुण्य, भक्ति म्हालता ॥ ३ ॥ अर्ध पथ जिनवर भणी, पन्नर उपवास, दीठे स्वामी तणो भुवन, लहिए एक मास ॥ ४ ॥ जिनवर पासे आवता, छमासी फल सिद्ध, आव्या जिनवर बारणे, वर्ष तप फल लीध ॥ ५ ॥ सो वर्ष उपवास पुण्य, प्रदक्षिणा देता, सहस वर्ष उपवास पुण्य, जे नजरे जोता ॥ ६ ॥ फल घणो फूलनी माळनो, प्रभुकठे ठवता। पार न आवे गीत नाद, केरा फल थुणता ॥ ७ ॥ शिर पूजी पूजा करीए, सूर धूप तणो धूप, अक्षत सार ते अक्षय सुख, दीपे तनुरूप ॥ ८ ॥ निर्मल तनमन करीए, थुणता इद्र जगीश, नाटक भावना भावतां, पाम पदवी जगीश ॥ ९ ॥ जिनवर भक्ति वाळीए, प्रेमे प्रकाशी, सुणी श्रीगुरुवयणसार, पूर्व ऋषिए भाखी ॥ १० ॥ अष्ट कर्मने टाळवा, जिन मदिर जइशु, भेटी चरण भगवतना, हव निर्मळ थइशु ॥ ११ ॥ कीर्तिविजय उवज्झायनोए, विनय कहे कर जोड, सफळ होजो मुज विनति, जिन सेवाना कोड ॥ १२ ॥

चोवीश तीर्थंकरना तप, दीक्षा, नगरी विगेरेनु चैत्यवदन

सुमतिनाथ एकासणुं करी सयम लीध, मल्लिनाथ जिनराज दोय अठमश्र प्रसिद्ध ॥ १ ॥ छठ्ठ भक्त करी अवर सर्व, लिये सयम भार, वासुपूज्य करी चोथभक्त, थया श्री अणगार ॥ २ ॥ वर्षांते पारणु करेए, इक्षुरसे रिसहेस, परमान्ने बीजे दिने, पारणुं अवर जिनेश ॥ ३ ॥ विनीता नयरीए लीए, दीक्षा श्री प्रथम जिणद, द्वारापुरी नेमिनाथ, सहसावनने वृद ॥ ४ ॥ शेष तीर्थंकर जन्मभू... [illegible]

भार, अणपरण्या श्री मल्लिनाथ, नेमिनाथ कुमार ॥५॥ वासुपूज्य पास वीरजीए, भूप थया नथि एह, अवर राज्य भोगवी थया, ज्ञानविमळ गुणगेह ॥ ६ ॥ चार सहस्सशु ऋषभदेव, श्री वीर एकाकी; त्रण शत साथे मल्लि पास, सहस साथे बाकी॥ ७ ॥ षट् शत साथे वासुपूज्य लहे सयम भार, मन पर्यव तव ऊपजे सवि जिनने सुखकार ॥ ८ ॥ एम चोवीशे जिनवराए, सभार्या सुख थाय, ज्ञानविमळ सूरि इम कहे, होजो जिन सुपसाय॥ ९॥ इति ॥

सामान्य चैत्यवन्दन

तुज मूर्तिने निरखवा मुज नयणा तरसे, तुज गुणगणने बोलवा रसना मुज हरसे, ॥ १॥ काया अति आनद मुज तुम युगपद फरसे, तो सेवक तार्या विना कहो किम हवे सरसे ॥ २ ॥ एम जाणीने साहिबाए नेक नजरे मोहे जोय, ज्ञानविमळ प्रभु सुनजरथी, ते शु जे नावि होय ? ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीऋषभजिन स्तुति

भव्याम्भोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली – रम्भासामज नाभिनन्दन ! महानष्टापदाभासुरे । भक्त्या वन्दितपादपद्म विदुषां सम्पादय प्रोज्झिता–रम्भासाम जनाभिनन्दन महानष्टापदाभासुर ॥१॥ ते व पान्तु जिनोत्तमा क्षतरुजो नाचिक्षिपुर्यन्मनो, दारा विभ्रमरोचिता सुमनसो मन्दारवा राजिता । यत्पादौ च सुरोज्झिता सुरभ–याञ्चक्रु पतन्त्योऽम्बरा दापविभ्रमरोचिता सुमनसो मन्दारवाराजिता ॥ २ ॥ शान्ति वस्तनुतान्मियोऽनुगमनात् यन्नैगमाद्यर्नयैरक्षोभ जन हेऽतुला छितमदोद्दीर्णांगजाल कृतम् । तत्पूज्यर्जगता जिनैः प्रवचन दृप्यत्कुवाद्यावली–रक्षोभञ्जनहेतुलाञ्छितमशे दीर्णाङ्गजाल–

कृतम् ॥ ३ ॥ शीतांशुत्विषि यत्र नित्यमदधत् गन्धाढ्यधूलीकणा, नाली केसरलालसा समुदिताऽऽगुञ्जमरीभासिता। पायाद्व श्रुतदेवता निदधती तत्राब्जकान्ती क्रमौ, नालीके सरलालसा समुदिता गुञ्जमरीभासिता ॥ ४ ॥

श्रीशान्तिनाथजिन स्तुति

राजन्त्या नवपद्मरागरचिरे पादैर्जिताधापदा-द्रेऽक्षेप द्रुतजातरूपविभया तन्वाऽऽर्य धीर! क्षमाम्। बिभ्रत्यामरसेव्यया जिनपते श्रीशान्तिनाथाऽस्मरो द्रेऽपद्रुत जातरूप विभयाऽवन्त्वार्यधी रक्ष माम् ॥१॥ ते जीयात्सुरविद्धियो जिनवृषा माला दधना रजो राज्या मेदुरपारिजात-सुमन सन्तानकान्ता चिता । कीर्त्या कुन्दसमत्विषेऽपदपि ये न प्राप्तलोकत्रयी राज्या मेदुरपारिजातसुमन सन्तानकान्ताञ्चिता ॥२॥ जैनेन्द्र मतमातनोतु सतत सम्यग्दृशां सद्गुणा-लीलाभ गमहारि भिन्नमदन तापापहृद्यामरम् । दुर्निर्भेदनिरन्तरान्तरतमो-निर्नाशि पर्युल्लसल्लीलाऽभङ्गमहारिभिन्नमदनन्ताऽपापहृद्यामरम् ॥३॥ दण्डच्छत्रकमण्डलूनि कलयन् स ब्रह्मशान्ति क्रियात्-सन्त्यज्यानि शमी क्षणेन शमिनो मुक्ताक्षमाली हितम्। तप्ताष्टापदपिण्डपिङ्गलरुचिर्योऽचारयन् मूढता, सत्यज्यानिशमीक्षणेन शमिनो मुक्ताऽक्षमालीहितम् ॥ ४ ॥

श्रीनेमिनाथजिनस्तुतिः

चिक्षेपोर्जितराजक रणमुखे यो लक्ष्मसङ्ख्य क्षणात्-क्रम जन । आसमानमहम राजीमतीतापद । त नेमि नम नम्रनिर्वृतिकर चक्रे यदूना च यो, दक्षामञ्जनभामभानमहस राजीमतीतापदम् ॥ १ ॥ प्राप्तार्जीजितराजका रज इव ज्यायोऽपि राज्य जवात्, य कन्ये महोदधावपि हित्वा गाली विहायोदितम्। सता सर्वत

हरतु नो राजी जिनाना भवा–यास सारमहो दधाव पिहिताशाली-विहायोऽदितम् ॥२॥ सुवर्णाणुपदार्थदर्शनवशात् भास्वत्प्रभायास्त्रपा-मानत्याजनकृत्तमो हरत मे शस्ताऽदरिद्रोहिका । अक्षोभ्या तव भारती जिनपते प्रोन्मादिना वादिना, मानत्या जनकृत्तमोहरवमेश स्तादरिद्रोहिका ॥ ३॥ हस्तालम्बितचूतलुम्बिलतिका यस्या जनोऽभ्यागमत्, विश्वासेविततास्रपादपरता वाचा रिपुत्रासकृत् । सा भूति वितनोतु नोऽर्जुनरुचि सिंहेऽधिरूढोल्लसद्–विश्वासे वितताम्रपादपरताऽम्बा चारिपुत्राऽसकृत् ॥ ४ ॥

श्रीपार्श्वनाथजिनस्तुतिः

मालामालानबाहुर्दधददधदर यामुदारा मुदारा–ल्लीनाऽलीनामिहाली मधुरमधुरसा सूचितोमाचिता मा । पातात्पातात्स पार्श्वो रुचिरुचिरदो देवराजीव राजी, पत्रापत्रा यदीया तनुरतनुरवो नन्दको नोदको नो ॥१॥ राजी राजीववक्त्रा तरलतरलसत्त्येतुरङ्गत्तुरङ्ग - व्यालव्यालमयेधाचितरचितरणे भीतिहृधाऽतिहृद्या । सारा साराज्जिनानामलममलमतेर्बोधिका माऽधिकामा,–दव्यादव्याधिकालानन जननजरात्रासमानाऽसमाना ॥ २ ॥ सद्योऽसद्योगभिद्यागमलगमल्य जैनराजीनराजी–नूता नूतार्थधात्रीह ततहततम पातकाऽपातकामा । शास्त्री शास्त्री नराणा हृदयहृदयशोरोधिकाऽबाधिका वाऽदेयादे यान्मुद वे मनुजमनु जरा त्याजयन्ती जयन्ती ॥३॥ याता या तारतेजा सदसि सदसिभृत् कालकान्तालकान्ता,–ऽपारिं पारिन्द्रराज सुरवसुरवधूपूजिताऽर जिताऽर । सा त्रासात्रायतां त्वामविषमविषभृद्भूषणाऽभीषणा भी–हीनाऽहीनाम्यपत्नी कुवलयवलयश्यामदेहाऽमदेहा ॥ ४ ॥

श्रीवीरजिन स्तुतिः

स्फूर्जद्भक्तिनतेन्द्रशीर्षविलसत्कोटीररत्नावली, रङ्गत्कान्तिकरम्बिताङ्घ्रिवनसच्छ्रेणिसमुज्जृम्भितम् । सिद्धार्थाङ्गरुहस्य कीर्तित-

गुणस्याग्रीद्य पातु व, स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभो शैशवे ॥१॥ श्रेय शर्मकृते भवन्तु भवता सर्वऽपि तीर्थाधिपा, येषा जन्ममहः कृत सुरगिरौ वृन्दारकैः सादरैः, पीलोमीस्तनगर्व-खण्डनपरै. कुम्भैः सुवर्णाङ्कै, हसामाद्दलपद्मरेणुकपिशक्षीराम्भोभृतैः ॥ २ ॥ सेवे सिद्धान्तमुद्यन् सकलमुनिजनप्रार्थितामर्त्यरत्न, गर्वोद्मबाटवादीद्विरदघनघटादर्पकण्ठीरवाभम् । मिथ्याधर्मान्धकारे स्फुटविकटकरादित्यमत्यप्रभ ना, अर्हद्वक्त्रप्रसूत गणधररचित द्वादशाङ्ग विशालम् ॥ ३ ॥ यक्षो यक्षाधिपजो महिमगुणनिधिर्वज्रदोर्दण्डधारी, सर्वे सर्वानुभूतिर्विदलयतु मुदा सर्वविघ्न महौजा । अभ्यारूढो द्विपेन्द्र वरभवनगतस्तम्भहस्तोत्कटास्य, निष्पङ्कव्योमनीलद्युतिमलसदृश यक्ष श्यामदष्टम् ॥ ४ ॥

श्रीपचमीस्तुति

पचानतकसुमपचपरमानदप्रदानक्षम, पचानुत्तरसीमदिव्यपदवीवश्याय मन्त्रोपमम् । येन प्रोज्ज्वलपचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणा, श्रीपचाननलाञ्छन स तनुता श्रीवर्द्धमान जिनम् ॥ १ ॥ ये पचाश्रवरोधसाधनपराः पचप्रमादीहरा, पचानुव्रतपचसुव्रतधराः प्रज्ञापनासादरा । कृत्वा पचहृषीकनिर्जयमथ प्राप्ता गति पचमी, तेऽमी सन्तु सुपचमीतपसा वाञ्छित सकय ॥ २ ॥ पचाचारधुरीणपचमगणाधीशेन सत्सूत्रित, पचज्ञानविचारसारकलित पचेषुपचत्वदम् । दीपाभ गुरुपचमादि ... प्येकादशीरोहिणी- पचम्यादिफलप्रकाशनपटु ध्यायामि ... गमम् ॥ ३ ॥ पचाना परमेष्ठिना स्थिरतया श्रीपचमेरु ... भक्ताना भविनां गृहेषु बहुशो या स्थापयत्यद्भुतान् । ... जने मनोमतकृती स्वारस्यपापाटिका पचम्यादितपो ... सा सिद्धायिका श्राविका ॥ ४ ॥

एकादशी स्तुति

(शिखरिणी छन्द)

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रत मपमल केवलमलम् । वलक्षैकादश्या सदसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणाना क्षपयतु विपद पचकमद' ॥ १ ॥ सुपर्वेन्द्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलय, सदास्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलय। जिनानामप्यापु क्षणमतिसुख नारकसद, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एव यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फल यत्कर्तॄणामिति च विदित शुद्धसमये। अनिष्टारिष्टाना क्षतिरनुभवेयुर्बहुमुद , क्षितौ० ॥ ३ ॥ सुरा सेन्द्रा सर्वे सकलजिनचन्द्रप्रमुदिता , तथा च ज्योति ष्कासिलभुवननाथा समुदिता । तपो यत्कर्तॄणा विदधति सुख विस्मितहृद , क्षितौ० ॥ ४ ॥

श्रीपचतीर्थस्तुतिः

श्रीशत्रुजयमुख्यतीर्थतिलक, श्रीनाभिराजागज, वदे रैवतशैल-मौलिमुकुट श्रीनेमिनाथ यथा । तारगेऽप्यजित जिन भृगुपुरे श्री-सुव्रत स्तम्भने, श्रीपार्श्व प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमान त्रिधा ॥ १ ॥ वदेऽनुत्तरकल्पतल्पभुवने ग्रैवेयकव्यतरा , ज्योतिष्कामरमदरा द्रिवसतीस्तीर्थकरानादरात् । जबूपुष्करधातकीषु रुचके नदीश्वरे कुडले, ये चान्येऽपि जिना नमामि सतत तान् कलिमाऽविमान् ॥ २ ॥ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्महृदतोऽनिर्गम्य त गौतम, गगावर्तनमेत्य या प्रविभिदे मिथ्यात्ववैताढ्यक । उत्पत्तिस्थितिसहतित्रिपथगा ज्ञानाम्बुधावृद्धिगा, सा मे कर्ममल हरत्वविकल श्रीद्वादशागी नदी

॥३॥ शक्रश्चद्रपविमहाश्च धरणब्रह्मेन्द्रशात्यविका, दिक्पाला सकपर्दि गोमुखगणिश्चक्रेश्वरी भारती। येन्ये ज्ञानतप क्रियाव्रतविधि-श्रीतीर्थयात्रादिषु, श्रीसघस्य तुरा चतुर्विधसुरास्ते सन्तु भद्रकरा ॥४॥

चार शरणा

[१]

मुजने चार शरणा होजो, अरिहत सिद्ध सुसाधुजी, केवळी धर्म प्रकाशीयो, रत्न अमुलख लाधुजी मुजने० ॥ १ ॥ चिहु गति तणा दुःख छेदवा, समरथ शरणा एहोजी, पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेणे कीधा शरणा तेहोजी मुजने० ॥ २ ॥ ससार माहि जीवने, समरथ शरणा चारोजी, गणि समयसुन्दर इम कहे कल्याण मगलकारोजी मुजने० ॥ ३ ॥

[२]

लाख चोरासी जीव खमावीए, मन धरी परम विवेकोजी' मिच्छामि दुक्कड दीजिए, जिनवचने लहिये टेकोजी लाख० ॥ १ ॥ सात लाख भू-दग-तेउ-वाउना, दश चौदे वननां भेदोजी, षट् विगल सुर-तिरि-नारकी, चउचउचउदे नरना भेदोजी लाख०॥२ ॥ मुज वैर नही केहशु, सहुशु मैत्री भावोजी, गणि समयसुन्दर इम कहे पामीए पुण्यप्रभावोजी लाख० ॥ ३ ॥

[३]

पाप अढारे जीव परिहरो, अरिहत सिद्धनी साखेजी, आलोया पाप छूटीये, भगवत एणी परे भाखेजी पाप० ॥ १ ॥ आश्रव कषाय दोय बन्धना, वळी कलहो अभ्याख्यानोजी, रति अरति पैशुन निंदना, मायामोस मिथ्यात्वोजी पाप० ॥ २ ॥ मनवचकायाए में कीया, मिच्छामि दुक्कड देओजी, गणि समयसुदर इम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहोजी पाप० ॥ ३ ॥

[४]

धन धन ते दिन मुज कदी होशे ? हु पामीश सयम सूधोनी; पूर्व ऋपिपथे चालशु, गुरुवचने प्रतिबुद्धोजी धन० ॥ १ ॥ अतपत भिक्षा गोचरी, रण वने काउस्सग्ग लेशुजी, समता शत्रुमित्र भावशु, सनेग सूधो धरशुजी धन० ॥ २ ॥ ससारना सकट थकी, हु छूटीश जिनवचने अवधारोनी, धन्य धन्य समयसुन्दर ते घडी, तो हु पामीश भवनो पारोजी धन० ॥ ३ ॥



साधु–साध्वी योग्य आवश्यक क्रियाना सूत्रो

स्थंडिलप्रतिलेखनासूत्रम्

(१) आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे (२) आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे (३) आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे (४) आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे (५) आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे (६) आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे, ॥ ६ ॥ (१) आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे (२) आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे (३) आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे (४) आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे (५) आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे (६) आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ (१) अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे (२) अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे (३) अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे (४) अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे (५) अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे (६) अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ (१) अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे (२) अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे (३) अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे (४) अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे (५) अणागाढे दूरे उ[illegible] वणे अहियासे (६) अणागाढे दूरे पासवणे अहि[illegible]

सामायिकसूत्रम्

करेमि भंते ! सामाइयं, सव्व सावज्जं जोग पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

आलोचनासूत्रम्

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असमणपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं महव्वयाणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्हं पिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयणमाउणं नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं दसविहे समणधम्मे समणाणं जोगाणं जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अतिचारगाथासूत्रम्

सयणासणन्नपाणे चेईं जइ सिज्ज कायउच्चारे ।
समिई भावण गुत्ती वितहायरणे य अइयारो ॥ १ ॥

देवसिकअतिचारसूत्रम्

ठाणे कमणे चंकमणे, आउत्ते अणाउत्ते, हरियकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे त्रसकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे ठाणाओ ठाणं संकामिया, देहरे गोचरी बाहिरभूमि मार्गे जाता आवता स्त्री-

तिर्यंचतणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुवा, दिवसमांहि चार वार सज्झाय सात वार चैत्यवंदन कीधा नहि, प्रतिलेखना आघी-पाछी भणावी, अस्तव्यस्त कीधी, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्यायां, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहि, गोचरी तणा बेंतालीस दोष उपजता जोया नहि, पांच दोष माडली तणा टाल्या नहीं, मातु अणपूजे लीधु, अणपूंजी भूमिकाए परठव्यु, परठवता अणुजाणह अस्सुग्गह परठव्या पुठे त्रण वोसिरे वोसिरे कीधु नहि, देहराउपाश्रय माहि पेसता नीसरतां निसीहि आवस्सही कहेवी विसारी, जिनभुवने चोराशी आशातना, गुरु प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी हाय, अनेरो जे कोइ दिवस संबधी पापदोष लाग्यो होय ते सवि हु मने वचने कायाए करी मिच्छामि दुक्कड॥

प्रतिक्रमणसूत्रम्

नमो अरिहंताण० ॥ करेमि भंते सामाइअ० ॥ चत्तारि मगलं अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलिपन्नत्तो धम्मो मगल । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरण पवज्जामि, अरिहते सरण पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि साहू सरण पवज्जामि केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि ॥ इच्छामि पडिक्कमिउ जो मे देवसिओ० । इच्छामि पडिक्कमिउ इरिआवहिआए० । इच्छामि पडिक्कमिउ पगामसिज्जाए निगामसिज्जाए सथारा उव्वट्टणाए परिअट्टणाए आउंटणपसारणाए छप्पइयसंघट्टणाए कुइए कक्कराइए छीए जंभाइए आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोअणवत्तिआए इत्थीविप्परि-

आसिआए दिट्ठीविप्परिआसिआए मणविप्परिआसिआए पाण-मोअणविप्परिआसिआए जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ।। पडिक्कमामि गोअरचरिआए भिक्खायरिआए उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छादारासघट्टणाए मंडिपाहुडिआए बलिपाहुडिआए ठवणापाहुडिआए सकिए सहसागारिए अणेसणाए पाणेमणाए पाणभोअणाए बीअभोअणाए हरिअ-भोअणाए पच्छेकम्मिआए पुरेकम्मिआए अदिट्ठहडाए दगसंस-ट्ठहडाए रयससट्ठहडाए पारिसाडणिआए पारिट्ठावणिआए ओहासणभिक्खाए ज उग्गमेण उप्पायणेसणाए अपरिसुद्ध पडिग्गहिअ परिभुत्त वा जं न परिट्ठविअ तस्स मिच्छामि दुक्कड ।। पडिक्कमामि चाउक्काल सज्झायस्स अकरणयाए उभओकाल भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्पम-ज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइआरे अणायारे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड । पडिक्कमामि एगविहे असजमे १ पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं–रागबंधणेण दोसबंधणेण २ पडिक्कमामि तीहिं दंडेहिं–मणदंडेण वयदंडेण कायदंडेण, पडिक्कमामि तीहिं गुत्तीहिं–मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए, पडिक्कमामि तीहिं सल्लेहिं–मायासल्लेणं निआणस-ल्लेण मिच्छादसणसल्लेण, पडि० तीहिं गारवेहिं–इड्ढीगारवेण रसगारवेण सायागारवेण, पडि० तीहिं विराहणाहिं–नाणविरा-हणाए दसणविराहणाए चरित्तविराहणाए ३ पडि० चउहिं कसा-एहिं–कोहकसाएण माणकसाएणं मायाकसाएण लोभकसाएणं, पडि० चउहिं सन्नाहिं–आहारसन्नाए भयसन्नाए मेहुणसन्नाए परिग्गहसन्नाए, पडि० चउहिं विकहाहिं–इत्थीकहाए भत्तकहाए

देसकहाए रायकहाए, पडि० चउहिं झाणेहिं–अट्टेण झाणेण रुद्देण झाणेण धम्मेण झाणेण सुक्केणं झाणेण, पडि० पचहिं किरिआहिं–काइआए अहिगरणिआए पाउसिआए पारितावणिआए पाणाइवायकिरिआए, प० पचहिं कामगुणेहिं–सद्देण रूवेण रसेण गंधेण फासेण, प० पचहिं महव्वएहिं–पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमणं अदिन्नादाणाओ वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं, प० पचहिं समिइहिं–इरियासमिइए भासासमिइए एसणासमिइए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिइए उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणिआसमिइए प० छहिं जीवनिकाएहिं–पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सइकाएणं तसकाएणं, प० छहिं लेसाहिं–किण्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पम्हलेसाए सुक्कलेसाए, प० सत्तहिं भयठाणेहिं अट्ठहिं मयठाणेहिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे इगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं तेरसहिं किरिआठाणेहिं चउदसहिं भूअगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसहिं गाहासोलसएहिं सत्तरसविहे असंजमे अट्ठारसविहे अबंभे एगूणवीसाए नायज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इक्कवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सूअगडज्झयणेहिं चउवीसाए देवेहिं पणवीसाए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं अट्ठावीसाए आयारप्पकप्पेहिं एगूणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीयठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाहिं, अरिहंताणं आसायणाए १ सिद्धाणं आसायणाए २ आयरियाणं आसायणाए

३ उवज्झायाण आसायणाए ४ साहूण आसायणाए ५ साहूणीण आसायणाए ६ सावयाण आसायणाए ७ सावियाण आसायणाए ८ देवाण आसायणाए ९ देवीण आसायणाए १० इहलोगस्स आसायणाए ११ परलोगस्स आसायणाए १२ केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए १३ सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स आसायणाए १४ सव्वपाणभूअजीवसत्ताण आसायणाए १५ कालस्स आसायणाए १६ सुअस्स आसायणाए १७ सुअदेवयाए आसायणाए १८ वायणायरिअस्स आसायणाए १९ ज वाइद्ध २० वच्चामेलिअ २१ हीणक्खर २२ अच्चक्खर २३ पयहीण २४ विणयहीण २५ घोसहीण २६ जोगहीण २७ सुट्ठु दिन्न २८ दुट्ठु पडिच्छिअ २९ अकाले कओ सज्झाओ ३० काले न कओ सज्झाओ ३१ असज्झाए सज्झाइअ ३२ सज्झाए न सज्झाइअ ३३ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ नमो चउवीसाए तित्थयराण उसभाइमहावीरपज्जवसाणाण इणमेव निग्गथं पावयण सच्च अणुत्तर केवलिअं पडिपुन्न नेआउअ ससुद्ध सल्लगत्तणं सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमविसधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्ग, इत्थ ठिआ जीवा सिज्झति वुज्झंति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाणमत करंति, त धम्मं सद्दहामि पत्तिआमि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि, त धम्म सद्दहंतो पत्तियतो रोअतो फासतो पालतो अणुपालंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए असजम परिआणामि सजमं उवसपज्जामि अबंभं परिआणामि बभ उवसपज्जामि अकप्प परिआणामि कप्प उवसपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसपज्जामि अकिरिअं परिआणामि किरिअ

उवमपज्जामि मिच्छत्त परिआणामि सम्मत्त उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसपज्जामि अमग्ग परिआणामि मग्गं उवसपज्जामि, ज समरामि ज च न संभरामि जं पडिक्कमामि ज च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइआरस्स पडिक्कमामि समणोऽह सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे अनिआणो दिट्ठिसपन्नो मायामोसविवज्जिओ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु जावत केवि साहु रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पचमहव्वयधारा अट्ठारसमसहस्सीलगधारा अक्खुयायारचरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वदामि, खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमतु मे। मित्ती मे सव्वभुएसु, वेर मज्झ न केणइ ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ गरहिअ दुगुछिअ सम्मं। तिविहेण पडिक्कतो वदामि जिणे चउव्वीस ॥

सथारा पोरिसी

निसीहि निसीहि निसीहि नमो खमासमणाण गोयमाईण महामुणीण [एम कह्या पछी एक नवकार तथा करेमि भंते० त्रण वार कहेवा त्यार पछी नीचे प्रमाणे भणवु] अणुजाणह जिट्ठिऽज्जा! अणुजाणह परमगुरु! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा। बहुपडिपुन्ना पोरिसी राइयसथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह सथार बाहुवहाणेण वामपासेणं। कुक्कुडिपायपसारण अतरत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइअसडासा उव्वट्टंते य कायपडिलेहा। दव्वाइउवओग उस्सासनिरुभणाऽऽलोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए। आहारमुवहिदेहं

सव्व तिविहेण वोसिरिअ ॥४॥ चत्तारि मगल, अरिहंता मगल सिद्धा मगलं साहू मगल केवलिपन्नत्तो धम्मो मगलं ॥ चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरण पवज्जामि सिद्धे सरण पवज्जामि साहू सरण पवज्जामि केवलिपन्नत्त धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ पाणाइवाय-मलिअ चोरिक्क मेहुणं दविणमुच्छं । कोहं माण माय लोह पिज्ज तहा दोसं ॥५॥ कलह अब्भक्खाण पेसुन्न रइअरइसमा-उत्तं । परपरिवायं मायामोस मिच्छत्तसल्लं च ॥ ६ ॥ वोसिरिसु इमाइ मुक्खमग्गसंसग्गविग्घभूआइ । दुग्गइनिबंधणाइ अट्ठारस पावठाणाइ ॥७॥ एगोऽह नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ । एव अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥ ८ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसणसजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे सजोगलक्खणा ॥ १२ ॥ सजोगमूला जीवेण, पत्ता दुःख-परपरा । तम्हा सजोगसबध, सव्व तिविहेण वोसिरिअ ॥१३॥ अरिहतो मह देवो जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपन्नत्त तत्तं, इअ सम्मत्त मए गहिअं ॥ १५ ॥ [आ गाथा त्रण वार बोलवी, पछी त्रण नवकार गणी, नीचेनी त्रण गाथा बोलवी.]

खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सव्वह जीवनिकाय । सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमत, ते मे सव्व खमाविआ, मज्झवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ जं ज मणेण बद्ध ज ज वाएण भासिअ पावं । ज ज काएण कयं मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १७ ॥

रात्रिकअतिचार

संथारा उव्वट्टणकी परियट्टणकी आउटणकी पसारणकी छप्पइय संघट्टणकी संथारो उत्तरपट्टो टाली अधिकु उपगरण वापर्युं मातरियु अणपडिलेह्यु इगाव्युं, मातु अणपडिलेह्यु लीधुं अणपूंजी भूमिकाए परठव्युं परठवता अणुजाणह जस्सुग्गहो कीधो नहीं, परठव्या पूठे त्रण वार वोसिरे वोसिरे न कीधो, संथारापोरसि भणवी विसारी भणाव्या विना सुता, कुस्वप्न दुःस्वप्न लाध्युं, सुपनांतर माहि शीयळ तणी विराधना हुइ, आहट्टदोहट्ट चिंतव्यु संकल्पविकल्प कीधो, अनेरो जे कोइ रात्रि संबंधी पापदोष लाग्यो होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कड ॥

पाक्षिकअतिचार

नाणमि दंसणंमि अ, चरणमि तवमि तह य विरियमि। आयरणं आयारो इय एसो पंचहा भणिओ॥ १॥ ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार ए पंचविध आचारमाहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कड॥ १॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार — काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निण्हवणे। वंजण अत्थ तदुभए अट्ठविहो नाणमायारो॥ २॥ ज्ञान कालवेलामाहि पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहि, अकाल पढ्यो, विनयहीन बहुमानहीन योगोपधानहीन पढ्यो,

सुहणे स्वप्नांतरे दृष्टिविपर्यास हुओ४ पांचमे महाव्रते धर्मोपकरणतणे विषे इच्छा मूर्च्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिको उपगरण वावर्यो, पर्व तिथिए पडिलेहवो विसार्यो ५ छठे रात्रिभोजनविरमणव्रते अछतो भातपाणी कीधो, छारोद्गार आव्यो, पात्रे पात्रबंधे तक्रादिनो छांटो लाग्यो, खरड्यो रह्यो, लेपतेलऔषधादिक तणो सनिधि रह्यो, अतिमात्राए आहार लीधो ६, ए छए व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अ० ॥

कायषट्के गाम तणे पइसारे नीसारे पग पडिलेहवा विसार्या, माटी मीठु खडी धावडी अरणेटो पाषाण तणी चातली उपर पग आव्यो ७ अप्काय वावरि फुसणा हुवा, व्होरवा गया ऊलखो हाल्यो, लोटो ढोल्यो, काचा पाणी तणा छाटा लाग्या ८ तेउकाय वीजदीवा तणी उजेही हुइ ९ वाउकाय उघाडे मुखे बोल्या, महावाय वाजता कपडाकामली तणा छेडा साचव्या नहीं, फूक दीधी१० वनस्पतिकाय नीलफूल सेवाल थड फल फूल वृक्ष शाखा प्रशाखा तणा सघट्ट परपर निरतर हुवा११ त्रसकाय बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्री पचेंद्री काग थग उडाव्या, ढोर त्रासव्यां, वालरू नीहवराव्या१२, षट्काय विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥

अकल्पनीय सिज्जा वस्त्र पात्र पिंड परिभोगव्यो, सिज्जातर तणो पिंड परिभोगव्यो, उपयोग कीधा पाखे विहर्यो, धात्रीदोष त्रसजीवसंसक्त पूर्वकर्म्म पश्चात्कर्म्म उद्गम उत्पादना दोष चिंतव्या नहीं १३ गृहस्थतणो भाजन भाज्यो, फोड्यो, वलतो पाछो आप्यो नहीं१४ सूता संथारिया उत्तरपट्टो टाली अधिको उपगरण वावर्यो १५ देशतः स्नान कीधुं, मुखे भीनो हाथ

लगाडयो,१६ सर्वतः स्नान तणी वाछा कीधी१७ शरीर तणो मेल फेडयो, केश रोम नख समार्या, अनेरी काइ शाविभूषा कीधी१८ अकल्पनीयपिंडादि विषइओ अनेरो जे कोइ अति०॥

आवस्सय१ सज्झाए २ पडिलेहण३ झाण४ भिक्ख ५ अभत्तट्ठे६ आगमणे निग्गमणे७ ठाणे८ निसीअण९ तुअट्टे१०॥१॥

आवश्यक–उभयकाल व्याक्षिप्तचित्त पणे पडिक्कमणो कीधो, पडिक्कमणामांहि ऊंघ आवी, बेठा पडिक्कमणु कीधुं१ दिवस प्रत्ये चार वार सज्झाय सात वार चैत्यवंदन न कीधां२ पडिलेहणा आघीपाछी भणावी, अस्तोव्यस्त कीधी३ आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्याया नहीं४ गोचरी गया बेतालीश दोष उपजता चिंतव्या नहीं, पांच दोष मांडली तणा टाल्या नहीं ५ छती शक्तिए पर्वतिथिए उपवासादिक तप कीधा नहि ६ देहरा उपासरा मांहि पेसतां निसीही, नीसरता आवस्सही कहेवी विसारी, इच्छामिच्छादिक दशविध चक्रवाल सामाचारी साचवी नहीं, गुरु तणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यो नहि, अपराध आश्री मिच्छामि दुक्कड दीधा नहि, ७ स्थानके रहेता हरियकाय बीयकाय कीडीतणां नगरा शोध्या नहीं८ ओघा मुहपत्ति चोलपट्टो सघट्या, स्त्री–तिर्यंच तणा संघट्ट अनंतर परंपर हुआ ९ वडा प्रते पसाओ करी लहुडा प्रते इच्छाकार इत्यादिक विनय साचव्यो नहि १० साधुसामाचारी विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्षदिवसमांहीं सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सवि हु मनवचनकायाए करी मिच्छामि दुक्कड ॥

पाक्षिकसूत्रम्

तित्थंकरे अतित्थे अतित्थसिद्धे अ तित्थसिद्धे य। सिद्धे जिणे रिसी महरिसी य नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जे अ इमं गुणरयणसायरमविराहिऊण तिण्णससारा । ते मंगलं करित्ता अहमवि आराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता सिद्धा साहू सुयं च धम्मो अ। खंती गुत्ती मुत्ती अज्जवया मद्दवं चेव ॥३॥ लोयम्मि संजया जं करिंति परमरिसिदेसिअमुआरं । अहमवि उवट्ठिओ तं महव्वयउच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ से किं तं महव्वय-उच्चारणा ?, महव्वयउच्चारणा पचविहा पण्णत्ता राइभोअणवेरमणछट्ठा, तंजहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं १ सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं २ सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ३ सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ४ सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ५ सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥

तत्थ खलु पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से पाणाइवाए चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं पाणाइवाए छसु जीवनिकाएसु, खित्तओ णं पाणाइवाए सव्वलोए कालओ णं पाणाइवाए दिआ वा राओ वा, भावओ णं पाणा-

इवाए रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिप-
ण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स
खतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचे-
रगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गि-
सरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियया-
रस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स
अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण-
फलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेण
अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुययाए चउक्कसाओवगएण पंचि-
दिओवसट्टेण पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेण इहं
वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु पाणाइवाओ कओ वा काराविओ
वा कीरंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं
तिविहेण मणेण वायाए काएण, अईअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि
अणागयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए, अणिस्सि-
ओऽहं नेव सयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा
पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा–अरिहंतस-
क्खिअं सिद्धसक्खिअं साहूसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं,
एवं भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खा-
यपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते
वा जागरमाणे वा, एस खलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे
निस्सेसिए आणुगामिए, पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं
भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए
अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए

अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसपज्जित्ताणं विहरामि। पढमे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पणाइवायाओ वेरमण ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे भंते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं, सव्वं भंते! मुसावाय पच्चक्खामि, से कोहा वा १ लोहा वा २ भया वा ३ हासा वा ४ नेव सय मुस वएज्जा नेवन्नेहिं मुस वाया-विज्जा मुस वयंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि, से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते, तजहा—दव्वओ १ खित्तओ २ कालओ ३ भावओ ४, दव्वओ णं मुसावाए सव्वदव्वेसु, खित्तओ णं मुसावाए लोए वा अलोए वा, कालओ णं मुसावाए दिआ वा राओ वा, भावओ ण मुसावाए रागेण वा दोसेण वा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्नियस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं

अन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुययाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओ वा भासाविओ वा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अईयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽहं नेव सयं मुसं वएज्जा नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा मुसं वयंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा—अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं, एवं भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु मुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । दोच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा नगरे वा अरण्णे

वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेवे सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिण्णं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नत्त, तंजहा- दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं अदिन्नादाणे गहण-धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओ णं अदिन्नादाणे गामे वा नगरे वा अरण्णे वा कालओ णं अदिन्नादाणे दिआ वा राओ वा, भावओ णं अदिन्नादाणे रागेण वा दोसेण वा, जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवणियस्स उवसमपभवस्स नव-बंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनि-हिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगम-णपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बाल-याए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगुरुयाए चउक्सा-ओवगएण पंचिंदिओवसट्टेण पडिपुण्णभारियाए सायासुक्खमणु-पालयंतेण इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअं वा गाहाविअं वा घिप्पंतं वा परेहिं समणुन्नायं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएण, अईअं निंदामि

पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं जाव-ज्जीवाए, अणिस्सिओऽहं नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा तंजहा—अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देव-सक्खियं अप्पसक्खियं, एवं भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संज-यविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एस खलु अदिन्ना-दाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए (पारगा-मिए) सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्ख-क्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए-त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । तच्चे भंते ! महव्वए उव-ट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिवि-हेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, दव्वओ णं मेहुणे रूवेसु

वा रूवसहगएसु वा, खित्तओ णं मेहुणे उड्ढलोए वा अहोलोए वा तिरियलोए वा, कालओ णं मेहुणे दिआ वा राओ वा, भावओ ण मेहुणे रागेण वा दोसेण वा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णिअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयआए चउक्कसाओवगएण पंचिंदिओवसट्टेण पडिपुण्णभारयाए सायासोक्खमणुपालयंतेण इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मेहुण सेविअ वा सेवाविअ वा सेविज्जंत वा परेहिं समणुन्नाय त निंदामि गरिहामि तिविह तिविहेणं मणेणं वायाए काएण, अईयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽहं नेव सयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुण सेवंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा–अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं, एव हवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु मेहुणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए

(पारगामिए) सव्वेसिं पाणाण सव्वेसिं भूआण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसिं सत्ताण अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। चउत्थे भंते ! महव्वए उव्वद्विओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण ॥ ४ ॥

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से परिग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ ण परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु, खित्तओ ण परिग्गहे सव्वलोए कालओ ण परिग्गहे दिआ वा राओ वा, भावओ ण परिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा, ज मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्नियस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स

गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वय-जुत्तस्स असनिहिसंचयस्स अविसंवाइअस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेण अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिदिओवसट्टेण पडिपुन्नभारियाए साया-सोक्खमणुपालयंतेण इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिओ वा गाहाविओ वा घिप्पंतो वा परेहिं समणुन्नाओ त निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएण, अईअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽहं नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा—अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगा-मिए [पारगामिए] सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआण सव्वेसिं जीवाण सव्वेसि सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरण-याए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राइभोअणाओ वेरमणं, [illegible]
राइभोअणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं [illegible]
नेव सयं राइं भुंजिज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा [illegible]
अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं [illegible]
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं [illegible]
जाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि [illegible]
वोसिरामि। से राइभोअणे चउव्विहे पन्नत्ते, [illegible]
खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं [illegible]
पाणे वा खाइमे वा साइमे वा, खित्तओ णं [illegible]
खित्ते, कालओ णं राइभोअणे दिआ वा [illegible]
राइभोअणे तित्ते वा कडुए वा कसाए वा [illegible]
लवणे वा रागेण वा दोसेण वा, [illegible]
पण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चा[illegible]
खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णिअस्स [illegible]
वेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्ख[illegible]
निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स [illegible]
निव्विआरस्स निव्विती[illegible]
सचयस्स अविसंवाइयस्स [illegible]
पज्जवसाणफलस्स पुव्विं [illegible]
अणभिगमेण अभिगमेण य [illegible]
चालयाए मोहयाए [illegible]
चउक्कसाओवगएणं पंचिंदि[illegible]
सोक्खमणुपालयंतेण इह [illegible]
अण भुत्तं वा भुंजावि[illegible]

निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण, अईअं निंदामि पडुप्पण संवरेमि अणागय पचक्खामि सव्वं राइभोअण जावज्जीवाए, अणिस्सिओऽहं नेव सय राइभोअण भुजिज्जा नेवन्नेहिं राइभोअणं भुंजाविज्जा राइभोअण भुजंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा–अरिहंतसक्खिअ सिद्धसक्खिअ साहुसक्खिअ देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं, एवं हवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपचक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु राइभोअणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए (पारगामिए) सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाण सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥

इच्चेइआइं पंच महव्वयाइं राइभोअणवेरमणछट्ठाइं अत्तहिअट्ठयाए उवसंपज्जित्ता ण विहरामि ॥

अप्पसत्था य जे जोगा, परिणामा य दारुणा। पाणाइवायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे॥ १॥ तिव्वरागा य जा भासा, तिव्वदोसा तहेव य। मुसावायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गहंसि अजाइत्ता, अविदिन्ने य उग्गहे। अदिन्ना-

दाणस्स वेरमणे, एम वुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दारूवारसागंधाफासाणं परियारणे। मेहुणस्स वेरमणे, एम वुत्ते अइक्कमे ॥ ४ ॥ इच्छा मुच्छा य गेही य, कंखा लोभे य दारुणे। परिग्गहस्स वेरमणे, एम वुत्ते अइक्कमे ॥ ५ ॥ अइमत्ते अ आहार, सूरखित्तंमि संकिए। राइभोअणस्स वेरमणे, एम वुत्ते अइक्कमे ॥ ६ ॥ दसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। पढम वयमणुरक्खे, विरया मो पाणाइवायाओ ॥ ७ ॥ दसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। बीअ वयमणुरक्खे, विरया मो मुसावायाओ ॥ ८ ॥ दसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। तइअ वयमणुरक्खे, विरया मो अदिन्नादाणाओ ॥ ९ ॥ दसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। चउत्थ वयमणुरक्खे, विरया मो मेहुणाओ ॥ १० ॥ दसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। पचम वयमणुरक्खे, विरया मो परिग्गहाओ ॥ ११ ॥ दसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। छट्ठ वयमणुरक्खे, विरया मो राइभोअणाओ ॥ १२ ॥ आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। पढम वयमणुरक्खे, विरया मो पाणाइवायाओ ॥ १३ ॥ आलयविहारसमिओ जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। बीअ वयमणुरक्खे, विरया मो मुसावायाओ ॥ १४ ॥ आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। तइअ वयमणुरक्खे विरया मो अदिन्नादाणाओ ॥ १५ ॥ आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। चउत्थ वयमणुरक्खे, विरया मो मेहुणाओ ॥ १६ ॥ आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। पचम वयमणुरक्खे, विरया मो परिग्गहाओ ॥ १७ ॥ आलयविहारसमिओ,

जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। छट्ठ वयमणुरक्खा, विरया मो राईभोअणाओ ॥ १८ ॥ आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्म। तिविहेण अप्पमत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ १९ ॥ सावज्जजोगमेग, मिच्छत्त एगमेव अन्नाणं। परिवज्जन्तो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २० ॥ अणवज्जजोगमेगं, सम्मत्त एगमेव नाण तु। उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥२१॥ दो चेव रागदोसे, दुन्नि य झाणाइ अट्टरुद्दाइ। परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २२ ॥ दुविह चरित्तधम्मं, दुन्नि य झाणाइ धम्मसुक्काइ। उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २३ ॥ किण्हा नीला काऊ, तिन्नि य लेसाओ अप्पसत्थाओ। परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २४ ॥ तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि य लेसाओ सुप्पसत्थाओ। उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २५ ॥ मणसा मणसच्चविऊ वायासच्चेण करणसच्चेण। तिविहेणवि सच्चविऊ रक्खामि महव्वए पच ॥ २६ ॥ चत्तारि य दुहसिज्जा, चउरो सन्ना तहा कसाया य। परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २७ ॥ चत्तारि य सुहसिज्जा, चउव्विह सवर समाहिं च। उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २८ ॥ पचेव य कामगुणे, पचेव य अण्हवे महादोसे। परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ २९ ॥ पचिंदियसवरणो, तहेव पचविहमेव सज्झायं। उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३० ॥ छज्जीवनिकायवह, छप्पि य भासाउ अप्पसत्थाओ। परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ३१ ॥ छव्विहमब्भितरयं, बज्झपि य छव्विह तवोकम्म। उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच

॥ ३२ ॥ सत्त य भयट्ठाणाइं, सत्तविहं चेव नाणविब्भंगं । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३३ ॥ पिंडेसणं पाणेसणं, उग्गहसत्तिक्कया महज्झयणा । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३४ ॥ अट्ठ य मयट्ठाणाइं, अट्ठ य कम्माइं तेसिं बंधं च । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३५ ॥ अट्ठ य पवयणमाया, दिट्ठा अट्ठविहनिट्ठिअट्ठेहिं । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३६ ॥ नव पावनिआणाइं संसारत्था य नवविहा जीवा । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३७ ॥ नवबंभचेरगुत्तो, दुनवविहं बंभचेरपरिसुद्धं । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३८ ॥ उवघायं च दसविहं असंवरं तह य संकिलेसं च । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३९ ॥ सच्चसमाहिट्ठाणा, दस चेव दसाउ समणधम्मं च । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ४० ॥ आसायणं च सव्वं, तिगुणं इक्कारस विवज्जंतो । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ४१ ॥ एवं तिदंडविरओ तिगरणसुद्धो तिसल्लनीसल्लो । तिविहेण पडिक्कंतो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ४२ ॥

इच्चेअं महव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलयं ववसाओ साहणट्ठो पावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निज्जूहणाऽऽराहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थज्झाणोवउत्तया जुत्तया य नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो, एस खलु तित्थयरेहिं रइरागदोसमहणेहिं देसिओ पवयणस्स सारो छज्जीवनिकायसंजमो, उवएसिउं तेल्लोक्कसक्कयं ठाणं अब्भुवगया । णमो त्थु ते सिद्ध

बुद्ध मुत्त नीरय निस्सग माणमूरण गुणरयणसायरमणंतमप्प-मेज ।। नमो त्थु ते महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स। नमो त्थु ते अरहओ, नमो त्थु ते भगवओत्तिकट्टु । एसा खलु महव्वय-उच्चारणा कया ।। इच्छामो सुत्तकित्तण काउ, नमो तेसि खमा-समणाणं जेहिं इम वाइअ छव्विहमावस्सय भगवत, तजहा— सामाइअ १ चउवीसत्थओ २ वदणय ३ पडिक्कमणं ४ काउ-स्सग्गो ५ पच्चक्खाण ६, सव्वेहिंपि एअम्मि छव्विहे आवस्सए भगवत ससुत्ते सअत्थे सगथे सनिज्जुत्तिए ससगहणीए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवतेहिं पण्णत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, त भावे सद्दहतेहिं पत्तिअतेहिं रोअतेहिं फासतेहिं पालतेहिं अणु-पालतेहिं अतो पक्खस्स ज वाइअ पढिअ परिअट्टिअ पुच्छिअं अणुपेहिअ अणुपालिअ त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए ससारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसपज्जित्ताणं विहरामि, अतो पक्खस्स ज न वाइअं न पढिअ न परिअट्टिअ न पुच्छिअ नाणुपेहिअ नाणुपालिअ सते बले सते वीरिए सते पुरिसक्कार-परक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिह तवोकम्मं पायच्छित्त पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कड ।।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इम वाइअ अगबाहिर उका-लिअं भगवंत, तजहा— दसवेआलिअ १ कप्पिआकप्पिअ २ चुल्लकप्पसुअ ३ महकप्पसुअ ४ उववाइअ ५ रायप्पसेणिअ, ६ जीवाभिगमो ७ पण्णवणा ८ महापन्नवणा ९ नदी

१० अणुओगदाराइं ११ देविंदत्थओ १२ तंदुलवेआलिअं १३ चंदाविज्झयं १४ पमायप्पमायं १५ पोरिसिमंडलं १६ मंडलप्पवेसो १७ गणिविज्जा १८ विज्जाचरणविणिच्छओ १९ झाणविभत्ती २० मरणविभत्ती २१ आयविसोही २२ सलेहणासुअं २३ वीयरायसुअं २४ विहारकप्पो २५ चरणविही २६ आउरपच्चक्खाणं २७ महापच्चक्खाणं २८, सव्वेहिंपि एआमि अगवाहिरे उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणीए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोअंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, अंतो पक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्टेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं अगवाहिरं कालिअं भगवंतं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं १ दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ इसिभासिआइं ५ निसीहं ६ महानिसीहं ७ जंबुद्दीवपन्नत्ती ८ सूरपन्नत्ती ९ चंदपन्नत्ती १० दीवसागरपन्नत्ती

११ खुड्डिया विमाणपविभत्ती १२ महल्लिआ विमाणपविभत्ती १३ अंगचूलिआए १४ वग्गचूलिआए १५ विवाहचूलिआए १६ अरुणोववाए १७ वरुणोववाए १८ गरुलोववाए १९ (धरणोववाए) वेसमणोववाए २० वेलंधरोववाए २१ देविंदोववाए २२ उट्ठाणसुए २३ समुट्ठाणसुए २४ नागपरिआवलिआणं २५ निरयावलिआणं २६ कप्पिआणं २७ कप्पवडिंसयाणं २८ पुप्फिआणं २९ पुप्फचूलिआणं ३० (वण्हिआणं) वण्हिदसाणं ३१ आसीविसभावणाणं ३२ दिट्ठीविसभावणाणं ३३ चारण (सुमिण) भावणाणं ३४ महासुमिणभावणाणं ३५ तेअग्गिनिसग्गाणं ३६, सव्वेहिंपि एअम्मि अंगबाहिरे कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सणिज्जुत्तिए ससंगहणीए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, अंतो पक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं, तंजहा—आयारो १ सूअगडो २ ठाणं ३ सम-

याओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइअदसाओ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुअं ११ दिट्ठिवाओ १२, सव्वेहिंपि एअम्मि दुवाल-संगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सणिज्जुत्तिए ससंगहणीए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइअं पढिअं परिअट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्ख-याए कम्मक्खयाए मुक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाएत्ति-कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, अंतो पक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परिअट्टिअं न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडि-क्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं, सम्मं काएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति सम्मं आणाए आराहंति अहं च नाराहेमि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सुअदेवया भगवई नाणावरणीअकम्मसंघायं ॥
तेसिं खवेउ सययं जेसिं सुअसायरे भत्ती ॥ १ ॥

॥ इति पाक्षिकसूत्र समाप्त ॥

श्रीपाक्षिकखामणा

इच्छामि खमासमणो ! पिअं च मे जं भे हट्ठाणं तुट्ठाणं अप्पायंकाणं अभग्गजोगाणं सुसीलाणं सुव्वयाणं सायरियउवज्झायाणं नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणाणं बहुसुभेण भे दिवसो पोसहो पक्खो वइक्कंतो अन्नो य भे कल्लाणेणं पज्जुवट्ठिओ सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥ गुरु कहे तुब्भेहिं समं ॥

इच्छामि खमासमणो ! पुव्विं चेइआइं वंदित्ता नमंसित्ता तुब्भण्हं पायमूले विहरमाणेणं जे केई बहुदेवसिया साहुणो दिट्ठा सामाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणा वा राइणिया संपुच्छंति ओमराइणिया वंदंति अज्जया वंदंति अज्जियाओ वंदंति सावया वंदंति सावियाओ वंदंति अहंपि निस्सल्लो निक्कसाओत्तिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥ गुरु अहमवि वंदावेमि चेइआइं ॥

इच्छामि खमासमणो ! [अब्भुट्ठिओहं] उवट्ठिओहं तुब्भण्हं संतिअं अहाकप्पं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा (रयहरणं वा) अक्खरं वा पयं वा गाहं सिलोगं वा (सिलोगद्धं वा) अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा तुब्भेहिं चिअत्तेणं दिन्नं मए अविणएण पडिच्छिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥ गुरु—आयरियसंतिअं ॥

इच्छामि खमासमणो ! अहमपुव्वाइं कयाइं च मे किइकम्माइं आयारमंतरे विणयमंतरे सेहिओ सेहाविओ संगहिओ उवग्गहिओ सारिओ वारिओ चोइओ पडिचोइओ, चिअत्ता मे

पडिक्कोयणा, (अब्भुट्ठिओह) उवट्ठिओह तुब्भण्ह तवतेयसिरीए इमाओ चाउरंतसंसारकंताराओ साहट्टु नित्थारिस्सामित्तिकट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ ४ ॥ गुरुः— नि थारगपारगा होह ॥

श्री दशवैकालिक सूत्र मूल पाठ ।

॥ १ ॥ द्रुमपुष्पिकाध्ययनम् ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो । देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥ जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं । न य पुप्फं किलामेइ सो अ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो । विहंगमा व पुप्फेसु, दाण भत्तेसणे रया, ॥ ३ ॥ वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मइ अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥ महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो, त्तिबेमि ॥ ५ ॥

इति दुमपुप्फियनामपढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ २ ॥ श्रामण्यपूर्विकाध्ययनम् ॥

कहं नु कुज्जा सामन्नं, जो कामे न निवारए, पए पए विसीअंतो संकप्पस्स वसंगओ ॥ १ ॥ वत्थगंधमलंकारं इत्थिओ सयणाणि य, अच्छंदा जे न भुंजंति, न से चाइत्ति वुच्चई ॥ २ ॥ जे अ कंते पिए भोए लद्धे विपिट्ठि कुव्वइ, साहीणे चयइ भोए, से हु चाई त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

(काव्यम्)

समाइ पेहाइ परिव्वयंतो, सिआ मणो निस्सरई बहिद्धा । न सा महं नोवि अहंपि तीसे, इच्चेव ताओ विणइज्ज राग ॥४॥ आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाही, कमिअं खु दुक्खं, छिंदाहि दोस विणइज्ज राग, एवं सुही होहिसि संपराए ॥५॥

अनुष्टुब्वृत्तम्

पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं, नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥६॥ धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा, वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥ अहं च भोगरायस्स, तं चऽसि अंधगवण्हिणो, मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥ जइ तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ, वायाविद्धुव्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥९॥ तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं, अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥१०॥ एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पविअक्खणा, विणिअट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो, त्तिबेमि. ॥ ११ ॥

॥ इति सामन्नपुव्वियनामज्झीयं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ ३ ॥ क्षुल्लकाचाराध्ययनम् ॥

अनुष्टुब्वृत्तम्

संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं तेसिमेअमणाइन्नं, निग्गंथाण महेसिणं ॥ १ ॥ उद्देसियं कीयगडं, नियागमभिहडाणि य । राइभत्ते सिणाणे य, गंधमल्ले अ वीयणे ॥२॥ संनिही गिहिमत्ते अ रायपिंडे किमिच्छए, संबाहणा दंतपहोयणा अ, संपुच्छणा

देहपलोयणा अ ॥३॥ अट्ठावए अ नालीए, छत्तस्स य धारणट्ठाए, तेगिच्छं पाणहा पाए, समारंभं च जोइणो ॥ ४ ॥ सज्जायर-पिंड च, आसंदी पलिअंकए, गिहंतरनिसिज्जा य, गायस्सुव्व-ट्टणाणि य ॥ ५ ॥ गिहिणो वेआवडियं, जा य आजीववत्तिया, तत्तानिव्वुडभोइत्तं, आउरस्सरणाणि अ ॥ ६ ॥ मूलए सिंगबेरे य, उच्छुखंडे अनिव्वुडे, कंदे मूले य सचित्ते, फले बीए य आमए ॥७॥ सोवचले सिंधवे लोणे, रोमालोणे य आमए, सामुद्दे पंसु-खारे य, कालालोणे य आमए ॥८॥ धूवणे त्ति वमणे अ, वत्थि-कम्म विरेयणे, अंजणे दंतवणे अ गायाभंगविभूसणे ॥९॥ सव्व-मेयमणाइन्नं, निग्गंथाणं महेसिणं, संजमम्मि अ जुत्ताणं, लहुभू-यविहारिणं ॥१०॥ पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया, पंचनि-ग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥११॥ आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा, वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥१२॥ परीसहरिऊदंता धूअमोहा जिइंदिआ, सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमंति महेसिणो ॥१३॥ दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहेत्तु अ, के इत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झंति नीरया ॥१४॥ खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य, सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे, त्तिबेमि ॥१५॥

॥ इति खुड्डियायारकहानाम तइयमज्झयणं समत्तं ॥

॥ ४ ॥ छज्जीवणियज्झयणं ॥

सुअं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु छज्जी-वणिआनामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवे-इआ सुअक्खाया, सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयणं

पन्नत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु सा छज्जीवणिआनामज्झयण समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइआ, सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिज्जिउं अज्झयण धम्मपन्नत्ती ? ॥ २ ॥ इमा खलु सा छज्जीवणिआनामज्झयणं समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइआ सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेय मे अहिज्जिउं अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ ३ ॥ तंजहा—पुढविकाइआ, आउकाइआ, तेउकाइआ, वाउकाइआ, वणस्सइकाइआ, तसकाइआ ॥ ४ ॥ पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ५ ॥ आउ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ६ ॥ तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ७ ॥ वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ८ ॥ वणस्सइ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण ॥ ९ ॥ तंजहा अग्गबीआ मूलबीआ पोरबीआ खंधबीआ बीअरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइआ सबीआ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता, अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ १० ॥ से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा, तजहा अंडया पोयया जराउआ रसया ससेइमा संमुच्छिमा उब्भिआ उववाइआ, जेसिं केसिं चि पाणाण अभिक्कंत पडिक्कंतं संकुचिअ पसारिअ रुअ भत तसिअ पलाइअ आगई गइ विन्नाया, जे अ कीटपयंगा, जा य कुंथुपिपीलिआ, सव्वे बेइंदिआ सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिआ सव्वे पंचिंदिआ सव्वे तिरिक्खजोणिआ, सव्वे नेरइआ सव्वे मणुआ सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाहम्मिआ ।

अहो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाउ त्ति पवुचइ ॥ सूत्र १ ॥

इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभिज्जा, नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा, दंडं समारंभंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाजे तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाजे काजेणं न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सूत्र २ ॥

पढमे भंते ! महव्वजे पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा, तसं वा थावरं वा, नेव सयं पाणे अइवाइज्जा, नेव अन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं, तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । पढमे भंते महव्वजे उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥ (सूत्र ३)

अहावरे दुच्चे भंते ! महव्वजे मुसावायाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा, लोहा वा, भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा नेव अन्नेहिं मुसं वायाविज्जा मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाजे तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाजे काजेणं न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, दुच्चे भंते ! महव्वजे उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥ (सूत्र ४)

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वजे अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा नगरे वा रन्ने वा

अप्प वा बहु वा अणु वा थूलं वा चित्तमंत वा अचित्तमंत वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हतेऽवि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि, तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥ (सूत्र ५)

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वं वा माणुस्सं वा तिरिक्खजोणियं वा नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ ४ ॥ (सू० ६)

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥ (सू० ७)

अहावरे छट्टे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमण सव्वं भंते ! राइभोयणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइं भुंजिज्जा नेवऽन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । छट्टे भंते ! वए उवट्टिओमि, सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ (सू० ८) इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोअणवेरमणछट्टाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि (सू० ९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा, से पुढविं वा भित्तिं वा, सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं, हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलिआए वा सिलागए वा सिलागहत्थेण वा न आलिहिज्जा न विलिहिज्जा न घट्टिज्जा न भिंदिज्जा, अन्नं न आलिहाविज्जा न विलिहाविज्जा न घट्टाविज्जा न भिंदाविज्जा, अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥ (सू० १०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा

जागरमाणे वा से उदगं वा ओस वा हिमं वा, महिअ वा करग वा हरतणुग वा सुद्धोदग वा उदउल्लं वा काय उदउल्लं वा वत्थ ससिणिद्ध वा काय ससिणिद्धं वा वत्थं न आमुसिज्जा न सफुसिज्जा न आवीलिज्जा न पविलिज्जा, न अक्खोडिज्जा न पक्खोडिज्जा न आयाविज्जा न पयाविज्जा अन्न न आमुसाविज्जा न सफुसाविज्जा न आवीलाविज्जा न पवीलाविज्जा, न अक्खोडाविज्जा न पक्खोडाविज्जा न आयाविज्जा न पयाविज्जा, अन्न आमुसंतं वा सफुसंतं वा, आवीलंत वा, पवीलंतं वा, अक्खोडत वा, पक्खोडत वा, आयावत वा, पयावतं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥ (सू० ११)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा अेगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से अगणिं वा इगाल वा मुम्मुर वा अच्चिं वा जाल वा अलाय वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा न उजेज्जा न घट्टिज्जा न भिंदिज्जा न उज्जालिज्जा न पज्जालिज्जा न निव्वाविज्जा अन्न न उजाविज्जा न घट्टाविज्जा न भिंदाविज्जा न उज्जालाविज्जा न पज्जालाविज्जा न निव्वाविज्जा अन्न उजत वा घट्टंत वा भिंदंतं वा उज्जालतं वा पज्जालत वा निव्वावतं वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाअे तिविह तिविहेण मणेणं वायाअे काअेण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण

वोसिरामि ॥ ३ ॥ (सूत्र १२)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिआ वा राओ वा जेगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से सिअेण वा विहुणेण वा विहुणहत्थेण वा तालिअंटेण वा पत्तेण वा, पत्तभंगेण वा साहाअे वा साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा, चलकण्णेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय बाहिर वावि पुग्गल, न फुमिज्जा न वीअेज्जा अन्न न फुमाविज्जा न वीआविज्जा, अन्न फुमत वा वीअत वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाअे तिविहं तिविहेण मणेण वायाअे काअेण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ ४ ॥ (सूत्र १३)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खा यपावकम्मे दिआ वा राओ वा जेगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से बीअेसु वा, बीअपइट्ठेसु वा रूढेसु वा, रूढपइट्ठेसु वा, जाअेसु वा जायपइट्ठेसु वा हरिअेसु वा हरिअपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा सचित्तेसु वा सचित्तकोलपडिनिस्सिअेसु वा न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीअेज्जा न तुअट्टेज्जा अन्न न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीआवेज्जा, न तुअट्टावेज्जा, अन्न गच्छंतं वा, चिट्ठंत वा, निसीयत वा, तुयट्टत वा, न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाअे तिविहं तिविहेण मणेण वायाअे काअेण न करेमि, न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भंते! ...

निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ (सूत्र १४)
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-
पावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा,
सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा पयगं वा कुंथुं वा पिवी-
लियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा उरंसि वा उदरंसि
वा सीसंसि वा वत्थंसि पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पाय
पुछणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उडगंसि वा दण्ड-
गंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा
वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव
पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणिज्जा णो
णं संघायमावज्जिज्जा ॥

अजयं चरमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ। बंधई पावयं कम्मं तं
से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥ अजयं चिट्ठमाणो य पाणभूयाइं
हिंसइ। बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥
अजयं आसमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ । बंधई पावयं
कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥ अजयं सयमाणो
य पाणभूयाइं हिंसइ । बंधई पावयं कम्मं तं से होइ
कडुयं फलं ॥ ४ ॥ अजयं भुंजमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥ अजयं भास-
माणो य, पाणभूयाइं हिंसइ, बंधइ पावयं कम्मं, तं से होई
कडुअं फलं ॥ ६ ॥ कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं
सए? कहं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बन्धइ? ॥ ७ ॥ जयं
चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए, जयं भुंजंतो भासंतो, पावं
कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥ सव्वभूयऽप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं

पासओ, विहिआसवस्स दंतस्स, पाव कम्म न बधइ ॥ ९ ॥ पढम नाण तओ दया, एव चिट्टई सव्वसजए, अन्नाणी किं काही ? किं वा नाही य सेयपावग ? ॥ १० ॥ सोचा जाणइ कल्लाण, सोचा जाणइ पावग, उभयपि जाणइ सोचा, ज सेअ त समायरे ॥ ११ ॥ जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणइ, जीवाजीवे अयाणतो, कह सो नाही य सजमं ? ॥१२॥ जो जीवे वि वियाणेइ अजीवे वि वियाणइ, जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाही य सजमं ॥ १३ ॥ जया जीवमजीवं य, दो वि एऐ वियाणइ, तया गई बहुविहं, सव्वजीवाण जाणई ॥ १४ ॥ जया गई बहुविह सव्वजीवाण जाणइ, तया पुन्न च पाव च, वध मुक्ख च जाणइ ॥ १५ ॥ जया पुण्ण च पावं च, वध मुक्ख च जाणइ, तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे अ माणुसे ॥ १६ ॥ जया निव्विंदए भोए जे दिव्वे जे अ माणुस । तया चयइ सजोग, सब्भितर-बाहिर ॥ १७ ॥ जया चयइ सजोग, सब्भितरबाहिर, तया मुडे भवित्ताण पव्वइजे अणगारिअ ॥ १८ ॥ जया मुडे भवित्ताणं पव्वइजे अणगारिअ, तया सवरमुक्किट्ठं, धम्म फासे अणुत्तर ॥ १९ ॥ जया सवरमुक्किट्ठ, धम्म फासे अणुत्तर, तया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुस कड ॥ २० ॥ जया धुणइ कम्मरय, अबोहिकलुस कड, तया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥ जया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छइ, तया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥ जया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली, तया जोगे निरुभित्ता सेलेसि पडिवज्जई ॥ २३ ॥ जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जई, तया कम्मं

खविचाणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥ जया कम्म खविचाण सिद्धिं गच्छइ नीरओ, तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥ सुहसायगस्स समणस्स सायाओलगस्स निगामसाइस्स, उच्छोलणापहोअस्स दुल्लहा सुगई तारिसगस्स ॥ २६ ॥ तवो-गुणप्पहाणस्स, उज्जुमइखतिसजमरयस्स, परीसहे जीणंतस्स सुलहा सुगइ तारिसगस्स ॥ २७ ॥ पच्छा वि ते पयाया खिप्प गच्छंति अमरभवणाइं, जेसिं पिओ तवो सजमो अ खंति अ बंभचेर च ॥ २८ ॥ इच्चेअ छज्जीवणिअं सम्मदिट्ठी सया जए, दुल्लहं लहित्तु सामन्नं, कम्मुणा न विराहेज्जासि, त्तिबेमि ॥२९॥

इति चउत्थ छज्जीवणिआनामज्झयण समत्तं ॥ ४ ॥

जीवविचारादि प्रकरणो

॥ श्रीजीवविचारप्रकरण मूल ॥

भुवणपईवं वीरं नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं ।
जीवसरूवं किं चिवि जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥
जीवा मुत्ता संसारिणो य तसथावरा य संसारी ।
पुढवि-जल-जलण-वाऊ-वणस्सई-थावरा नेया ॥ २ ॥
फलिह-मणि-रयण-विद्दुम हिंगुल-हरियाल-मणसिल-रसिंदा ।
कणगाइ धाऊ सेढी वन्निय अरणेट्टय पलेवा ॥ ३ ॥
अब्भय तूरी ऊस मट्टी पाहाण जाईओ णेगा ।
सोवीरंजण लुणाइ पुढवी भेयाइ इच्चाइ ॥ ४ ॥
भोमंतरिक्ख मुदगं ओसा हिम करग हरितणू महिया ।
हुंति घणोदहिमाई भेआ णेगा य आउस्स ॥ ५ ॥
इंगाल जाल मुम्मुर उक्कासणि कणग विज्जुमाइया ।
अगणिजियाणं भेया नायव्वा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥
उब्भामग-उक्कलिया, मंडलि मह सुद्ध गुंजवाया य ।
घण तणु वायाइया भेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥
साहारण पत्तेया वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया ।
जेसिमणंताणं तणू एगा साहारणा ते उ ॥ ८ ॥
कंदा अंकुर किसलय पणगा सेवाल भूमिफोडा य ।
अल्लयतिय गज्जर मोत्थ वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥
कोमलफलं च सव्वं गूढ सिराइं सिणाइ पत्ताइं ।

थोहरि कुआरि गुग्गुलि गलोय पमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥
इच्चाइणो अणेगे हवंति भेया अणंत-कायाण ।
तेसिं परिजाणणत्थं लक्खणमेयं सुए भणिय ॥ ११ ॥
गूढ सिर साधि पव्व समभगमहीरगं च छिन्न रुह ।
साहारण सरीरं तव्विवरीय च पत्तेय ॥ १२ ॥
एग सरीरे एगो जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया ।
फल फूल छल्लि कट्ठा, मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥
पत्तेयतरुं मुत्तु पचवि पुढवाइणो सयल लोए ।
सुहुमा हवंति नियमा अंतमुहुत्ताऊ अदिस्सा ॥ १४ ॥
सख कवड्डय गडुल्ल जलोय चदणग अलस लहगाइ ।
मेहरि किमि पूयरगा बेइंदिय माइवाहाइ ॥ १५ ॥
गोमी मंकण जूआ पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा ।
इल्लिय घयमिल्लीओ सावय गोकीडजाइओ ॥ १६ ॥
गद्दहय चोरकीडा गोमयकीडा य धन्नकीडा य ।
कुथु गोवालिय इलिया तेइंदिय इदगोवाइ ॥ १७ ॥
चउरिंदिया य बिच्छू ढिंकुण भमरा य भमरीया तिड्डा ।
मच्छिय डसा मसगा कंसारी कविल-डोलाई ॥ १८ ॥
पचिंदिया य चउहा नारय तिरिया मणुस्स देवा य ।
नेरइया सत्तविहा नायव्वा पुढवी-भेएण ॥ १९ ॥
जलयर थलयर खयरा तिविहा पचिंदिया तिरिक्खा य ।
सुसुमार मच्छ कच्छव गाहा मगरा य जलचारी ॥ २० ॥
चउपय उरपरिसप्पा भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा ।

गो सप्प नउल पमुहा बोधव्वा ते समासेण ॥ २१ ॥
खयरा रोमयपक्खी चम्मयपक्खी य पायडा चेव ।
नरलोगाओ बाहिं समुग्गपक्खी विययपक्खी ॥ २२ ॥
सव्वे जल-थल-खयरा समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति ।
कम्मा-कम्मगा-भूमि अतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥
दसहा भवणाहिवइ अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति ।
जोइसिया पंचविहा दुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥
सिद्धा पनरस भेया तित्था-तित्थाइसिद्ध भेएण ।
एए संखेवेण जीव-विगप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥
एएसिं जीवाणं सरीरमाऊठिई सकायम्मि ।
पाणा जोणि पमाणं जेसिं जं अत्थि तं भणिमो ॥ २६ ॥
अंगुल असंख भागो सरीर-मेगिंदियाण सव्वेसिं ।
जोयणसहस्समहियं नवर पत्तेयरुक्खाणं ॥ २७ ॥
बारस जोयण तिन्नेव गाउआ जोयणं च अणुक्कमसो ।
बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय देहमुच्चत्त ॥ २८ ॥
धणु सय पंच पमाणा नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ।
तत्तो अद्धूणा नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥
जोयणसहस्समाणा मच्छा उरगा य गब्भया हुंति ।
धणुहपुहुत्तं पक्खिसु भुअचारी गाउअ पुहुत्तं ॥ ३० ॥
खयरा धणुह पुहुत्तं भुयगा उरगा य जोयण पुहुत्तं ।
गाउअ पुहुत्तमित्ता समुच्छिमा चउप्पया भणिया ॥ ३१ ॥
छच्चेव गाउआइं चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ।

कोसतिग च मणुस्सा उक्कोस सरीरमाणेणं ॥ ३२ ॥
ईसाणंत सुराण रयणीओ सत्त हुंति उच्चत्त ।
दुग दुग दुग चउ गेविज्जणुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥
बावीसा पुढवीए सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स ।
वास सहस्सा दस तरुगणाण तेऊ ति रत्ताऊ ॥ ३४ ॥
वासाणि बारसाऊ बेइंदियाणं तेइंदियाणं तु ।
अउणापन्न दिणाइं चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥ ३५ ॥
सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीस ।
चउप्पय तिरिय मणुस्सा तिन्नि य पलिओवमा हुंति ॥ ३६ ॥
जलयर उर भुयगाण परमाऊ होई पुव्व कोडी उ ।
पक्खीण पुण भणिओ असखभागो य पलियस्स ॥ ३७ ॥
सव्वे सुहुमा साहारणा य समुच्छिमा मणुस्सा य ।
उक्कोसजहन्नेणं अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥
ओगाहणाउ माणं एव सखेवओ समक्खाय ।
जे पुण इत्थ विसेसा विसेससुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥
एगिंदिया य सव्वे असखउस्सप्पिणी सकायम्मि ।
उववज्जंति चयंति य अणतकाया अणंताओ ॥ ४० ॥
सखिज्ज-समा विगला सत्तट्ठ भवा पणिंदि-तिरी-मणुआ ।
उववज्जंति सकाए नारय देवा य नो चेव ॥ ४१ ॥
दसहा जिआण पाणा इंदिय उसास आउ बल रूवा ।
एगिंदिएसु चउरो विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥ ४२ ॥
असन्नि सन्नि पचि-दिएसु नव दस कमेण बोधव्वा ।

तेहिं सह विप्पओगो जीवाण भण्णए मरणं ॥ ४३ ॥
एवं अणोरपारे ससारे सायरम्मि भीमम्मि ।
पत्तो अणतखुत्तो जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥
तह चउरासी लक्खा सखा जोणीण होइ जीवाण ।
पुढवाइणो चउण्ह पत्तेय सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥
दस पत्तेय तरूण चउदस लक्खा हवति इयरेसु ।
विगलिंदिएसु दो दो चउरो पचिंदितिरियाणं ॥ ४६ ॥
चउरो चउरो नारय सुरेसु मणुआण चउदस हवति ।
सपिंडिया य सव्वे चुलसी लक्खाउ जोणीण ॥ ४७ ॥
सिद्धाण नत्थि देहो न आउकम्म न पाणजोणीओ ।
साइ अणता तेसि ठिइ जिणदागमे भणिआ ॥ ४८ ॥
काले अणाइनिहणे जोणि गहणम्मि भीसणे इत्थ ।
भमिया भमिहिंति चिरं जीवा जिणवयणमलहता ॥ ४९ ॥
ता सपइ सपत्ते मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते ।
सिरिसतिसूरिसिट्ठे करेह भो ! उज्जम धम्मे ॥ ५० ॥
एसो जीववियारो सखेवरुईण जाणणा हेऊ ।
सखित्तो उद्धरिओ रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥
॥ इति श्री जीवविचार प्रकरण ॥

श्री नवतत्त्व प्रकरण

जीवाऽजीवा पुण्ण पावाऽऽसव सवरो य निज्जरणा ।
बन्धो मुक्खो य तहा नवतत्ता हुति नायव्वा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बाया–लीसा बासी अ हुति बायाला ।
सत्तावन्नं बारस, चउ नव भेया कमेणेसिं ॥ २ ॥

एगविह दुविह तिविहा, चउव्विहा पंच छव्विहा जीवा
चेयणतसइयरेहिं, वेय-गई-करण-काएहिं ॥ ३ ॥
एगिंदियसुहुमियरा, सन्नियर पणिंदिया य सबीतिचउ ॥
अपजत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जियट्ठाणा ॥ ४ ॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा
वीरियं उवओगो य, एवं जीअस्स लक्खणं ॥ ५ ॥
आहारसरीरिंदिय-पज्जत्ती आणपाणभासमणे
चउ पंच पंच छप्पि य, इगविगलाऽसन्निसन्नीणं ॥ ६ ॥
पणिंदिअत्तिबलूसा-साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ
इग-दु-ति-चउरिंदीणं, असन्नि-सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥
धम्माधम्मागासा, तिय-तिय-भेया तहेव अद्धा य ।
खंधा देस पएसा, परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ८ ॥
धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अजीवा,
चलणसहावो धम्मो, थिरसंठाणो अहम्मो य ॥ ९ ॥
अवगाहो आगासं, पुग्गलजीवाण पुग्गला चउहा,
खंधा देस पएसा, परमाणु चेव नायव्वा ॥ १० ॥
सद्दंधयार उज्जोअ, पभा छायातवेहि अ (इय),
वन्न गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ ११ ॥
एगा कोडि सतसट्ठि, लक्खा सत्तहुत्तरी सहस्सा य;
दो य सया सोलहिया, आवलिया इगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥
समयावली मुहुत्ता, दीहा पक्खा य मास वरिसा य;
भणिओ पलिया सागर, उस्सप्पिणिसप्पिणी कालो ॥ १३ ॥
परिणामि जीव मुत्तं, सपएसा एग खित्तकिरिया य,
णिच्चं कारण कत्ता, सव्वगय इयर अप्पवेसे ॥ १४ ॥

सा उच्चगोअ मणुदुग, सुरदुग पंचिंदिजाइ पण देहा,
आइतितणूणुवंगा, आइमसंघयणसंठाणा ॥ १५ ॥
वन्नचउक्का गुरुलहु, परघा उस्सास आयवुज्जोअं;
सुभखगइनिमिणतसदस सुरनरतिरिआउ तित्थयरं ॥ १६ ॥
तस बायर पज्जत्तं, पत्तेअ थिरं सुभं च सुभगं च,
सुस्सर आइज्ज जसं, तसाइदसगं इमं होइ ॥ १७ ॥
नाणंतरायदसगं, नव बीए नीअसाय मिच्छत्तं,
थावरदस-निरयतिगं, कसाय पणवीस तिरियदुगं ॥ १८ ॥
इगबितिचउजाईओ, कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स,
अपसत्थं वन्नचऊ, अपढमसंघयणसंठाणा ॥ १९ ॥
थावर सुहुम अपज्जं, साहारणमथिरमसुभदुभगाणि
दुस्सरणाइज्जजसं, थावरदसगं विवज्जत्थं ॥ २० ॥
इंदिअ कसाय अव्वय, जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा;
किरियाओ पणवीसं, इमा उ ताओ अणुक्कमसो ॥ २१ ॥
काइय अहिगरणिया, पाउसिया पारितावणी किरिया,
पाणाइवायारंभिय, परिग्गहिआ मायवत्तीआ ॥ २२ ॥
मिच्छादंसणवत्ती, अपच्चक्खाणा य दिट्ठि पुट्ठि य,
पाडुच्चिय सामंतो-वणीअ नेसत्थि साहत्थी ॥ २३ ॥
आणवणि विआरणिया, अणभोगा अणवकंखपच्चइया,
अन्ना पओग समुदा-ण पिज्ज दोसेरियावहिया ॥ २४ ॥
समिई गुत्ती परिसह, जइधम्मो भावणा चरित्ताणि,
पण ति दुवीस दस बार, पंचभेएहिं सगवन्ना ॥ २५ ॥
इरिया भासेसणादाणे, उच्चारे समिईसु अ,
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती तहेव य ॥ २६ ॥

खुहा पिवासा सीउण्ह, दसाचेलारइत्थिओ;
चरिया निसीहिया सिज्जा, अकोस वह जायणा ॥ २७ ॥
अलाभ रोग तणफासा, मल-सक्कार-परीसहा;
पन्ना अन्नाण सम्मत्त, इअ बावीस परीसहा ॥ २८ ॥
खंती मद्दव अज्जव, मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे,
सच्चं सोअं आकिं-चणं च बंभं च जइधम्मो ॥ २९ ॥
पढममणिच्चमसरण, संसारो एगया य अन्नत्त;
असुइत्त आसव सं-वरो य तह णिज्जरा नवमी ॥ ३० ॥
लोगसहावो बोही दुल्लहा धम्मस्स साहगा अरिहा;
एआओ भावणाओ, भावेअव्वा पयत्तेणं ॥ ३१ ॥
सामाइअत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बीअं,
परिहारविसुद्धीअं सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥
तत्तो अ अहक्खायं, खायं सव्वंमि जीवलोगंमि,
जं चरिऊण सुविहिया, वच्चंति अयरामरं ठाणं ॥ ३३ ॥
बारसविहं तवो णि-,ज्जरा य बंधो चउव्विगप्पो अ,
पयइ-ठ्ठिइ-अणुभाग-प्पएसभेएहिं नायव्वो ॥ ३४ ॥
अणसणमूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ;
कायकिलेसो संली-णया य बज्झो तवो होइ ॥ ३५ ॥
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ,
झाणं उस्सग्गोऽवि अ, अब्भितरओ तवो होइ ॥ ३६ ॥
पयइ सहावो वुत्तो, ठिई कालावहारणं,
अणुभागो रसो णेओ, पएसो दलसंचओ ॥ ३७ ॥
पडपडिहारऽसिमज्ज-, हडचित्तकुलालभंडगारीणं;
जह एएसिं भावा, कम्माणऽवि जाण तह भावा ॥ ३८ ॥

इह नाणदसणावरण–, वेयमोहाउनामगोआणि,
विग्ध च पण नव दु, अट्ठवीस चउतिसय दु पणविह ॥ ३९ ॥
नाणे अ दसणावरणे, वेयणिए चेव अंतराए अ,
तीसं कोडाकोडी, अयराण ठिई अ उक्कोसा ॥४०॥
सित्तरि कोडाकोडी, मोहणिए वीस नामगोएसु,
तित्तीस अयराइ, आउट्ठिइबंध उक्कोसा ॥ ४१ ॥
बारस मुहुत्त जहन्ना, वेयणिए अट्ठ नामगोएसु,
सेसाणंतमुहुत्त, एय बंधट्ठिईमाण ॥ ४२ ॥
संतपयपरूवणया, दव्वपमाण च खित्त फुसणा य,
कालो अ अंतर भा–ग भाव अप्पाबहु चेव ॥ ४३ ॥
संतं सुद्धपयत्ता, विज्जंत खकुसुम व्व न असंत,
मुक्ख त्ति पयं तस्स उ, परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥
गइ इंदिए अ काए, जोए वेए कसाय नाणे अ,
संजम दसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥
नरगइ पणिंदि तस भव, सन्नि अहक्खाय खइअसम्मत्त,
मुक्खोऽणाहारे केवल–दसणनाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥
दव्वपमाणे सिद्धाण, जीवदव्वाणि हुंतिऽणंताणि,
लोगस्स असखिज्जे, भागे इक्को य सव्वेवि ॥ ४७ ॥
फुसणा अहिया कालो, इगसिद्ध पडुच्च साइओणंतो,
पडिवायाऽभावाओ, सिद्धाणं अंतर नत्थि ॥ ४८ ॥
सव्वजियाणमणंते, भाग ते तेसिं दसण नाण,
खइए भावे परिणा–मिए अ पुण होइ जीवत्त ॥ ४९ ॥
थोवा नपुंससिद्धा, थीनरसिद्धा कमेण सखगुणा,
इअ मुक्खतत्तमेअं, नवतत्ता लेसओ भणिआ ॥ ५० ॥

जीवाइ नव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्त,
भावेण सद्दहंतो, अयाणमाणेऽवि सम्मत्त ॥ ५१ ॥
सव्वाइ जिणेसर–, भासियाइ वयणाइ नन्नहा हुंति,
इइ बुद्धि जस्स मणे, सम्मत्त निच्चल तस्स ॥ ५२ ॥
अंतोमुहुत्तमित्त–पि फासिय हुज्ज जेहिं सम्मत्तं,
तेसिं अवड्ढपुग्गल–परियट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥
उस्सप्पिणी अणंता पुग्गलपरिअट्टओ मुणेयव्वो,
तेऽणंताऽतीअद्धा, अणागयद्धा अणंतगुणा ॥ ५४ ॥
जिणअजिण तित्थऽतित्था, गिहि अन्न सलिंग थीनरनपुंसा,
पत्तेय सयंबुद्धा, बुद्धबोहिय इक्कणिक्का य ॥ ५५ ॥
जिणसिद्धा अरिहंता, अजिणसिद्धा य पुंडरिअपमुहा,
गणहारि तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा य मरुदेवा ॥ ५६ ॥
गिहिलिंगसिद्ध भरहो, वक्कलचीरी य अन्नलिंगम्मि,
साहु सलिंगसिद्धा, थीसिद्धा चंदणापमुहा ॥ ५७ ॥
पुंसिद्धा गोयमाई, गागेयाई नपुंसया सिद्धा,
पत्तेयसयंबुद्धा, भणिया करकंडुकविलाई ॥ ५८ ॥
तह बुद्धबोहि गुरुबो–हिया य इगसमये इगसिद्धा य,
इग समयेऽवि अणेगा, सिद्धा तेऽणेगसिद्धा य ॥ ५९ ॥
॥ इति श्री नवतत्त्वमूलम् ॥

दण्डक प्रकरण

नमिउ चउवीस जिणे, तस्सुत्त–, वियार लेस देसणओ,
दडग-पएहि ते च्चिय, थोसामि सुणेह भो भव्वा ॥ १ ॥
नेरइया असुराई, पुढवाइ बेइंदियादओ चेव,
गब्भय–तिरिय मणुस्सा, वंतर जोइसिया वेमाणी ॥ २ ॥

सखित्तपरी उ इमा, सरीर-मोगाहणा य सघयगा,
सन्ना सठाण कसाय, लेसिन्दिय दु समुग्घाया, ॥ ३ ॥
दिट्ठी दसण नाणे जोगु-वजोगो-ववाय चवण-ठिइ,
पज्जत्ति किमाहारे, सन्नी गइ आगई वेए ॥ ४ ॥
चउगभ्भ-तिरिय-वाउसु, मणुआण पच सेस तिसरीरा,
थावर चउगे दुहओ, अगुल असखभाग तणू ॥ ५ ॥
सव्वेसिपि जहन्ना, साहाविय अगुलस्स असखसो,
उक्कोस पण सय धणु नेरइया सत्त हत्थ सुरा ॥ ६ ॥
गब्भतिरि सहस जोयण, वणस्सई अहिय जोयण सहस्स,
नर तेइदि तिगाऊ चेइदिय जोयणे बार ॥ ७ ॥
जोयण-मेग चउरिंदि, देह-मुच्चत्तण सुए भणिअ,
वेउव्विय-देह पुण अगुलसखसमारंभे ॥ ८ ॥
देव नर अहिय लक्ख, तिरियाण नव य जोयण सयाइ,
दुगुणं तु नारयाण, भणिय वेउव्विय सरीर ॥ ९ ॥
अतमुहुत्त निरए, मुहुत्त चत्तारि तिरिय-मणुएसु,
देवेसु अद्ध मासो, उक्कोस विउव्वणाकालो ॥ १० ॥
थावर सुर नेरइआ असघयणा य विगल छेवट्ठा,
सघयण छग गब्भय, नर-तिरिसुवि मुणेयव्व, ॥ ११ ॥
सव्वेसिं चउ दह वा, सन्ना सव्वे सुरा य चउरसा,
नर तिरिय छ सठाणा, हुडा विगलिंदि नेरइया ॥ १२ ॥
नाणाविह धय सूई, बुब्बुय वण वाउ तेउ अपकाया,
पुढवी मसूर चदा-कारासठाणओ भणिया ॥ १३ ॥
सव्वे वि चउ कसाया, लेसछग गब्भ तिरिय मणुएसु,
नारय तेउ विगला, वेमाणिय तिलेसा य ॥ १४ ॥

जोइसिय तेउ लेसा, सेसा सव्वेवि हुंति चउ लेसा,
इंदिय दार सुगम, मणुआण सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥
वेयण कसाय मरणे, वेउव्विय तेयअे य आहारे,
केवलिय समुग्धाया सत्त इमे हुंति सन्नीण ॥ १६ ॥
अेगिंदियाण केवलि, तेउ आहारग विणा उ चत्तारि,
ते वेउव्विय वज्जा, विगला सन्नीण ते चेव ॥ १७ ॥
पण गब्भ तिरि सुरेसु, नारय वाउसु चउर तिय सेसे,
विगल दु दिट्ठी थावर, मिच्छत्ती सेस तिय दिट्ठी, ॥ १८ ॥
थावर बितिसु अचक्खु, चउरिंदिसु तद्दुगं सुअे भणिअं,
मणुआ चउ दसणिणो, सेसेसु तिगं तिग भणियं ॥ १९ ॥
अन्नाण नाण तिय तिय, सुर तिरिनिरअे थिरे अनाणदुग,
नाणान्नाण दु विगले, मणुअे पण नाण तिअनाणा ॥ २० ॥
इक्कारस सुर निरअे, तिरिअेसु तेर पन्नर मणुअेसु,
विगले चउ पण वाअे, जोगतियं थावरे होइ ॥ २१ ॥
उवओगा मणुअेसु, वारस नव निरय तिरिय देवेसु,
विगल दुगे पण छक्कं, चउरिंदिसु थावरे तियग ॥ २२ ॥
संखमसंखा समये, गब्भय तिरि विगल नारय सुरा य,
मणुआ नियमा संखा, वणणंता थावर असंखा ॥ २३ ॥
असन्नी नर असंखा, जह उववाअे तहेव चवणे वि,
बावीस सग ति दस वास-, सहस्स उक्किट्ठ पुढवाइ ॥ २४ ॥
ति दिणग्गि ति पल्लाउ, नर तिरि सुर निरय सागर तित्तीसा,
वतर पल्ल जोइस, वरिस लक्खाहिय पलिय ॥ २५ ॥
असुराण अहियअयर, देसूण दु पल्लयं नव निकाये,
बारस वासुण पण दिण, छम्मासुक्किट्ठ विगलाउ ॥ २६ ॥

पुढवाइ दस पयाण, अंतमुहुत्तं जहन्न आउठिइ,
दस सहस्स वरिस ठिइया, भवणाहिव निरय वंतरिआ ॥ २७ ॥
वेमाणिय जोइसिया, पल्ल तयट्ठंस आउआ हुंति,
सुर नर तिरि निरएसु, छ पज्जत्ती थावरे चउगं ॥ २८ ॥
विगले पंच पज्जत्ती, छद्दिसि आहार होइ सव्वेसिं,
पण गइ पये भयणा, अह सन्नितियं भणिस्सामि ॥ २९ ॥
चउविह सुर तिरिएसु, निरएसु अ दीहकालिगी सन्ना,
विगले हेउवएसा, सन्ना रहिया थिरा सव्वे ॥ ३० ॥
मणुआण दीहकालिय, दिट्ठिवाओवएसिया के वि,
पज्ज पण तिरि मणुअ च्चिय, चउविह देवेसु गच्छंति ॥ ३१ ॥
संखाउ पज्ज पणिंदि, तिरियनरेसु तहेव पज्जत्ते,
भूदग पत्तेयवणे, एएसु च्चिय सुरागमणं ॥ ३२ ॥
पज्जत्त संख गब्भय, तिरिय नरा निरयसत्तगे जंति,
निरय उवट्टा एएसु, उववज्जंति न सेसेसु ॥ ३३ ॥
पुढवी आउ वणस्सइ, गब्भे नारय विवज्जिया जीवा,
सव्वे उववज्जंति, निय निय कम्माणुमाणेण ॥ ३४ ॥
पुढवाइ दस पएसु, पुढवी आऊ वणस्सइ जंति,
पुढवाइ दस पएहिं, य तेऊ वाऊसु उववाओ ॥ ३५ ॥
तेऊ वाऊ गमणं, पुढवी पमुहंमि होई पय नवगे,
पुढवाइ ठाण दसगा, विगलाइतियं तहिं जंति ॥ ३६ ॥
गमणागमणं गब्भय, तिरियाण सयल जीवठाणेसु,
सव्वत्थ जंति मणुआ, तेऊवाऊहिं नो जंति ॥ ३७ ॥
वेय तिय तिरिनरेसु, इत्थी पुरिसो य चउविह सुरेसु;
थिर विगल नारएसु, नपुंसवेओ हवइ एगो ॥ ३८ ॥

पज्ज मणु बायरग्गि, वेमाणिय भवण निरय वतरिया,
जोइस चउ पण तिरिया, नेइंदिय तेइंदिय भू आउ ॥ ३९ ॥
वाऊ वणस्सइ च्चिय, अहिया अहिया कमेणिमे हुंति
सव्वे वि इमे भावा, जीवा भवेणतसो पत्ता ॥ ४० ॥
सपइ तुम्ह भत्तस्स, दंडग–पय भमण भग्गहियस्स,
दडतिय विरय सुलह, लहु मम दिंतु मुक्खपय ॥ ४१ ॥
सिरि जिणहंस मुणीसर रज्जे सिरि धवलचद सीसेण,
गजसारेण लिहिया, अेसा विन्नत्ति अप्पहिया ॥ ४२ ॥

श्री लघु सग्रहणी प्रकरण मूल

नमिय जिण सव्वन्नुं, जगपुज्ज जगगुरुं महावीरं,
जबूदीव पयत्थे, वुच्छं सुत्ता सपरहेऊ ॥ १ ॥
खंडा जोयण वासा, पव्वय कूडा य तित्थ सेढीओ,
विजय दह सलिलाओ, पिडेसिं होइ सघयणी ॥ २ ॥
नउअ सय खडाण, भरहपमाणेण भाइए लक्खे,
अहवा नउअ सयगुण, भरह पमाणं हवइ लक्ख ॥ ३ ॥
अहविग खडे भरहे, दो हिमवते अ हेमवइ चउरो,
अट्ठ महा हिमवते, सोलस खंडाइ हरिवासे ॥ ४ ॥
बत्तीस पुण निसढे, मिलिआ तेसट्ठी बीयपासे वि,
चउसट्ठी उ विदेहे, तिरासि पिडे नउय सय ॥ ५ ॥
जोयण परिमाणाइ समचउरसाइ इत्थ खडाइ,
लक्खस्स य परिहिए, तप्पाय गुणे य हुंतेव ॥ ६ ॥
विक्खम वग्ग दह गुण, करणी वट्टस्स परिरओ होई,
विक्खभ पाय गुणिओ, परिरओ तस्स गणियपय ॥ ७ ॥

परिही तिलक्ख सोलस, सहस्स दोय सय सत्तवीसहिया
कोस तिगट्ठावीस धणुसय तेरंगुलद्धहिअ ॥ ८ ॥
सत्तेव य कोडि सया, नउआ छप्पन्न सय-सहस्साइं,
चउनउय च सहस्सा, सय दीवड्ढं च साहिय ॥ ९ ॥
गाउअमेग पनरस, धणुसया तह धणुणि पन्नरस
सट्ठिं च अंगुलाइं, जंबूदीवस्स गणियपयं ॥ १० ॥
भरहाइ सत्त वासा, वियड्ढ चउ चउर [illegible]
सोलस वक्खारगिरी, दो चित्त विचित्त दो [illegible] ॥ ११ ॥
दोसय कणयगिरीणं, चउ गयदंता य तह [illegible]
छ वासहरा पिंडे, एगुणसत्तरि सया दुन्नि ॥ १२ ॥
सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूडा य हुंति [illegible]
सोमणस गंधमायण, सत्तट्ठ य [illegible] ॥ १३ ॥
चउतीस वियड्ढेसु, विज्जुपह [illegible]
तह माल्लवंत सुरगिरि नव नव कूडाइं [illegible] ॥ १४ ॥
हिमसिहरिसु इक्कारस, इय इगसट्ठी [illegible]
एगत्ते सव्वधणं, सय-चउरो [illegible] ॥ १५ ॥
चउ सत्त अट्ठ नवगे-, ग [illegible]
सोलस दु दुगुणयाउ, दुवे [illegible] ॥ १६ ॥
चउतीसं विजएसु, उसह [illegible]
अट्ठ य देवकुराए, हरिकूड [illegible] ॥ १७ ॥
मागह वरदाम पभास, [illegible]
चउतीसा तिहिं गुणिया, [illegible]
विज्जाहर अभिओगिय, [illegible]
इय चउगुण चउतीसा, [illegible]

चक्की जे अग्गाई, विजयाई इत्थ हुंति चउतीसा,
मह दह छ पउमाइ, कुरुसु दसग त्ति सोलसग ॥ २० ॥
गंगा सिंधू रत्ता, रत्तवइ चउ नइओ पत्तेयं,
चउदसहिं सहस्सेहिं, समग वच्चंति जलहिंमि॥ २१ ॥
एवं अभिंतरिया, चउरो पुण अट्ठवीस सहस्सेहिं,
पुणरवि छप्पन्नेहिं, सहस्सेहिं जति चउ सलिला ॥ २२ ॥
कुरुमज्झे चउरासी, सहस्साइ तह य विजय सोलससु,
बत्तीसाण नईण, चउदस सहस्साइ पत्तेयं ॥ २३ ॥
चउदस सहस्स गुणिया, अडतीस नइओ विजयमज्झिल्ला,
सीओयाए निवडंति, तह य सीयाए एमेव ॥ २४ ॥
सीया सीओया विय, बत्तीस सहस्स पंच लक्खेहिं,
सव्वे चउदस लक्खा, छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ २५ ॥
छज्जोयणे सक्कोसे, गंगा सिंधूण वित्थरो मूले,
दसगुणिओ पज्जंते, इय दु दु गुणणेण सेसाणं ॥ २६ ॥
जोयण सयमुच्चिट्ठा, कणयमया सिहरि चुल्ल हिमवंता,
रुप्पि महाहिमवंता, दुस उच्चा रुप्प कणयमया ॥ २७ ॥
चत्तारि जोयण सए, उच्चिट्ठो निसढ नीलवंतो य,
निसढो तवणिज्जमओ, वेरुलिओ नीलवनगिरी ॥ २८ ॥
सव्वेवि पव्वयवरा, समयक्खित्तंमि मंदर विहूणा,
धरणितले उवगाढा, उस्सेह चउत्थ भायंमि ॥ २८ ॥
खंडाइ गाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुदीवस्स,
संघयणी सम्मत्ता, रइया हरिभद्दसूरिहिं ॥ ३० ॥

पहिले कर्मग्रन्थ की मूल गाथाएं

सिरिवीरजिण वंदिय, कम्मविवाग समासओ वुच्छं ।
कीरइ जिएण हेउहिं, जेण तो भन्नए कम्मं ॥ १ ॥
पयइठिइरसपएसा, तं चउहा मोयगस्स दिट्ठंता ।
मूलपगइट्ठ उत्तर-पगइ अडवन्नसयमेयं ॥ २ ॥
इह नाणदंसणावरण-वेयमोहाउनामगोयाणि ।
विग्धं च पणनवदुअ-ट्ठवीसचउतिसयदुपणविहं ॥ ३ ॥
मइसुयओहीमणके-वलाणि नाणाणि तत्थ मइनाणं ।
वंजणवग्गहचउहा, मणनयण विणिंदियचउक्का ॥ ४ ॥
अत्थुग्गहईहावा-यधारणा करणमाणसेहिं छहा ।
इय अट्ठवीसभेयं, चउदसहा वीसहा व सुयं ॥ ५ ॥
अक्खरसन्नीसम्मं, साइअं खलु सपज्जवसियं च ।
गमियं अंगपविट्ठं सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥ ६ ॥
पज्जय अक्खरपयसं-घाया पडिवत्ति तह य [illegible] ।
पाहुडपाहुडपाहुड-वत्थूपुव्वा य ससमासा ॥ ७ ॥
अणुगामिवड्ढमाणय-पडिवाइयरविहा छहा [illegible] ।
रिउमइ विमलमइ मण-नाणं केवलमिगविहाणं ॥ ८ ॥
एसिं जं आवरणं, पडुव्व चक्खुस्स तं [illegible] ।
दंसणचउ पण निद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥ ९ ॥
चक्खुदिट्ठिअचक्खु-सेसिंदियओहि[illegible] च ।
दंसणमिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं [illegible] ॥ १० ॥
सुहपडिबोहा निद्दा, निद्दानिद्दा य [illegible] ।
पयला ठिओवविट्ठ-स्स पयलपयला उ [illegible] ।

ज सघायइ उरला-इपुग्गले तणगण व दंताली ।
त सघाय बधण-मिव तणुनामेण पचविह ॥ ३६ ॥
ओरालविउव्वाहा-रयाण सगतेयकम्मजुत्ताण ।
नवबधणाणि इयरदु-सहियाण तिन्नि तेसिं च ॥ ३७ ॥
सघयणमट्ठिनिचओ त छद्धा वज्जरिसहनारायं ।
तह रिसह नाराय नाराय अद्धनाराय ॥ ३८ ॥
कीलिय छेवट्ठ इह, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्जं ।
उभओ मक्कडबधो, नारायं इममुरालगे ॥ ३९ ॥
समचउरस निग्गो-हसाइखुज्जाइ वामणं हुड ।
सठाणा वण्णा किण्ह-नीललोहियहलिद्दसिया ॥ ४० ॥
सुरहिदुरही रसा पण, तित्तकडुकसायअबिला महुरा ।
फासागुरुलहुमिउखर-सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्ठा ॥ ४१ ॥
नीलकसिणं दुगधं, तित्त कडुय गुरु खर रुक्ख ।
सीय च असुहनवग, इक्कारसग सुभ सेस ॥ ४२ ॥
चउहगइव्वणुपुव्वी, गइपुव्विदुग तिग नियाउजुय ।
पुव्वी उदओ वक्के, सुहअसुहवसुट्टविहगगइ ॥ ४३ ॥
परघाउदया पाणी, परेसि बलिणं पि होइ दुद्धरिसो ।
ऊससणलद्धिजुत्तो, हवइ ऊसासनामवसा ॥ ४४ ॥
रविबिंबे उ जियग, तावजुयं आयवाउ न उ जलणे ।
जमुसिणफासस्स तहिं, लोहियवन्नस्स उदउ त्ति ॥ ४५ ॥
अणुसिणपयासरूव, जियंगमुज्जोयए इहुज्जोया ।
जइदेवुत्तरविक्किय-जोइसखज्जोयमाइ व्व ॥ ४६ ॥
अगं न गुरु न लहुय, जायइ जीवस्स अगुरुलहुउदया ।
तित्थेण तिहुयणस्स वि, पुज्जो से उदओ केवलिणो ॥ ४७ ॥

अगोवगनियमण, निम्माण कुणइ सुचक्कारसम ।
उवघाया उवहम्मइ, सतणुवयवलविगाईहिं ॥ ४८ ॥
बितिचउपर्णिदिय तसा, बायरओ बायरा जिया थूला ।
नियनियपज्जत्तिजुया पज्जत्ता लद्धिकरणेहिं ॥ ४९ ॥
पत्तेय तणू पत्ते–उदयेणं दंतअट्ठिमाइ थिरं ।
नाभुवरि सिराइ सुहं, सुभगाओ सव्वजणइट्ठो ॥ ५० ॥
सुसरा महुरसुहझुणी, आइज्जा सव्वलोयगिज्झवओ ।
जसओ जसकित्तीओ, थावरदसगं विवज्जत्थं ॥ ५१ ॥
गोयं दुहुच्चनीयं, कुलाल इव सुघडभुमलाईयं ।
विग्घं दाणे लाभे, भोगुवभोगेसु वीरिए य ॥ ५२ ॥
सिरिहरियसमं एयं, जह पडिकूलेण तेण रायाई ।
न कुणइ दाणाईयं, एवं विग्घेण जीवो वि ॥ ५३ ॥
पडिणीयत्तणनिण्हव–उवघायपओस अंतराएणं ।
अच्चासायणयाए आवरणदुगं जिओ जयइ ॥ ५४ ॥
गुरुभत्तिखंतिकरुणा–वयजोगकसायविजयदाणजुओ
दढधम्माइ अज्जइ, सायमसायं विवज्जयओ ॥ ५५ ॥
उमग्गदेसणामग्ग–नासणादेवदव्वहरणेहिं ।
दंसणमोहं जिणमुणि–चेइयसंघाइपडिणीओ ॥ ५६ ॥
दुविहं पि चरणमोहं, कसायहासाइविसयविवसमणो ।
बंधइ निरयाउ महा–रंभपरिग्गहरओ रुद्दो ॥ ५७ ॥
तिरियाउ गूढहियओ, सढो ससल्लो तहा मणुस्साउ ।
पयईइ तणुकसाओ, दाणरुई मज्झिमगुणो य ॥ ५८ ॥
अविरयमाइ सुराउ, बालतवोकामनिज्जरो जयइ ।

सरलो अगारविल्लो, सुहनाम अन्नहा असुहं ॥ ५९ ॥
गुणपेही मयरहियो, अज्झयणज्झावणारुई निच्चं ।
पकुणइ जिणाइभत्तो, उच्चं नीयं इयरहा उ ॥ ६० ॥
जिणपूयाविग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं ।
इय कम्मविवागोऽयं, लिहियो देविंदसूरीहिं ॥ ६१ ॥

दूसरा कर्मग्रन्थ

तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं ।
बन्धुदओदीरणयासत्तापत्ताणि खवियाणि ॥ १ ॥
मिच्छे सासण मीसे अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ।
नियट्टि अनियट्टि सुहुमुवसम खीण सजोगि अजोगिगुणा ॥ २ ॥
अभिनवकम्मग्गहणं, बंधो ओहेण तत्थ वीससयं ।
तित्थयराहारगदुगवज्जं मिच्छमि सत्तरसयं ॥ ३ ॥
नरयतिगजाइथावरचउ, हुंडायवछिवट्ठ नपुमिच्छं ।
सोलंतो इगहिय सय, सासणि तिरियाणदुहगतिगं ॥ ४ ॥
अणमज्झागिइ संघयण चउ, निउज्जोय कुखगइत्थिति ।
पणवीसंतो मीसे चउसयरिदुआउअबन्धा ॥ ५ ॥
सम्मे सगसयरि जिणाउ-बंधि वइर नरतिग बियकसाया ।
उरल दुगंतो देसे, सत्तट्ठी तिअ कसायंतो ॥ ६ ॥
तेवट्ठि पमत्ते सोग, अरइ अथिर दुग अजस अस्साय ।
वुच्छिज्ज छच्च सत्त व, नेइ सुराउं जयानिट्ठं ॥ ७ ॥

गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउबंध तु जइ इहागच्छे ।
अन्नह अट्ठावण्णा ज आहारगदुग बंधे ॥ ८ ॥
अडवन्न अपुव्वाइमि निद् दुगंतो छपन्न पणभागे ।
सुर दुग पणिंदि सुखगई तसनव उरलविणु तणुवंगा ॥ ९ ॥
समचउरनिमिण जिणवण्ण अगुरुलहु चउ छलंसि तीसंतो ।
चरमे छवीस बंधो हासरई कुच्छभयभेओ ॥ १०॥
अनियट्टि भागपणगे, इगेगहीणो दुवीसविहबन्धो ।
पुम संजलण चउण्ह, कमेण छेओ सतरसुहुमे ॥ ११ ॥
चउदसणुच्चजसनाण विग्घदसगंति सोलसुच्छेओ ।
तिसु सायबंधछेओ सजोगिबंध तुणंतो अ ॥ १२ ॥
उदओ विवागवेयणमुदीरणमपत्ति इह दुवीससयं ।
सतरसय मिच्छे मीस-सम्म-आहार-जिणणुदया ॥ १३ ॥
सुहुम-तिगायव-मिच्छं मिच्छंतं सासणे इगार-सय ।
निरयाणुपुव्विणुदया अण-थावर-इग विगल-अंतो ॥ १४ ॥
मीसे सयमणुपुव्वी-णुदया मीसोदएण मीसंतो ।
चउसयमजएसम्माणुपुव्वि-खेवा बिय-कसाया ॥ १५ ॥
मणुतिरिणु पुव्विविउवट्ठ दुहग अणाइज्जदुग सतरछेओ ।
सगसीइ देसि तिरिगइ आउ निउज्जोय तिकसाया ॥ १६ ॥
अट्ठच्छेओ इगसी पमत्ति आहार-जुगल-पक्खेवा ।
थीणतिगाहारगदुग छेओ छस्सयरि अपमत्ते ॥ १७॥
सम्मत्तंतिमसंघयण तियगच्छेओ बिसत्तरि अपुव्वे ।
हासाइछकअंतो छसट्ठि अनियट्टिवेयतिगं ॥ १८ ॥
संजलणतिग छच्छेओ सट्ठि सुहुममि तुरयलोभंतो ।
उवसंतगुणे गुणसट्ठि रिसहनाराय दुगअंतो ॥ १९ ॥

सगवन्न खीण–दुचरिमि निद्दुगतो अ चरिमि पणवन्ना ।
नाणतरायदसण–चउछेओ सजोगि बायाला ॥ २० ॥
तित्थुदया उरलाथिरखगइदुपरित्ततिगठसठाणा ।
अगुरुलहुवन्न–चउ–निमिणतेयकम्माइसंघयणं ॥ २१ ॥
दूसरसूसरसायासाएगयर च तीस–वुच्छेओ ।
बारस अजोगि सुभगाइज्जजसन्नयरवेयणिय ॥ २२ ॥
तसतिग पणिंदि मणुयाउ गइजिणुच्चति चरम–समयतो ।
उदउव्वुदीरणा परमपमत्ताई सगगुणेसु ॥ २३ ॥
एसा पयडि–तिगुणा वेयणियाहार जुगलथीणतिग ।
मणुयाउ पमत्तता अजोगि अणुदीरगो भगवं ॥ २४ ॥
सत्ता कम्माणठिई बधाई–लद्ध–अत्त–लाभाण ।
सते अडयाल–सय जा उवसमु विजिणु बियतइए ॥ २५ ॥
अपुव्वाइ–चउक्के अण–तिरि–निरयाउ विणु बियाल सय ।
समाइ चउसु सत्तग–खयमि इगचत्त–सयमहवा ॥ २६ ॥
खवग तु पप्प चउसुवि पणयाल नरयतिरिसुराउविणा ।
सत्तगविणु अडतीस जा अनियट्टी पढमभागो ॥ २७ ॥
थावरतिरिनिरयायव–दुग थीणतिगेग विगल साहारं ।
सोलखओ दुवीससयं बियंसि बियतियकसायंतो ॥ २८ ॥
तइयाइसु चउदस–तेर–बार–छ–पण–चउ–तिहियसयकमसो ।
नपुइत्थिहासछगपुस तुरिय कोहमयमायखओ ॥ २९ ॥
सुहुमि दुसय लोहतो खीण दुचरिमेगसओ दुनिद्दखओ ।
नवनवइ चरमसमए चउदंसणनाणविग्घतो ॥ ३० ॥
पणसीइ सयोगि अजोगि दुचरिमे देवखगइ गधदुग ।
फासट्ठ वन्नरस तणु बधणसघायपण निमिण ॥ ३१ ॥

संघयणअथिरसंठाण–छक्क अगुरुलहुचउ अपज्जत्त ।
साय व असाय वा परित्तुवंगतिग सुसर नियं ॥ ३२ ॥
बिसयरिखओ य चरिमे तेरस मणुयतसतिग–जसाइज्ज ।
सुभगजिणुच्चपणिंदिय –सायासाएगयरछेओ ॥ ३३ ॥
नरअणुपुव्वि विणा वा बारस चरिमसमयंमि जो खविउं ।
पत्तो सिद्धिं देविंदवंदियं नमह तं वीरं ॥ ३४ ॥

तीसरा 'बन्धस्वामित्व' कर्मग्रंथ

बंधविहाणविमुक्कं, वंदिय सिरिवद्धमाणजिणचन्दं ।
गइयाईसु वुच्छं, समासओ बंधसामित्तं ॥ १ ॥
जिणसुरविउवाहारदु–देवाउय नरयसुहुम विगलतिगं ।
एगिंदिथावरायव–नपुमिच्छं हुंडछेवट्ठं ॥ २ ॥
अणमज्झागिइ संघय–णकुखग नियइत्थिदुहगथीणतिगं ।
उज्जोयतिरिदुगं तिरि–नराउनरउरलदुगरिसहं ॥ ३ ॥
सुरइगुणवीसवज्जं, इगसउ ओहेण बंधहिं निरया ।
तित्थ विणा मिच्छि सयं, सासणि नपुचउ विणा छनुई ॥ ४ ॥
विणु अण–छवीस मीसे, बिसयरि सम्मंमि जिणनराउजुया ।
इय रयणाइसु भंगो, पंकाइसु तित्थयरहीणो ॥ ५ ॥
अजिणमणुआउ ओहे, सत्तमिए नरदुगुच्च विणुमिच्छे ।
इगनवई सासाणे तिरिआउ नपुंसचउवज्जं ॥ ६ ॥
अणचउवीसविरहिआ, सनरदुगुच्चा य सयरि मीसदुगे ।
सतरसउ ओहि मिच्छे, पज्जतिरिया विणु जिणाहारं ॥ ७ ॥

विणु नरयसोल सासणि, सुराउ अणएगतीस विणु मीसे ।
ससुराउ सयरि संमे, बीयकसाए विणा देसे ॥ ८ ॥
इय चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिण ओहु देसाई ।
जिणइकारस हीण, नवसउ अपजत्ततिरियनरा ॥ ९ ॥
निरय व्व सुरा नवर, ओहे मिच्छे इगिंदितिग सहिया ।
कप्पदुगे वि य एव जिणहीणो जोइभवणवणे ॥ १० ॥
रयणु व सणकुमारा,-इ आणयाई उज्जोयचउरहिया ।
अपज्जतितिरिय व नवसय,-मिगिंदिपुढविजलतरुविगले ॥ ११ ॥
छनवइसासणि विणसुहु- मतेर केइ पुण विंति चउनवई ।
तिरियनराऊहिं विणा, तणु-पज्जत्तिं न ते जंति ॥ १२ ॥
ओहु पणिंदितसेगइ-तसे जिणिकार नरतिगुच्चविणा ।
मणवयजोगे ओहो, उरले नरभगु तम्मिस्से ॥ १३ ॥
आहारछग विणोहे, चउदससउ मिच्छि जिणपणमहीण ।
सासणि चउनवइ विणा, नरतिरिआऊ सुहुमतेर ॥ १४ ॥
अणचउवीसाइ विणा जिणपणजुय सम्मि जोगिणो साय ।
विणु तिरिनराउकम्मे, वि एवमाहारदुगि ओहो ॥ १५ ॥
सुर ओहो वेउव्वे, तिरियनराउरहिओ य तम्मिस्से ।
वेयतिगाइमबियतिय-कसाय नवदुचउपचगुणे ॥ १६ ॥
संजलणतिगे नव दस, ओहे च अजइ दुति अनाणतिगे ।
बारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहखायचरमचऊ ॥ १७ ॥
मणनाणि सग जयाई, समइयछेय चउ दुन्नि परिहारे ।
केवलदुगि दो चरमा-ऽजयाइ नव मइसुओहिदुगे ॥ १८ ॥
अड उवसमि चउ वेयगि, खइये इक्कार मिच्छतिगि देसे ।
सुहुमि सठाण तेरस, आहारगि नियनियगुणोहो ॥ १९ ॥

परमुवसमि वट्टता, आउ न बधति तेण अजयगुणे ।
देवमणुआउहीणो, देसाइसु पुण सुराउ विणा ॥ २० ॥
ओहे अट्ठारसय, आहारदुगूण–माइलेसतिगे ।
त तित्थोण मिच्छे, साणाइसु सव्वहिं ओहो ॥ २१ ॥
तेउ नरयनवूणा, उज्जोयचउनरयबारविणु सुक्का ।
विणु नरयबार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिच्छे ॥ २२ ॥
सव्वगुण भव्व–सन्निसु, ओहु अभव्वा असन्नि मिच्छसमा ।
सासणि असनि सनिव्व, कम्मणभंगो अणाहारे ॥ २३ ॥
तिसु दुसु सुक्काइ–गुणा चउ सग तेरत्ति बन्धसामित्त ।
देविंदसूरिलिहिय, नेय कम्मत्थय सोउ ॥ २४ ॥

चौथा कर्मग्रन्थ

नमिय जिण जिअमग्गण,–गुणठाणुवओगजोगलेसाओ ।
बधप्पबहूभावे, सखिज्जाई किमवि वुच्छ ॥ १ ॥
इह सुहुमबायरेगिं,–दिबितिचउअसनिसनिपचिंदी ।
अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउदस जियट्ठाणा ॥ २ ॥
बायरअसनिविगले अपज्जि पढमबिय सनि अपजत्ते ।
अजयजुअ सनि पज्जे, सव्वगुणा मिच्छ सेसेसु ॥ ३ ॥
अपजत्तछक्कि कम्मुर–लमीसजोगा अपज्जसनीसु ।
ते सविउव्वमीसएसु तणुपज्जेसु उरलमन्ने ॥ ४ ॥
सव्वे सनि पजत्ते, उरल सुहुमे सभासु त चउसु ।
बायरि सविउव्विदुग, पजसनिसु बार उवओगा ॥ ५ ॥

पज्जचउरिंदिअसन्निसु, दुदंस दु अनाण दससु चक्खु विणा।
सनि अपज्जे मणना,-णचक्खुकेवलदुगविहूणा ॥ ६ ॥
सनिदुगे छलेस अप,-ज्जबायरे पढम चउ ति सेसेसु।
सत्तट्ठ बन्धुदीरण, संतुदया अट्ठ तेरससु ॥ ७ ॥
सत्तट्ठछेगबंधा, संतुदया सत्तअट्ठचत्तारि।
सत्तट्ठछपंचदुगं, उदीरणा सनिपज्जत्ते ॥ ८ ॥
गइइंदिए य काये, जोए वेए कसायनाणेसु।
संजमदंसणलेसा, भवसम्मे सनिआहारे ॥ ९ ॥
सुरनरतिरिनिरयगई, इगबियतियचउपणिंदि छकाया।
भूजलजलणानिलवणा, तसा य मणवयणतणुजोगा ॥ १० ॥
वेय नरित्थिनपुंसा, कसाय कोहमयमायलोभ त्ति।
मइसुयवहिमणकेवल,-विहंगमइसुअनाण सागारा ॥ ११ ॥
सामाइछेयपरिहा,-रसुहुमअहखायदेसजयअजया।
चक्खुअचक्खूओही,-केवलदंसण अणागारा ॥ १२ ॥
किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्क भव्वियरा।
वेयगखइगुवसममिं,-च्छमीससासाण सनियरे ॥ १३ ॥
आहारेयर भेया सुरनरयविभंगमइसुओहिदुगे।
सम्मत्ततिगे पम्हा, सुक्का सन्नीसु सन्निदुगं ॥ १४ ॥
तमसनिअपज्जजुयं, नरे सबायरअपज्ज तेऊए।
थावर इगिंदि पढमा, चउ बार असन्नि दु दु विगले ॥ १५ ॥
दस चरम तसे अजया,-हारगतिरितणुकसायदुअनाणे।
पढमतिलेसाभवियर,-अचक्खुनपुमिच्छि सव्वे वि ॥ १६ ॥
पजसन्नी केवलदुग,-संजयमणनाणदेसमणमीसे।
पण चरमपज्ज वयणे, तिय छ व पज्जियर चक्खुम्मि ॥ १७ ॥

थीनपणिंदि चरमा, चउ अणहारे दु [illegible]
ते सुहुमअपज्ज विणा, सासणि इत्तो [illegible]
पण तिरि चउ सुरनरए, नरसनि[illegible]
इगविगलभूदगवणे, दु दु एग गइतस[illegible]
वेयतिकसाय नव दस, लोभे चउ [illegible]
बारस अचक्खु चक्खुसु, पढमा [illegible]
मणनाणि सग जयाई, समइयछेय [illegible]
केवलदुगि दो चरमा,–जयाइ नव [illegible]
अड उवसमि चउ वेयगि, खइए [illegible]
सुहुमे य सठाण तेग, – स योग [illegible]
असन्निसु पढमदुगं, पढमतिलेसासु [illegible]
पढमतिमदुगअजया, अणहारे [illegible]
सच्चेयरमीसअस, – च्चमोसमण[illegible]
उरल मीसा कम्मण, इय जा[illegible]
नरगइपणिंदितसतणु, – अच[illegible]
सनिछलेसाहारग, – भवम[illegible]
तिरिइत्थि अजयसासण, – [illegible]
तेराहारदुगुणा, ते उरल[illegible]
कम्मुरलदुग थावरि, ते स[illegible]
छ असनि चरमवइजुय, ते [illegible]
कम्मुरलमीसविणु मण, – [illegible]
उरलदुगकम्मपढम, – वि[illegible]
मणवइउरला परिहा, – [illegible]
देसे सविउव्विदगा, [illegible]

ति अनाण नाण पण चउ, दसण बार जियलक्खणुवओगा ।
विणुमणनाणदुकेवल, नव सुरतिरिनिरय अजएसु ॥ ३० ॥
तसजोयवेयसुक्का, – हारनरपणिंदिसन्निभवि सव्वे ।
नयणेयरपणलेसा, – कसाइ दस केवलदुगुणा ॥ ३१ ॥
चउरिंदिअसन्निदुअना, – णदसण इगिबितिथावरि अचक्खु ।
तिअनाण दसणदुगं, अनाणतिगअभवि मिच्छदुगे ॥ ३२ ॥
केवलदुगे नियदुगं, नव तिअनाण विणु खइय अहखाये ।
दसणनाणतिगं दे, – सि मीसि अन्नाणमीसं त ॥ ३३ ॥
मणनाणचक्खुवज्जा, अणहारि तिन्नि दसण चउनाणा
चउनाणसजमोवस, – मवेयगे ओहिदसे य ॥ ३४ ॥
दो तेर तेर बारस, मणे कमा अट्ठ दु चउ चउ वयणे ।
चउ दु पण तिन्नि काये, जियगुणजोगोवओगन्ने ॥ ३५ ॥
छसु लेसासु सठाणं, एगिंदिअसन्निभूदगवणेसु ।
पढमा चउरो तिन्नि उ, नारयविगलग्गिपवणेसु ॥ ३६ ॥
अहखायसुहुमकेवल – दुगि सुक्का छावि सेसठाणेसु ।
नरनिरयदेवतिरिया, थोवा दु असखणंतगुणा ॥ ३७ ॥
पणचउतिदुएगिंदि, थोवा तिन्नि अहिया अणतगुणा ।
तस थोव असखग्गी, भूजलानिल अहिय वणणता ॥ ३८ ॥
मणवयणकायजोगा, थोवा असखगुण अणतगुणा ।
पुरिसा थोवा इत्थी, सखगुणाणंतगुण कीवा ॥ ३९ ॥
माणी कोही माई लोही अहिय मणनाणिणो थोवा ।
ओहि असखामइसुय, अहियसम असख विब्भगा ॥ ४० ॥
केवलिणो णतगुणा, मइसुयअन्नाणि णतगुण तुल्ला ।
सुहुमा थोवा परिहा–र सख अहखाय सखगुणा ॥ ४१ ॥

छेयसमईय सखा, देस असंखगुण णतगुण अजया ।
थोव असंखदुणंता, ओहिनयणकेवलअचक्खु ॥ ४२ ॥
पच्छाणुपुव्वि लेसा, थोवा दो सख णंत दो अहिया ।
अभवियर थोवणंता सासण थोवोवसम सखा ॥ ४३ ॥
मीसा सखा वेयग, असंखगुण खइयमिच्छ दु अणता ।
सनियर थोव णता,-णहार थोवेयर असखा ॥ ४४ ॥
सव्व जियठाण मिच्छे, सग सासणि पण अपज्ज सन्निदुग ।
समे सन्नी दुविहो, सेसेसु सनिपज्जत्तो ॥ ४५ ॥
मिच्छदुगअजइ जोगा,-हारदुगूणा अपुव्वपणगे उ ।
मणवइ उरल सविउ,-व्व मीसि सविउव्वदुग देसे ॥ ४६ ॥
साहारदुग पमत्ते, ते विउवाहारमीस विणु इयरे ।
कम्मुरलदुगताइम,-मणवयण सयोगि न अजोगी ॥ ४७ ॥
तिअनाणदुदसाइम, दुगे अजइ देसि नाणदसतिग ।
ते मीसि मीसा समणा, जयाइ केवलदु अतदुगे ॥ ४८ ॥
सासणभावे नाण विउव्वगाहारगे उरलमिस्सं ।
नेगिंदिसु सासाणो नेहाहिगय सुयमय पि ॥ ४९ ॥
छसु सव्वा तेउतिग इगि छसु सुक्का अयोगि अलेसा ।
बधस्स मिच्छ अविरइ,-कसायजोग त्ति चउ हेऊ ॥ ५० ॥
अभिगहियमणभिगहिया,-भिनिवेसियससइयमणाभोगं
पण मिच्छ बार अविरइ मणकरणानियमु छजियवहो ॥ ५१ ॥
नव सोल कसाया पन,-र जोग इय उत्तरा उ सगवन्ना ।
इगचउपणतिगुणेसु,-चउतिदुइगपच्चओ बधो ॥ ५२ ॥
चउमिच्छमिच्छ अविरइ,-पच्चइया सायसोलपणतीसा ।
जोग विणु तिपच्चइया,-हारगजिणवज्जसेसाओ ॥ ५३ ॥

पणगन्न पन्न तियछहि,-अचत्त गुणचत्त छचउदुगवीसा ।
सोलस दस नव नव स,-त्त हेउणो न उ अजोगिमि ॥ ५४ ॥
पणपन्न मिच्छि हारग,-दुगूण सासाणि पन्नमिच्छ विणा ।
मिस्सदुगकम्मअणविणु, तिचत्त मीसे अह छचत्ता ॥ ५५ ॥
सदुमिस्सकम्म अजए, अविरइ कम्मुरलमीसविकसाये ।
मुत्तु गुणचत्त देसे, छवीस साहारदु पमत्ते ॥ ५६ ॥
अविरइ इगारतिकसा,-यवज्ज अपमत्ति मीसदुगरहिया ।
चउवीस अपुव्वे पुण, दुवीस अविउव्वियाहारा ॥ ५७ ॥
अछहास सोल बायरि, सुहुमे दस वेयसंजलणति विणा ।
खीणुवसति अलोभा, सजोगि पुव्वुत्त सग जोगा ॥ ५८ ॥
अपमत्तता सत्त,-ट्ठ मीस अप्पुव्वबायरा सत्त ।
बधइ छस्सुहुमो ए,-गमु वरिमा बधगाऽजोगी ॥ ५९ ॥
आसुहुमं संतुदये, अट्ट वि मोह विणु सत्त खीणमि ।
चउ चरिमदुगे अट्ठ उ, सते उवसति सत्तुदए ॥ ६० ॥
उइरति पमत्तता, सगट्ठ मीसट्ठ वेयआउ विणा ।
छग अपमत्ताइ तओ, छ पंच सुहुमो पणुवसतो ॥ ६१ ॥
पण दो खीण दु जोगी,-णुदीरगुअजोगी थोव उवसता ।
सखगुण खीण सुहुमा,-नियट्टिअपुव्व सम अहिया ॥ ६२ ॥
जोगिअपमत्तइयरे, सखगुणा देससासणामीसा ।
अविरय अजोगिमिच्छा, असख चउरो दुवे णता ॥ ६३ ॥
उवसमखयमीसोदय,-परिणामा दुनवट्ठारइगवीसा ।
तिय भेय सनिवाइय, सम चरण पढमभावे ॥ ६४ ॥
बीए केवलजुयलं सम्मं दाणाइलद्धि पण चरण ।
तइए सेसुवओगा, पण लद्धी सम्मविरइदुग ॥ ६५ ॥

अल्लाणमासिद्धत्ता, सजमलेसाकसायगइवेया ।
मिच्छ तुरिए भव्वा,–भव्वत्तजियत्त परिणामे ॥ ६६ ॥
चउ चउ गइसु मीसग, परिणामुदएहिं चउ सखइएहिं ।
उवसमजुएहिं वा चउ, केवलि परिणामुदयखइए ॥ ६७ ॥
खयपरिणामे सिद्धा, नराण पणजोगुवसमसेढीए ।
इय पनर सन्निवाइय,–भेया वीस असभविणो ॥ ६८ ॥
मोहेव समो मीसो, चउघाइसु अट्ठकम्मसु च सेसा ।
धम्माइ पारिणामिय,–भावे खधा उदइए वि ॥ ६९ ॥
समाइचउसु तिग चउ, भावा चउ पणुवसामगुवसते ।
चउ खीणापुव्व तिन्नि, सेसगुणट्ठाणगेगजिए ॥ ७० ॥
सखिज्जेगमसख परित्तजुत्तनियपयजुय तिविह ।
एवमणंत पि तिहा, जहन्नमज्झुक्कसा सव्वे ॥ ७१ ॥
लहुसखिज्ज दुच्चिय, अओ पर मज्झिम तु जा गुरुअ ।
जबूदीवपमाणय,–चउपल्लपरूवणाइ इम ॥ ७२ ॥
पल्लाणवट्ठियसला,–ग पडिसलागामहासलागक्खा ।
जोयणसहसोगाढा, सवेइयता ससिहभरिया ॥ ७३ ॥
ता दीवुदहिसु इक्कि,–क्कसरिसव खिविय निट्ठिए पढमे ।
पढम व तदन्त चिय, पुण भरिए तमि तह खीणे ॥ ७४ ॥
खिप्पइ सलागपल्ले,–गु सरिसवो इय सलागखवणेण ।
पुन्नो बीओ य तओ, पुव्विं पि व तमि उद्धरिए ॥ ७५ ॥
खीणे सलाग तइए, एव पढमेहिं बीयय भरसु ।
तेहिं तइय तेहि य, तुरिय जा किर फुडा चउरो ॥ ७६ ॥
पढमतिपल्लुद्धरिया, दीवुदही पल्लचउसरिसवा य ।
सव्वो वि एगरासी, रूवूणो परमसखिज्ज ॥ ७७ ॥

रूवजुय तु परित्ता,-संख लहु अस्स रासि अब्भासे ।
जुत्तासखिज्ज लहु, आवलियासमयपरिमाणं ॥ ७८ ॥
बितिचउपचमगुणणे, कमा सगासख पढमचउसत्ता ।
णंता ते रूवजुया, मज्झारूवूण गुरु पच्छा ॥ ७९ ॥
इय सुत्तुत्त अन्ने, वग्गियमिक्कसि चउत्थयमसंख ।
होइ असखासंख लहु रूवजुयं तु तं मज्झ ॥ ८० ॥
रूवूणमाइम गुरु तिवग्गिउ त इमे दस क्खेवे ।
लोगाकासपएसा, धम्माधम्मेगजियदेसा ॥ ८१ ॥
ठिइबधज्झवसाया, अणुभागा जोगछेयपलिभागा ।
दुण्ह य समाण समया, पत्तेयनिगोयए खिवसु ॥ ८२ ॥
पुणरवि तम्मि तिवग्गिय, परित्तणत लहु तस्स रासीण ।
अब्भासे लहु जुत्ता, णतं अभव्वजियपमाण ॥ ८३ ॥
तव्वग्गे पुण जायइ, णताणत लहु त च तिक्खुत्तो ।
वग्गसु तह वि न त हो,-इ णंत खेवे खिवसु छ इमे ॥ ८४ ॥
सिद्धा निगोयजीवा, वणस्सई कालपुग्गला चेव ।
सव्वमलोगनह पुण, तिवग्गिउ केवलदुगम्मि ॥ ८५ ॥
खित्तेणताणतं, हवेइ जिट्ठ तु ववहरइ मज्झ ।
इय सुहुमत्थवियारो, लिहिओ देविंदसूरीहिं ॥ ८६ ॥

अथ शतक नामा पचम कर्मग्रथ

नमिअ जिणं धुवबधो-दयसता घाइपुन्नपरिअत्ता
सेअर चउविवागा, वुच्छ बधविह सामी अ ॥ १ ॥

वन्नचउतेअकम्मा,-गुरुलहुनिमिणोवघायभयकुच्छा,
मिच्छकसायावरणा, विग्घं धुवबंधि सगचत्ता ॥ २ ॥
तणुवंगागिइसंघयण, जाइगइखगइपुव्विजिणुसास,
उज्जोआयवपरघा-तसवीसा गोअवेअणिअं ॥ ३ ॥
हासाइजुअलदुगवेअ-आउ तेवुत्तरी अधुवबंधी (धा);
भंगा अणाइसाई, अणंतसंतुत्तरा चउरो ॥ ४ ॥
पढमबिआ धुवउदइसु, धुवबंधिसु तइअवज्जभंगतिगं,
मिच्छंमि तिन्नि भंगा दुहावि अधुवा तुरिअभंगा ॥ ५ ॥
निमिणथिरअथिरअगुरुअ-सुहअसुहतेअकम्मचउवन्ना,
नाणंतरायदंसण, मिच्छं धुवउदय सगवीसा ॥ ६ ॥
थिरसुभिअर विणु अधुव,-बंधी मिच्छविणुमोहधुवबंधी,
निद्दोवघायमीसं, सम्मं पणनवइ अधुवुदया ॥ ७ ॥
तसवन्नवीससगतेअ,-कम्म धुवबंधी सेस वेअतिगं,
आगिइतिग वेअणिअं, दुजुअल सगउरलसासचउ ॥ ८ ॥
खगइतिरिदुग नीअं धुवसंता सम्म मीसमणुयदुगं,
विउव्विक्कार जिणाऊ हारसगुच्चा अधुवसंता ॥ ९ ॥
पढमतिगुणेसु मिच्छं, निअमा अजयाइअट्ठगे भज्जं,
सासाणे खलु सम्मं संतं मिच्छाइदसगे वा ॥ १० ॥
सासणमीसेसु धुवं, मीसं मिच्छाइनवसु भयणाए,
आइदुगे अणनिअमा, भइआ मीसाइनवगंमि ॥ ११ ॥
आहारसत्तगं वा, सव्वगुणे बितिगुणे विणा तित्थं,
नोभयसंते मिच्छो, अंतमुहुत्तं भवे तित्थे ॥ १२ ॥
केवलजुअलावरणा, पण निद्दा बारसाइमकसाया,
मिच्छं ति सव्वघाई, चउनाणतिदंसणावरणा ॥ १३

संजलण नोकसाया, विग्घ इअ देसघाइ य अघाई;
पत्तेयतणुऽट्ठाऊ, तसवीसा गोअदुगवन्ना ॥ १४ ॥
सुरनरतिगुच्चसायं तसदसतणुवंग वइरचउरंस,
परघासगतिरिआऊ, वन्नचउपणिंदि सुभखगई ॥ १५ ॥
बायाल पुण्णपगई अपढमसंठाणखगइसंघयणा,
तिरिदुगअसायनीओ, —वघायइगविगलनिरयतिगं ॥ १६ ॥
थावरदसवन्नचउक्का, घाइ पणयाल सहिअ बासीई,
पावपयडि त्ति दोसु वि वन्नाइगहा सुहा असुहा ॥ १७ ॥
नामधुवबंधिनवगं दंसण पण नाण विग्घ परघायं,
भयकुच्छमिच्छसासं, जिण गुणतीसा अपरिअत्ता ॥ १८ ॥
तणुअट्ठ वेअदुजुअल, कसाय उज्जोअगोअदुग निद्दा,
तसवीसाउ परित्ता, खित्तविवागाऽणुपुव्वीओ ॥ १९ ॥
घणघाइदुगोअजिणा, तसिअरतिगसुभगदुभगचउसास,
जाइतिग जिअविवागा, आऊ चउरो भवविवागा ॥ २० ॥
नामधुवोदयचउतणु, —वघायसाहारणिअरुज्जोअतिग,
पुग्गलविवागिबंधो, पयइठिइरसपएस त्ति ॥ २१ ॥
मूलपयडीण अडसत्त, छेगबंधेसु तिन्नि भूगारा ।
अप्पतरा तिअ चउरो, अवट्ठिओ न हु अवत्तव्वो ॥ २२ ॥
एगादहिगे भूओ, एगाइ ऊणगंमि अप्पतरो ।
तम्मत्तोऽवट्ठियओ, पढमे समए अवत्तव्वो ॥ २३ ॥
नव छ चउ दसे दु दु, ति दु मोहे दु इगवीस सत्तरस ।
तेरस नव पण चउ ति दु, इक्को नव अट्ठ दस दुन्नि ॥ २४ ॥
तिपण छअट्ठनवहिआ, वीसा तीसेगतीस इग नामे ।
छस्सगअट्ठतिबंधा सेसेसु य ठाणमिक्किक्कं ॥ २५ ॥

वीसयरकोडिकोडि, नामे गोए अ सत्तरी मोहे।
तीसियरचउसु उदही निरयसुराउमि तित्तीसा ॥ २६ ॥
मुत्तु अकसायठिइं, बार मुहुत्ता जहन्न वेअणिए।
अट्ठ नामगोएसु, सेसएसु मुहुत्ततो ॥ २७॥
विग्घावरण असाए, तीस अट्ठार सुहुमविगलतिगे।
पढमागिइसंघयणे, दस दुसुवरिमेसु दुगवुड्ढी ॥ २८ ॥
चालीस कसाएसु, मिउलहुनिद्धुण्हसुरहिसिअमहुरे।
दस दोसड्ढ समहिआ, ते हालिद्दविलाईण ॥ २९ ॥
दस सुहविहगइउच्चे, सुरदुगथिरछक्कपुरिसरइहासे।
मिच्छे सत्तरि मणुदुग इत्थी साएसु पन्नरस ॥ ३० ॥
भयकुच्छअरइसोए, विउव्वितिरिउरलनिरयदुगनीए।
तेअ पण अथिरछक्के, तस चउ थावर इग पणिंदी ॥ ३१ ॥
नपुकुखगइसासचउ-गुरुकक्खडरुक्खसीयदुग्गंधे।
वीस कोडाकोडी एवइआबाह वाससया ॥ ३२ ॥
गुरु कोडिकोडि अंतो, तित्थाहारण भिन्नमुहु बाहा।
लहु ठिइ संखगुणूणा, नरतिरिआणाउ पल्लतिगं ॥ ३३ ॥
इगविगल पुव्वकोडी पलिआऽसंखंस आउ चउ अमणा।
निरुवक्कमाण छमासा, अबाह सेसाण भवतंसो ॥ ३४ ॥
लहुठिइबंधो संजलण, – लोहपणविग्घनाणदंसेसु।
भिन्नमुहुत्त ते अट्ठ, जसुच्चे बारस य साए ॥ ३५ ॥
दोइगमासो पक्खो संजलणतिगे पुमट्ठ वरिसाणि।
सेसाणुक्कोसाओ, मिच्छत्तठिईइ ज लद्धं ॥ ३६ ॥
. . गिंदिसु, पलियाऽसंखंसहीण लहुबंधो ।

कम्मो पणवीसाए, पन्ना सय सहस संगुणिओ ॥ ३७ ॥
विगलअसन्निसु जिट्ठो कणिट्ठओ पल्लसंखभागूणो;
सुरनिरयाउ समा दस, सहस्स सेसाउ खुड्डभवं ॥ ३८ ॥
सव्वाण वि लहुबंधे, भिन्नमुहू अबाह आउजिट्ठेवि;
केइ सुराउसमं जिण, – मंतमुहू बिंति आहारं ॥ ३९ ॥
सत्तरस समहिआ किर इगाणुपाणुमि हुंति खुड्डभवा;
सगतीससयतिहुत्तर, पाणू पुण इगमुहुत्तंमि ॥ ४० ॥
पणसट्ठि सहस पण सय, छत्तीसा इगमुहुत्तखुड्डभवा;
आवलिआण दो सय, छप्पन्ना एगखुड्डभवे ॥ ४१ ॥
अविरयसम्मो तित्थं आहारदुगामराउ य पमत्तो,
मिच्छद्दिट्ठी बंधइ, जिट्ठठिइं सेस पयडीण ॥ ४२ ॥
विगलसुहुमाउगतिगं, तिरिमणुआ सुरविउव्विनिरयदुगं,
एगिंदिथावरायव आईसाणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥
तिरिउरलदुगुज्जोअं छिवट्ठ सुरनिरय सेम चउगइआ;
आहारजिणमपुव्वो, – ऽनिअट्टिसंजलणपुरिसलहुं ॥ ४४ ॥
साय जसुच्चावरणा, विग्घं सुहुमो विउव्विछ असन्नी,
सन्नी वि आउ बायर – पज्जेगिंदी उ सेसाण ॥ ४५ ॥
उक्कोसजहन्नेअर, भगा साइ अणाइ धुव अधुवा;
चउहा सग अजहन्नो, सेसतिगे आउचउसु दुहा ॥ ४६ ॥
चउभेओ अजहन्नो, संजलणावरणनवगविग्घाणं,
सेसतिगि साइ अधुवो, तह चउहा सेसपयडीणं ॥ ४७ ॥
साणाइअपुव्वंते, अयरंतो कोडिकोडिओ नहिगो,
बंधो न हु हीणो न य मिच्छे भविअरसन्निमि ॥ ४८ ॥

अइलहुवधो वायर पज्ज असखगुण सुहुमपज्जऽहिगो,
एसि अपज्जाण लहू, सुहुमेअर अपज्जपज्जगुरु ॥ ४९ ॥
लहु बिअपज्जअपज्जे, अपजेअर बिअगुरुऽहिगो एव,
तिचउअसन्निसु नवर सखगुणो बिअअमणपज्जे ॥ ५० ॥
तो जइजिट्ठो बधो, संखगुणो देसविरयहस्सिअरो;
सम्मचउ सन्निचउरो ठिइबधाणुकम सखगुणा ॥ ५१ ॥
सव्वाणवि जिट्ठठिइ, असुभा ज साइसकिलेसेण;
इयरा विसोहिओ पुण मुत्तु नरअमरतिरिआउ ॥ ५२ ॥
सुहुमनिगोआइखण – प्पजोग वायर य विगलअमणमणा;
अपज्जलहु पढमदुगुरु पजहस्सिअरो असखगुणो ॥ ५३ ॥
अपजत्ततसुक्कोसो पज्जजहन्निअरु एव ठिइठाणा;
अपजेअर सखगुणा, परमपजविए असखगुणा ॥ ५४ ॥
पइखणमसखगुणविरिज अपजपइठिइमसखलोगसमा,
अज्झवसाया अहिआ, सत्तसु आउसु असखगुणा ॥ ५५ ॥
तिरिनिरयतिजोआण नरभवजुअ सचउपल्ल तेसट्ठ,
थावरचउइगविगला – यवेसु पणसीइसयमयरा ॥ ५६ ॥
अपढमसघयणागिइ – खगईअणमिच्छदुहगथीणतिग;
निअनपुइत्थि दुतीस पणिदिसु अवधठिइ परमा ॥ ५७ ॥
विजयाइसु गेविज्जे तमाइ दहिसय दुतीस तेसट्ठ,
पणसीइ सययवधो, पल्लतिग सुरविउव्विदुगे ॥ ५८ ॥
समयादसखकाल, तिरिदुगनीएसु आउ अतमुहू,
उरलि असखपरट्टा, सायठिइ पुव्वकोडूणा ॥ ५९ ॥
जलहिसय पणसीअ, परघुस्सास पणिदि तसचउगे,
बत्तीस सुहविहगइ, पुमसुभगतिगुच्च चउरसे ॥ ६० ॥

असुपगइजाइआगिइ, संघयणाहारनिरयजोअदुगं;
थिरसुभजसथावरदस, नपुइत्थी दुजुअलमसाय ॥ ६१ ॥
समयादसंखमुहुत्तं, मणुदुगजिणवइरउरलुवंगेसु;
तित्तीसयरा परमो अंतमुहु लहूवि आउजिणे ॥ ६२ ॥
तिव्वो असुहसुहाणं संकेसविसोहिओ विवज्जयओ,
मंदरसो गिरिमहिरय,-जलरेहासरिसकसाएहिं ॥ ६३ ॥
चउठाणाइ असुहो, सुहऽन्नहा विग्घदेसआवरणा,
पुमसंजलणिगदुतिचउ-ठाणरसा सेस दुगमाइ ॥ ६४ ॥
निंबुच्छुरसो सहजो दुतिचउभागकढिइकभागंतो,
इगठाणाइ असुहो, असुहाण सुहो सुहाण तु ॥ ६५ ॥
तिव्वमिगथावरायव सुरमिच्छाविगलसुहुमनिरयतिगं;
तिरिमणुआउ तिरिनरा, तिरिदुगछेवट्ठ सुरनिरया ॥ ६६ ॥
विउविसुराहारगदुग सुखगइवन्नचउतेअजिणसाय;
समचउपरघातसदस, पणिंदिसासुच्च खवगा उ ॥ ६७ ॥
तमतमगा उज्जोअं, सम्मसुरा मणुअउरलदुगवइरं,
अपमत्तो अमराउ, चउगइ मिच्छा उ सेसाण ॥ ६८ ॥
थीणतिग अणमिच्छं मंदरसं संजमुम्मुहो मिच्छो,
बिअतिअकसाय अविरय-देसपमत्तो अरइसोए ॥ ६९ ॥
अपमाइ हारगदुग, दुनिदअसुवन्नहासरइकुच्छा;
भयमुवघायमपुव्वो, अनिअट्टी पुरिससंजलणे ॥ ७० ॥
विग्घावरणे सुहुमो, मणुतिरिआ सुहुमविगलतिगआउ;
वेउव्विछक्कममरा निरया उज्जोअउरलदुगं ॥ ७१ ॥
तिरिदुगनिअं तमतमा जिणमविरयनिरयविणिगथावरयं,
आसुहमायव सम्मो व सायथिरसुभजसा सिअरा ॥ ७२ ॥

तसवन्नतेअचउमणु खगइदुग पणिंदि सासपरघुच्चं;
संघयणागिइनपुथी सुभगिअरति मिच्छचउगइआ ॥ ७३ ॥
चउतेअवन्न वेअणिअ-नामणुक्कोस सेसधुवबंधी;
घाइण अजहन्नो गोए दुविहो इमो चउहा ॥ ७४ ॥
सेसमि दुहा, इग दुग-णुगाइ जा अभवणंतगुणिअणू;
खधा उरलोचिअवग्गणा उ तह अगहणंतरिआ ॥ ७५ ॥
एमेव विउव्वाहार,-तेअभासाणुपाणमणकम्मे;
सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुलअसंखंसो ॥ ७६ ॥
इक्किक्कहिआ सिद्धा-णंतंसा अंतरेसु अग्गहणा;
सव्वत्थ जहन्नुचिआ, निअणंतसाहिआ जिट्ठा ॥ ७७ ॥
अतिमचउफासदुगंध,-पंचवन्नरसकम्मखंधदलं,
सव्वजिअणंतगुणरस, अणुजुत्तमणंतयपएसं ॥ ७८ ॥
एगपएसोगाढ निअसव्वपएसओ गहेइ जिओ;
थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिओ ॥ ७९ ॥
विग्घावरणे मोहे सव्वोवरि वेअणीइ जेणप्पे;
तस्स फुडत्त न हवइ, ठिईविसेसेण सेसाणं ॥ ८० ॥
निअजाइलद्धदलिआ-णंतंसो होइ सव्वघाईणं;
बज्झंतीण विभज्जइ, सेसं सेसाण पइसमयं ॥ ८१ ॥
सम्मदरसव्वविरइ, अणविसंजोअदंसखवगे अ,
मोहसमसंतखवगे खीणसजोगिअर गुणसेढी ॥ ८२ ॥
गुणसेढी दलरयणा-णुसमयमुदयादसंखगुणणाए,
एयगुणा पुण कमसो, असंखगुणनिज्जरा जीवा ॥ ८३
पलिआसंखंससमुहू, सासणइअरगुण अंतरं हस्सं,
गुरु मिच्छि बे छसट्ठी इअरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥ ८४

उद्धारअद्धाखित्तं पलिअ तिहा समयवाससयसमए;
केसवहारो दीवो – दहिआउतसाइपरिमाणं ॥ ८५ ॥
दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह बायरो सुहुमो,
होइ अणतुस्सप्पिणी – परिमाणो पुग्गलपरट्टो ॥ ८६ ॥
उरलाइसत्तगेण एगजिओ मुअइ फुसिअ सव्व अणू;
जत्तिअकालि स थूलो, दव्वे सुहुमा सगन्नयरा ॥ ८७ ॥
लोगपएसोसप्पिणि – समया अणुभागबंधठाणा य;
जहतह कममरणेणं पुट्ठा खित्ताइथूलिअरा ॥ ८८ ॥
अप्पयरपयडिबंधी, उक्कटजोगी अ सन्निपज्जत्तो;
कुणइ पएसुक्कोस, जहन्नय तस्स वच्चासे ॥ ८९ ॥
मिच्छ अजय चउ आऊ बितिगुण–विणुमोहिसत्तमिच्छाइ,
छण्ह सतरससुहुमो अजया देसा बितिकसाए ॥ ९० ॥
पणअनिअट्टीसुखगइ, नराउसुरसुभगतिगविउव्विदुगं,
समचउरसमसाय वइर मिच्छो च सम्मो वा ॥ ९१ ॥
निद्दापयलादुजुअल – भयकुच्छातित्थ सम्मगो सुजई,
आहारदुग सेसा उक्कोसपएसगा मिच्छो ॥ ९२ ॥
सुमुणी दुन्नि असन्नी निरयतिगसुराउसुरविउव्विदुग ।
सम्मो जिणं जहन्न सुहुमनिगोआइखणि सेसा ॥ ९३ ॥
दंसणछगभयकुच्छा बितितुरिअकसायविग्घनाणाण,
मूलछगेऽणुक्कोसो चउह दुहा सेसि सव्वत्थ ॥ ९४ ॥
सेढिअसंखिज्जंसे जोगट्ठाणाणि पयडिठिइभेआ;
ठिइबंधज्झवसाया – णुभागठाणा असंखगुणा ॥ ९५ ॥
तत्तो कम्मपएसा अणंतगुणिआ तओ रसच्छेआ,
जोगा पयडिपएस ठिइअणुभागं कसायाओ ॥ ९६ ॥

चउदसरज्जू लोगो, बुद्धिकओ सत्तरज्जुमाणघणो,
तद्दीहेगपएसा सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥ ९७ ॥
अणदंसनपुंसित्थी वेअच्छक्कं च पुरिसवेअं च,
दो दो एगतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ९८ ॥
अणमिच्छमीससम्मं, तिआउइगविगलथीणतिगुज्जोअं,
तिरिनिरयथावरदुगं साहारायवअडनपुत्थी ॥ ९९ ॥
छगपुमसंजलणा दो – निद्दाविग्घावरणखए नाणी,
देविंदसूरिलिहिअं सयगमिणं आयसरणट्ठा ॥ १०० ॥

अथ सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रन्थः

सिद्धपएहिं महत्थं बंधोदयसंतपयडिठाणाणं;
वुच्छं सुण संखेवं नीसंदं दिट्ठिवायस्स ॥ १ ॥
कइ बंधतो वेयइ ? कइ कइ वा संतपयडिठाणाणि ?
मूलुत्तर पगइसु भंगविगप्पा मुणेअव्वा ॥ २ ॥
अट्ठविहसत्तछब्बंधएसु, अट्ठेव उदयसंतंसा,
एगविहे तिविगप्पो एगविगप्पो अबंधम्मि ॥ ३ ॥
सत्तट्ठबंध अट्ठुदय–संत तेरससु जीवठाणेसु,
एगम्मि पंच भंगा दो भंगा हुंति केवलिणो ॥ ४ ॥
अट्ठसु एगविगप्पो छस्सुवि गुणसन्निएसु दुविगप्पो,
पत्तेअं पत्तेअं बंधोदयसंतकम्माणं ॥ ५ ॥
पंचनवदुन्निअट्ठा–वीसा चउरो तहेव बायाला,
दुन्नि अ पंच य भणिया पयडीओ आणुपुव्वीए ॥ ६ ॥

बंधोदयसंतंसा नाणावरणंतराइए पंच,
बधोवरमेवि उदय–सतंसा हुति पचेव ॥ ७ ॥
बधस्स य सतस्स य पगइट्ठाणाइ तिण्णि तुल्लाइ;
उदयट्ठाणाइँ दुवे चउ पणग दसणावरणे ॥ ८ ॥
निआवरणे नवबधगेसु, चउपंच उदय नव संता;
छचउबधे चेवं चउबंधुदए छलंसा य ॥ ९ ॥
उवरयबंधे चउ पण नवस चउरुदय छच्च चउ संता,
वेअणि आउय गोए विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥ १० ॥
गोअमि सत्त भगा, अट्ठ य भगा हवंति वेअणिए;
पण नव नव पण भगा आउचउक्के वि कमसो उ ॥ ११ ॥
बावीस इक्कवीसा, सत्तरसं तेरसेव नव पच,
चउ तिग दुगं च इक्कं बंधट्ठाणाणि मोहस्स ॥ १२ ॥
एगं व दो व चउरो एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा;
ओहेण मोहणिज्जे उदयट्ठाणाणि नव हुंति ॥ १३ ॥
अट्ठ य सत्त य छ च्चउ, तिग दुग एगाहिआ भवे वीसा;
तेरस बारिक्कारस, इत्तो पचाइ एगूणा ॥ १४ ॥
सतस्स पयडिठाणाणि ताणि मोहस्स हुंति पन्नरस,
बधोदयसते पुण भगविगप्पा बहु जाण ॥ १५ ॥
छब्बावीसे चउ इगवीसे, सत्तरस तेरसे दो दो,
नवबधगे वि दुण्णि उ इक्किक्कमओ परं भगा ॥ १६ ॥
दस बावीसे नव इगवीसे सत्ताइ उदयकम्मसा,
छाइ नव सत्तरसे, तेरे पचाइ अट्ठेव ॥ १७ ॥
चत्तारिआइ नवबंधएसु उक्कोस सत्तमुदयसा,
पचविहबधगे पुण उदओ दुण्ह मुणेअव्वो ॥ १८ ॥

इत्तो चउबंधाई, इक्किक्कुदया हवंति सव्वेवि,
बधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा हुज्जा ॥ १९ ॥
इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कग चेव,
एए चउवीसगया, बार दुगिक्कमि इक्कारा ॥ २० ॥
नव तेसीइसएहिं, उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा;
अउणुत्तरिसीआला, पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥ २१ ॥
नवपंचाणउअसए उदयविगप्पेहिं मोहिआ जीवा
अउणुत्तरि एगुत्तरि पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥ २२ ॥
तिन्नेव य बावीसे इगवीसे अट्ठवीस सत्तरसे,
छच्चेव तेर नव ब – धएसु पंचेव ठाणाणि ॥ २३ ॥
पंचविहचउव्विहेसु, छ छक्क सेसेसु जाण पंचेव;
पत्तेअं पत्तेअं चत्तारि अ बंधवुच्छेए ॥ २४ ॥
दसनवपन्नरसाइ, बंधोदयसंतपयडिठाणाणि,
भणिआणि मोहणिज्जे इत्तो नाम परं वुच्छं ॥ २५ ॥
तेवीस पण्णवीसा, छव्वीसा अट्ठवीस गुणतीसा,
तीसेगतीसमेगं, बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥ २६ ॥
चउपणवीसा सोलस, नव बाणउईसया य अडयाला;
एयालुत्तरछाया – लसया इक्किक्कबंधविही ॥ २७ ॥
वीसिगवीसा चउवी – सगा उ एगाहिआ य इगतीसा,
उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य हुंति नामस्स ॥ २८ ॥
इक्कबिआलिक्कारस तित्तीसा छस्सयाणि तित्तीसा;
बारससत्तरसयाण – हिगाणि बिपंचसीईहिं ॥ २९ ॥

---

१ चउवीस दुगिक्कमिक्कारा एत मतांतर.

अउणत्तीसिक्कारस, सयाणिहिअ सत्तरपंचसट्ठीहिं;
इक्किक्कग च वीसा, दट्ठुदयंतेसु उदयाविहि ॥ ३० ॥
ति दुनउइ गुणनउइ, अडसी छलसी असीइ गुणसीइ;
अट्ठयछप्पन्नत्तरि, नव अट्ठ य नामसंताणि ॥ ३१ ॥
अट्ठ य बारस बारस, बंधोदयसंतपयडिठाणाणि,
ओहेणाएसेण य, जत्थ जहासंभवं विभजे ॥ ३२ ॥
नव पणगोदयसंता, तेवीसे पन्नवीस छन्नीस;
अट्ठ चउरट्ठवीसे नव सगि गुणतीस तीसम्मि ॥ ३३ ॥
एगेगमेगतीसे एगे एगुदय अट्ठ संतम्मि;
उवरयबंधे दस दस वेअग सतम्मि ठाणाणि ॥ ३४ ॥
तिविगप्पपगइठाणेहिं, जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु,
भगा पउजियव्वा, जत्थ जहासंभवो भवइ ॥ ३५ ॥
तेरससु जीवसखेवएसु नाणंतरायतिविगप्पो,
इक्कंमि तिदुविगप्पो करणं पइ इत्थ अविगप्पो ॥ ३६ ॥
तेरे नव चउ पणग नव संतेगम्मि भगमिक्कारा;
वेअणिआउयगोए, विभज्ज मोहं परं वुच्छं ॥ ३७ ॥
पज्जत्तगसन्निअरे, अट्ठ चउक्कं च वेअणियभगा,
सत्त य तिग च गोए, पत्तेअं जीवठाणेसु ॥ ३८ ॥
पज्जत्ताऽपज्जत्तग, समणे पज्जत्तअमण सेसेसु,
अट्ठावीसं दसग नवग पणगं च आउस्स ॥ ३९ ॥
अट्ठसु पचसु एगे, एग दुग दस य मोहबंधगए,
तिग चउ नव उदयगए, तिग तिग पन्नरस संतम्मि ॥ ४० ॥
पण दुग पणग पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव,
पण छप्पणग छच्छ – प्पणग अट्ठट्ठ दसग ति ॥ ४१ ॥

सत्तेव अपज्जत्ता, सामी सुहुमा य बायरा चेव;
विगलिंदिआउ तिन्नि उ, तह य असन्नी अ सन्नी अ ॥ ४२ ॥
नाणंतराय तिविहमवि, दससु दो हुंति [illegible]
मिच्छासाणे बीए नव चउ पण नव य [illegible] ॥ ४३ ॥
मिस्साइ नियट्टीओ, छ चउ पण नव य [illegible],
चउबध तिगे चउ पण नवम दुसु [illegible] ॥ ४४ ॥
उवसंते चउ पण नव, खीणे [illegible] चउ [illegible],
वेअणि आउ अ गोए, विभज्ज मोहं [illegible] ॥ ४५ ॥
चउ छस्सु दुन्नि सत्तसु एगे [illegible];
गोए पण चउ दो तिसु, एगट्ठसु [illegible] ॥ ४६ ॥
अट्ठच्छाहिगवीसा, सोलस वीस [illegible] दोसु,
दो चउसु तीसु इक्कं, मिच्छाइसु [illegible] ॥ ४७ ॥
गुणठाणएसु अट्ठसु इक्किक्कं [illegible],
पंच अनिअट्टिठाणे, बंधोवरमे [illegible] ॥ ४८ ॥
सत्ताइ दस उ मिच्छे [illegible];
छाइ नव उ अविरए, देसे [illegible] ॥ ४९ ॥
विरए खओवसमिए, चउराइ [illegible],
अनिअट्टिबायरे पुण, इक्को [illegible] ॥ ५० ॥
एग सुहुमसरागो वेएइ [illegible];
भंगाण च पमाणं पुव्वुद्दिट्ठ[illegible] ॥ ५१ ॥
इक्क छडिक्कारिक्का-[illegible] नव तिन्नि
एए चउवीसगया, [illegible] ॥ ५२ ॥
बारस पणसट्ठिसया, [illegible]
चुलसीइ सत्तुत्तरी, [illegible]

अडग चउ चउ चउरद्दगा य, चउरो अ हुति चउवीसा;
मिच्छाइअपुव्वंता, बारस पणगं च अनिअट्टी ॥ ५४ ॥
जोगोवओगलेसा,-इयाइं गुणिआ हवंति कायव्वा,
जे जत्थ गुणट्ठाणे हवंति ते तत्थ गुणकारा ॥ ५५ ॥
अट्ठट्ठी बत्तीसं बत्तीसं सट्ठिमेव बावन्ना;
चोआलं दोसु वीसा विअ, मिच्छमाईसु सामन्नं ॥ ५६ ॥
तिन्नेगे एगेगं तिग मीसे पंच चउसु तिग पुव्वे,
इक्कार बायरंमि उ, सुहुमे चउ तिन्नि उवसंते ॥ ५७ ॥
छन्नव छक्कं तिग सत्त, दुग दुग तिग दुग ति अट्ठ चउ,
दुग छच्चउ दुग पण चउ, चउ दुग चउ पणग एग चऊ ॥ ५८ ॥
एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ, छउमत्थकेवलिजिणाण,
एग चउ एग चउ अट्ठ चउ दु छक्कमुदयंसा ॥ ५९ ॥
चउ पणवीसा सोलस, नव चत्ताला सया य बाणउई;
बत्तीसुत्तर छायाल-सया मिच्छस्स बंधविही ॥ ६० ॥
अट्ठ सया चउसट्ठी बत्तीसयाई सासणे भेआ;
अट्ठावीसाईसु सव्वाणऽट्ठहिगछन्नउई ॥ ६१ ॥
इगचत्तिगार बत्तीस छ सय इगतीसिगारनवनउई,
सत्तरिगसि गुतीसचउद, इगारचउसट्ठि मिच्छुदया ॥ ६२ ॥
बत्तीस दुन्नि अट्ठ य बासीइ सया य पंच नव उदया,
बारहिआ तेवीसा बावन्निक्कारस सया य ॥ ६३ ॥
दो छक्कट्ठ चउक्कं पण नव इक्कार छक्कगं उदया,
नेरइआइसु सत्ता ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥ ६४ ॥
इग विगलिंदिअ सगले पण पंच य अट्ठ बंधठाणाणि,
पण छक्किक्कारुदया पण पण बारस य संताणि ॥ ६५ ॥

इअ कम्मपगइठाणाणि, सुट्ठु बंधुदयसंतकम्माण;
गइनाइएहिं अट्ठसु, चउप्पयारेण नेयाणि ॥ ६६ ॥
उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताओ न विज्जइ विसेसो,
मुत्तूण य इगयालं, सेसाण सव्वपयडीण ॥ ६७ ॥
नाणंतरायदसग दंसण नव वेअणिज्ज मिच्छत्तं,
सम्मत्त लोभ वेआ-उआणि नव नाम उच्च च ॥ ६८ ॥
तित्थयराहारगविरहिआउ अज्जेइ सव्व पयडीओ,
मिच्छत्तवेअगो सा-सणो वि गुणवीससेसाओ ॥ ६९ ॥
छायालसेस मीसो अविरयसम्मा तिआलपरिसेसा,
तेवन्न देसविरओ विरओ सगवन्नसेसाओ ॥ ७० ॥
इगुणट्ठिमप्पमत्तो बंधइ देवाउअस्स इअरो वि,
अट्ठावन्नमपुव्वो, छप्पन्न वा वि छव्वीस ॥ ७१ ॥
बावीसा एगूण बंधइ अट्ठारसंतमनिअट्टी,
सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगुत्ति ॥ ७२ ॥
एसो उ बंधसामित्त-ओहो गइआइएसु वि तहेव;
ओहाओ साहिज्जइ जत्थ जहा पगइसब्भावो ॥ ७३ ॥
तित्थयरदेवनिरया-उअ च तिसु तिसु गइसु बोधव्व,
अवसेसा पयडीओ हवंति सव्वासु वि गइसु ॥ ७४ ॥
पढमकसायचउक्क दंसणतिग सत्तगा वि उवसंता,
अविरयसम्मत्ताओ, जाव नियट्टि त्ति नायव्वा ॥ ७५ ॥
सत्तट्ठ नव य पनरस सोलस अट्ठारसेव गुणवीसा,
एगाहि दु चउवीसा पणवीसा बायरे जाण ॥ ७६ ॥
सत्तावीस सुहुमे अट्ठावीस च मोहपयडीओ,
उवसंतवीअराए, उवसंता हुंति नायव्वा ॥ ७७ ॥

पढमकसायचउक्कं इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं;
अविरयसम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीअंति ॥ ७८ ॥
अनिअट्टिबायरे थीण–गिद्धितिगनरयतिरिअनामाओ;
संखिज्जइमे सेसे तप्पाउग्गाओ खीअंति ॥ ७९ ॥
इत्तो हणइ कसाय–ट्ठगंपि पच्छा नपुंसगं इत्थीं,
तो नोकसायछक्कं, छुहइ संजलणकोहंमि ॥ ८० ॥
पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए,
मायं च छुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥ ८१ ॥
खीणकसायदुचरिमे, निद्दं पयलं च हणइ छउमत्थो,
आवरणमंतराए, छउमत्थो चरमसमयंमि ॥ ८२ ॥
देवगइसहगयाओ, दुचरमसमयभविअंमि खीअंति,
सविवागेअरनामा, नीआगोअं पि तत्थेव ॥ ८३ ॥
अन्नयर वेयणीअं, मणुआउअमुच्चगोअ नव नामे,
वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोसजहन्नमिक्कारा ॥ ८४ ॥
मणुअगइ जाइतसबायरं च, पज्जत्तसुभगमाइज्जं,
जसकित्ती तित्थयरं नामस्स हवंति नव एआ ॥ ८५ ॥
तच्चाणुपुव्विसहिआ, तेरस भवसिद्धिअस्स चरमंमि,
संतंसगमुक्कोसं, जहन्नय बारस हवंति ॥ ८६ ॥
मणुअगइसहगयाओ भवखित्तविवागजिअविवागाओ;
वेअणिअन्नयरुच्चं चरमसमयंमि खीअंति ॥ ८७ ॥
अहसुइअसयलजगसिहर–मरुअनिरुवमसहावसिद्धिसुहं,
अनिहणमव्वाबाहं तिरयणसारं अणुहवंति ॥ ८८ ॥
दुरहिगम–निउण–परमत्थ–रुइरबहुभंगदिट्ठिवायाओ,
अत्था अणुसरिअव्वा, बंधोदयसंतकम्माणं ॥ ८९ ॥

वो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण बद्धो त्ति;
तं खमिउण बहुसुआ पूरेउण परिकहतु ॥ ९० ॥
गाहग्ग सयरीए चंदमहत्तरमयाणुसारीए,
टीगाइ निअमिआण, एगूणा होइ नउइओ ॥ ९१ ॥

श्री चैत्यवदन भाष्य मूल

वंदित्तु वंदणिज्जे, सव्वे चिइवंदणाइ सुवियारं।
बहु वित्ति भास चुण्णी सुयाणुसारेण वुच्छामि ॥ १ ॥
दहतिग अहिगम पणगं, दुदिसि तिहुग्गह तिहा उ वंदणया।
पणिवाय नमुक्कारा, वन्ना सोल सय सीयाला ॥ २ ॥
इगसीइ सयं तु पया सगनउइ संपया उ पण दंडा।
बार अहिगार चउ वंदणिज्ज सरणिज्ज चउह जिणा ॥ ३ ॥
चउरो थुइ निमित्तट्ठ, बार हेऊ अ सोल आगारा।
गुणवीस दोस उस्सग्ग,– माण थुत्तं च सग वेला ॥ ४ ॥
दस आसायण चाओ, सव्वे चिइवंदणाइ ठाणाइं।
चउवीस दुवारेहिं दुसहस्सा हुंति चउसयरा ॥ ५ ॥
तिन्नि निसीही तिन्नि उ पयाहिणा तिन्नि चेव य पणामा।
तिविहा पूया य तहा अवत्थतिय भावणं चेव ॥ ६ ॥
तिदिसिनिरिक्खणविरइ, पयभूमिपमज्जणं च तिक्खुत्तो।
वन्नाइतियं मुद्दातियं च तिविहं च पणिहाणं ॥ ७ ॥
घर जिणहर जिणपूयावावारच्चायओ निसीहितिगं।
अग्गद्दारे मज्झे तइया चिइवंदणासमए ॥ ८ ॥

अंजलिबद्धो, अद्धोणओ अ पंचगओ अ तिपणामा ।
सव्वत्थ वा तिवार, सिराइ नमणे पणामतियं ॥ ९ ॥
अंगग्गभावभेया, पुप्फाहारथुइहिं पूयतिगं ।
पंचुवयारा अट्ठो,-वयार सव्वोवयारा वा ॥ १० ॥
भाविज्ज अवत्थतियं, पिंडत्थ पयत्थ रूवरहियत्तं ।
छउमत्थ केवलित्तं सिद्धत्तं चेव तस्सत्थो ॥ ११ ॥
न्हवणच्चगेहिं छउमत्थ, वत्थपडिहारगेहिं केवलियं ।
पलियंकुस्सग्गेहि अ जिणस्स भाविज्ज सिद्धत्तं ॥ १२ ॥
उड्ढाहो तिरियाणं तिदिसाण निरिक्खणं चइज्जहवा ।
पच्छिम दाहिण वामाण जिणमुहन्नत्थ दिट्ठिजुओ ॥ १३ ॥
वन्नतियं वन्नत्था,- लंबणमालंबणं तु पडिमाइ ।
जोगजिणमुत्तसुत्ती,-मुद्दाभेएण मुद्दतियं ॥ १४ ॥
अन्नुन्नंतरिअंगुलि कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ।
पिट्टोवरि कुप्पर,-संठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति ॥ १५ ॥
चत्तारि अंगुलाइं, पुरओ ऊणाइ जत्थ पच्छिमओ ।
पायाण उस्सग्गो एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १६ ॥
मुत्तासुत्ती मुद्दा, जत्थ समा दोवि गब्भिया हत्था ।
ते पुण निलाडदेसे लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति ॥ १७ ॥
पंचंगो पणिवाओ, थयपाढो होइ जोगमुद्दाए ।
वंदण जिणमुद्दाए पणिहाणं मुत्तसुत्तीए ॥ १८ ॥
पणिहाणतिगं चेइअमुणिवंदण पत्थणा सरूवं वा ।
मणवयकाएगत्तं, सेसतियत्थो य पयडुत्ति ॥ १९ ॥
सच्चित्तदव्वमुज्झणम,-च्चित्तमणुज्झणं मणेगत्तं,
इगसाडिउत्तरासंगु, अंजली सिरसि जिणदिट्ठे ॥ २० ॥

इअ पचविहाभिगमो अहवा मुच्चति रायचिण्हाइ।
खग्ग छत्तोवाणह मउड चमरे अ पचमए ॥ २१ ॥
वदति जिणे दाहिण,– दिसि ट्ठिया पुरुस वामदिसि नारी।
नव कर जहन्न सट्ठिकर जिट्ठमज्जुग्गहो सेसो ॥ २२ ॥
नमुक्कारेण जहन्ना चिइवदण मज्झ दडथुइजुअला।
पण दड थुइचउक्कग,– थयपणिहाणेहिं उक्कोसा ॥ २३ ॥
अन्ने बिंति इगेग सक्कत्थएण जहन्न वंदणया
तद्दुगतिगेण मज्झा उक्कोसा चउहिं पचहिं वा ॥ २४ ॥
पणिवाओ पचगो, दो जाणु करदुगुत्तमग च
सुमहत्थ – नमुक्कारा, इग दुग तिग जाव अट्ठ सयं ॥ २५ ॥
अडसट्ठि अट्ठवीसा, नवनउयसय च दुसय सगनउया
दो–गुणतीस दु सट्ठा, दुसोल अड नउयसय दुवन्नसय ॥ २६ ॥
इअ नवकार – खमासमण,– इरिअ – सक्कत्थयाइ दंडेसु।
पणिहाणेसु अ अदुरुत्त – वन्न सोल सय सीयाला ॥ २७ ॥
नव बत्तीस तित्तीसा तिचत्त अडवीस सोल वीस पया
मगल – इरिया – सक्कत्थयाइसु एगसीइसय ॥ २८ ॥
अट्ठट्ठनवट्ठ य अट्ठवीस, सोलस य वीस वीसामा,
कमसो मगल–इरिया, सक्कत्थयाइसु सगनउई ॥ २९ ॥
वण्णट्ठसट्ठि नव पय, नवकारे अट्ठ सपया तत्थ।
सग सपय पय तुल्ला सतरक्खर अट्ठमी दुपया ॥ ३० ॥
पणिवाय अक्खराइ, अट्ठावीस तहा य इरियाए।
नवनउअमक्खरसय, दुतीस पय सपया अट्ठ ॥ ३१ ॥
दुग दुग इग चउ इग पण इगार छग इरिय–सपयाइ पया

इच्छा इरि गम पाणा जे मे ओगिंदि अभि तस्स ॥ ३२ ॥
अब्भुवगमो निमित्तं ओहे–यरहेउ सगहे पंच,
जीव–विराहण–पडिक्कमण,– भेयओ तिन्नि चूलाओ ॥ ३३ ॥
दु ति चउ पण पण दु,– चउ – तिपय सक्कत्थय सपयाइ पया।
नमु आइग पुरिसो लोगु, अभय धम्मऽप्प जिणसव्व, ॥ ३४ ॥
थोअव्व सपया ओह इयरहेउवओग तद्धेऊ ।
सविसेसुवओग सरूव,– हेउ नियसमफल य मुक्खे ॥ ३५ ॥
दो सगनउआ वन्ना, नव सपय पय तितीस सक्कथए,
चेइयथयऽह सपय तिचत्तपय वन्न दुसय गुणतीसा ॥ ३६ ॥
दु छ सग नव तिय छ च्चउ, छप्पय चिइसपया पया पढमा ।
अरिह वंदण सद्धा अन्न सुहुम अेव जा ताव ॥ ३७ ॥
अब्भुवगमो निमित्त, हेऊ इग बहु वयत आगारा ।
आगंतुग आगारा उस्सग्गावहि सरूवट्ठ ॥ ३८ ॥
नामथयाइसु सपय पयसम अडवीस सोल वीस कमा ।
अदुरुत्त वन्न दोसट्ठ दुसयसोलट्ठनउअसयं ॥ ३९ ॥
पणिहाणि दुवन्नसयं कमेण सग ति चउवीस तितीसा ।
गुणतीस अट्ठवीसा चउतीसिगतीस बार गुरु वन्ना ॥ ४० ॥
प्पण दंडा सक्कत्थयचेइअ नाम सुअ सिद्धत्थय इत्थ ।
दो इग दो दो पच य, अहिगारा बारस कमेण ॥ ४१ ॥
नमु जेय अ अरिहं लोग, सव्व पुक्ख तम सिद्ध जो देवा ।
उज्जिं चत्ता वेआ,– वच्चग अहिगार पढमपया ॥ ४२ ॥
पढमहिगारे वंदे, भावजिणे बीयए उ दव्वजिणे ।
इगचेइय ठवणजिणे, तइय चउरथमि नामजिणे ॥ ४३ ॥

तिहुअणठवणजिणे पुण पचमए विहरमाणजिण छट्ठे ।
सत्तमए सुयनाण, अट्ठमए सव्वसिद्धथुइ ॥ ४४ ॥
तित्थाहिव वीरथुइ, नवमे दसमे य उज्जयंत थुई ।
अट्ठावयाइ इगदिसि सुदिट्ठिसुरसमरणा चरिमे ॥ ४५ ॥
नव अहिगारा इह ललिअवित्थरा वित्तिमाइ अणुसारा ।
तिन्नि सुयपरंपरया बीओ दसमो इगारसमो ॥ ४६ ॥
आवस्सय चुण्णीए, ज मणियं सेसया जहिच्छाए ।
तेण उज्जिताइ वि, अहिगारा सुयमया चेव ॥ ४७ ॥
बीआ सुयत्थयाइ, अत्थओ वन्निओ तहिं चेव ।
सक्कत्थयंते पढिओ, दव्वारिहवसरि पयडत्थो ॥ ४८ ॥
असढाऽऽइन्नणवज्ज गीअत्थ अवारिय ति मज्झत्था ।
आयरणा वि हु आण त्ति, वयणओ सुबहु मन्नति ॥ ४९ ॥
चउ वंदणिज्ज जिण मुणि, सुय सिद्धा इह सुरा य सरणिज्जा ।
चउह जिणा नाम ठवण, दव्व, भाव जिण भेएण ॥ ५० ॥
नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणिंदपडिमाओ ।
दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ ५१ ॥
अहिगय जिण पढमथुइ, बीया सव्वाण तइअ नाणस्स ।
वेयावच्चगराण उवओगत्थ चउत्थ थुइ ॥ ५२ ॥
पावखवणत्थ इरिआइ, वंदणवत्तिआइ छ निमित्ता ।
पवयणसुर सरणत्थ उस्सग्गो इअ निमित्तऽट्ठ ॥ ५३ ॥
चउ तस्स उत्तरीकरण, पमुह सद्धाइआ य पण हेउ ।
वेयावच्चगरत्ताइ तिन्नि इअ हेउ बारसग ॥ ५४ ॥
अन्नत्थयाइ बारस आगारा एवमाइया चउरो ।
अगणी पणिंदि छिंदण, बोही खोभाऽऽइ डक्को य ॥ ५५

घोडग लय म्भाइ, मालुद्धी निअल मवरि सलिण वहू।
लयुत्तर थण सजइ, भमुहंगुलि वायस कविट्टो ॥ ५६ ॥
सिरकप मूअ वारुणि पेहत्ति चइज्ज दोस उस्सग्गे।
लयुत्तर थण सजइ, न दोस समणीण सवहु सड्ढीण ॥ ५७ ॥
इरि उस्सग्गपमाण, पणवीसुस्सास अट्ठ सेसेसु।
गंभीर महुर सद महत्थ जुत्तं हवइ थुत्त ॥ ५८ ॥
पडिक्रमणे चेइय जिमण चरिम पडिकमण सुअण पडिबोहे।
चिइवंदण इअ जइणो, सत्त उ वेला अहोरत्ते ॥ ५९ ॥
पडिकमओ गिहिणो वि हु, सगवेला पंचवेल इअरस्स।
पूआसु तिसझासु अ, होइ तिवेला जहन्नेणं ॥ ६० ॥
तंबोल पाण भायण, वाणह मेहुन्न सुअण निट्ठवणं।
मुत्तच्चार जूअं, वज्जे जिणनाह जगईए ॥ ६१ ॥
इरि नमुकार नमुत्थुण, रिहत थुइ लोग सव्व थुइ पुक्ख।
थुइ सिद्ध वेया थुइ नमुत्थु जावंतिथय जयवी ॥ ६२ ॥
सव्वोवाहि विसुद्ध, एव जो वंदए मया देवे।
देविंदविंदमहिअं, परमपयं पावइ लहु सो ॥ ६३ ॥

श्री गुरुवंदन भाष्य मूल

गुरुवदणमह तिविहं, त फिट्टा छोभ बारसावत्तं।
सिरनमणाइसु पढम पुण्ण खमासमण दुगि बीअ ॥ १ ॥
जह दुओ रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइउं पच्छा।
वीसज्जिओ वि वंदिअ, गच्छइ एमेव इत्थ दुग ॥ २ ॥
आयारस्स उ मूलं, विणओ सो गुणवओ अ पडिवत्ती।

ना य विहि वंदणाओ, विही इमो नारसावत्ते ॥ ३ ॥
नइय तु छंदण दुगं, तत्थ मिहो आइम सयलसंघे।
बीय तु दसणीण य, पयट्ठिआण च तइय तु ॥ ४ ॥
वंदण चिइ किइकम्म, पूआकम्म च विणयकम्म च।
कायव्व कस्स व केण, जावि काहेन कइखुत्तो ॥ ५ ॥
कइ ओणय कइ सिरं कइहिं व आवस्सएहिं परिसुद्ध।
कइदोसविप्पमुक्कं किइकम्म कीस कीरइ वा ॥ ६ ॥
पण नाम पणाहरणा अजुग्ग पण जुग्ग पण चउ अदाया।
चउदाय पण निसेहा चउ अणिसेह इकारणया ॥ ७ ॥
आवस्सय मुहणंतय, तणुपेह पणीस दोस बत्तीसा।
छगुण गुरुठवण दुग्गह, दुछवीस क्खर गुरु पणीसा ॥ ८ ॥
पय अडवन्न छठाणा छग्गुरुवयणा आसायणतितीस।
दुविही दुवीस दारेहिं, चउसया नाणउइ ठाणा ॥ ९ ॥
वंदणय चिइकम्म, किइकम्म विणयकम्म पूअकम्म।
गुरुवंदण पण नामा दव्वे भावे दुहाहरणा (दुहोहेण) ॥ १० ॥
सीयलय खुड्डए वीर कण्ह सेवग दु पालए संबे।
पंचे ए दिट्ठता, किइकम्मे दव्वभावेहिं ॥ ११ ॥
पासत्थो ओसन्नो कुसील संसत्तओ अहाछंदो।
दुग दुग ति दु णेगविहा अवंदणिज्जा जिणमयमि ॥ १२ ॥
आयरिय उवज्झाए पवत्ति थेरे तहेव रायणिए।
किइकम्म निज्जरट्ठा कायव्वमिमेसि पंचण्ह ॥ १३ ॥
माय पिअ जिट्ठभाया ओमावि तहेव सव्व रायणिए।
किइकम्म न कारिज्जा, चउ समणाइ कुणंति पुणो ॥ १४ ॥

विक्खित्त पराहुत्ते अ पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा
आहार नीहार कुणमाणे काउकामे अ ॥ १५ ॥
पसंते आसणत्थे अ उवसंते उवट्ठिअे ।
अणुन्नवित्तु मेहावी किइकम्म पउंजइ ॥ १६ ॥
पडिकमणे सज्झाअे काउस्सग्गावराह पाहुणअे ।
आलोयण संवरणे उत्तमट्ठे य वंदणय ॥ १७ ॥
दोऽवणयमहाजाय, आवत्ता बार चउ सिर तिगुत्तं ।
दुपवेसिग निक्खमण, पणवीसावस्सय किइकम्मे ॥ १८ ॥
किइकम्मंपि कुणंतो, न होइ किइकम्म निज्जराभागी
पणवीसामन्नयर साहू ठाण विराहंतो ॥ १९ ॥
दिट्ठिपडिलेह अेगा छ उड्ढ पप्फोड तिगतिगतरिआ ।
अक्खोड पमज्जणया, नव नव मुहपत्ति पणवीसा ॥ २० ॥
पायाहिणेण तिअ तिअ वामेअर बाहु सीस मुह हियअे
असुड्ढाहो पिट्ठे चउ छप्पय देह पणवीसा ॥ २१ ॥
आवस्सअेसु जह जह कुणइ पयत्त अहीणमइरित्त ।
तिविह करणोवउत्तो तह तह से निज्जरा होइ ॥ २२ ॥
दोस अणाढिअ थड्ढिअ पविद्ध परिपिंडिअ च टोलगइ ।
अंकुस कच्छभरिंगिअ मच्छुव्वत्त मणपउट्ठ ॥ २३ ॥
वेइय बद्ध भयंत, भय गारव मित्त कारणा तिन्न ।
पडणीय रुट्ठ तज्जिअ, सढ हीलिअ विपलिउंचियय ॥ २४ ॥
दिट्ठमदिट्ठ सिंग कर तम्मोअण अणिद्धणालिद्ध ।
ऊण उत्तर चूलिअ, मूअ ढड्ढर चुडलियं च ॥ २५ ॥
बत्तीस दोस परिसुद्ध किइकम्म जो पउंजइ गुरुण ।
सो पावइ निव्वाण, अचिरेण विमाणवासं वा ॥ २६ ॥

इह छच गुणा विणओवयार माणाइभग गुरुपूआ ।
तित्थयराण य आणा सुअधम्माराहणाऽकिरिया ॥ २७ ॥
गुरुगुणजुत्त तु गुरु, ठाविज्जा अहव तत्थ अक्खाई ।
अहवा नाणाइ तिअ, ठविज्ज सक्ख गुरुअभावे ॥ २८ ॥
अक्खे वराडजे वा, कट्ठे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ ।
सब्भावमसब्भाव गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥ २९ ॥
गुरुविरहमि ठवणा गुरुवएसोवदसणत्थ च ।
जिणविरहमि जिणबिंब,—सेवणामतण सहल ॥ ३० ॥
चउदिसि गुरुग्गहो इह अहुट्ट तेरस करे सपरपक्खे ।
अणणुन्नायस्स सया, न कप्पए तत्थ पविसेउ ॥ ३१ ॥
पण तिग बारस दुग तिग चउरो छट्ठाण पय इगुणतीस ।
गुणतीस सेस आवस्सयाइ सव्वपय अडवन्ना ॥ ३२ ॥
इच्छा य अणुन्नवणा अव्वाबाह च जत्त जवणा य ।
अवराहखामणाऽवि य वदणदायस्स छट्ठाणा ॥ ३३ ॥
छदेणणुजाणामि तहत्ति तुब्भपि वट्टए एव ।
अहमवि खामेमि तुम वयणाइ वदणरिहस्स ॥ ३४ ॥
पुरओ पक्खासन्ने गता चिट्ठण निसीअणा वमणे ।
आलोयण ऽपडिसुणणे पुव्वालवणे अ आलोए ॥ ३५ ॥
तह उवदस निमतण, खद्धाययणे तहा अपडिसुणणे ।
खद्धात्ति य तत्थगए, किं तुम तज्जाय नो सुमणे ॥ ३६ ॥
नो सरसि कहछित्ता परिसभित्ता अणुट्ठियाइ कहे ।
सथारपायघट्टण चिट्ठुच्च समासणे आवि ॥ ३७ ॥
इरिया कुसुमिणुसग्गो, चिइवदण पुत्ति वदणालोय ।
वदण खामण वदण सवर चउछोभ दु सज्झाओ ॥ ३८ ॥

इरिया चिइवंदण पुत्ति, वदण चरिम वंदणा लोयं ।
वदण खामण चउ छोम दिनमुस्सग्गो दु सज्झाओ ॥ ३९ ॥
एयं किइकम्मविहिं, जुनता चरणकरणमाउत्ता ।
साहू खवति कम्मं अणेगभवसंचियमणत ॥ ४० ॥
अप्पमइ भव्व बोहत्थ भासिय विवरिय य जमिह मए ।
त सोहतु गियत्था अणमिनिवेसी अमच्छरिणो ॥ ४१ ॥

श्री पच्चक्खाण भाष्य मूल

दस पच्चखाण चउ विहि आहार दुवीसगार अदुरुत्ता ।
दस विगइ तीस निगइगय दुहभगा छ सुद्धिफल ॥ १ ॥
अणागयमइक्कंतं कोडिसहिय नियटि अणगारं ।
सागार निरवसेस परिमाणकड सके अद्धा ॥ २ ॥
नवकारसहिअ पोरिसि, पुरिमड्ढेगासणेगठाणे अ ।
आयंबिल अभत्तट्ठे, चरिमे अ अभिग्गहे विगइ ॥ ३ ॥
उग्गए सूरे अ नमो पोरिसि पच्चक्ख उग्गए सूरे ।
सूरे उग्गए पुरिम, अभत्तट्ठ पच्चक्खाइ त्ति ॥ ४ ॥
भणइ गुरु सीसो पुण, पच्चक्खामि त्ति एव वोसिरइ ।
उवओगित्थ पमाण, न पमाण वजणच्छलणा ॥ ५ ॥
पढमे ठाणे तेरस बीए तिन्नि उ तिगाइ तइअमि ।
पाणस्स चउत्थमि, देसवगासाइ पचमए ।
नमु पोरिसी सड्ढा पुरिमवड्ढ अगुट्ठमाइ अड तेर ।
निवि विगइं बिल तिय तिय, दु इगासण एगठाणाई ॥ ७ ॥
पढमंमि, चउत्थाइ, तेरस बीयमि तइअ पाणस्स । ...

देसवगास तुरिअे चरिमे जहसभव नेय ॥ ८ ॥
वह मज्झ पच्चक्खाणेसु न पि हु सूत्त्यगयाइ योगिरइ ।
करणविही उ न भन्नइ, जहावसीयाइ विअछेदे, ॥ ९ ॥
नइ विविह पच्चक्खाणे भन्नति अ पाणगम्म आगारा ।
दुविहाहारे अचित्त,—भोइणो तह य फासुजल ॥ १० ॥
इतुच्चिय खवणविल, निवियाइसु फासुय चिय अल तु ।
मट्ठा वि पियति तहा पच्चक्खति य तिहाहार ॥ ११ ॥
चउहाहार तु नमो, रत्तिपि मुणीण सेस तिह चउहा ।
निसि पोरिसि पुरिमेगासणाइ सट्ठाण दुतिचउहा ॥ १२ ॥
सुहयसम खमेगागी आहारि व अेइ देइ वा साय ।
सुहिओ वि खिवइ कुट्ठे ज पकुसम बमाहारो ॥ १३ ॥
असणे मुग्गोयण सत्तु, मड पय खज्ज रब्ब कदाई ।
पाणे कजिय जव कयर, ककडोदग सुराइ जड ॥ १४ ॥
खाइमे भत्तोस फलाइ, साइमे सुठि जीर अजमाई ।
महु गुड तबोलाइ अणहारे मोअ निबाइ ॥ १५ ॥
दो नवकारि छ पोरिसि, सग पुरिमड्ढ इगासणे अट्ठ ।
सत्तेगठाणि अबिलि, अट्ठ पण चउत्थि छप्पाणे ॥ १६ ॥
चउ चरिमे चउ भिग्गहि, पण पावरणे नवट्ठ निव्वीओे ।
आगारक्खित्त विवे—गमुत्तु दवविगइ नियमिट्ठ ॥ १७ ॥
अन्न सह दु नमुक्कारे अन्न सह पच्छ दिस य साहु सव्व ।
पोरिसि छ सड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढे सत्त समहत्तरा ॥ १८ ॥
अन्न सहस्सागारि अ, आउटण गुरु अ पारि मह सव्व ।
अेग बिआसणि अट्ठ उ, सग इगठाणे अउट विना

अन्न सह लेवा गिह उक्खित्त पडुच्च पारि मह सव्व ।
विगइ निव्विगऐ नव,पडुच्च विणु अंबिले अट्ठ ॥ २० ॥
अन्न सह पारि मह सव्व पंच खवणे छ पाणि लेवाइ ।
चउ चरिम गुट्ठाइ भिग्गहि अन्न सह मह सव्व ॥ २१ ॥
दुद्ध महु मज्ज तिल्लं, चउरो दवविगई चउर पिंडदवा ।
घय गुल दहियं पिसिय मक्खण पक्कन्न दो पिंडा ॥ २२ ॥
पोरिसि सड्ढ अवड्ढ दुभत्त निव्विगइ पोरिसाइ समा ।
अगुट्ठ मुट्ठि गंठी सचित्त दव्वाइ भिग्गहियं ॥ २३ ॥
विस्सरणमणाभोगो सहसागारो सय मुहपवेसो ।
पच्छन्नकाल मेहाई, दिसिविवज्जासु दिसिमोहो ॥ २४ ॥
साहुवयण उग्घ डा पोरिसी तणुसुत्थया समाहि त्ति ।
सघाइकज्ज महत्तर गिहत्थ वदाइ सागारी ॥ २५ ॥
आउटण मगाण, गुरु पाहुण साहु गुरु अब्भुट्ठाणं ।
परिठावण विहिगहिजे जईण पावरणि कडिपट्टो ॥ २६ ॥
खरडिय लूहिअ डोवा–इ लेव ससट्ठ डुच्च मडाई ।
उक्खित्त पिंड विगई–ण मक्खिय अगुलीहि मणा ॥ २७ ॥
लेवाड आयामाइ इअर सोवीरमच्छमुसिणजल ।
धोयण बहुल ससित्थ उस्सेइम अर सित्थविणा ॥ २८ ॥
पण चउ चउ चउ दु दुविह, छ भक्ख दुद्धाइ विगइ इगवीस ।
ति दु ति चउविह अभक्खा चउ महुमाई विगइ बार ॥ २९ ॥
खीर घय दहि अ तिल्लं, गुल पक्कन्न छ भक्खविगइओ ।
गो महिसी उट्टि अय अेलगाण पण दुद्ध अह चउरो ॥ ३० ॥
घय दहिया उट्टिविणा, तिल सरिसव अयसि लट्ट तिल्ल चउ ॥

जाणगऽजाणगपास त्ति, भंगचउगे विसु अणुन्ना ॥ ४३ ॥
फासिय पालिय साहिय तीरिय किट्टिय आराहिय छ सुद्ध ।
पच्चक्खाण फासिय विहिणोचियकालि ज पत्त ॥ ४४ ॥
पालिय पुण पुण सरिय, सोहिय गुरुदत्त सेस भोयणओ ।
तीरिय समहिय काला, किट्टिय भोयणसमयसरणा ॥ ४५ ॥
इअ पडिअरिअ आरा-हिय, तु अहवा छ सुद्धि सद्दहणा ।
जाणण विणयऽणुभासण, अणुपालण भावसुद्धि त्ति ॥ ४६ ॥
पच्चक्खाणस्स फल, इह परलोए य होइ दुविह तु ।
इहलोए धम्मिलाई, दामन्नगमाइ परलोए ॥ ४७ ॥
पच्चक्खाणमिण से-विऊण, भावेण जिणवरुद्दिट्ठ ।
पत्ता अणत जीवा सासय सुक्ख अणाबाह ॥ ४८ ॥

भाष्यत्रय समाप्त

अथ द्वितीयोऽध्यायः

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च। २ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम्। ३ सम्यक्त्वचारित्रे। ४ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च। ५ ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च। ६ गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धत्वलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः। ७ जीवभव्याभव्यत्वादीनि च। ८ उपयोगो लक्षणम्। ९ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः। १० संसारिणो मुक्ताश्च। ११ समनस्कामनस्काः। १२ संसारिणस्त्रसस्थावराः। १३ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः। १४ तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः। १५ पचेन्द्रियाणि। १६ द्विविधानि। १७ निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्यन्द्रियम्। १८ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्। १९ उपयोगः स्पर्शादिषु। २० स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि। २१ स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तेषामर्थाः। २२ श्रुतमनिन्द्रियस्य। २३ वाय्वन्तानामेकम्। २४ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि। २५ संज्ञिनः समनस्काः। २६ विग्रहगतौ कर्मयोगः। २७ अनुश्रेणि गतिः। २८ अविग्रहा जीवस्य। २९ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः। ३० एकसमयाऽविग्रहः। ३१ एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः। ३२ सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म। ३३ सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः। ३४ जरायुजाण्डपोतजानां गर्भः। ३५ नारकदेवानामुपपादः। ३६ शेषाणां सम्मूर्छनम्। ३७ औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि

शरीराणि। ३८ परं परं सूक्ष्मम्। ३९ प्रदेशतोऽसङ्ख्येयगुणं प्राक् तैजसात्। ४० अनन्तगुणे परे। ४१ अप्रतिघाते। ४२ अनादिसम्बन्धे च। ४३ सर्वस्य। ४४ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याऽऽचतुर्भ्यः। ४५ निरुपभोगमन्त्यम्। ४६ गर्भसम्मूर्छनजमाद्यम्। ४७ वैक्रियमौपपातिकम्। ४८ लब्धिप्रत्ययं च। ४९ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव। ५० नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि। ५१ न देवाः। ५२ औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषासङ्ख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः।

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

१ रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः। २ तासु नरकाः। ३ नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः। ४ परस्परोदीरितदुःखाः। ५ संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः। ६ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः सत्त्वानां परा स्थितिः। ७ जम्बूद्वीपलवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः। ८ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः। ९ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः। १० तत्र भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि। ११ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः। १२ द्विर्धातकीखण्डे। १३ पुष्करार्धे च। १४ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः। १५ आर्या म्लिशश्च।

१६ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः । १७ नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते । १८ तिर्यग्योनीनां च ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

देवाश्चतुर्निकायाः । २ तृतीयः पीतलेश्यः ३ दशाष्टपञ्चद्वादश-विकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः । ४ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्बिषिकाश्चैकशः ५ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः । ६ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः । ७ पीतान्तलेश्याः ८ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ९ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराः ११ भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः १२ व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः १३ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च । १४ मेरुप्रदक्षिणानित्यगतयो नृलोके । १५ तत्कृतः कालविभागः १६ बहिरवस्थिताः १७ वैमानिकाः १८ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च । १९ उपर्युपरि । २० सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च । २१ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः २२ गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः । २३ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु । २४ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः । २५ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः । २६ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतोऽरिष्टाश्च । २७ विजयादिषु द्विचरमाः २८ औप-

पातिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः २९ स्थितिः ३० भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम् । ३१ शेषाणां पादोने । ३२ असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिकं च । ३३ सौधर्मादिषु यथाक्रमम् ३४ सागरोपमे । ३५ अधिके च ३६ सप्त सानत्कुमारे । ३७ विशेषत्रिसप्तदशैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि च । ३८ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च । ३९ अपरा पल्योपममधिकं च । ४० सागरोपमे । ४१ अधिके च ४२ परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा । ४३ नारकाणां च द्वितीयादिषु । ४४ दश वर्षसहस्राणि प्रथमायाम् । ४५ भवनेषु च । ४६ व्यन्तराणां च । ४७ परा पल्योपमम् । ४८ ज्योतिष्काणामधिकम् । ४९ ग्रहाणामेकम् । ५० नक्षत्राणामर्धम् । ५१ तारकाणां चतुर्भागः । ५२ जघन्या त्वष्टभागः । ५३ चतुर्भागः शेषाणाम् ।

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

१ अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः । २ द्रव्याणि जीवाश्च । ३ नित्यावस्थितान्यरूपीणि । ४ रूपिणः पुद्गलाः । ५ आऽऽकाशादेकद्रव्याणि । ६ निष्क्रियाणि च । ७ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मयोः । ८ जीवस्य च । ९ आकाशस्यानन्ताः । १० संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् । ११ नाणोः । १२ लोकाकाशेऽवगाहः । १३ धर्माधर्मयोः कृत्स्ने । १४ एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् । १५ असंख्येयभागादिषु जीवानाम् । १६ प्रदेशसंहारविसर्गाभ्यां प्रदीपवत् । १७ गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्म-

योरुपकारः । १८ आकाशस्यावगाहः १९ शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् । २० सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च । २१ परस्परोपग्रहो जीवानाम् । २२ वर्तना परिणामः क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य । २३ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः २४ शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवन्तश्च २५ अणवः स्कन्धाश्च । २६ संघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते । २७ भेदादणुः । २८ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषाः । २९ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् । ३० तद्भावाव्ययं नित्यम् । ३१ अर्पितानर्पितसिद्धेः । ३२ स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः । ३३ न जघन्यगुणानाम् । ३४ गुणसाम्ये सदृशानाम् । ३५ द्व्यधिकादिगुणानां तु । ३६ बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ । ३७ गुणपर्यायवद् द्रव्यम् । ३८ कालश्चेत्येके । ३९ सोऽनन्तसमयः ४० द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ४१ तद्भावः परिणाम । ४२ अनादिरादिमांश्च । ४३ रूपिष्वादिमान् । ४४ योगोपयोगौ जीवेषु ।

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

१ कायवाङ्मनःकर्म योगः । २ स आस्रवः । ३ शुभः पुण्यस्य । ४ अशुभः पापस्य । ५ सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः । ६ अव्रतकषायेन्द्रियक्रियाः पंच चतुः पंच पंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः । ७ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेषः । ८ अधिकरणं जीवाऽजीवाः । ९ आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः । १० निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा

द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् । ११ तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तराया-
सादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः । १२ दुःखशोकतापा-
क्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य । १३ भूत-
व्रत्यनुकम्पादानं सरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति
सद्वेद्यस्य । १४ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शन-
मोहस्य । १५ कषायोदयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।
१६ बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः । १७ माया
तैर्यग्योनस्य । १८ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवार्जवं च
मानुषस्य । १९ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् । २० सराग-
संयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य । २१ योग-
वक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः । २२ विपरीतं शुभस्य ।
२३ दर्शनविशुद्धिर्विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्ण-
ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी संघसाधुसमाधि-
वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणि-
र्मार्गप्रभावनाप्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकृत्त्वस्य २४ परात्म-
निन्दाप्रशंसे सदसद्गुणच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य । २५
तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य। २६ विघ्नकरणमन्तरायस्य।

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

१ हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् । २ देशसर्व-
तोऽणुमहती । ३ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च । ४ हिंसादि-
ष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम् । ५ दुःखमेव वा । ६ मैत्रीप्रमोद-
कारुण्यमाध्यस्थानि सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनेयेषु । ७

जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् । ८ ममत्तयोगात्प्राण-
व्यपरोपण हिंसा । ९ असदभिधानमनृतम् । १० अदत्तादानं
स्तेयम् । ११ मैथुनमब्रह्म । १२ मूर्च्छा परिग्रहः । १३
निःशल्यो व्रती । १४ अगार्यनगारश्च । १५ अणुव्रतोऽगारी ।
१६ दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रौषधोपवासोपभोगपरि-
भोगातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च । १७ मारणान्तिकीसल्लेखना
जोषिता । १८ शङ्काकाङ्क्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः
सम्यग्दृष्टेरतिचाराः । १९ व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमम् । २०
बन्धवधछविच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः । २१ मिथ्योप-
देशरहस्याभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः ।
२२ स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानो-
न्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः। २३ परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीतापरि-
गृहीतागमनानङ्गक्रीडातीव्रकामाभिनिवेशाः । २४ क्षेत्रवास्तुहिर-
ण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः । २५ ऊर्ध्वा-
धस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि । २६ आनयन-
प्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः । २७ कन्दर्पकौत्कुच्य-
मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि । २८ योगदुष्प्रणि-
धानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि । २९ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितो-
त्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि । ३०
सचित्तसंबद्धसंमिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः । ३१ सचित्तनिक्षेप-
पिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः । ३२ जीवितमरणा-
शंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानकरणानि । ३३ अनुग्रहार्थं
स्वस्यातिसर्गो दानम् । ३४ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ।

॥ अथ अष्टमोध्याय ॥

१ मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः । २ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते । ३ स बन्धः । ४ प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः । ५ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुष्कनामगोत्रान्तरायाः ६ पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् । ७ मत्यादीनाम् । ८ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्रा — प्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च । ९ सदसद्वेद्ये । १० दर्शनचारित्रमोहनीयकषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणसञ्ज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदाः । ११ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि । १२ गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपराघाताऽऽतपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयःप्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तस्थिरादेययशांसि सेतराणि तीर्थकृत्त्वं च । १३ उच्चैर्नीचैश्च । १४ दानादीनाम् । १५ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटाकोट्यः परा स्थितिः । १६ सप्ततिर्मोहनीयस्य । १७ नामगोत्रयोर्विंशतिः । १८ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य । १९ अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य । २० नामगोत्रयोरष्टौ । २१ शेषाणामन्तर्मुहूर्तम् । २२ विपाकोऽनुभावः । २३ स यथानाम । २४ ततश्च निर्जरा । २५ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिताः

सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः । २६ सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

१ आस्रवनिरोधः संवरः । २ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः । ३ तपसा निर्जरा च । ४ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः । ५ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः । ६ उत्तमः क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः । ७ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुचित्वास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः । ८ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परिषहाः । ९ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याऽऽक्रोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि । १० सूक्ष्मसंपरायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश । ११ अेकादश जिने । १२ बादरसंपराये सर्वे । १३ ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने । १४ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ । १५ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याऽऽक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः । १६ वेदनीये शेषाः । १७ अेकादयो भाज्या युगपदेकोनविंशतेः । १८ सामायिकछेदोपस्थाप्यपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसंपराययथाख्यातानि चारित्रम् । १९ अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः । २० प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् । २१ नवचतुर्दशपंचद्विभेदं यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् । २२ आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्स-

गवच्छेदपरिहारोपस्थापनानि । २३ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः। २४ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षकग्लानगणकुलसंघसाधुसमनोज्ञानाम् । २५ वाचनापृच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नायधर्मोपदेशाः । २६ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः। २७ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम्। २८ आमुहूर्तात्। आर्तरौद्रधर्मशुक्लानि । ३० परे मोक्षहेतू । ३१ आर्तममनोज्ञाना सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः। ३२ वेदनायाश्च । ३३ विपरीत मनोज्ञानाम् । ३४ निदान च । ३५ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् । ३६ हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः । ३७ आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्ममप्रमत्तसंयतस्य । ३८ उपशान्तक्षीणकषाययोश्च । ३९ शुक्ले चाद्ये । ४० परे केवलिनः । ४१ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवृत्तीनि । ४२ तत् त्र्येककाययोगायोगानाम् । ४३ एकाश्रये सवितर्के पूर्वे । ४४ अविचार द्वितीयम् । ४५ वितर्कः श्रुतम् । ४६ विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः । ४७ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिना क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ४८ पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः । ४९ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपातस्थानविकल्पतः साध्याः ।

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

१ मोहक्षयाद् ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् । २ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् । ३ कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः । ४औप-

शमिकादिभव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्य ५ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् । ६ पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च तद्गतिः ७ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥

—(समाप्त)—